सरिता

अप्रैल (प्रथम) 1998, रुपए 18.00



मुफ्त पर्यटन मानचित्र पुस्तिका

पर्यटन विशेषांक

पूर्व अर्धभारत के 40 से अधिक पर्यटन स्थलों की संपूर्ण जानकारी

पर्यटन विशेषांक

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण
की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ   अंक : 1031   अप्रैल (प्रथम) 1998

लेख

20 **भाजपा की लंगड़ी सरकार**
खतरा अपनों से

29 **बिहार की राजनीति**
अपराधियों की बढ़ती घुसपैठ

32 **गुजरात में भाजपा सरकार**
दलबदलुओं ने मुंह की खाई

38 **हिंदू मंदिर**
क्यों तोड़े मुस्लिम आक्रांताओं

40 **शेयर बाजार**
अधिग्रहण बनाम निवेशक : चांदी ही चांदी

45 **सरप्राइज विजिट**
कितनी सुखद कितनी दुखद

203 **गलतियों पर परदा**
बच्चों के भविष्य से खिलवाड़

205 **घर का काम**
शुरू करे कोई संभाले कोई

पर्यटन परिशिष्ट

68 मसूरी
72 देहरादून
76 हरिद्वार
79 ऋषिकेश
82 औली
84 गंगोत्तरी
88 यमुनोत्तरी
90 बदरीनाथ
92 फूलों की घाटी
94 केदारनाथ
96 नैनीताल
100 अलमोड़ा
103 रानीखेत
106 कौसानी
108 पिथौरागढ़
110 लोहाघाट
112 लखनऊ
117 इलाहाबाद
120 वाराणसी
124 खजुराहो
125 जबलपुर
128 सांची
130 पचमढ़ी
132 पटना
134 गया
135 बोधगया
137 नालंदा
138 राजगीर
139 वैशाली
140 अगरतला
142 गंगतोक
147 कलकत्ता
150 दार्जिलिंग
153 भुवनेश्वर
156 कोणार्क
157 पुरी
159 हैदराबाद
162/1 मद्रास
162/4 महाबलीपुरम
162/6 तिरुपति
162/7 रामेश्वरम
162/8 कन्याकुमारी
162/10 पोर्ट ब्लेयर

कथा साहित्य

48 **प्रौढ़ अनुराग**
वृद्ध दंपती का आपसी प्रेम

52 **फिर भी भय**
आतंकवादी का डर

60 **पोल खुलने के बाद**
झूठे दिखावे का परदाफाश

164 **आज की सचाई**
दो पीढ़ियों के अंतर का कटु सत्य

172 **उस की जगह**
फोन ने किया काम आसान

180 **चावल का दाना**
जीवनसाथी तय करने में युवक का ऊहापोह

188 **जान न पहचान**
बिन बुलाए मेहमानों का दुख

194 **खोया हुआ बचपन**
बच्चे की खुशियों को रौंदने वाला पिता



6 आप के पत्र
16 सरित प्रवाह
67 पासा पलट गया
163 बच्चों के मुख से

स्तंभ

187 कर समस्याएं
193 हमारी बेड़ियां
208 खरीखोटी
212 चंचल छाया
214 बिंबप्रतिबिंब
216 गाने कैसेकैसे
217 खेलों की खिलाड़ियों की
219 जीवन की मुसकान

कविताएं

51 पायल हो गई मतवाली
179 मन बहकने लगा



मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली–110055.
अन्य कार्यालय : 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. जी-3, एचवीएस कोर्ट, कनिंघम रोड, बंगलौर–560052. 79–ए, मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, मुंबई–400021. तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113 पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता–700016. 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, चेन्नई–600008. 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, सिकंदराबाद–500003. फ्लैट नं. बी–जी/3, 4 सप्रू मार्ग, लखनऊ-226001. 111, आशियाना टावर्स, एग्जीबिशन रोड, पटना-800001. जी-7, पायोनियर टावर्स. 1, मेरीन ड्राइव, कोचीन-682031.

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्र. लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित.
वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
वार्षिक मूल्य : केवल ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही दिल्ली प्रकाशन वितरण लिमिटेड' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. चैक व वी.पी.पी. नहीं.
विदेशों में मूल्य : एक प्रति 40 सेंट अमेरिकी डालर, डाक व्यय अतिरिक्त
वार्षिक : 25 अमेरिकी डालर (समुद्री डाक से), 50 अमेरिकी डालर (हवाई डाक से). रजिस्टर्ड डाक 10 अमेरिकी डालर अतिरिक्त

ISSN 0971-1538

मूल्य : एक प्रति 14 रुपए. वार्षिक : 336 रुपए. यह प्रति 18 रुपए.
वायुसेवा अधिभार 75 पैसे प्रति.
सिल्चर, डिब्रूगढ़, अगरतल्ला, तेजपुर, इंफाल, दीमापुर, करीमगंज, पोर्ट ब्लेयर, अकारस और नेपाल में

आप के पत्र

सरित प्रवाह/फरवरी/द्वितीय

अमेरिका के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन पर चले रहे मुकदमे पर आप के विचार पढ़े. दुनिया के सब से शक्तिशाली पुरुष पर चलाया जा रहा यौन शोषण का यह मुकदमा इस बात का प्रमाण है कि आधुनिकता के इस दौर में जब चारों तरफ अनैतिकता का बोलबाला है, नैतिकता ने पूरी तरह दम नहीं तोड़ा है. हमारे नेताओं को इस से सबक लेना चाहिए. –मीरा जैन

*

राजीव गांधी हत्याकांड के अभियुक्तों को दी गई सजा के विषय में आप की टिप्पणी सही लगी. आप ने ही शायद सब से पहले इस फैसले के अजीबोगरीब होने की ओर संकेत किया है. समाचारपत्रों में भी आए दिन निचली अदालतों द्वारा किए फैसलों को उच्च न्यायालय में बिलकुल नकारा जाता है. यह फैसला कानून की सचाई का ढोल पीटने वाली अदालतों की संदिग्धता को और भी बढ़ा देता है. इस विषय में जरूर कुछ ध्यान दिया जाना चाहिए नहीं तो जिन की सामर्थ्य उच्च न्यायालय के वकीलों की फीस भरने की नहीं है, उन को कभी भी न्याय नहीं मिल सकेगा.

–दीपक कुमार

*

मोटापे के संबंध में मैं आप के इन विचारों से सहमत नहीं हूं कि चीनी और चिकनाई खाना बंद करने से मोटापा कम हो सकता है. वास्तव में मोटापे की मुख्य वजह है आवश्यकता से अधिक खाना और व्यायाम का अभाव.

एक हारमोन एवं मोटापा विशेषज्ञ होने के नाते मैं यह कहना चाहूंगा कि खूब खाओ और खूब पचाओ या व्यायाम करो. इन सब के बावजूद भी कुछ व्यक्तियों का वजन यदि निरंतर बढ़ता रहे तो उन्हें व्यायाम, खाने में परहेज के साथसाथ दवाइयों की भी मदद लेनी चाहिए. बावजूद इस के भी कई व्यक्ति अपना वजन नहीं घटा पाते.

एक बात और कि वजन आदि धीरेधीरे कम किया जाए (यानी 3 से 5 किलोग्राम प्रतिमाह) तो ज्यादा स्थायी होता है. जल्दीजल्दी यानी एक माह में 10 से 20 किलो कम करने से इस के फिर से बढ़ने की संभावना अधिक रहती है. –डा. राजेश अग्रवाल

*

एकतरफा विश्लेषण

लेख 'वंश परंपरा में फंसी चुनावी राजनीति' (फरवरी/द्वितीय) विचारोत्तेजक लगा. किंतु यह स्थिति का एकतरफा विश्लेषण है. हमारा संविधान सभी नागरिकों को समान अवसर प्रदान करता है. केवल इस आधार पर किसी व्यक्ति की योग्यता पर प्रश्नचिह्न लगाना उचित नहीं होगा कि वह अमुक राजनीतिबाज का पुत्र/पुत्री अथवा रिश्तेदार है. इसलिए वह राजनीति के लिए अयोग्य है. प्रख्यात व्यक्तियों की संतानों को निकम्मा कहना भी अनुचित है.

वंश या खानदान को योग्यता अथवा अयोग्यता की कसौटी मानना उन प्रतिभाओं के साथ अन्याय करने जैसे ही होगा, जो परिस्थितिवश (क्योंकि व्यक्ति किस के घर में जन्म ले, इस पर उस का कोई नियंत्रण नहीं होता) प्रख्यात व्यक्तियों के घर जन्म लेती हैं.

–राजकुमार श्रीवास्तव

*

पैसा कहां से लाएं?

लेख 'वेतन पर आयकर कैसे कम करें' (फरवरी/द्वितीय) अच्छा लगा, परंतु एक कमी खटकी. इस में यह नहीं बताया गया है कि वेतनभोगी 6,000 या 7,000 रुपए निवेश के लिए कहां से लाएं. यदि किसी कर्मचारी की वार्षिक आय 1,50,000/- है तो इस भौतिकवादी युग में बढ़ती हुई पारिवारिक मांगों और खर्चों के साथ अपना व अपने परिवार का गुजारा करे या इतना निवेश करे. और यदि वह व्यक्ति किराए के मकान में रहता है तो साल में 35-40 हजार रुपए मकान के किराए में चले जाएंगे.

–आर.के. मंगल

*

यदि अमीर बनना है तो बचत करनी ही होगी. भौतिकतावादी युग को दोष दे कर बिना बचत किए अमीर बनना संभव नहीं है. यह न भूलें कि आज जो पैसा बचाया जाएगा, कल उस के ब्याज से फिर आय बढ़ेगी. **–संपादक**

भगवान प्रेरणास्त्रोत है

लेख 'भगवान कहां और कैसे हैं' (फरवरी/द्वितीय) पढ़ा. जहां तक भगवान के अस्तित्व का प्रश्न है, इस में दिए गए तर्कों से मैं सहमत नहीं हूं. इस अज्ञात शक्ति को आज सारा विश्व मानता है, भले ही उस के नाम अलगअलग हैं. विश्व का कोई देश, प्रांत या समुदाय ऐसा नहीं है, जहां ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकारा न जाता हो. भारत पहले भी विश्व का आध्यात्मिक गुरु था और आज भी इस का महत्त्व कम नहीं हुआ है. आध्यात्मिकता सीधे ईश्वर से जोड़ती है जो परोपकार, सदाचार व शांति का पाठ पढ़ाती है. यह कोई मंत्र नहीं बल्कि सूत्र है, जो कि वैज्ञानिकता को दर्शाता है. कुछ स्वार्थी लोग उस के नाम का दुरुपयोग करते हैं, जिस कारण इस शक्ति का वास्तविक स्वरूप धुंधला जाता है. लेकिन यह धुंध स्वतः ही छंट जाती है. इसीलिए हर कोई मरने से पूर्व उसे जरूर याद करता है क्योंकि ईश्वर कभी गलत नहीं होता, वह तो हर किसी का प्रेरणास्त्रोत है.

–ओमप्रकाश प्रजापति

*

लेख 'भगवान कहां और कैसे हैं? में तर्क तो अच्छे हैं, पर जहां तक मानवजाति का प्रश्न है, यह विचार अवश्य दिमाग में आता है कि मरने के बाद मनुष्य कहां जाता है. इस का हमेशा यही उत्तर मिलता है कि आत्मा अमर है और शरीर नश्वर. इस के अलावा कोई अर्थपूर्ण तर्क मिलता भी नहीं है.

जन्म और मृत्यु मनुष्य के हाथ में नहीं होती. इसलिए वह भगवान को मानता है. सब की डोर उसी के हाथ में होती है, वह जैसे नचाता है, लोग वैसे ही नाचते हैं. जब व्यक्ति का अंतिम समय आता है तो डाक्टर कहते हैं कि 'भगवान पर भरोसा करो, उसे याद करो.' जब पढ़ेलिखे व्यक्ति उसे मानते हैं तो साधारण व्यक्ति को तो मानना ही पड़ता है.

–आर.बी. नायडू

*

लेख 'भगवान कहां और कैसे' पढ़ा. ईश्वरीय गुणों से भरपूर हमारे ग्रंथ पगपग पर हमारा मार्गदर्शन करते रहे हैं. ये न केवल हमें जीवन के यथार्थ से परिचित करवाते हैं, बल्कि हमें सही आदर्शों को अपनाने की प्रेरणा भी देते हैं. अब प्रश्न यह है कि यदि भगवान सृष्टिकर्ता है तो उन्होंने नास्तिकों की उत्पत्ति ही क्यों की? इस विषय में मैं यह कहना चाहूंगी कि नास्तिक

लोग अपने पूर्वजन्म के कर्मों के कारण पैदा होते हैं, वह भी इसलिए नहीं कि भगवान में आस्था रखने वालों को निर्मूल सिद्ध करें बल्कि भगवान ने अपने सच्चे भक्तों को कसौटी पर परखने के लिए समाज में आस्तिकों और नास्तिकों का समन्वय कायम कर रखा है.

यह सोचना भी गलत है कि भगवान का नाम लेने वाले ही इस संसार में अधिक दुखी हैं. वास्तव में वे लोग दुखी हैं अपनी भौतिक इच्छाओं के कारण, जो कि क्षणिक हैं. सच्चा सुख तो आत्मिक होता है और ईश्वर का नाम लेने वाला आत्मिक सुख से कभी वंचित नहीं होता. भारी विपत्तियों में यदि हम उसे याद करते हैं तो वह अवश्य हमारा साथ देता है. लेकिन जरूरत है, लगन व श्रद्धा की.

युवा पीढ़ी को ईश्वर से विमुख हो कर विज्ञान के धरातल पर खड़े होने की शिक्षा देना गलत है. विज्ञान के जन्मदाता पश्चिम देश तक भारतीय संस्कृति में आत्मिक सुख ढूंढ़ रहे हैं. योग, जो कि ईश्वर से हमारा साक्षात्कार कराता है, अब दुनिया के सभी देशों में अपनाया जा रहा है. —ज्योति बाबा

*

आप की आपत्तियों पर हमारी प्रतिक्रिया इस प्रकार है :

1. नास्तिक तो पूर्वजन्म के कर्मों के कारण भगवान पर विश्वास नहीं करते, तो प्रश्न है कि आस्तिकों के सर्वव्यापी, सर्वशक्तिशाली भगवान ने उन को पिछले जन्म में बुरे कर्म करने ही क्यों दिए? इसी संदर्भ में प्रश्न है कि जन्मजन्मांतर की कहानियां किस ने किस को बताईं? ये अनुभव या तो सभी को होने चाहिए, जैसे बचपन की बातें सब को याद रहती हैं या किसी को भी नहीं. हमारा मत है कि ये तो मात्र भगवान की दुकान चलाने वाले पंडों की उड़ाई गई बात है कि पूर्वजन्म होता है.

2. भगवान का नाम लेने से दुख दूर होता है तो प्रश्न है कि भगवान दुख देता ही क्यों है? भगवान को सब का खयाल है तो दुख होना ही नहीं चाहिए.

3. हम यह तो नहीं कहते कि भगवान में पश्चिमी देशों का विश्वास नहीं है, जहां भी पंडे, मौलवी, पादरी हैं, वहां भगवान का व्यापार धड़ल्ले से चलता है. —संपादक

*

मानव ज्ञानविज्ञान की चंद किताबें पढ़ कर दंभ में अंधा हो गया है. ईश्वर तो एक ऐसा सत्य है, जिस की व्याख्या विज्ञान के तर्क से कर पाना साधारण व्यक्ति के लिए असंभव है. जिस ज्ञान के दर्प में लोग नास्तिकता का प्रचार करते हैं, उसी के एक साधारण सत्य से उस अलौकिक शक्ति की यथार्थता को समझा जा सकता है.

आज लगभग सभी खगोलविद यह मानते हैं कि ब्रह्मांड की सृष्टि एक बहुत बड़े गैस व धूल के गोले के फटने से हुई. पृथ्वी व अंतरिक्ष में स्थापित शक्तिशाली दूरबीनों की मदद से हम अनगिनत तारों, ग्रहों इत्यादि के विषय में जान सकते हैं. ये सब ब्रह्मांड की विशालता व विविधता के द्योतक हैं और मानव अपने इस ज्ञान के लिए गर्व कर सकता है. किंतु किसी भी ज्ञान ने यह सोचने की कोशिश की कि इतना विशाल गैस का गोला कहां से आया, क्यों आया और किस लिए फटा? कैसे इतने बड़े ब्रह्मांड में सब कुछ एक नियम व गति से चल रहा है? कैसे पृथ्वी पर जीव की उत्पत्ति हुई? यहां यह तर्क अधूरा होगा कि पृथ्वी पर वायु व जल की मौजूदगी के कारण का जैविक विकास संभव हुआ. चूंकि पहले यह जानना जरूरी है कि जीव के जीने व विकसित होने की प्रेरणा कहां से मिली? उस में प्राण किस ने फूंके? आज जिस पृथ्वी पर हम नास्तिकता का प्रचार कर रहे हैं, वह शेष ब्रह्मांड की तुलना में कितनी छोटी है लेकिन फिर भी हम जिंदा हैं, निरंतर विकास कर रहे हैं. करिश्मे को अंजाम दे रही परम सत्ता को ही 'भगवान' कहते हैं जिसे हम अलगअलग नामों से पुकारते हैं. इस पृथ्वी पर हो रहे आविष्कार इस की पुष्टि करते हैं. —डा. रवि नारायण

*

आप के प्रश्नों के उत्तर में कुछ प्रतिप्रश्न हैं. भगवान कहां से आया? उसे किस ने बनाया? आखिर भगवान को बनाया क्यों गया? और अगर भगवान बन गया तो क्या वह अपना गुणगान सुन कर फूल कर कुप्पा हो जाता है? क्या वह अपनी निंदा सुन कर कहर बरसाने लगता है. ये बातें भगवान ने किस मनुष्य को बताईं और क्यों, कब व कैसे? अच्छा यही है कि भगवान के चक्कर को छोड़ कर प्रकृति के गुणदोषों को समझ कर अपना जीवन सुधारा जाए, एकदूसरे के लिए काम किया जाए. पंडों, पादरियों और मुल्लाओं की न सुन कर सूझबूझ से काम किया जाए. —संपादक

*

लेख पूर्णतः अदूरदर्शितापूर्ण व विवेकहीन लगा. आज के पंडेपुजारियों द्वारा जिस तरह से आम जनता को भगवान के विषय में भ्रमित किया

जा रहा है एवं जनता भ्रमित हो रही है, वह वास्तव में गलत है. परंतु इस का मतलब यह नहीं है कि भगवान को अनाड़ी रचनाकार कह कर मजाक उड़ाया जाए. विज्ञान द्वारा बनाई गई मशीनों में भी कहीं ज्यादा गरमी, ठंड, आवाज वगैरह होती है तो क्या वैज्ञानिक सफल रचनाकार नहीं होते? ईश्वर ने मनुष्य बनाया है, बाकी रीतिरिवाज तो मनुष्य के ही बनाए हुए हैं, जो कि सही या गलत हो सकते हैं और होते हैं.

आप विज्ञान का शोर मचाते हैं, कुछ सुखसाधनों के स्थान पर आज के विज्ञान ने ही कई प्रकार की बीमारियों, प्रदूषण, दुर्घटनाओं को जन्म दिया है. –मूलचंद

*

अगर भगवान शक्तिशाली है तो वह उन पंडेपुजारियों को रोकता क्यों नहीं, जो उस के नाम की दलाली कर लोगों को भ्रमित कर रहे हैं. भगवान है, यह बात पंडित तो कहते हैं, आप किसी भी व्यक्ति को पंडितों से जन्म से अलग रख कर देख लें, वह कभी भगवान की बात न करेगा.

जहां तक विज्ञान की अक्षमता की बात है तो यह सत्य है कि विज्ञान अपनेआप को किसी भी चीज का जनक नहीं मानता. विज्ञान के सहारे तो केवल प्रकृति के रहस्यों को समझा जा रहा है और उन का उपयोग किया जा रहा है.

भगवान का अर्थ तो ऐसी शक्ति से है जो हमारे और आप के काम का लेखाजोखा रख रही हो. जो अपनी भक्ति सुन कर प्रसन्न होती हो और नास्तिक (जिसे तथाकथित भगवान ने ही बनाया है) को दंड देती है. पंडेपुजारी प्रकृति की शक्तियों को भगवान नहीं कहते. प्रकृति की शक्तियां किसी जानवर या मनुष्य या पदार्थ में भेद नहीं करतीं, जबकि पंडों के भगवान, भक्तों को खुश रखते हैं, बाकी से नाराज रहते हैं. क्या ऐसा भगवान हो सकता है? –संपादक

*

अनावश्यक बोझ

12वीं लोकसभा के चुनाव का महासमर अंततः समाप्त हुआ और राष्ट्र को अनावश्यक रूप से 20 अरब रुपए का बोझ झेलना पड़ा परंतु राजनीतिक दलों की जवाबदेही का स्तर सिर्फ सत्ता प्राप्ति तक सीमित है.

प्रजातंत्र बहुत महंगा होता है यह उक्ति हमारे देश के संबंध में बिलकुल सही है. भूखी गरीब जनता के सामने से जिस प्रकार जनप्रतिनिधि हेलिकाप्टरों पर उड़ानें भरते हैं ऐसा तो निरंकुश शासन में भी नहीं होता. –जयंत चक्रवर्ती

Woman's era

When you are weary of your humdrum existence, you need a change — new places, new faces. This special will give you ideas for your itinerary this summer.



Egypt: the ancient land

About 15-20 days are needed to visit the land of the pyramids, the mummies, the sphinx and the Nile.



Ooty: The queen of hills

Revive your jaded spirits in this hill-station in the south.



Travel update: Bird sanctuaries

Provides travel information on several bird sanctuaries including Sultanpur in Delhi, Chilika Lake in Orissa and Bharatpur in Rajasthan.



Tarnetar fair: When women have the first choice

Held in Gujarat, this fair offers women of the Bharwad, Rabari and Kathi communities an opportunity to select their bridegrooms.

DON'T FORGET TO BUY WE: A MUST FO



UMMER HOLIDAY AND TRAVEL SPECIAL

APRIL (FIRST) 1998

Ghoom: Upper Darjeeling

Blessed with natural beauty, Ghoom is an easily accessible holiday spot, 6 km away from Darjeeling.



SHORT STORIES

The dream holiday

A woman's curiosity about her neighbours, leading a more exciting life, who were going on a holiday to a secret destination.

The love game

The humorous twist at the end of the friends' search for a match for a girl who is in no hurry to get married.

The nurse

To his mother's shock, a boy decides to marry his mother's nurse.

❒ *24 regular features which would make you an addict.*

ERY WOMAN

Send 3 rupees postage stamp for sample copy

Woman's era
E-3, Jhandewalan Estate, Rani Jhansi Road, New Delhi - 55.

Name ....

Address ....

....

Pin code ....





अख़बार न आए तो अच्छा है

है तो आप जा सकते हैं कौसानी धनौल्टी, मुक्तेश्वर, खिर्स या ौकोड़ी, और अगर आपको भरी यात्राओं का शौक़ है तो ा सकते हैं मुस्यारी या फिर गढ़. आप जहाँ भी जाएँगे उत्तर र्यटन एक साथी की तरह साथ होगा. जब आप ख़ामोशी को सुन रहे होंगे, तब ये आपकी सारी ज़रूरतों का ध्यान रख रहा होगा. उत्तर प्रदेश में और भी बहुत से स्थान हैं जो आपको अनुभव की नई ऊँचाइयों तक पहुँचा सकते हैं.

उत्तर प्रदेश पर्यटन

एक अनजाना सफ़र

Ogilvy & Mather 214/Hin/Sar

022-2185458 फैक्स 2024415, **चन्डीगढ़**-फोन 0172-707649, 531321, **चैन्नई**-फोन 044-8283276

न-फोन 0135-656817, 654408, कुमायूँ मडल विकास निगम, **नैनीताल**-फोन 05942-35700 फैक्स 36897

संपादकीय
अप्रैल (प्रथम) 1998

सरित प्रवाह

उर्दू की एक नज्म का सुप्रसिद्ध मुखड़ा है, 'बड़े बेआबरू हो कर तेरे कूचे से हम निकले.' पिछले लगभग 18 महीने से अखिल भारतीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर विराजमान रहने वाले सीताराम केसरी पर यह पंक्ति बखूबी लागू होती है–जिस प्रकार सोनिया गांधी ने उन्हें लात मार कर कांग्रेस के अध्यक्ष पद से और कांग्रेस के दफ्तर से निकाल फेंका, उस पर और क्या कहा जा सकता है?

सीताराम केसरी को नरसिंह राव ने, जब उन्होंने भ्रष्टाचार के आरोपों में फंस जाने से कांग्रेस अध्यक्ष और कांग्रेस संसदीय दल के नेतृत्व को छोड़ा और 1996 में लोकसभा के नए चुनाव कराए, अध्यक्ष पद पर बैठा दिया. तब तक सीताराम केसरी कांग्रेस के खजांची थे और आराम की जिंदगी बसर कर रहे थे. कांग्रेस में जो रुपया आता था, उसे जमा करा दिया, जितना खर्च करने के लिए कहा गया, दे दिया. उन का किसी प्रकार के राजनीतिक विवाद या संघर्ष से ताल्लुक नहीं था. अपने दफ्तर में भी वह धोतीबनियान पहने बैठे रहते थे.

पर वह कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर इसलिए आसीन हो गए कि नरसिंह राव ने सोचा था कि ऐसा निर्विवाद, निर्दलीय और राजनीतिक दांवपेंचों से दूर रहने वाले व विशेषाधिकारों की चाहत न रखने वाले व्यक्ति को फिलहाल बैठा दिया जाए तो उन्हें (नरसिंह राव को) अपनी गद्दी छिन जाने का कोई खतरा नहीं होगा.

उधर आरोपों के कारण नरसिंह राव की हालत खराब होने लगी मुकदमों से राव के कमजोर होने पर कांग्रेसी बेचैन होने लगे तो सीताराम केसरी ने अपना रंग दिखाना शुरू किया. वह सोचने लगे, अब तो मैं ही कांग्रेस का सर्वेसर्वा बन सकता हूं–विशेषकर सोनिया गांधी के नाम की माला जप कर. उन्होंने सभाओं में चीखनाचिल्लाना शुरू किया और अपने को सोनिया के हरावल दस्ते का मुखिया बना कर उन के नाम पर अपना दबदबा शुरू किया.

कहने को तो वह रोज यही कहते थे कि सोनिया गांधी को कांग्रेस की कमान संभालनी चाहिए, कांग्रेस में जान डालनी चाहिए, पर अपने मन में सोचते थे कि सोनिया तो मैदान में आएगी ही नहीं, मैं ही कांग्रेस का डिक्टेटर बन जाऊंगा.

पर सीताराम का जनाधार तो कुछ था नहीं. न उन की शक्लसूरत कोई करिश्मे लायक या प्रभावशाली थी. उन के अधिकांश भाषणों में सोनिया चालीसा (हनुमान चालीसा की तरह) की ही झलक मिलती थी. पर इस बीच वह यह भूल गए कि वह अपनी ही गद्दी की बखिया उधेड़ रहे हैं. सोनिया के इशारे पर स्वयं अपनी स्वामिभक्ति प्रकट करने के लिए उन्होंने 2 बार संयुक्त मोर्चे की सरकार को भंग कराने की कोशिश की–पहली बार तो संयुक्त मोर्चे ने उन की बात रख कर मोर्चा अध्यक्ष और प्रधानमंत्री देवगौड़ा को हटा दिया पर जब जैन कमीशन की रिपोर्ट प्रकाशित न करने पर उन्होंने फिर मोर्चे से कांग्रेस समर्थन वापस लेने की धमकी दी, तो मोर्चे ने उन की धमकी में आने से इनकार कर दिया और फलस्वरूप लोकसभा के नए चुनाव घोषित हो गए.

इन चुनावों में जिस प्रकार सीताराम केसरी ने भाषण दिए और प्रचार किया, उस से यही लगा कि कांग्रेस तो पूरी तरह डूब

जाएगी. इस पर सोनिया मैदान में कूदीं, क्योंकि यदि कांग्रेस बिलकुल हार जाती तो सोनिया गांधी बोफोर्स तोप सौदे में बड़ी मोटी रिश्वत खाने के आरोपों में अवश्य फंसतीं.

इसलिए चाहते, न चाहते, सोनिया अपने महल के दरवाजे खोल कर विपक्ष की आलोचना सहते हुए भी चुनाव प्रचार में जुट गईं और काफी तादाद में सीटें खोने से रोकने का श्रेय प्राप्त कर लिया.

चुनावों के नतीजे आतेआते यह स्पष्ट हो गया कि सीताराम केसरी के दिन लद गए. कांग्रेस के नेताओं ने एक प्रकार से लात मार कर केसरी को अध्यक्ष पद से हटा कर फेंक दिया–एक दिन की कार्यकारिणी की बैठक के बाद जब केसरी कांग्रेस के मुख्य कार्यालय पहुंचे तो न तो उन का नाम था, न उन का डेस्क था. सारा सामान ट्रक में भर कर उन के निवास स्थान पर फेंक दिया गया था.

सोनिया गांधी की डोली उठा कर चलने वाले सीताराम केसरी अब सोनिया की डोली को हाथ लगाने के लायक नहीं रहे.

*

पिछले 1996 के लोकसभा के चुनावों में भारतीय जनता पार्टी सब से अधिक संख्या में सीटें जीत कर आई थी, पर वे इतनी कम थीं कि 13 दिन की बादशाहत के बाद उसे गद्दी छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा था. अब की बार 1998 में उस ने अपनी सीटों की संख्या तो बढ़ा ली, पर पूर्ण बहुमत हासिल नहीं कर पाई. पूर्ण बहुमत–यानी 271 सीटें प्राप्त करने के लिए भाजपा ने हर प्रकार के गठबंधन किए–उन लोगों से भी, जो भ्रष्टाचार के आरोपों में लिप्त थे. उस ने हर किस्म के लोगों के लिए अपने दरवाजे खोले. दक्षिण में तमिलनाडु में जयललिता से, आंध्र में रामाराव की विधवा लक्ष्मी पार्वती से, पश्चिमी बंगाल में ममता बनर्जी से, बिहार में जार्ज फर्नांडिस की समता पार्टी से, उड़ीसा में बीजू पटनायक के पुत्र नवीन पटनायक द्वारा विभाजित जनता दल से.

परंतु महाराष्ट्र में, जहां उस की शिव सेना के साथ मिलीजुली सरकार थी, बड़ी जबरदस्त हार के कारण ये सब मिलबांट पूर्ण सफलता न दिला पाई.

पर फिर भी क्योंकि जो भी इस गठबंधन से सीटें प्राप्त हुईं, उन से वह बहुमत के निकट पहुंच गई, और जब राष्ट्रपति नारायणन ने अन्य दलों से पूछा कि क्या आप सरकार बना सकते हैं, और किसी ने आश्वासन नहीं दिया, तो राष्ट्रपति ने भाजपा के नेता, और पहले ही से मनोनीत प्रधानमंत्री को निमंत्रण दे कर भारत के प्रधानमंत्री की गद्दी सौंप दी. अब क्योंकि यह सरकार भी थोड़ाबहुत भानुमती का कुनबा है, इसलिए यह कितने दिन चलती है, यह बहुत कुछ भाजपा नेतृत्व की कुशलता और दूसरे दलों की भावनाओं का सम्मान करने, समन्वय से काम करने, और देशहित का खयाल रखते हुए अपने बड़प्पन या अपनी पुरानी धारणाओं से, जो अधिकांश विपक्ष को स्वीकार न हों, पर न अड़ने पर निर्भर करता है.

वैसे भाजपा के जो अब तक के 3 बड़े मतभेद वाले मुद्दे थे–कश्मीर को विशेष दर्जा न देना, अयोध्या में राममंदिर का निर्माण, और देश भर के लिए एक व्यक्तिगत कानून–और जो अन्य समुदायों को नामंजूर थे, वे उस ने पहले ही फिलहाल छोड़ दिए थे. इन के अलावा भी भाजपा की कोशिश यही रहनी चाहिए कि सारा काम सर्वसम्मति से हो. आखिर हरेक राजनीतिक दल को जन समर्थन चाहिए. यदि कोई दल ऐसा मुद्दा उठाता है जो केवल उसी का हित साधता हो तो उसे जनमत के द्वारा विचारविमर्श से समाप्त किया जा सकता है.

*

भारतीय जनता पार्टी की केंद्र में सरकार बनते ही उत्तर प्रदेश के राज्यपाल रोमेश भंडारी ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है. यह उन्होंने बरखास्तगी के धब्बे से बचने के लिए किया, और ठीक ही किया. यह तो सब को मालूम था कि केंद्र में भाजपा सरकार बनते ही इन महाशय को राजभवन

से धक्के दे कर निकाल फेंका जाएगा, क्योंकि उत्तर प्रदेश में भाजपा की सरकार न बनने देने की रोमेश भंडारी ने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की और इस मामले में राष्ट्रपति की सलाह को भी दरकिनार कर दिया था.

किसी भी राज्य के राज्यपाल को किसी राजनीतिक दल से न नफरत रखनी चाहिए, न प्रेम. तभी वह ठीक काम कर सकता है. पर रोमेश भंडारी को भाजपा से चिढ़ थी–वैसे यह चिढ़ भारत में काफी लोगों को है, पर उस से क्या? बेकार की चिढ़ से आदमी अपना ही नुकसान करता है–रोमेश भंडारी के सारे दांवपेंचों के बावजूद उत्तर प्रदेश में भाजपा सरकार बन भी गई और चल भी रही है.

*

हर सरकारी संस्थान, फिर चाहे वह केंद्रीय सरकार के अधीन हो या राज्य सरकार के, उस के तमाम विभाग, जिला परिषदें, स्थानीय म्युनिसिपल बोर्ड और अन्य कमेटियां, यानी हरेक विभाग इसी फिराक में लगा है कि किस प्रकार नएनए टैक्स लगा कर आमदनी बढ़ाई जाए. ये नए टैक्स और नई आमदनी किन्हीं नई योजनाओं के लिए नहीं है, बल्कि वेतन आयोग की सिफारिशों के अनुसार सरकारी कर्मचारियों के वेतन में असाधारण बढ़ोतरी होने के कारण जो आयव्यय का घाटा है, उसे पूरा करने के लिए है.

केंद्रीय सरकार के अफसरों और कर्मचारियों के लिए ही 11,000 करोड़ रुपए से अधिक धन चाहिए. इस के अलावा फौज–पैदल सेना, वायु सेना, नौ सेना के सिपाहियों व अफसरों के लिए और अतिरिक्त धन चाहिए. जब केंद्रीय कर्मचारियों और अफसरों के लिए इतनी वेतन वृद्धि हो रही है तो राज्य व स्थानीय कर्मचारी और अफसर क्यों पीछे रहें? वे भी अपनी मांगों का कटोरा नहीं, बल्कि हड़ताल का डंडा लिए खड़े हैं–दो वरना तुम्हारा सारा काम ठप!

समाजवादी 'सामराज्य' में (साम्यवाद, समाजवाद में कोई व्यक्तिगत या सामूहिक भी जन स्वतंत्रता का सवाल नहीं उठता, जो सरकार कहे, वही कानून, वही धर्म, वही कर्तव्य) समाज का हर काम सरकारी कर्मचारी व अफसर करते हैं. इसलिए उन का हित जनसाधारण के ऊपर होता है. पहले उन का हलवापूरी, पीछे कुछ बचा तो जनता के लिए.

जहां तक सरकारी कर्मचारी व अफसर के काम का सवाल है, वह चाहे जितना कम काम करे, पर उसे फटकारा नहीं जा सकता. उसे बरखास्त करने का तो सवाल ही नहीं उठता.

इस प्रकार जनसाधारण को अब नएनए टैक्स लगने का इंतजार करना चाहिए. हर काम, हर चीज, हर सेवा पर टैक्स बढ़ेंगे. 11,000 करोड़ रुपए भी तो केंद्रीय सरकार को जनता से ही खींचने हैं. राज्य सरकारें व स्थानीय निकाय भी अपने अलगअलग टैक्स लगाएंगी. क्योंकि इस वेतन वृद्धि से उत्पादन में तो कोई बढ़त होगी नहीं, इसलिए नए टैक्स, नए नोट, कीमतें बढ़ाएंगे, जो सरकारी अमले की जेबों में जाएंगे.

*

सोवियत संघ टूट गया है. वह कम्युनिज्म को गंदे, मैलेकुचैले, बीमारी पैदा करने वाले कपड़े की तरह उतार कर फेंक चुका है. बाकी यहांवहां एकदो जगह कुछ कम्यूनिज्म समाजवाद बाकी है, जैसे क्यूबा में. पर वहां भी धीरेधीरे उस का दायरा छोटा किया जा रहा है.

चीन ने भी, जो आज का सब से बड़ा कम्युनिस्ट समाजवादी देश है अभी हाल में अपनी संसद की बैठक में लगभग 40 लाख सरकारी कर्मचारियों, अफसरों को बरखास्त करने का प्रस्ताव पास कर दिया है क्योंकि वहां भी मुद्रास्फीति बराबर बढ़ रही थी उत्पादन कम हो रहा था. पर भारत में शायद यह संभव नहीं है क्योंकि यहां सरकारी कर्मचारी हड़ताल की धमकियों से जनजीवन ठप करने को सर्वदा तैयार रहते हैं. और जनतंत्र सरकार कुछ नहीं कर सकती.

यह कहना उचित नहीं कि अगर सरकारी कर्मचारियों को हटाया गया तो वे भूखे मर जाएंगे. हरेक को छंटनी का मुआवजा, प्रोविडेंट फंड, ग्रेच्युटी, जमा की हुई छुट्टियों का वेतन वगैरह मिला कर बड़ी मोटी रकम बन जाती है. आजकल बाजार में, बैंकों में, यूनिट ट्रस्ट से 12% का ब्याज मिल जाता है. इस प्रकार ये लोग खाली बैठ कर भी मजे में रहेंगे–जबकि जनसाधारण को तो हर रोज काम कर के ही रोटी खाने को मिल पाती है.

*

इस सिलसिले में पटना उच्च न्यायालय का यह कथन कुछ मायने रखता है : 'बिहार राज्य में सरकारी अमला, ऊपर से नीचे तक, भ्रष्टाचार से सना हुआ है और राज्य के नाम पर एक धब्बा है.'

यह कथन कम या ज्यादा, भारत के सभी राज्यों पर लागू हो सकता है. इसलिए इस अमले का जनजीवन में दखल जितना कम हो, उतना ही जनजीवन साफसुथरा रहेगा.

*

नरसिंह राव की कांग्रेस सरकार ने देश में नेहरू खानदान द्वारा लगाई गई नागरिक क्षेत्र में बैंकों पर पाबंदी ढीली कर दी है और कुछ गैर सरकारी देशी और विदेशी बैंकों को बाजार में आने दिया है. इस का नतीजा यह हुआ कि बैंक अब जनसाधारण के पीछे भाग रहे हैं कि 'आइए, हमारे बैंक में खाता खोलिए, आप को यह सुविधा मिलेगी, वह लाभ मिलेगा.' लेकिन पहले जब सारे बैंक सरकारी थे तो बैंक के अफसर और कर्मचारी जनसाधारण को कीड़ेमकोड़ों की तरह समझते थे और उन के साथ वैसा ही व्यवहार करते थे.

अब बैंकों के साथ यह भी आवश्यक है कि जीवन बीमा के साथसाथ विविध बीमा का क्षेत्र भी सरकारी एकाधिकार, मोनोपोली से खोल दिया जाए. आजकल जीवन बीमा सरकारी जीवन बीमा निगम (लाइफ इंश्योरेंस कारपोरेशन आफ इंडिया) के एकाधिकार में है और विविध बीमा जनरल इंश्योरेंस कारपोरेशन के चंगुल में.

बीमा उद्योग व्यापार को बढ़ाने में, पूंजी एकत्रित कर के उसे उत्पादन से लगाने और जनसाधारण को आर्थिक सुरक्षा देने में बहुत सहायता करता है. पर क्योंकि भारत में यह सरकारी मोनोपोली है, इसलिए जितनी सुविधा और तेजी से विस्तार किया जाना चाहिए, वह नहीं हो सकता.

इसलिए आवश्यकता है कि दोनों प्रकार के बीमा के लिए पहले नागरिक क्षेत्र में देशी कंपनियों को इस धंधे को चलाने की छूट दी जाए और कुछ थोड़ी सी विदेशी कंपनियों को भी, जिस से देश में स्पर्धा, कंपीटीशन का वातावरण बन सके.

आज बहुत सारी धन जमा कराने वाली कंपनियां मोटे ब्याज का लालच दे कर जनसाधारण को उलटे उस्तरे से मूंड़ रही हैं–अधिकांश में यह बहुत बड़ी जालसाजी है, जिस से लाखों लोग अपना सब कुछ खो बैठे हैं. पर यदि संगठित क्षेत्र में नई बीमा कंपनियां आएं तो यह धन वहां लग सकता है और बजाय कुछ लोगों के जनता का रुपया लूट कर ऐश करने के, उद्योगव्यापार में लग सकता है.

नागरिक क्षेत्र में बीमा करने की छूट से दोनों सरकारी एकाधिकारों को भी अपनी कमर कसनी होगी और जनता की ज्यादा सेवा करनी होगी. इस से इन को हानि होने की कोई संभावना नहीं है, क्योंकि इन का विस्तार तो देश के कोनेकोने में है जबकि नई कंपनियों को इस प्रकार की शाखाएं खोलने और जमाने में काफी समय लगेगा. नई कंपनियां एजेंटों के रूप में नए रोजगार भी काफी पैदा करेंगी.

अलबत्ता विदेशी कंपनियों के बारे में सरकार यह शर्त रख सकती है कि जिस किसी विदेशी कंपनी को भारत में आने की इजाजत दी जाएगी उस के देश को भारतीय कंपनियों को भी अपना कारोबार करने पर पाबंदियां हटानी पड़ेंगी. इस से देशी कंपनियों का भी अंतर्राष्ट्रीय फैलाव होगा. ●

अपनी संवैधानिक जिम्मेदारियों, स्वविवेक और जनादेश का सम्मान करते हुए राष्ट्रपति के.आर. नारायणन ने अंततः त्रिशंकु लोकसभा में उभरी सब से बड़ी पार्टी भाजपा के नेता अटल बिहारी वाजपेयी को देश का 14वां प्रधानमंत्री नियुक्त कर दिया.

अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में नए मंत्रिमंडल द्वारा शपथ ग्रहण किए जाने के बाद यदि इस नई सरकार ने संसद में अपना बहुमत सिद्ध कर दिखाया (जिस की पूरी संभावना है) तो ही इस सरकार का

लेख ● विशेष प्रतिनिधि

भारतीय जनता पार्टी

खतरा बाहर वालों से



राजतिलक भी पक्का माना जाएगा.

जिन परिस्थितियों में अटल बिहारी वाजपेयी की भाजपा और उस के साझीदारों ने 'लंगड़ी सरकार' का मुकुट पहना है, उस से इस सरकार के स्थायित्व पर काले बादल तो मंडराते ही रहेंगे. इस सरकार के सामने खड़ी अन्य चुनौतियां भी कम नहीं हैं. कांग्रेस और संयुक्त मोरचा कब इकट्ठे हो कर वाजपेयी सरकार को धराशायी कर दें, कोई नहीं जानता.

यह ठीक है कि इस समय 1996 में संयुक्त मोरचे का नेतृत्व करने वाला जनता दल अब केवल नाममात्र के लिए ही रह गया है. तेलगूदेशम अपने भविष्य को ले कर

की लंगड़ी सरकार

नहीं, अपनों से है





भयभीत है, असम गण परिषद को अब कोई नहीं जानता. समाजवादी पार्टी में विस्तार और वृद्धि की संभावनाएं नहीं हैं और वामपंथी कुनबा भी तिनकातिनका जोड़ कर अपनी शक्ति को नहीं बढ़ा पाया बल्कि उस का काम कांग्रेस के लिए राजनीतिक दलाली करना ही रह गया है. फिर भी यह मोरचा अब नहीं तो आगे चल कर भाजपा सरकार की राह में कांटे बिखेर सकता है.

कांग्रेस फिलहाल भाजपा के लिए कोई बड़ी चुनौती नहीं है क्योंकि वह खुद अपनी ढहती नीवों को संभालने में लगी है. कांग्रेस ने इस बार राजनीति की बिसात पर अपना आखिरी तुरूप का पत्ता, यानी सोनिया गांधी का उपयोग कर यह देख लिया है कि वह भी उस की सीटों में कोई ज्यादा बढ़ोतरी नहीं कर पाईं. और तो और, अपने चुनावी भाषणों में अपने पति की शहादत और सिंदूर का वास्ता देने वाली सोनिया को अमेठी तक में भी मात खानी पड़ी.

जिस शर्मनाक तरीके से सीता राम केसरी को हटा कर सोनिया गांधी कांग्रेस अध्यक्ष और कांग्रेस संसदीय पार्टी के विधान में संशोधन करा कर संसदीय दल की चेयरमैन बनी हैं, उस से कई कांग्रेसियों को सोनिया का ऐसे राजनीति में आना उचित नहीं लगा, भले ही यह बात वह दबी जबान से ही कहते हैं. कांग्रेस में नेहरू, गांधी वंशवाद का प्रत्यारोपण करती सोनिया गांधी ने फिलहाल वाजपेयी सरकार को अपना रचनात्मक सहयोग देने की बात तो कहीं है, पर जिस दिन सत्ता की चाहत उन के मन में जाग उठेगी, उस दिन वह भी भाजपा सरकार को गिराने में कोई कसर बाकी नहीं रखेंगी.

भाजपा के बारे में यह सभी जानते हैं कि सत्ता में आने से पहले इस की छवि एक कट्टर हिंदू रूढ़िवादी पार्टी की रही है. अपनी

अटलबिहारी वाजपेयी ने जिन परिस्थितियों में सत्ता का मुकुट पहना है उस से इस सरकार के स्थायित्व पर प्रश्नचिह्न लग गया है. सब से बड़ी बात तो यह है कि इस सरकार को कांग्रेस या संयुक्त मोरचा से उतना खतरा नहीं है जितना इस के अपने घटकों से. क्या ऐसे में अटल बिहारी वाजपेयी इस सरकार की नैया ज्यादा दिन तक खे पाएंगे?



बाएं से क्रमशः लाल कृष्ण आडवाणी, यशवंत सिन्हा, मुरली मनोहर जोशी, रामकृष्ण हेगड़े, बूटा सिंह और उमा भारती : क्या वैचारिक समन्वय बना रह पाएगा.

कट्टर विचारधारा के तहत भाजपा के नेता कभी गऊमाता तो कभी राम मंदिर के नाम पर काफी कुछ उकसाते भी रहे हैं. इस पार्टी के चुनावी घोषणापत्र में राममंदिर के निर्माण, कश्मीर संबंधी धारा 370 और समान नागरिक आचार संहिता जैसे कई विवादास्पद मुद्दे भी धर्मनिरपेक्ष सोच के लोगों को इस पार्टी से दूर रखे हुए थे.

अब चूंकि भाजपा देश पर शासन करने के लिए एक अधिक स्वीकार्य विकल्प के रूप में उभरी है तो उस ने अपने उपर्युक्त मुद्दों को भी ठंडे बस्ते में डाल दिया है. ऐसा करना भाजपा की समायानुकूल और व्यावहारिक रणनीति हो सकती है, लेकिन, वह जिस संघ परिवार का राजनीतिक मुखौटा कही जाती है और जिस विश्व हिंदू परिषद व बजरंग दल ने भाजपा को बुलंदियों पर पहुंचाया है, क्या वे अयोध्या, काशी और मथुरा के मंदिरों पर अपना कट्टर रवैया नर्म कर पाएंगे? भाजपा ने टिकट पर जीत कर आए. संन्यासी, इस पार्टी की साध्वी ऋतंभरा और साध्वी उमा भारती, चुनाव में हारे बजरंग दल के संस्थापक अध्यक्ष विनय कटियार मंदिर विवाद को ले कर अपने भाषणों में कैसी आग उगलते रहे हैं, इस से सभी वाकिफ हैं.

विश्व हिंदू परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष अशोक सिंघल अभी भी निठल्ले साधु संन्यासियों के बीच यह कहते नहीं अघाते कि 'मंदिर निर्माण के मुद्दे पर हमारे और भाजपा के बीच कोई मतभेद नहीं है. मंदिर को ले कर हमारी भाषा में अंतर हो सकता है, पर वैचारिक रूप से हम दोनों एक ही हैं.'

इस से जाहिर होता है कि अटल बिहारी वाजपेयी अपने विचारों में कितना भी लचीलापन ले आएं, मगर उन की पार्टी में संघ परिवार के लोग मंदिर बनाने के एजेंडे में उन की एक नहीं सुनेंगे और अपनी इस कट्टरता का दबाव वक्तवेवक्त वाजपेयी सरकार पर डालते रहेंगे.

वैसे भी देखा जाए तो धर्म की अफीम खिला कर लोगों को चैतन्य नहीं बनाया जा सकता. अपनी तोड़फोड़ जैसी कारवाइयों को उचित ठहराने के लिए बाबरी मसजिद को 'विवादित स्थल' या 'ढांचा' कह कर लोगों को बेवकूफ बनाने का जो काम धर्म के ठेकेदारों और राजनीतिबाजों ने किया है, उस से यही लगता है कि ये लोग मुल्क को 21वीं शताब्दी में न ले जा कर मध्य युग की बर्बर स्थितियों में ही धकेलना चाहते हैं.

वाजपेयी सरकार को ऐसी धार्मिक कट्टरता से भी जूझना होगा.

अगर भाजपा किन्हीं मामलों में कट्टर है तो उस के गठबंधन के साझीदार भी अपनीअपनी जगह कम कट्टर या अक्खड़ नहीं है. लेकिन उन की कट्टरता दूसरे किस्म की है, जो समयसमय पर प्रस्फुटित होती है. भाजपा सरकार बनने से पहले इस में शामिल साझीदार जिस तरह की टिप्पणियां करते रहे हैं, उसे उन का जिम्मेदार रवैया नहीं कहा जा सकता.

भांतिभांति के साझीदारों के खंडित जनादेश के साथ यदि वाजपेयी आम सहमति का पुल बना भी लें तो भी उन की सरकार को अर्थव्यवस्था के उस दलदल को भी पार करना होगा, जिस के बारे में पूर्व वित्त मंत्री डा. मनमोहन सिंह यह पहले ही कह चुके हैं कि 'मौजूद आर्थिक संकट 1991 के आर्थिक संकट से कहीं ज्यादा गंभीर है.'

विकास दर में गिरावट के अनुमानों, औद्योगिक मंदी के निराशाजनक आंकड़ों, अवमूल्यन की तरफ बढ़ती राष्ट्रीय मुद्रा, निरंतर संशय में झूलते शेयर बाजार, निराशा



राम विभीषणों और मंथराओं के शिकंजे में

चुनावों में भाजपा 'राम' को हमेशा आगे रखती आई है. इस बार अयोध्या में राम मंदिर निर्माण का मुद्दा प्रमुख था. हर तीसरी सांस में राम और श्रीकृष्ण को जपने वाला दल आखिर सत्ता के आसन पर पहुंच ही गया. अटल बिहारी वाजपेयी का राज्याभिषेक हो गया. स्थितियां अतीत से मिलतीजुलती हैं और इतिहास अपनेआप को दोहरा भी सकता है.

वनवास या राजतिलक की आशंका विभीषणों और खासतौर से मंथराओं के रह... कभी मिट नहीं सकती. राम के दल के साम... भी यह संकट बरकरार है. राम, विभीषणों औ...

के रिकार्ड तोड़ती निर्यात दर, नियंत्रित मुद्रास्फीति के बावजूद बढ़ती महंगाई के साथसाथ एशियाई चीतों, यानी थाईलैंड, इंडोनेशिया, मलयेशिया, हांगकांग व दक्षिण कोरिया आदि के कमरतोड़ आर्थिक संकट से प्रभावित भारत का पूंजी बाजार और उस में अंतर्राष्ट्रीय निवेशकों की भेड़चाल के मद्देनजर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भी इतना कम है कि ऐसी आर्थिक चुनौतियां देश की किसी भी सरकार के माथे पर पसीना ला सकती हैं.

कहने को निवर्तमान प्रधानमंत्री इंद्र कुमार गुजराल ने बताया कि हम इस नई सरकार के लिए करीब 31 अरब डालर की विदेशी मुद्रा का भरापूरा भंडार छोड़ कर जा रहे हैं, पर जिस तरह से देश पर विदेशी कर्जों का बोझ बढ़ता जा रहा है और विदेशी पूंजी निवेश भी अपने वास्तविक लक्ष्य से कुल एकचौथाई हिस्सा ही हो पाया है, उस से आने वाले दिनों में वाजपेयी सरकार की कठिनाइयां बढ़ सकती हैं. बीमा क्षेत्र के उदारीकरण, फेरा व कंपनी अधिनियम में संशोधन व 'टेरिफ कमीशन' की सिफारिशों के सवाल पर विपक्ष भी सत्तापक्ष को काफी छकाएगा. ऐसे में यदि नई सरकार ने देश को दिवालिया बनाने की योजनाओं पर अंकुश नहीं लगाया, अर्थव्यवस्था में बीमार व सफेद हाथी बने सरकारी उपक्रमों का



थराओं से घिरे हुए हैं. कुटिलता और कान रने जैसी 'मंथरा नीति' पहले ही शुरू हो चुकी , तभी तो ताजपोशी के बाद भी आंतरिक खुशी उत्साह का माहौल नहीं दिखता. कारण, एक काफी मशक्कत के बाद भी टिकाऊ सरकार लिए आवश्यक बहुमत नहीं जुटा पाना और सरा ऊपर से वनवास की आशंका और पक्का जतिलक न हो पाना.

विभीषणों की दगाबाजी का खेल भाजपा उत्तर प्रदेश में ताजाताजा देख चुकी है. अब केंद्र में भी उस के सहयोगी दलों में से कब कोई विभीषण की भूमिका पर उतर आए, कुछ कहा नहीं जा सकता. रामकृष्ण हेगड़े, नितीश कुमार, सुब्रमण्यम स्वामी, ओम प्रकाश चौटाला, ममता बनर्जी व जयललिता जैसे नेता भाजपा को लतियाते, गुर्राते रहे हैं. राम इन के शिकंजे में हैं. वहां रावण को विभीषणों से खतरा था यहां राम को है.

इलाज नहीं ढूंढ़ा तो इस में उस की अपनी छिछालेदारी भी हो सकती है.

नरसिंह राव सरकार के वित्त मंत्री मनमोहन सिंह ने बड़ी सूझबूझ से टैक्स घटाने शुरू किए थे. उसी प्रवृत्ति को ठीक जान कर मोरचा सरकार के वित्त मंत्री पी. चिदंबरम ने भी आयकर को 30-35% तक कर दिया था. अभी इसे और कम करने की जरूरत है. करों की कमी से ही उद्योग और व्यापार को बढ़ावा मिलता है. अंतर्राष्ट्रीय सर्वे बताते हैं कि भारत अभी भी अपने आर्थिक विकास के मैदान में 138वें नंबर पर है.

भ्रष्टाचार की दृष्टि से भारत दुनिया में कौन से नंबर पर खड़ा है, यदि इस आंकड़े की चर्चा न भी करें तो प्रायः सभी सरकारी दफ्तरों में सामान्य नागरिकों के वाजिब काम भी बिना रिश्वत के लिएदिए पूरे नहीं होते. यहां तक जिन राजनीतिबाजों पर करोड़ों के घोटाले के आरोप लगा है और वे उन से बरी नहीं हुए, वे भी चुनाव जीत कर अब दहाड़ते नजर आ रहे हैं. ऐसी स्थिति में वाजपेयी सरकार भ्रष्टाचार व भ्रष्टाचारियों से कोई सार्थक लड़ाई लड़ पाएगी, इस की दूरदूर तक भी कोई उम्मीद नहीं बंधती. जिस तरह से भाजपा को सरकार में आने के लिए जयललिता और सुखराम जैसे भ्रष्टाचार के आरोपी नेताओं से हाथ मिलाना पड़ा है. उस से भाजपा का साफ सरकार देने का वादा धूमिल पड़ चुका है.

पंजाब में पसरे आतंकवाद पर फिलहाल काफी कुछ नियंत्रण पा लिया गया है. पर कश्मीर में आतंकवाद की समस्या अभी भी कायम है, कश्मीर समस्या भारत और पाकिस्तान दोनों के लिए एक स्थायी सिरदर्द बन चुकी है, जिस में नेहरू और कांग्रेस की भूलें ज्यादा शामिल हैं. यहां

हर विभीषण गद्दी चाह रहा है. प्रदेश की सत्ता मांग रहा है या मौजूदा सरकार का तख्ता पलट देना चाहता है. हर दल का नेता राम से बस यही आशीर्वाद पा लेना चाहता है.

ओमप्रकाश चौटाला ने साफ कह दिया है कि वह हरियाणा में बंसीलाल सरकार को हटा कर खुद सत्ता में आना चाहते हैं. यहां भाजपा को बंसीलाल सरकार से काफी घाटा उठाना पड़ा है. चौटाला ने अपनी पार्टी हरियाणा लोकदल (राष्ट्रीय) के 4 सदस्यों को केंद्र में सहयोग दिया है. जाहिर है, वह बदले में फायदा चाहते हैं.

हेगड़े केंद्र के साथसाथ कर्नाटक की गद्दी का लोभ भी संवरण नहीं कर पा रहे हैं.

सुब्रमण्यम स्वामी गद्दी के लक्ष्य को दूसरे के कंधे पर बंदूक रख कर साध रहे हैं.

बिहार में नितीश कुमार, लालू यादव और उन की पत्नी राबड़ी देवी की सरकार को बेदखल करवा देना चाहते हैं.

मजे की बात यह है कि भाजपा को सहयोग देने वाला हर दल उस के धार्मिक मुद्दों पर सहमत नहीं है. हेगड़े, जार्ज फर्नांडिस भाजपा के राम मंदिर निर्माण मसले पर चुनावों के दौरान ही अपनी असहमति जाहिर कर चुके हैं

इधर जयललिता के तेवर सब से निराले हैं. समर्थन की चिट्ठी में हुई देरी ने मन में छिपे सारे अभिप्रायों की पोल खोल दी है. इस विलंब से एक बार तो लगा कि जिस तरह राम का राज्याभिषेक मंथरा की वजह से खटाई में पड़ गया था, कहीं उसी कहानी का दोहराव तो नहीं हो रहा है. भाजपा को उन्हें मनाने चेन्नई अपना दूत भेजना पड़ा. समर्थन के बदले जयललिता ने अपनी 6 शर्तें (मांगें) रखी हैं.

जयललिता अपने ऊपर चल रहे घोटालों की जांच से मुक्ति का पुख्ता इंतजाम कर लेना चाहती है. साथ ही एम. करुणानिधि की जगह तमिलनाडु की सत्ता पाने का सहयोग भी केंद्र की भाजपा सरकार से चाहती है.

उल्लेखनीय है कि जयललिता को मनाने गए जसवंत सिंह ने चेन्नई में कहा था कि 'हम जयललिता से एक ऐसी कार्यसूची के बारे में बातचीत कर रहे हैं, जिसे लागू कर के तमिलनाडु के हितों की रक्षा की जा सकती है.'

तमिलनाडु के क्या हित हैं, उस का न खुलासा अब तक नहीं हुआ, अलबत्ता जयललिता के हितों की कई बातें (शर्तें) जरूर सामने आ गई. अगर प्रतिफल न मिला तो जयललिता की भूमिका का मंथरा रूप नकारा नहीं जा सकता.

पं बंगाल की ममता बनर्जी भी राम



राष्ट्रीय एजेंडा जारी करते भाजपा नेता : सभी पक्षों को खुश करने की कोशिश.

पाकिस्तान समर्थक आतंकवादियों ने इस राज्य को इस तरह से काबू में कर रखा है कि कोई भारतीय नागरिक अपनी मरजी से यहां अपना राष्ट्रीय झंडा भी नहीं फहरा सकता. निर्दोष और निरीह लोगों का कत्लेआम यहां की नियति बन चुकी है और इसलामीकरण की मुहिम चलाने वाले यहां अपना ही कानून चलाते हैं.

वाजपेयी सरकार जम्मू व कश्मीर में आतंकवाद को कैसे खत्म कर पाएगी? आतंकवाद देश की आंतरिक सुरक्षा से जुड़ा मुद्दा है. इस से लड़ने के लिए मखमली दस्तानों की जगह बघनखे का इस्तेमाल ज्यादा उपयुक्त है. पर क्या वह बघनखा भी उस वाजपेयी सरकार के पास है, जिस ने धारा 370 को निरस्त कराने की मुहिम भी अब अपनी महत्त्वाकाक्षाओं की सूली पर टांग दी है.

लिए शबरी साबित नहीं होंगी. भाजपा पर तो वह पहले से ही गुर्राती रही है. उन का सरकार के अंदर रह का समर्थन न देने का अर्थ भी यही है कि वह कभी भी तेवर बदल सकती है.

कुल मिला कर भाजपा सरकार को समर्थन देने वालों में विभीषणों और मंथराओं की भरमार है, जिन के चलते स्थिर सरकार की कल्पना करना बेकार है.

सवाल यह है कि ऐसी स्थिति क्यों है? दरअसल भाजपा धर्म को सर्वोपरि मान कर चलती है. उन कामों और नीतियों को ऊपर रखती है, जिस से समूचे देश को नहीं बल्कि एक तबके को ही फायदा पहुंचे. ऊंचीनीची हर जाति और धर्म को साथ ले कर न चलना उस की कमजोरी है.

भाजपा अपनी चुनावी शुरुआत रथयात्रा से करती है. बातचीत में उस के नेता राम, श्रीकृष्ण का जिक्र जरूर करते हैं. साथ ही वह यह भी चाहती है कि देश की सारी जनता भी उन्हीं की तरह रहे, मंदिरों में जाए और वहां घंटियां बजाए. वह इस पर भी तैयार है कि निचले, पिछड़े, दलित तबके के लोग भी ऐसा ही करें, यानी सब के सब उस के रंग में रंग जाएं.

भाजपा यह भी सोचती है कि देवता, ऋषिमुनि, ब्राह्मण त्रिकालदर्शी, सर्वज्ञ थे, हम भी सर्वज्ञ हैं, इसलिए जनता हमें माने पूजे.

सोचने की बात यह है कि मंदिर खड़े करवा देने या वहां घंटियां बजवाने से देश में खुशहाली नहीं आ जाएगी, गरीबी नहीं मिट जाएगी, बेरोजगारों को रोजगार नहीं मिल जाएगा. मंदिर कोई कारखाने नहीं हैं. लोगों को रोटी, कपड़ा व मकान मंदिरों से नहीं मिल जाएंगे.

भाजपा अगर धार्मिक पाखंड का यह राग अलापना बंद कर दे तो वह संभवतः समूचे देश को अच्छा प्रतिनिधित्व दे सकती है. इन चुनावों में दूसरे दलों ने इसीलिए उस से परहेज रखा.

इसी वजह से सरकार बनाने में सहयोग दे रहे दलों के कारण भाजपा को अपने हिंदुत्व के प्रमुख चुनावी मुद्दों को ताक पर रख देना पड़ा है और सभी दलों की सहमति वाला एक राष्ट्रीय मसौदा तैयार करना पड़ा है. इस में न कहीं राम है, न राम मंदिर.

विभीषणों और मंथराओं के शिकंजे से दूर रहने का एक ही उपाय है और वह यह कि बिना किसी देवता, धर्म, जाति को आगे किए सब को समान रूप से साथ ले कर चला जाए.

इसी तरह बोफोर्स जांच को उस की अंतिम परिणति तक पहुंचाना, 90 दिनों में उत्तराखंड को अलग राज्य का दर्जा दिलाना, कावेरी जल विवाद को सिरे चढ़ाना तथा गरीबी व बेरोजगारी को दूर करना भी ऐसी समस्याएं हैं, जिन से वाजपेयी सरकार अपना पल्ला झाड़ सकती है. कौन नहीं जानता कि अभी भी हमारे हजारों गांव पानी, बिजली, सड़क व दूसरी बुनियादी सुविधाओं से वंचित हैं.

भारत की आधी के ज्यादा आबादी आज भी अनपढ़ है और जातपांत के ढकोसलों से ग्रस्त है. ऐसी समस्याओं का समाधान तभी निकाला जा सकता है, जब सत्ता में बैठे लोग निजी स्वार्थों को छोड़ कर इन तमाम समस्याओं को सुलझाना ही अपनी प्राथमिकता बना लें.

यों तो चींटियां भी जाड़ा आने की संभावना के तहत गरमी में दौड़धूप कर के अपनी खुराक को जमा करने की समस्या का समाधान पा लेती हैं, पर इसे विडंबना ही कहना होगा कि देश पर लंबे समय तक राज करने वाली कांग्रेस यहां की समस्याओं पर चींटी जैसी समझ का सुबूत भी नहीं दे सकी. ऐसे में वाजपेयी सरकार से ज्यादा अपेक्षाएं रखना खुद को भुलावे में रखना है.

यह ठीक है कि अनगिनत समस्याओं के भंवर में फंसे देश को अटल बिहारी वाजपेयी में जिस राष्ट्रीय नेता और भारतीय संस्कृति की सुगंध नजर आती है, उस से वह भाजपा से ज्यादा देश के लिए अपरिहार्य हैं. पर बड़ा सवाल यही है कि क्या वह भी देश को बिना विवादों के 5 साल की स्थिर सरकार दे पाएंगे? आज समूचा देश प्रधानमंत्री अटल बिहारी की इस घोषणा को अपनी गांठ में बांध कर उस की पूर्ति की प्रतीक्षा कर रहा है कि 'यदि मैं देश की दशा और तसवीर नहीं बदल पाया तो चुनाव में पुनः वोट मांगने नहीं आऊंगा.'

अतः जरूरी है कि वाजपेयी कुछ ऐसा करें, जिस से वह पुनः वोट मांगने के लायक भी रहें और देशवासियों को भी लगे कि यह सरकार जो कहती है, वह करती भी है.

वर्ष 1949 में विधानसभा के अध्यक्ष डा. राजेंद्र प्रसाद ने कहा था कि 'अगर चुन कर आए लोग योग्य और चरित्रवान हैं तो वे संविधान के त्रुटिपूर्ण होने पर भी देश का भला कर सकेंगे और अगर उन में गुण नहीं होंगे तो सिर्फ संविधान देश का भला नहीं कर सकेगा.'

इसलिए जहां केंद्र में सहमति के समीकरण बनाना जरूरी है, वहीं पर प्रतिपक्ष के साथ सार्थक संवाद का सिलसिला जोड़ना भी एक स्वस्थ लोकतांत्रिक परंपरा है. आशा की जानी चाहिए कि जो मुद्दे सीधे जनता के हितों से जुड़े हैं, उन पर वाजपेयी सरकार सर्वानुमति से अमल करेगी और संसदीय गरिमा को 'फोकस' में रख कर उस का अवमूल्यन नहीं होने देगी. ●



"आसमान से तारे तोड़ने की बात छोड़ो...अभी यह नारियल तोड़ो...इडली डोसा बनाना है."

बिहार की राजनीति में अपराधियों की बढ़ती घुसपैठ

लेख ● प्रदीप कुमार झा

पूरे देश में अपराधियों ने राजनीति का चोला पहन कर अपने चेहरों को बदलने की कोशिश की है. इस कारण बड़ी संख्या में राजनीतिक हत्याएं भी हुई हैं. बिहार की राजनीति में अपराधियों का जमावड़ा दूसरे राज्यों की तुलना में अधिक ही हुआ है.

पिछले फरवरी माह में विधायक देवेंद्र नाथ दुबे की हत्या को राजनीति में अपराधी तत्त्वों के घालमेल से जोड़ कर देखा जा रहा है. इस हत्याकांड से इस बात का भी खुलासा होता है कि बिहार के कई क्षेत्रों में अपराधियों का अपना शासन है और वहां सब कुछ वे अपने हिसाब से तय करते हैं. उन का मनोबल इतना ऊंचा है कि वे जब चाहें, बड़े से बड़े नेताओं, अफसरों को भी मार गिरा सकते हैं, फिर आम आदमी की कौन कहे.

मोतिहारी, जहां विधायक सहित कुल 5 लोगों की हत्या की गई, का



इलाका नेपाल के पास है. अपनी इस विशेष भौगोलिक स्थिति के कारण यहां अपराधियों व माफिया से जुड़े लोगों का जमावड़ा रहता है. हथियारों की तस्करी भी नेपाल से होती है और यहां से उन की सप्लाई राज्य के दूसरे भागों, विशेषकर नक्सल प्रभावित इलाकों में होती है.

विधायक देवेंद्र नाथ दुबे, जिन की हत्या की गई, का जबरदस्त आपराधिक रिकार्ड रहा है. वह एक पुलिस अधिकारी के बेटे थे, जो पहली बार 1989 में मोतिहारी के बरियारपुर में हुई 3 छात्रों की हत्या के कारण सुर्खियों में आए. इस में दुबे को नामजद अभियुक्त बताया गया था.

इस के बाद दुबे अपराध की दुनिया से लगातार जुड़ते गए. इसी सिलसिले में वह असम भी गए और कुख्यात संगठन उल्फा से जुड़ गए. समझा जाता है कि उन्होंने उल्फा के लिए कई हिंसक कारवाइयों को अंजाम दिया. लेकिन असम में रहते हुए भी उन्होंने बिहार के आपराधिक गिरोहों का संचालन किया.

बिहार पुलिस दुबे को कई हत्याओं के सिलसिले में खोज रही थी और आखिरकार 1991 में उसे असम में गिरफ्तार किया. 1994 में कोर्ट परिसर में ही पुलिस के सामने उन पर कातिलाना हमला उन के विरोधी आपराधिक गुटों ने किया, जिस में वह बुरी तरह से घायल हो कर पी.एम.सी.एच. पहुंच गए. पुलिस के मुताबिक, दुबे पर दर्जनों आपराधिक घटनाओं के आरोप हैं. संभवतः इन की संख्या 28 है.

24 फरवरी की रात को दुबे की हत्या हुई. इसे राजनीतिक हलकों में 2 अपराधी गिरोहों के वर्चस्व की लड़ाई माना जा रहा है. इस बार चुनाव में वह समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार के रूप में मोतिहारी संसदीय सीट से खड़े हुए थे और यहीं से बिहार सरकार के एक कैबिनेट मिनिस्टर बृजबिहारी प्रसाद ने अपनी पत्नी रमा देवी को राजद टिकट पर खड़ा किया. तभी माना जा रहा था कि इस बार यहां खूनी जंग हो सकती है.

22 फरवरी को मतदान तो किसी तरह हो गया, पर 24 फरवरी को यह खूनी घटना हुई. घटना के दिन दुबे को किसी कार्यकर्ता ने सूचित किया कि पूर्वी क्षेत्र के कुछ मतदान केंद्रों के चुनाव को रद्द कर दिया गया है तथा वहां कल मतदान होगा. मोतिहारी में कुछ लोगों ने इस संवाददाता को बताया कि संभवतः दुबे एक गांव में भोज खाने के लिए जा रहे थे. जो भी हो, दुबे के इस प्रोग्राम के बारे में उन के विरोधी गुट को पता चल गया.

बिहार की राजनीति में आपराधिक तत्त्वों का बोलबाला दिनोदिन बढ़ता जा रहा है. इसी का परिणाम है कि वहां राजनीतिक हत्याएं भी बड़ी संख्या में हुई हैं. यदि हत्याओं का यह सिलसिला यों ही जारी रहा तो यह मसला गंभीर रूप ले सकता है.

जैसे ही उन की जीप पूर्वी चंपारण के संग्रामपुर थाना क्षेत्र के बरिअरिया गांव के पास से गुजरी, उन पर अंधाधुंध गोलियां चलाई गईं. वहां 3 गाड़ियों में करीब 3 दर्जन अपराधी पहले से ही पुलिस एवं फौजी वर्दी में जमे थे. उन की गाड़ियों पर 'आन इलेक्शन ड्यूटी' लिखा हुआ था, ताकि चुनाव के माहौल में भी वे आसानी से घूमफिर सकें.

मोतिहारी में मिली जानकारी के अनुसार अपराधियों के पास अत्याधुनिक हथियार थे. पहले दुबे की जीप में गोली मार कर उसे पंक्चर किया गया. उस के बाद करीब 1,000 राउंड गोलियों की बौछार की गई. जीप में बैठे सभी 5 व्यक्तियों को संभलने का भी मौका नहीं मिला. पुलिस



कैबिनेट मंत्री बृजबिहारी : विधायक देवेंद्र नाथ दुबे की हत्या के आरोपी.

नुसार, गोलियां ए.के. 47 तथा 9 एम.एम. वाल्वर से चलाई गई थीं.

इस घटना के बाद दुबे के रिश्तेदारों जिन 6 लोगों को नामजद अभियुक्त ाया, उन में बिहार सरकार के कैबिनेट निस्टर बृजबिहारी प्रसाद (ऊर्जा मंत्री) का नाम है. दुबे की हत्या के बाद इतना ामा नहीं मचा था जितना अब बृजबिहारी खिलाफ मुकदमा दर्ज होने से हो रहा है.

बृजबिहारी को बिहार की राजनीति में क बाहुबली नेता माना जाता है. छोटन क्ला तथा मुटकुन शुक्ला जैसे 'अंडरवर्ल्ड' गों की हत्याओं के पीछे उन का नाम लिया ता रहा है. देवेंद्र नाथ दुबे से बृजबिहारी छत्तीस का आंकड़ा रहा है.

पिछले दिनों समता पार्टी के नेता प्रमोद ह की हत्या कर दी गई थी, जिस के पीछे का हाथ बताया गया. प्रमोद की हत्या बाद मोतिहारी और सीमावर्ती इलाकों के रे अपराधी गिरोह एकजुट हो कर दुबे के लाफ मैदान में उतरे, जिस का परिणाम हत्याकांड के रूप में सामने आया.

बिहार में अपराधियों के हाथों मारे ने वाले देवेंद्र नाथ दुबे 9वें विधायक हैं. से पहले 1972 में सीपीआई विधायक मंजूर हसन की हत्या पटना में की गई थी. तब वह शपथ ग्रहण भी नहीं कर पाए थे. लालू, राबड़ी शासनकाल में 1990 के बाद 3 विधायक मारे जा चुके हैं. 1992 में कांग्रेस के विधायक ललितेश्वर प्रसाद शाही के बेटे हेमंत शाही की हत्या की गई. वह वैशाली विधानसभा क्षेत्र से चुनाव जीते थे.

फिर जद के विधायक अशोक सिंह की पटना स्थित उन के आवास पर बम से हत्या कर दी गई थी. इस हत्या का आरोप प्रभुनाथ सिंह पर लगा था. अब राबड़ी देवी के शासन में देवेंद्र नाथ दुबे की हत्या कर दी गई. वैसे बिहार में राजनीतिक हत्याओं का सिलसिला काफी लंबा है. केंद्रीय रेलमंत्री ललित नारायण मिश्र की हत्या 2 जनवरी 1975 को की गई थी. 8 अगस्त 1987 को झामुओ के अध्यक्ष निर्मल महतो की तथा 1991 में सांसद ईश्वर चौधरी की हत्या चुनाव प्रचार के दौरान की गई.

लेकिन शायद यह पहली बार हुआ है, जब राज्य सरकार के किसी कैबिनेट मंत्री पर सीधा आरोप लगा हो. समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष का बयान तो और भी गंभीर है. इन के शब्दों में, "विधायक दुबे की हत्या की योजना मुख्यमंत्री आवास पर बृजबिहारी और लालू यादव ने मिल कर बनाई थी. यहीं से निकल कर बृजबिहारी मोतिहारी गए और देवेंद्र नाथ दुबे की हत्या की. हत्यारों की होली में स्वयं बृजबिहारी भी शामिल थे."

जाहिर है, कैबिनेट मंत्री पर हत्या का सीधा आरोप लगने से बिहार की राजनीति में भूचाल आ गया है. संभव है मंत्री को इस आरोप के चलते अपना पद भी गंवाना पड़े और अगर ऐसा हुआ तो यह हत्याकांड एक नया मोड़ भी ले सकता है. ●

गुजरात में नई भाजपा सरकार :

मुख्यमंत्री केशूभाई तथा विपक्ष के नेताओं से भेंटवार्त्ता

गुजरात में पिछले ढाई साल से चली आ रही राजकीय अस्थिरता का आखिरकार अंत आ ही गया.

लोकसभा के साथसाथ गुजरात में आयोजित विधानसभा चुनाव में 182 में से 117 सीटों पर जीत हासिल कर भाजपा ने सत्ता के सूत्र फिर से अपने हाथों में ले लिए हैं. गत 4 मार्च को गांधीनगर स्थित राजभवन में केशूभाई पटेल ने 14वें मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली. उस वक्त भाजपा के कार्यकर्ताओं में मानो उत्साह का दरिया बह रहा था. भले ही इस उत्साह में उन्माद भी शामिल हुआ, मगर राज्य के कोनेकोने से आए कार्यकर्ताओं और लोगों ने बड़ी गरमजोशी से भाजपा सरकार का स्वागत किया. राजभवन में आयोजित शपथ समारोह में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी, वरिष्ठ नेता अटलबिहारी वाजपेयी, कुशाभाऊ ठाकरे, राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारी और चुनाव में विजयी



दलबदलुओं ने मुंह की खाई

● नीलम ठाकुर

ए भाजपा के सांसद भी वहां मौजूद थे.

मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के बाद केशूभाई ने एक भेंटवार्त्ता में अपनी सरकार की भविष्य की योजनाओं के बारे में बताया:

सत्ताग्रहण के बाद आप का पहला कार्य क्या होगा?

सब से पहले मैं गुजरात की जनता की सुरक्षा के बारे में सोचूंगा. गुजरात में बाहर से आ रहे शस्त्र और मादक द्रव्यों की आमद रोकने का कार्य करूंगा और गुजरात के



केशू भाई पटेल के सत्ता संभालते ही गुजरात में पिछले ढाई साल से चली आ रही उठापटक समाप्त हो गई. इस जीत से जहां भारतीय जनता पार्टी उत्साह में है वहीं कांग्रेस व शंकर सिंह वाघेला फिर से खम ठोंकने लगे हैं. अब देखना यह है कि राजनीति की महत्त्वाकांक्षा के चलते यह सरकार भी अपना कार्यकाल पूरा कर पाती है या नहीं.

अंदर फैले असामाजिक तत्त्वों को रोकने का काम करूंगा.

उस के बाद गुजरात की अहम समस्या, 'पानी' जिस का हल निकालूंगा. राजपा सरकार ने सुप्रीम कोर्ट को बिना वजह गुस्सा दिलाया और नर्मदा के मामले को और उलझा दिया. इस को राजनीति से बाहर निकाल कर नर्मदा बांध का काम आगे बढ़ाऊंगा.

इस के अलावा बिजली के दाम बहुत बढ़ गए हैं. आमतौर पर खेतों में सिंचाई के लिए बिजली की आवश्यकता होती है, उस खर्च को कम करने की कोशिश करूंगा.

हमारी गोकुल गांव योजना भी अभी तक बंद पड़ी है, उस को फिर से कार्यान्वित करूंगा. हर दिन दस गांवों में यह योजना लागू की जाएगी.

भाजपा के इतने प्रचंड बहुमत से विजयी होने के पीछे आप कौन सा आधारभूत कारण मानते हैं?

भाजपा को इतने प्रचंड बहुमत से विजयी बनाने के पीछे सब से महत्त्वपूर्ण अगर कोई कारण है, तो वह है गद्दारों के खिलाफ प्रजा का रोष. पहले भाजपा को शासन चलाने का मौका नहीं दिया गया था. इसीलिए जनता ने भाजपा को एक और मौका दिया है. फिर राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा की जो छवि है उस का असर भी यहां पड़ा है.

आप को क्या लगता है, अपनेआप को गुजरात की राजनीति में तीसरा बल कहने वाले राजपा को गुजरात की प्रजा ने क्यों नहीं स्वीकारा?

अगर आप गुजरात का इतिहास दे[...] तो आप को नजर आएगा कि शुरुआत [...] ही गुजरात की प्रजा ने दो दलों को [...] स्वीकारा है और फिर राजपा प्रजा द्वारा चु[...] गया दल तो था ही नहीं. यह तो भाजपा [...] नाम पर जीते हुए दगाबाज प्रतिनिधियों [...] द्वारा बनाया गया दल था, जो पहली ब[...] जनता के सामने आदेश पाने के लिए ग[...] और उस को सही जनादेश चुपचाप राजग[...] छोड़ कर घर बैठने का मिल गया.

क्या आप की सरकार पांच साल त[...] टिक पाएगी?

हमारे दल में से अब सत्ता के लाल[...] गद्दार लोग निकल गए हैं. इसीलिए य[...] सरकार बिना रोकटोक के 5 साल त[...] जनता की सेवा करेगी.

*

नई सरकार के बारे में मुख्यमंत्री के सुझ[...] जानने के बाद आइए, अब विपक्षी वरि[...] नेता उर्मिला बहन के मंतव्य को जानते [...]

अपनी पार्टी को इतनी करारी शिक[...] मिलने के पीछे आप कौन से कारणों [...] जिम्मेदार मानती हैं?

इस समय के चुनाव परिणाम जना[...] हैं. इस जनादेश को मैं कुबूल करती हूं. आ[...] वाले 5 सालों में कांग्रेस को ज्यादा मज[...] होना चाहिए. लेकिन मैं तो ऐसा मानत[...] कि कांग्रेस के परिणाम पहले से बेहतर[...] हां, कांग्रेस के महारथी जरूर हारे हैं ले[...] विधान सभा में इस समय कांग्रेस को ज[...] सीटें मिली हैं.

राजपा के साथ चुनावी समझौता क[...]



शंकर सिंह वाघेला : हार गए तो क्या हौसले तो अभी बुलंद हैं.

तो आप की पार्टी की स्थिति बेहतर होती, क्या ऐसा नहीं लगता?

राजपा के साथ जुड़ कर भी हम को तो नुकसान ही था. हां, राजपा को जरूर फायदा हो सकता था.

आप को लगता है, गुजरात में यह तीसरी ताकत टिक पाएगी?

राजनीति में कभी कहीं पूर्णविराम नहीं होता. राजपा को जनता का करारा जवाब मिल गया है. हां, यह बात तय है, राजपा कभी अकेली टिक नहीं पाएगी. वह कांग्रेस के सहयोग के बिना कुछ नहीं कर पाएगी. उस को कांग्रेस के साथ मिल कर ही रहना पड़ेगा.

हां, यदि इस चुनाव में कांग्रेस को नुकसान भुगतना पड़ रहा है तो वह राजपा का कारण ही है.

*

उर्मिला बहन से मिलने के बाद हम राजपा के सुप्रीमो शंकर सिंह से भेंट करने गए. उन के साथ चुनाव परिणाम के बारे में बातचीत की.

आप की पार्टी की हार के कारण आप कैसा महसूस करते हैं?

भाजपा सरकार को एक और मौका मिलना चाहिए, ऐसा जनादेश था और इसलिए प्रजा ने भाजपा को सत्ता दिलाई. इस सोच में जनता ने मुझे दोषी मान लिया और मुझे सजा दी. जनता की यह सजा तो मुझे भुगतनी ही होगी.

क्या आप को लगता है यह सरकार टिक पाएगी?

यह एक सुख का भ्रम है जो 5-6 माह में शांत हो जाएगा. 1998 के अंत तक इस सरकार का पतन हो जाएगा. उन को सरकार चलाना महंगा पड़ जाएगा. भाजपा में जो सेमी खजूरिया गुट है, जिन को सिर्फ प्रचार माध्यमों की मदद से टिकाया गया है, इस चुनाव में भी भाजपा के कई लोगों ने उन को हराने का प्रयास किया था. लेकिन प्रजा का झुकाव भाजपा की ओर था इसीलिए सब चुनाव जीत गए.

आप का भविष्य का एजेंडा क्या है?

आने वाले दिनों में शंकर सिंह एक कर्तव्यनिष्ठ योद्धा के रूप में अपने पक्ष को शून्य से आगे बढ़ाएगा. पिछले डेढ़ साल से मैं प्रजा के शासन और कांग्रेस के तनाव में उलझ गया था. अब मैं अपनी पार्टी के लिए पूरा समय दे सकूंगा. हां, जो लोग सत्ता की भूख के लिए मेरे साथ जुड़े थे, वे सभी मेरे दल में से निकल जाएंगे और मैं एक अच्छी साफसुथरी पार्टी बना पाऊंगा.

भाजपा सरकार चलाने में कितनी समर्थ है?

उस पार्टी में 2-3 को छोड़ कर सारे सरकार चलाने में असमर्थ हैं. और फिर मैं डेढ़ साल तक सत्ता में रहा हूं. मैं सभी विभागों से परिचित हूं, इसीलिए मेरा काम अब इस सरकार के ऊपर नजर रखना है. वे लोग अगर किसी भी काम में गलती करेंगे तो मैं तुरंत उस का विरोध करूंगा. गुजरात

भाजपा में एक भी नेता सरकार चलाने का अनुभवी नहीं है. इन लोगों को सरकार चलाना भारी पड़ जाएगा.

क्या सत्ता के सूत्र फिर से आप के पास आएंगे?

गुजरात में अगर चिमनभाई 17 साल के बाद वापस आ सकते हैं, इंदिराजी भारत में 4 साल के बाद वापस आ सकती हैं, तो इस शंकर सिंह में इतना बल है कि वह भी 7 साल बाद फिर से सत्ता जरूर संभालेगा.

नेता लोग चाहे कुछ भी कहें, पर जनता, जिस ने उन को सत्ता सौंपी है, उस की भी कुछ मांगें हैं.

अहमदाबाद में सरकारी खाते में काम कर रहे आशुतोष भट्ट कहते हैं, 'हमें स्थिर सरकार चाहिए. रोजमर्रा की जरूरी चीजों के दाम कम होने चाहिए. हमें लगता है कि केशूभाई 5 साल तक टिक पाएंगे.'

इसी तरह एक और कर्मचारी बहन मीता बताती हैं, 'राजनीति तो ऐसी चीज है कि सत्ता मिलने के बाद नेता सारे वादे भूल जाते हैं. मुझे लगता है अगर नरेंद्र मोदी पिछली बार की तरह इस बार बीच में नहीं आएंगे तो केशूभाई 5 साल तक टिक पाएंगे.'

इस से लगता है कि प्रजा की एक ही आवाज है, 'अब बहुत हो चुका, हम ने तो पिछली बार भी स्पष्ट बहुमत दिया था, इस बार भी स्थिर शासन के लिए पूर्ण बहुमत दिया है. पिछले 4 सालों में गुजरात का औद्योगिक विकास रुका हुआ है, उस को आगे बढ़ाया जाए. नर्मदा को ले कर बहुत राजनीति खेली गई, अब कुछ काम भी किया जाए. सभी महारथी अंदरूनी लड़ाई छोड़ कर प्रजा के हित में सोचना शुरू करें.

सेवा के बड़ेबड़े वादे कर के आज सत्ता की कुरसी पर बैठने वाले सचमुच में जनता की आवाज सुन कर सेवा करना चाहते हैं, या फिर वे लोग भी लालची नेताओं की जमात में से ही आ रहे हैं, यह आने वाला समय ही बताएगा. ●

मुस्लिम आक्रमणकारियों

लेख • हितेंद्र रघुवंशी

भारत सदैव अपनी सैनिक निर्बलता और धन संपदा के कारण विदेशी आक्रमणों का निशाना बनता रहा है. ईरानी सम्राट दारा से ले कर मुगलों और अंगरेजों तक ने भारत को जी भर कर लूटा और अपने खजाने भरे. पर जिस निर्दयता से भारत को मुसलमानों ने लूटा, उतना दूसरे किसी ने नहीं.

मुस्लिम हमलावरों ने लूटपाट के साथ धार्मिक अत्याचार भी किए और हमारे मंदिरों को भी लूटा व मूर्तियां भी तोड़ीं. प्रश्न यह उठता है कि उन्होंने मंदिर क्यों लूटे?

एक सामान्य व्यक्ति भी इस का उत्तर यही देगा कि धनसंपदा के कारण. लेकिन प्रश्न यह उठता है कि यदि उन्हें धन चाहिए था तो वे लूटपाट से ही संतुष्ट हो जाते, मूर्तियों को क्यों तोड़ते? इस प्रश्न के उत्तर में मुसलमानों द्वारा मंदिरों को तोड़ने का मकसद छिपा है. यह मकसद था, हिंदुओं के मनोबल को तोड़ना. उन की वीरता को कुंठित करना. धार्मिक अंधविश्वास भी शक्ति का स्रोत होता है, जो जोश व उत्साह का संचार करता है. इसी उत्साह के बल पर तलवार के द्वारा मुस्लिम धर्म संपूर्ण विश्व में फैला.

इतिहास गवाह है कि भारत को मुसलमानों ने जिस निर्दयता से लूटा है उतना किसी दूसरे ने नहीं. उन्होंने मंदिरों को तोड़ कर धार्मिक अत्याचार भी बहुत किए. आखिर मुसलमानों ने मंदिरों को ही क्यों तोड़ा?

मुसलमान जानते थे कि हिंदू एक अंधविश्वासी व नाकारा जाति है, जिस की शक्ति अंधविश्वासों में छिपी है. इस को तोड़ने से ही भारत को जीता जा सकता है.

सन 712 ई. में जब मुहम्मद बिन कासिम ने दाहिर पर आक्रमण किया तो सर्वप्रथम उस ने देवल के प्रमुख मंदिर पर फहरा रहे भगवा ध्वज को काटा क्योंकि देवल के निवासी मानते थे कि जब तक यह

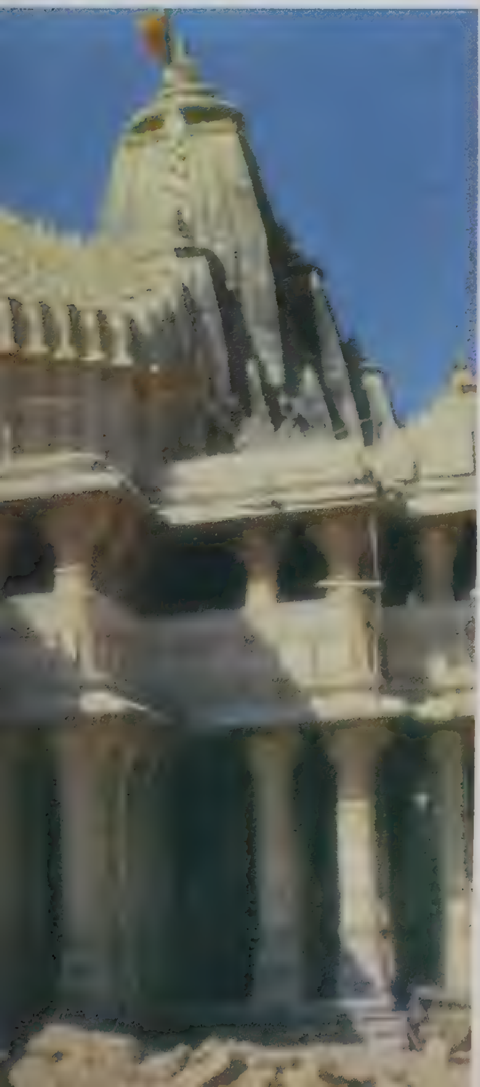


ने क्यों तोड़े हिंदू मंदिर

ध्वज मंदिर पर फहराता रहेगा, उस पर कोई शक्ति विजय नहीं पा सकेगी.

कहना न होगा कि पूर्व में 4 बार बुरी तरह से हारे अरबों ने न सिर्फ देवल वरन पूरा सिंध बहुत ही आसानी से जीत लिया, क्योंकि ध्वज कटने से हिंदुओं का मनोबल टूटा, अतः वे युद्ध से पहले ही स्वयं को पराजित मानने लगे. ऐसे में उन की हार तो होनी ही थी.

इसी प्रकार महमूद गजनवी ने सोमनाथ के मंदिर को लूटा व जीता, क्योंकि उस ने मूर्ति तोड़ कर हिंदुओं को युद्ध से पहले हरा



दिया और इस लूट से प्राप्त उत्साह से ही वह 17 बार भारत पर सफल आक्रमण कर सका, क्योंकि वह धन लूटने के साथ मंदिर भी तोड़ता था.

तुर्कों ने तो मंदिरों को तोड़ने का सिलसिला ही आरंभ कर दिया, जिस से हिंदुओं का मनोबल गिरा और वे स्वयं को पराजित व दीनहीन अनुभव करने लगे. फलस्वरूप तुर्कों ने दिल्ली पर 320 वर्ष राज्य किया. इस मनोवैज्ञानिक कूटनीति के वाहक ऐबक, इल्तुतमिश, बलबन, अलाउद्दीन खिलजी आदि थे, जिन्होंने मंदिर तोड़तोड़ कर हिंदुओं का मनोबल गिराया व उन की वीरता को जंग लगा दी.

मुगल सम्राट औरंगजेब ने भी हिंदुओं के मनोबल को गिराने के लिए अनेक दमनकारी नियम बनाए व काशी के विश्वनाथ मंदिर को तोड़ा. इस के साथ ही जहां तक संभव हुआ, अनेक मंदिरों को नष्ट किया.

इस प्रकार मुसलमानों के द्वारा मंदिरों को तोड़ने का उद्देश्य मात्र धार्मिक ही नहीं था बल्कि मनोवैज्ञानिक व कूटनीतिज्ञ भी था, ताकि वे हिंदुओं को कुंठाग्रस्त कर सकें और उन पर विजय प्राप्त कर निष्कंटक राज्य कर सकें.

दुख की बात यह है कि शिवाजी को छोड़ कर अन्य कोई भारतीय नरेश उन की इस कूटनीति को न समझ सका और पराजित होता चला गया. मन में मुसलमानों की अजेयता की भयावह तसवीर बना कर हम हाथ पर हाथ रख कर बैठ गए और 'भगवान' को पुकारने लगे. इस प्रकार मुस्लिम आक्रमणकारियों ने हमें अपनी वीरता से नहीं हराया, वरन हम हारे तो अपनी सैनिक अकुशलता, दंभ, अंधविश्वासों तथा कमजोर मानसिकता के कारण. ●

अधिग्रहण बनाम निवेशक : चांदी ही चांदी

लेख ● कपिल अग्रवाल

सेबी के अधिग्रहण कानून का असर अब शुरू हो गया है. इस का सब से बड़ा फायदा विस्तारवादी प्रवर्तकों को है, जो इस के जरिए अरबों रुपए के प्लांट वाली कंपनियां करोड़ों में खरीद लेते हैं. उदाहरण के लिए इंडाल जैसी अरबों रुपए की कंपनी के 20 फीसदी शेयरों के लिए स्टरलाइट ने आम निवेशकों को 130 करोड़ रुपए का आफर दिया है.

स्टरलाइट को इंडाल जैसी कंपनी स्थापित करने के लिए कई अरब रुपए चाहिए तथा कम से कम 4-5 साल का समय चाहिए. पर अधिग्रहण की बदौलत चंद माह में वह इतनी बड़ी कंपनी के मालिकों में शुमार हो जाएगी. यानी खुले बाजार से शेयर खरीद कर किसी कंपनी का अधिग्रहण बड़े आराम से किया जा सकता है. और यह केवल अपने देश में ही नहीं बल्कि अमेरिका तक में है.

मंदी अधिग्रहण के लिए वरदान है और इस का सब से बड़ा फायदा है आम निवेशक को. आज अरबों रुपए के प्लांटों वाली तमाम बड़ी कंपनियों के शेयर औंधे मुंह पड़े हैं. चंबल फर्टिलाइजर, डीसीएम लि., एस्सार स्टील, हिंदुस्तान मोटर्स, जयप्रकाश इंडस्ट्रीज, जेसीटी, ओरके इंडस्ट्री, स्पिक आदि तमाम कंपनियों के शेयर, कंपनियों की हैसियत के मुकाबले आज माटी के मोल उपलब्ध हैं. अधिग्रहण से न केवल अधिग्रहणकर्ता को फायदा होगा, शेयरधारक भी 1 के 20 ले कर फायदे में रहेंगे. सेबी के अधिग्रहण दिशा निर्देशों में भी कुछ ऐसी व्यवस्थाएं हैं, जिन का सीधा फायदा निवेशकों को मिलता है.

सेबी के दिशा निर्देशों के मुताबिक कोई भी कंपनी किसी भी कंपनी के 20 फीसदी शेयर खुलेआम बाजार से खरीद सकती है, यानी शेयरधारकों का वाजिब मूल्य पर आफर दे सकती है. यदि अधिग्रहण की जाने वाली कंपनी के प्रवर्तकों या निदेशक बोर्ड को इस आफर की काट करनी है तो नियमों के मुताबिक उसे 21 दिनों के भीतर शेयरधारकों के समक्ष काउंटर आफर रखना होगा, जो कि पूर्व के मुकाबले और ज्यादा कीमत का होगा. इस के अलावा दोनों पक्षों की आपसी प्रतिस्पर्धा से खुले बाजार में जो कीमतें बढ़ेंगी, वह अलग. यानी इस से निवेशकों को तितरफा लाभ है. बगैर ट्रेडिंग 2-4 रुपए पर बड़े शेयरों पर अचानक 30-40 रुपए मिलने लगे तो स्वाभाविक है कि वह प्रस्ताव स्वीकार कर लेगा.

वैसे भी आजकल प्रवर्तक जिस तरह का रवैया निवेशकों के प्रति अपना रहे हैं, उस से भी अधिग्रहण आफरों को तवज्जो मिलना लाजिमी है. गत दिनों चीनी उत्पादन में सक्रिय मध्य प्रदेश की कंपनी बीएसआई लि. ने वर्ष 1996 के लिए 25 फीसदी लाभांश घोषित किया और फिर एक साल तक न बांट कर लाभांश ही रद्द कर दिया. ऐसे में निवेशकों के लिए अधिग्रहण एक वरदान है.

अधिग्रहण का निवेशकों को खुल कर समर्थन करना चाहिए ताकि फ्राड प्रवृत्ति वाले प्रवर्तकों को सबक मिल सके.

अनुमानों के मुताबिक, सीमेंट, स्टी... पैकेजिंग उद्योग, साफ्टवेयर व आटो उद्योग... कई अधिग्रहण इस साल होने हैं. संगीत व... बड़ी कंपनियों के भी अधिग्रहण की चर्चाएं... रही हैं. स्टाक ब्रोकिंग के क्षेत्र में भी कल... व मुंबई की कुछ बड़ी कंपनियों में विल... अधिग्रहण के प्रयास चल रहे हैं. टाटा ... वोल्टास, गुडलैस नेरोलक, एसीसी, ... गोकाक आदि टाटा की कंपनियां भी ...

बरपा सकती हैं.

करीब साल भर पूर्व तत्कालीन केंद्रीय सरकार द्वारा घोषित नवरत्नों में से एक 'सेल' की हालत इन दिनों काफी खस्ता है. चेयरमैन अरविंद पांडे द्वारा लाख डींग हांके जाने के बाद भी सालभर में कंपनी का डूबना जारी है.

कमोबेश यही हाल सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी एम.टी.एन.एल. व आई.डी.पी.एल. तथा निजी क्षेत्र की फिलिप्स इंडिया लि. का है. सभी सरकारी प्रयासों के बावजूद एम.टी.एन.एल. को वह सब हासिल नहीं हो पा रहा है, जो वह चाह रहा है.

सार्वजनिक क्षेत्र की दवा कंपनी आई.डी.पी.एल. का संचित घाटा 900 करोड़ रुपए तक पहुंच चुका है. किसी जमाने में यह कंपनी दवा क्षेत्र में अव्वल थी, पर निरंतर अनियमितताओं, लापरवाहियों व फालतू कर्मचारियों की तादाद में बढ़ोतरी से कंपनी घाटे में डूबती चली गई.

बहुराष्ट्रीय कंपनी फिलिप्स की भारतीय इकाई फिलिप्स इंडिया को भी घाटा झेलना पड़ा है. बहुराष्ट्रीय कंपनियों की भी परफारमेंस अच्छी ही होगी. इस की कोई गारंटी नहीं है. इस बार एक काउंटर आफर समेत 5 अधिग्रहण आफर हैं. अब अधिकांशतः इन्हीं का बोलबाला रहेगा.

मेरिंड लि.

वोकहार्ट लि. ने टाटा समूह की इस कंपनी को अधिगृहीत कर लिया है. वोकहार्ट ने टाटा समूह से कंपनी के 50 फीसदी शेयर खरीदे हैं. प्रति शेयर सौदा 260 रु. में हुआ है. इसी भाव पर मौजूदा शेयरधारकों से भी खरीद की जा रही है. कंपनी की 50 फीसदी इक्विटी टाटा समूह के पास है, जबकि घरेलू वित्तीय संस्थाओं के पास 15 फीसदी व विदेशी संस्थागत निवेशकों, बैंकों के पास 3 फीसदी इक्विटी शेयर हैं. शेष 32 फीसदी इक्विटी आम जनता के पास है. संपूर्ण अधिग्रहण के बाद कंपनी की बिक्री व लाभ वोकहार्ट में संचित हो जाएंगे.

कंपनी के अधिग्रहण से थेरापेटिक दवाओं के क्षेत्र में वोकहार्ट की बाजार हिस्सेदारी 29 फीसदी से बढ़ कर 42 फीसदी हो जाएगी. मेरिंड विटामिंस के क्षेत्र में बहुत मजबूत है तथा वोकहार्ट इनफ्लेमेशन, एंटीबायोटिक्स, एंटी बैक्टीरियल्स, एंटीसेप्सिस, रेस्पिरेटरी मेडिसिन, कार्डियोलाजी, पीडिएट्रिक मेडिसिन व पेरेंटरल न्यूट्रिशन के क्षेत्र में काफी सुदृढ़ है.

अधिग्रहण करने वाली कंपनी वोकहार्ट ने हाल ही में ब्रिटिश कंपनी वैलिस लैबोरेटरीज लि. की संपूर्ण इक्विटी 1.80 करोड़ डालर में खरीदी है. यह ब्रिटिश कंपनी पीड़ानाशक और सर्दी से राहत देने वाले उत्पादों, दांत व पेट की बीमारियों से जुड़ी दवाओं का उत्पादन करती है. कारोबार के लिहाज से भी यह कंपनी ठीकठाक है. दिसंबर 1997 में समाप्त छमाही के दौरान कंपनी की आय 25 फीसदी बढ़ कर 212.70 करोड़ रुपए तक पहुंच गई और सकल मुनाफे में 15 फीसदी की वृद्धि हुई. वोकहार्ट के प्रवर्तक एच.एफ. खोराकीवाला हैं.

टाटा की कंपनी मेरिंड ने मार्च 1997 को समाप्त वित्त वर्ष के दौरान 123.36 करोड़ की बिक्री आय पर 3.20 करोड़ का शुद्ध लांभ कमाया है. कंपनी ने 40 फीसदी का लाभांश घोषित किया है. कंपनी के उत्पादों पर लागत ज्यादा आ रही है तथा लाभ मार्जिन घटे हैं. कंपनी को पुनर्गठन की जरूरत थी व आधुनिकीकरण के लिए कई करोड़ रुपए चाहिए थे. अगर टाटा यह कंपनी न बेचते तो 2-3 साल में उन्हें इस में कुछ और सुधार लाना पड़ता. गत 1 साल में कंपनी के लाभ घटे हैं और बिक्री में मामूली वृद्धि हुई है.

गत 25 फरवरी को अधिग्रहण के वक्त इस कंपनी के शेयरों की कीमत बाजार में 115 रु. के आसपास चल रही थी. इस दृष्टि से आफर मूल्य बहुत बढ़िया व आकर्षक है. जब टाटा ने ही अपनी कंपनी छोड़ दी तो निवेशक शेयर रख कर क्या करेंगे?

रासी सीमेंट

दक्षिण भारत की 5 बड़ी सीमेंट कंपनियों

में से एक इस कंपनी की 20 फीसदी इक्विटी आम शेयरधारकों से खरीदने का आफर इंडिया सीमेंट लि. समूह की 3 कंपनियों ने जारी किया है. प्रति शेयर 300 रु. का प्रस्ताव दिया गया है.

चेन्नई स्थित इंडिया सीमेंट, इंडिया सीमेंट समूह की अग्रणी कंपनी है और सिकंदराबाद स्थित रासी सीमेंट को रासी समूह ने प्रवर्त किया है. कंपनी की कुल 18 फीसदी इक्विटी इंडिया सीमेंट समूह के पास है और 9.75 फीसदी इक्विटी समूह की आईसीएल फाइनेंशियल सर्विसेज लि., आईसीएल सिक्योरिटीज लि. व त्रिशूल इंवेस्टमेंट्स (प्रा.) लि. ने ले रखी है. इस के बाद हाल ही में समूह की कंपनियों ने 8.28 फीसदी इक्विटी रासी प्रबंधन से ही खरीदी है.

शेयरधारकों से इक्विटी लेने को इंडिया सीमेंट करीबकरीब 100 करोड़ रुपए खर्च करेगी.

रासी सीमेंट पिछले कई वर्षों से लगातार लाभ अर्जित कर रही है. पर मार्च 1997 को समाप्त वित्त वर्ष के दौरान शुद्ध लाभ में 40 फीसदी की कमी दर्ज की गई है. यह कमी चालू वित्त वर्ष में भी बरकरार है. दूसरी ओर चालू वित्त वर्ष की छमाही के दौरान दक्षिण भारत की कुल 10 कंपनियों में से केवल 3 के लाभ में मामूली वृद्धि दर्ज की गई है. इन 3 कंपनियों में इंडिया सीमेंट भी शामिल है.

इंडिया सीमेंट के 300 रु. के आफर के बाद से रासी का शेयर 140 रु. से बढ़ कर 250 रु. से भी ज्यादा पर पहुंच गया है. निवेशकों के लिए यह बड़ा अच्छा व सुनहरा मौका है और वे आफर मूल्य अथवा बाजार मूल्य जो भी ज्यादा हो, का लाभ ले सकते हैं.

मैकमिलन इंडिया लि.

ब्रिटिश कंपनी एच. एम. पब्लिशर्स होल्डिंग्स लि. ने इस भारतीय कंपनी के अधिग्रहण का खुला प्रस्ताव कंपनी के शेयरधारकों के समक्ष रखा है. प्रति शेयर आफर मूल्य 220 रु. रखा गया है. हालांकि ब्रिटिश कंपनी के पास इस कंपनी के 50.98 फीसदी इक्विटी शेयर पहले से ही हैं, पर अब 20 फीसदी इक्विटी शेयर आम शेयरधारकों से खुले प्रस्ताव के जरिए खरीद कर वह कंपनी पर अपना पूर्ण नियंत्रण स्थापित करना चाहती है.

चेन्नई स्थित मैकमिलन की कुल चुकता शेयर पूंजी 2.82 करोड़ रु. है. ब्रिटिश कंपनी ने 1898 में इस कंपनी की स्थापना भारत में अपनी शाखा के रूप में की थी. उस समय यह कंपनी मैकमिलन यू के लि. के नाम से जानी जाती थी. सन 1970 में यह कंपनी अपने मौजूदा नाम व रूप के साथ बाजार में स्थापित हुई, उस के बाद सन 1979 में फेरा कानून के तहत एच. एम. ने अपनी 60.02 फीसदी इक्विटी आई सी आई सी आई, भारतीय यूनिट ट्रस्ट व अन्य संस्थाओं को बेच दी. इस तरह ब्रिटिश कंपनी की इक्विटी हिस्सेदारी घट कर 39.98 फीसदी रह गई.

कंपनी अच्छा प्रदर्शन कर रही है तथा वर्ष 1997 के दौरान इस के लाभ, 36.37 करोड़ की बिक्री पर 10.96 करोड़ रहे. जब प्रवर्तक आम शेयरधारकों की भागीदारी कंपनी में नहीं चाहते तो शेयरधारकों को भी कंपनी से मुक्ति पा लेनी चाहिए.

एल्कान एल्यूमीनियम लि.

कनाडा की इस कंपनी ने भारतीय कंपनी इंडियन एल्यूमीनियम लि. (इंडाल) के अधिग्रहण को कंपनी शेयरधारकों के समक्ष स्टरलाइट इंडस्ट्रीज के जवाब में काउंटर आफर रखा है. एल्कान के पास इंडाल के 34.6 फीसदी शेयर पहले से ही हैं, लेकिन अब वह 20 फीसदी इक्विटी शेयर आम शेयरधारकों से खुले प्रस्ताव के जरिए खरीद कर स्टरलाइट इंडस्ट्रीज के अधिग्रहण प्रयासों को ध्वस्त करना चाहती है. स्टरलाइट के 90 रुपए के मुकाबले एल्कान का आफर प्रति शेयर 105 रुपए है.

कंपनी के मुताबिक इस अधिग्रहण का उद्देश्य इंडाल को आधुनिक तकनीक से लैस कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर और अधिक प्रतिस्पर्धी बनान है. इस के अलावा इंडाल की एक अन्य सहायक कंपनी उत्कल एल्यूमिना इंटरनेशनल लि. में एल्कान निवेश करना चाहती है.

कनाडियन समूह ने 31 दिसंबर 1997 समाप्त वित्तीय वर्ष के दौरान 7.9 अरब डा की संचित आय व 1.3 अरब डालर का स लाभ अर्जित किया है. यह कंपनी दुनिया सब से बड़ी फ्लैट रोल्ड एल्यूमीनियम उत्पा कंपनी है और 30 से ज्यादा देशों में स है.

एल्कान का आफर ठीक तो है स्टरलाइट के मुकाबले अनाकर्षक है. मात्र रुपए का फर्क कुछ भी नहीं है तथा इंडाल बाजार भाव भी लगभग इतना ही चल र निवेशक जिस भी प्रकार से अधिकतम ला

कंपनी का नाम	वर्ष	बिक्री/आय (लाख रु. में)	शुद्ध लाभ/हानि (लाख रु. में)	लाभांश (%)	ई.पी.एस. (रु.)	शेयर मूल्य (रु.)	प्रीमियम (रु.)	इश्यू खुलने/बंद होने की तिथियां	बाजार मूल्य ऊंचा/नीचा	
मेरिंड लि.	96	12,000	510	40	14.00	10	260	21 अप्रैल/	230.00	148.00
(अधिग्रहण)	97	12,336	320	40	8.80			20 मई 98	221.00	111.00
रासी सीमेंट लि.	95	33,310	2,710	20	16.5	10	300	15 अप्रैल/	133.00	86.00
(अधिग्रहण)	96	41,401	4,306	40	26.4			14 मई 98	140.00	58.00
	97	48,007	2,435	–	14.90				131.00	62.00
	97 (6 माह)	21,501	2,122	–	13.00				270.00	51.00
मैकमिलन इंडिया लि. (अधिग्रहण)	97	3,637	1,096	–	38.83	10	220	4 मई/ 2 जून	ट्रेडिंग नहीं	
एल्कान एल्यूमीनियम लि. (काउंटर आफर)	–	–	–	–	–	10	105	18 अप्रैल/ 18 मई	ट्रेडिंग नहीं	
ओसवाल ओवरसीज लि. (अधिग्रहण)	–	–	–	–	–	10	21	5 मई/ 4 जून	ट्रेडिंग नहीं	
				पुराने शेयर						
								खरीदें बेचें		
देना बैंक लि.	96	90,078	5,169	–	2.10	10	–	मौका देख	–	–
	97	1,10,291	7,282	12	3.50		–	कर बेच दें	27.50	19.00
होटल लीला वेंचर लि.	95	8,351	2,237	–	7.40	10	–	रोकें	102.0	45.00
	96	12,461	4,404	40	9.31				146.0	108.00
	97	13,100	4,515	40	14.69				124.00	67.00
	98	–	–	–	–				109.00	49.00

कर शेयर बेच सकते हों, बेच दें.

ओसवाल ओवरसीज लि.

नई दिल्ली की इस कंपनी के अधिग्रहण को मुरादाबाद के उद्यमी कुलवंत सिंह चड्ढा ने 21 रुपए प्रति शेयर का आफर शेयरधारकों के समक्ष रखा है. कंपनी के मौजूदा प्रवर्तकों अशोक ओसवाल व उन के सहयोगियों से 74 फीसदी इक्विटी खरीदने का करार किया जा चुका है. अधिग्रहण का उद्देश्य वित्त के अभाव में कंपनी की अधूरी परियोजनाओं को शीघ्र पूरा करना है.

वर्तमान में अधिग्रहणकर्ता के पास कंपनी के न तो इक्विटी शेयर हैं और न ही मताधिकार, लेकिन गत 16 अगस्त 1997 को अधिग्रहणकर्ता ने इस कंपनी में अपना एक निदेशक नियुक्त किया व बरेली चीनी प्लांट की बाबत 15 करोड़ रुपए असुरक्षित ऋण के रूप में निवेश किए. ओसवाल ओवरसीज की लुधियाना स्थित फैंसी यार्न इकाई भी ठीक से नहीं चल रही है.

अधिग्रहणकर्ता की योजना चीनी मिल पर ध्यान देने के अलावा कंपनी को विस्तार व बेहतर प्रबंधन के जरिए मजबूत करना है. चड्ढा चीनी, ब्यूटाइल रबर, क्राफ्ट पेपर, फार्मिंग, शराब, ट्रांसपोर्ट व सिनेमाहाल आदि तमाम धंधों में संलग्न है. वर्ष 1997 में चड्ढा के संपूर्ण कारोबार की टर्नओवर 150 करोड़ व सकल लाभ 5.50 करोड़ रुपए था.

आम शेयरधारकों से 20 फीसदी इक्विटी खरीदने के बाद चड्ढा के पास कंपनी की कुल 94 फीसदी इक्विटी आ जाएगी. जब वे 74 फीसदी इक्विटी पहले ही ले चुके हैं तो उन्हें आफर को देने की जरूरत क्या थी, समझ के बाहर है.

अधिग्रहण होने वाली कंपनी की कारोबारी स्थिति बहुत ढीली है तथा इस के कारोबारी परिणाम अनुपलब्ध है. इसी प्रकार कंपनी के

शेयरों की ट्रेडिंग भी काफी समय से शेयर बाजारों में नहीं हुई है. ओसवाल समूह की प्रतिष्ठा के लिहाज से निवेशकों को इस कंपनी से 2-3 सालों से कुछ भी नहीं मिला है, इसलिए अब जो भी कुछ मिल रहा है, ले लें.

पुराने शेयर

पुराने शेयरों में अभी भी कोई खास दम नहीं आया है. चुनिंदा खास शेयर मजबूत अवश्य है, पर आम शेयर अभी भी बहुत कमजोर चल रहे हैं. अब तो दौर अधिग्रहण व बी.आई.एफ.आर. का चल गया है. उद्यमी धड़ाधड़ अपनी कंपनियां बीमार घोषित कर रहे हैं और बचीखुची पूंजी आदि समेट रहे हैं. कब कौन सी कंपनी कब अधिगृहीत हो जाए या बंद हो जाए कुछ पता नहीं. इस बार समीक्षा को एक बैंक व एक अन्य कंपनी ली जा रही है. बैंक के न तो बंद होने की स्थिति है और न अधिग्रहण की.

देना बैंक

नवंबर 1996 में यह बैंक 20 रुपए के मामूली प्रीमियम पर पूंजी बाजार में आया था. इश्यू के वक्त कुल चुकता अंश पूंजी 146.82 करोड़ थी, जो कि बढ़ कर इश्यू बाद 206.82 करोड़ रुपए हो गई. आशा के विपरीत यह बैंकिंग शेयर अपने निवेशकों को जरा भी लाभ नहीं दे पाया जबकि इस की परफारमेंस अन्य से काफी अच्छी है.

पब्लिक इश्यू के बाद बैंक में भारत सरकार की इक्विटी 100 फीसदी से घट कर 71 फीसदी रह गई और बैंक का शेयर सूचीबद्धता पर 27.50 रुपए पर खुला. यानी निवेशकों को आशा के विपरीत हानि ही उठानी पड़ी है. वर्ष 1996-97 में बैंक ने 12 फीसदी, यानी कुल 30 रुपए के निवेश पर 40 पैसे से भी कम का रिटर्न दिया है.

कारोबार के लिहाज से बैंक का प्रदर्शन मध्यम रहा है. बैंक की सकल आय वर्ष 1996-97 में 22.43 फीसदी बढ़ी और सकल मुनाफा 41 फीसदी बढ़ा. इस दौरान बैंक की कुल शाखाओं की संख्या 1,143 हो गई व स्टाफ शक्ति भी घटी है. चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही में बैंक की आय व मुनाफे में कमी दर्ज की गई है. पूर्व वर्ष की छमाही के मुकाबले आय 17 फीसदी व मुनाफा 20 फीसदी कम हुआ है. बैंक की गैर निष्पादित संपत्तियों (एन.पी.ए.) की स्थिति भी खराब हुई है.

अभी तक कुल मिला कर निवेशकों की दृष्टि से कोई करिश्मा या चमत्कार इस बैंक ने नहीं दिखाया है. बैंकिंग शेयरों के प्रति निवेशकों की अच्छी धारणा गलत सिद्ध हुई है. निवेशकों को जब मौका लगे, इस शेयर से नजात पा लेनी चाहिए.

होटल लीला वेंचर लि.

80 के दशक में इस कंपनी का प्रवर्तन सी.पी. कृष्ण नायक, विवेक नायर व लीला स्काटिश लेस प्राइवेट लि. ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर के पंचतारा डीलक्स होटलों की स्थापना व उन के परिचालन के लिए किया था. कंपनी का पेंटा होटल्स प्राइवेट लि. से 10 वर्ष की अवधि के लिए बिक्री, विपणन व तकनीकी समझौता भी हुआ. वर्ष 1987-88 में पेंटा से करार तोड़ कर स्विट्जरलैंड के कैंपिंस्की होटल के साथ तकनीकी, बिक्री व विपणन करार किया गया.

कंपनी इस समय गोआ में एक पंचसितारा बीच रिजार्ट परियोजना पर काम कर रही है. इस में 300 विला होंगी. परियोजना का पहला चरण 180 विला का होगा. इस बाबत मालबाव समुद्र तट पर 40 एकड़ भूमि अधिगृहीत की जा चुकी है. कंपनी फिलहाल 2 होटल, लीला कैंपिंस्की व लीला बीच का संचालन कर रही है. वर्ष 199 को छोड़ कर कंपनी का कारोबारी प्रदर्शन व 1996 व 97 में ठीकठाक रहा है. वर्ष 1995 लीला कैंपिंस्की में काफी निवेश करना प जिस से कारोबारी परिणाम ढीले रहे.

इस कंपनी की मुख्य विशेषता यह है यह अपने मात्र 2 होटलों से ही उतना मुना कमा रही है, जितना 20-20 होटल वाली च कंपनियां कमा रही हैं. वर्ष 1996 व 97 में कं ने 124.61 व 131 करोड़ की बिक्री पर क्रम 44.04 व 45.15 करोड़ का मुनाफा अर्जित कि कंपनी की वर्तमान स्थिति के अनुसार शेयर निवेशकों को अब तक पर्याप्त लाभ दे चुक हाल ही में यह नीचे में 45-47 रुपए के आस पहुंच कर फिर उठा है. गत 3 सालों में इस न्यूनतम स्तर 45 से 50 रुपए के बीच र यानी इसे 40 से 50 रुपए के बीच खरी सकता है. वर्तमान में यह 60 रुपए के आ चल रहा है. इस भाव पर इसे रोका जा है, पर इस भाव पर इस की नई खरीद ठी रहेगी.

लेख ● भारती पांडे

सरप्राइज विजिट कितनी सुखद कितनी दुखद

आज की बेतहाशा दौड़ती जिंदगी और महंगाई के चलते किसी यात्रा के दौरान 'सरप्राइज विजिट' मेजबानों को नागवार गुजर सकती है या फिर आप को भी असुविधा झेलनी पड़ सकती है. ऐसी स्थिति बड़े शहरों, महानगरों में हो सकती है.

मन हुआ परिचित से मुलाकात का और आप चल पड़ें बस या आटो से. मगर गंतव्य पर जा कर द्वार पर मुंह चिढ़ाता ताला मिला. ऐसे में समय और धन का अपव्यय तो हुआ ही, साथ ही थकान भी.

द्वारिका जाते हुए चलती 'ट्रेन' में सुनंदा का मूड बना कि क्यों न लौटते हुए अपने रिश्ते की बहन के घर वडोदरा रुका जाए. उस ने अपने पति सुधीर से कहा, "प्रेरणा को 'सरप्राइज' देंगे. हमें अचानक आया देख वह ख़ुशी से फूली नहीं समाएगी. फिर इसी बहाने वडोदरा भी देख लेंगे."

"उस का पता है?" सुधीर ने पूछा.

"हां, है तो," उस ने याद करते हुए कहा,



परिचितों, प्रियजनों के घर बिनबुलाए मेहमान बन कर 'सरप्राइज' देने का मजा ही कुछ और है. पर आप की यह हरकत मेजबान और खुद आप के लिए भी तकलीफदेय बन सकती है.

"मणि सोसाइटी है...आकाशवाणी के सामने. आटो वाले से पूछ लेंगे."

सुधीर ने प्रस्ताव मान लिया.

द्वारिका से लौटते हुए वे वड़ोदरा स्टेशन पर उतर कर आटो में जा बैठे और चल दिए मणि सोसाइटी की ओर.

पूछताछ करतेकरते वे प्रेरणा के घर जा पहुंचे. मगर, प्रेरणा के स्थान पर द्वार पर लटका ताला उन का स्वागत कर रहा था. पूछने पर ज्ञात हुआ कि वह घंटा भर पहले घर से निकली है.

अब सुधीर ने चुहल की, "सरप्राइज तो तुम्हारी बहन ने दे दिया. मैं पहले ही सोच रहा था कि बिना बताए अनजान शहर में आना कहीं परेशानी का कारण न बने और वही हुआ."

दूसरों को 'सरप्राइज' देने के चक्कर में कहीं ऐसा न हो कि गंतव्य पर जा कर द्वार पर ताला मुंह चिढ़ाता मिल जाए.

"मुझे भी क्या मालूम था कि वह..."

चूंकि वापसी टिकट 3 दिन बाद के आरक्षित थे और दूसरा कोई उपाय नहीं था. सो उन्हें होटल में रुकना पड़ा. हो गई बेकार की मुसीबत, ऊपर से मूड खराब हुआ. सो अलग.

जनाब 'सरप्राइज विजिट' से खुशी व रोमांच भी हो सकता है और परेशानियां भी झेलनी पड़ सकती हैं. आइए, आप की 'सरप्राइज विजिट' वास्तव में रोमांचकारी बन सके, इस के लिए कुछ सुझाव प्रस्तुत हैं :

● यात्रा में जाते हुए एकाएक कोई याद आए तो रास्ते में फोन पर या तार द्वारा सूचित करें. आप की अचानक मिली सूचना उन्हें वास्तव में आश्चर्यचकि[त] कर देगी. साथ ही यदि उन क[ा] कोई कार्यक्रम भी होगा तो थो[ड़ा] आगेपीछे व्यवस्था हो सकती [है.]



● यदि इत्तफाक से आप [के] परिचित घर पर नहीं हैं तो [...] सूचना के कारण उन के पड़ो[सी] भी आप के ठहरने की व्यव[स्था] कर सकते हैं. यदि मेजबान कि[सी] दर्शनीय स्थल देखने जाने [...] तैयारी में हैं तो आप को भी [...] ले जाने की व्यवस्था जुटा स[कते] हैं.

● आजकल महंगाई आ[...] छू रही है. हर गृहिणी मही[...] राशन की व्यवस्था अपने [...] से करती है. अचानक ज[...] आप एकाएक उन पर [...] नहीं बन रहे हैं. अत: पा[...]

मेजबान को हलका सा संकेत देना उचित होगा.

● यों भी अचानक आमद से कई बार गलत वक्त पर पहुंचने से 'सरप्राइज' सुख का एहसास तनाव व खिसियाहट का सबक भी बन जाता है.

'सरप्राइज विजिट' वास्तव में बहुत बड़ा रोमांचकारी जोखिम तो है ही, अतः थोड़ी सी सावधानी और अकलमंदी इसी में है कि गंतव्य पर पहुंचने से पूर्व अवश्य जानकारी प्राप्त करें कि जिन से मिलना है, वे वहां पर हैं भी या नहीं, उन का कार्यक्रम कहीं जाने का है या नहीं इत्यादिइत्यादि.

सुदर्शना सपरिवार अपनी एक परिचिता से मिलने दिल्ली गई. लेकिन वहां पहुंचते ही ज्ञात हुआ कि उस के पति दुर्घटना के कारण 1 माह से अस्पताल में भरती हैं. ऐसी परिस्थिति में उस का सारा उत्साह ठंडा पड़ गया. परिचिता की दशा व भागदौड़ से सुदर्शना के मन में ग्लानि का भाव घर कर गया.

आप 'सरप्राइज विजिट' दीजिए, मगर हलका संकेत भी दे डालिए, ताकि आप की उमंगों और उत्साह में व्यवधान भी न पड़े और मेजबान को भी असुविधा न हो. ●



प्रौढ़

कहानी ● सुलक्षणा अरोड़

अशोक और आरती के पांव आज जमीन पर नहीं पड़ रहे थे. वे आज दादादादी बन गए थे. उन की बहू उमा ने आज एक सुंदर गोलमटोल पोते को जन्म दिया था. खबर सुनते ही आरतीजी की आंखों से आंसू बह चले. कमरे में सफाई करती हुई महरी को 50 का नोट निकाल कर थमाया. फिर तुरंत फोन की ओर भागीं कि सब को यह खुशखबरी सुना दें.

अशोकजी चुपचाप बैठे उन की उत्सुकता का आनंद ले रहे थे. बोले, "किसकिस को फोन करोगी? तुम्हारी सहेलियों की लिस्ट तो इतनी लंबी है कि सारा दिन फोन पर ही बीत जाएगा. तुम ऐसा करो कि केवल कुसुम को ही फोन करो, बाकी का सारा काम वह स्वयं पूरा कर देगी, क्योंकि उस के पेट में तो कोई बात पचती ही नहीं है..."

अपनी प्यारी सहेली की आलोचना सुन कर आरती जरा जोर से बोलीं, "इतनी अच्छी औरत है...सब के सुखदुख में काम आती है. बस, जरा ज्यादा बोलती है...तुम तो उस के पीछे ही पड़े रहते हो."

पूरा परिवार खुशी में डूब गया था. बधाई देने वालों का तांता लग गया था. अगला 1 सप्ताह घर के सब लोग बहुत व्यस्त रहे. बहू के लिए समय पर खाना भेजना, घर में बधाई देने आने वालों को संभालना और घर के सारे कामकाज संभालना आदि करतेकरते आरतीजी बुरी तरह थक जाती थीं.

अशोक पत्नी को बहुत प्यार करते थे. आरती की हर जरूरत को वह पूरा करते थे. बिस्तर पर लेटते ही वह आरती से पूछते, "बहुत थक गई हो न? लाओ, पैर दबा देता हूं."

और आरती दिन भर की बातें सुनातेसुनाते निसंकोच पैर उन के सामने फैला सपनों की नगरी में पहुंच जातीं.

दोनों के विवाह को हुए 30 वर्ष बीत चुके थे, पर आज भी दोनों के बीच प्यार की नरमी बनी हुई थी. झगड़ा भी होता था दोनों में पर रात होते ही सारे झगड़े भ
जाते थे. दोनों के बीच एक मौन सम
सा था कि दिन भर के झगड़ों को क
नहीं खींचना है.

7 दिन बाद बहू पोते को ले क
आ गई थी. पोते का नामकरण हुआ
रखा गया अमोल.

धीरेधीरे समय बीतने लगा
पाश्चात्य विचारों की महिला थी.
को नए तरीकों से पालना चाहती
ने बेटे के लिए अलग छोटा सा कमा
लिया था. अमोल को अलग सोने क
डाल दी गई. 4 साल का होतेहोते उ



अनुराग

मरे में सुलाने की योजना बनने लगी. इस जना का आरतीजी ने बहुत विरोध किया. बोलीं, "बहू, इतने छोटे बच्चे को अलग मरे में सुलाओगी? रात को डर लगा तो न में दहशत बैठ जाएगी...तुम्हारी आजादी खलल पड़ता हो तो हमारे कमरे में बिस्तर वा दो, पर उसे अलग कमरे में मत ाओ."

"मांजी, आप बेकार डरती हैं. बाहर देशों में जा कर देखें, वहां तो सभी छोटे चे मांबाप से अलग अपनेअपने कमरों में ते हैं..."

इसी बात को ले कर घर में तनाव शुरू गया...सासबहू में ठन गई. आरती अपनी नी मान्यताओं को ठीक बतातीं और उमा अपनी आधुनिक मान्यताओं को. आखिर जीत आरतीजी की हुई. उमा यह सोच कर चुप हो गई कि चलो कुछ ही महीनों की तो बात है, फिर तो अमोल को बोर्डिंग स्कूल में भेजना ही है. बोर्डिंग स्कूल वाली बात आरती से छिपा कर रखी गई थी.

अमोल का बिस्तर अब दादादादी के कमरे में पहुंच गया. उमा ने थोड़ी दूरी पर ही अमोल का बिस्तर लगवाया. अमोल जब सोने के लिए आ कर लेटता तो पहले तो अपने बिस्तर पर ही लेटता और जब देखता कि मां के कमरे का दरवाजा बंद हो गया. तो चुपचाप दादादादी के बिस्तर में आ घुसता. दोनों के बीच में लेटता और दादी से कहानियां सुनतेसुनते सो जाता.

4 महीने ऐसे ही बीत गए. दिसंबर की कड़कड़ाती सर्दी शुरू हो गई थी. सर्दी का मौसम आते ही आरती के जोड़ों का दर्द बढ़ जाता था. उठनाबैठना मुश्किल हो जाता था. वैद्यजी के तेल की मालिश और गरम बोतल का सेंक अनिवार्य हो जाता था. आरती को ठंड भी कुछ अधिक ही लगती थी. केवल लिहाफ की गरमी उन के लिए काफी नहीं होती थी. ऐसे में वह पति के लिहाफ में घुस जाती थीं. मनुष्य के शरीर की गरमी की बात ही कुछ अलग होती है. पति जब अपनी वजनी टांगें आरती की टांगों पर रखते, तो उन के दबाव के कारण आरतीजी की टांगों

आरती और अशोक की 30 साल की निकटता पोते के जन्म से थोड़ी कम हो गई. पर पोते के सान्निध्य व प्यार के आगे आरती को सब मंजूर था. लेकिन आज वही पोता उन से दूर चला गया था. फिर भी एक संतुष्टि उन के मुख पर झलक रही थी...

के दर्द को जरा राहत मिलती थी. तब वह चैन से सो जाती थीं. पर अब अमोल के उन के कमरे में सोने के कारण वह पति के साथ नहीं सो पातीं. अधिक ठंड के कारण अमोल भी उन के लिहाफ में आ घुसता. तब वह न तो पति से मालिश के लिए कह पातीं और न ही उन के लिहाफ में घुस पातीं. किसी तरह दिसंबर का महीना बीता और जनवरी का आ पहुंचा.

16 जनवरी को अमोल को ऊटी के बोर्डिंग स्कूल के लिए रवाना होना था. उस को हास्टल भेजने की पूरी तैयारियां हो चुकी थीं. उमा और नरेश की पूरी तैयारियां हो चुकी थीं. उमा और नरेश बेटे को छोड़ने जा रहे थे.

आरती उदास थीं. अमोल से अलग होने का दुख उन्हें खाए जा रहा था. उन का विरोध भी अब किसी काम नहीं आया था. अमोल के सुखद भावी जीवन के लिए उन्हें पोते का वियोग सहना ही था. सुबह होते ही नरेश और उमा रोते हुए अमोल को ले कर घर से निकल चुके थे. आरतीजी अपने कमरे से बाहर नहीं आई थीं. पति ने ही बाहर आ कर पोते को अलविदा कहा था.

वह सारा दिन आरती का उदासी में बीता. बारबार उन की आंखें भर आती थीं. रात हुई. आज अमोल का बिस्तर उन के कमरे में नहीं था. ठंडे बिस्तर में घुसते ही उन की बूढ़ी हड्डियों में दर्द की लहर दौड़ गई थी. 'हायहाय' करते हुए वह घुटनों को मलने लगी थीं. अशोकजी तेल की बोतल उठा लाए और धीरेधीरे उन के घुटनों की मालिश करने लगे.

आज बहुत दिनों बाद पति के हाथों से मालिश करवा कर वह क्षण भर के लिए अमोल को भी भूल गई थीं. मालिश के बाद अशोकजी ने मोटी पट्टियां आरतीजी के घुटनों पर लपेट दीं. उन को जल्दी नींद नहीं आती थी. वह सोने से पहले थोड़ी देर कुछ न कुछ अवश्य पढ़ते थे. आज पढ़ने के बाद बत्ती बुझा कर आरती के लिहाफ में आ

घुसे और आदतन अपनी टांगें आरतीजी
टांगों पर रख दीं. प्यार और स्नेह की ग
से आरतीजी को महीनों बाद आराम की
आई. थोड़ी ही देर में उन की गहरी
सांसों से अशोकजी जान गए थे कि वह
गई हैं.

सुबह होने पर आरतीजी की नींद खु
स्वयं को पति के साथ सोया देख कर
हड़बड़ा कर उठीं. उन्हें अचानक याद अ
कि कहीं अमोल ने तो उन्हें इस प्रकार स
नहीं देख लिया. पर दूसरे ही क्षण
जान गई कि अमोल तो घर से जा चुका
वह स्वयं और अशोकजी ही कमरे में
अशोकजी गहरी नींद में थे. उन्होंने प
और आभार से अशोकजी की तरफ दे
और आदतन उन का हाथ उठा कर
लिया.

आरतीजी के स्पर्श से अशोकजी
से जाग गए. फिर शरारत भरी आवाज
बोले, "आज सुबहसुबह मुझ पर इतनी
क्यों? इरादे तो नेक हैं?"

"बसबस...आप को तो कुछ
सूझता ही नहीं है."

"तुम सामने हो तो और क्या
सकता है? और आज तुम यह भी नहीं
सकती हो कि अमोल कमरे में है. इ
चुपचाप थोड़ी देर और लेट जाओ."

पति के प्यार भरे मनुहार को स
आरतीजी लजा गईं, पर इनकार न कर
पति की छाती पर सिर रख कर वह
यादों में खो गईं.

दरवाजे की खटखट की आ
दोनों एकसाथ उठे. नौकर चाय ले क
था. आज आरती ने बिना नहाए, ि
ही बैठ कर अशोकजी के साथ च
दोनों चाय पीतेपीते अमोल की याद
गए. आरतीजी की आंखें डबडबा
अमोल के बिना उन्हें फिर से
निकटता प्राप्त हो गई थी. 'बुढ़ा
पतिपत्नी को एकदूसरे की निकट
ही होती है', यही सोचते हुए जब
सुबह की याद आई तो वह लजा

पायल हो गई मतवाली

चुनरी कुछ सरकी, कुछ ढलकी,
अधरों पर छाई है लाली,
बिंदिया कुछ कहती है गुपचुप,
यौवन रस की छलकी प्याली.

कुछ भाव रंगीले हृदय में,
आए और आ कर चले गए,
भंवरे, कलियों की गुनगुन को,
सुन कर गोरी मुसका ली.

कुछ दीवानापन अधरों का,
कुछ शोख अदाएं नयनों की,
जब पवन गा रही थी सरगम,
तो पायल हो गई मतवाली.

कुछ युवा तरंगें सपनों की,
सच होने को हैं तरस रहीं,
लो दूर कहीं शहनाई की,
धुन सुन कर गोरी मुसका ली.

–पूनम भट्ट




फिर भी भय
कहानी ● चित्तू



सामने समुद्र का अनंत विस्तार था. सूरज का लाल चक्का बादलों के बीच अठखेलियां सा करता समुद्र में समाने को आतुर था. बारिश की संभावना थी, फिर भी जुहू बीच के तट के बालू पर कुछ जोड़े जमे बैठे थे. रात घिरने में अभी देर थी.

रूपा ने सोमेश्वर के आगोश में पड़ेपड़े उस के मुखमंडल की ओर देखा, जहां विषाद की घनी छाया थी. उसे अपनी ओर घूरते देख सोमेश्वर मुसकराया, "क्या देख रही हो?"

"यही कि अभी तक तुम भयमुक्त नहीं हुए," रूपा बोली, "अब तो हम अपने प्रदेश से काफी दूर हैं."

"फिर भी क्या यहां खतरा नहीं है?" सोमेश्वर बोला, "लाखों की भीड़ में भी कुछ चेहरे पहचान ही लिए जाते हैं."

"जब अग्नि में कूदे हो, तो फिर भय कैसा?" रूपा बोली, "फिर हम एक अच्छे लक्ष्य के लिए काम कर रहे हैं."

'रूपा ठीक कहती है. आग में कूदने के बाद जलने का भय नहीं करना चाहिए,' सोमेश्वर सोचने लगा, 'फिर भी भय तो है ही, अपने जीवन और सम्मान के खो जाने का भय किसे नहीं होता. मैं ने यह कैसा रास्ता चुन लिया है, जिस में पलायन और विस्थापन ही मिल रहा है. अपने गांव से निकल कर मैं असम के छोटेबड़े शहरों के

रूपा की खातिर सोमेश्वर को अपना प्रदेश छोड़ना पड़ा था. एक दहशत भरे माहौल में रह कर अब वह भविष्य की सोच परेशान था. क्योंकि कुछ करने से पहले एक भय उस के जेहन में बारबार उठ रहा था...

चक्कर लगाता हुआ गुवाहाटी पहुंचा, मगर वहां भी चैन नहीं था. वहां से अचानक ही पलायन कर मुंबई आना पड़ गया...'

"क्या सोचने लगे?" रूपा की आवाज सुन कर वह चौंका, कहीं यह मेरे भय और निराशा को भांप न ले. इसलिए उस ने उसे अपनी बलिष्ठ बांहों में भींच लिया.

"जरा आराम से," रूपा कसमसा कर अपने बढ़े पेट पर हाथ फेरते हुए बोली, "अब कुछ ही दिनों की तो बात है, इस के बाद हमारा पुवाली (बच्चा) हमारी नजरों के सामने होगा."

"मगर खर्चा कहां से आएगा?" सोमेश्वर चिंतित स्वर में बोला.

"इस की चिंता तुम क्यों करते हो," रूपा बोली, "बंशी दा जब यहां तक लाए हैं, तो आगे भी वही व्यवस्था करेंगे."

"खर्च की व्यवस्था?" बंशीधर हंस पड़े, "हरा सोना उगलने वाला है हमारा प्रदेश, जहां एक से बढ़ कर एक मालदार मारवाड़ी बैठे हैं. छोटीबड़ी कंपनियों के प्रबंधक और निदेशक यहां लाखों में खेल रहे हैं, वही हमारी व्यवस्था करेंगे."

"मगर बंशी दा, हमारा काम गुपचुप होना चाहिए," सोमेश्वर की आवाज थरथरा उठी, "कहीं पकड़े न जाएं."

"तुम हमारा खेल देखते रहो," बंशीधर उस के कंधे पर हाथ रखते हुए बोले, "अभी मुझे तुम जैसे नौजवानों की जरूरत है...तुम्हारी संतान भी तुम जैसी बहादुर हो, हम लोग यही चाहते हैं."

"हम से गलती हो गई, बंशी दा," सोमेश्वर सिर झुकाए बोला, "मुझे धैर्य से काम लेना चाहिए था. अभी तो हमारी शादी भी नहीं हुई. घर के लोग और गांव वाले क्या सोचेंगे, यही सोचसोच कर परेशान हूं."

"अब सोचने का समय निकल गया. अभी तो रूपा के प्रसव का इंतजाम करना है," बंशी दा उस के कंधे थपथपाते हुए बोले, "जाओ, सो जाओ, रात बहुत हो गई है."

मगर उस की आंखों में नींद न थी. वह होटल के कमरे से बाहर निकल आया. उस समय ट्रैफिक न होने की वजह से सड़कें कितनी विशाल लग रही थीं. विद्युत प्रकाश के कारण काली सड़कें साफ चमक रही थीं, अचानक सर्र से कोई गाड़ी गुजरती और रात के अंधेरे को चीरती दूर निकल जाती.

दूरदूर तक बहुमंजिला इमारतों के फ्लैटों में अंधेरा बढ़ रहा था. दूर समुद्र की लहरें पछाड़ खाखा कर गिर रही थीं और समुद्र गुरु गंभीर आवाज में गर्जना कर रहा था.

सोमेश्वर सोचने लगा, 'कितना अंतर है समुद्र और पहाड़ों में. मेरे गांव से नागालैंड की पहाड़ियां दिखती थीं. गांव के साप्ताहिक बाजार में नागा लोग मुरगे, अंडे, हरी सब्जियां, कच्चे बांस के फूल और जाने क्या कुछ बेचने आया करते थे. मैं भी अपने बाबा के साथ बाजार में खरीदारी को जाया करता था. कितना अंतर है यहां और वहां की जिंदगी में. वहां का जीवन कितना सीधासादा था.

'लेकिन यहां का जीवन कितना टेढ़ामेढ़ा और उलझनों भरा है. फिर मैं ने जो रास्ता चुना है, वह तो चक्रव्यूह ही है. व्यूहभेदन के लिए ही तो मुझे वहां से भागना पड़ा. मगर यह कैसी अजीब बात है कि जितना ही मैं इस में से निकलना चाहता हूं उतना ही उलझता जाता हूं.'

पहले उस ने पुलिस और फौज की नजरों से बचने के लिए गांव से पल

किया. पार्टी के कार्यों की खातिर उस ने अनगिनत गांवों, शहरों की दौड़ लगाई. तीरकमान से ले कर बंदूक और बमों का जुगाड़ किया. हर काम के पीछे खतरा और पैसों की जरूरत महसूस होती थी. फिर दूसरे प्रदेशों से आए लोगों से जबरन चंदा वसूली का भी काम शुरू किया गया.

अंततः उसे गुवाहाटी में ठौर मिला. पार्टी प्रमुख ने उस की सक्रियता को देखते हुए उसे गुवाहाटी में ही रहने का आदेश दिया, जहां उसे थोड़ी राहत मिली.

एक दिन जब रूपा उस से मिली तो वह उसे देखता रह गया. अपार सौंदर्य की स्वामिनी रूपा उसे पहली ही नजर में भा गई थी वह खुद को उस की रूपराशि में डुबो चुका था. गुवाहाटी के कामाख्या मंदिर में गुपचुप वह उस से गंधर्व विवाह भी कर चुका था.

पार्टी के लोगों को कुछ पता न था.



पता तो तब चला, जब वह गर्भवती हो गई. पार्टी प्रमुख ने पहली बार उस के इस कृत्य पर अप्रसन्नता व्यक्त की थी. वैसे उस का नाराज होना वाजिब भी था, क्योंकि चुनाव की सरगरमी जोरों पर थी. उसी के साथ पार्टी के प्रमुख लोगों की धरपकड़ तेजी से हो रही थी. खास कर उसे पुलिस बेसब्री से तलाश कर रही थी, क्योंकि 3-4 बम विस्फोटों में उस का नाम आ चुका था.

कभीकभी उसे भी लगता कि आखिर

"यह लो सोमेश्वर, 1 लाख हैं. अब हमारा काम आसानी से हो जाएगा," बंशीधर ने हाथ में रुपयों का ढेर पकड़े हुए कमरे में प्रवेश किया.

यह बमविस्फोट और बेकुसूरों की हत्या किसलिए? वह चैन से जीना चाहता था और अपना परिवार बसाना चाहता था.

पहले तो यही प्रस्ताव आया कि रूपा का गर्भपात करा दिया जाए. मगर इस का उस ने जम कर विरोध किया. दिन गुजरते गए. अंततः गर्भपात कराने का विचार उस के मन में भी आया, किंतु तब तक देर हो चुकी थी. गर्भपात कराने से रूपा की जान को भी खतरा था.

एक तरफ रूपा की जान का खतरा तो दूसरी तरफ स्वयं के पकड़े जाने का भय था. उस के पकड़े जाने के बाद पार्टी के सदस्यों का हौसला पस्त हो सकता था, इसलिए आननफानन में उस के प्रदेश छोड़ने की व्यवस्था की गई.

पहली बार उस ने नाम बदल कर हवाईजहाज की रोमांचक यात्रा की और मुंबई में कदम रखा. फिर वहीं एक व्यक्ति के घर में कुछ दिन गुप्त रूप से रूपा के साथ रहा. उस के बाद उन्हें होटल में स्थानांतरित कर दिया गया.

'कहां से आए होंगे इतने रुपए? किस ने दिया होगा इतना सारा रुपया कि वह हवाई यात्रा कर सके और मुंबई जैसे महानगर के महंगे होटल में ठहर सके?' वह यही सब कुछ सोच ही रहा था कि उसे रूपा की चीख सुनाई दी. वह तुरंत कमरे के अंदर गया.

रूपा प्रसव पीड़ा से चीख रही थी. सोमेश्वर ने तुरंत बंशीधर को फोन मिलाया.

बंशी दा आने के पूर्व ही टैक्सी के लिए फोन कर चुके थे. उन दोनों ने महिला बेयरों की मदद से रूपा को टैक्सी में सवार किया. टैक्सी उन लोगों को साथ ले शीघ्रता से एक प्राइवेट अस्पताल के सामने खड़ी हो गई.

डाक्टर ने रूपा का मुआयना कर के बताया कि स्थिति खतरनाक है. यह एक 'सर्जिकल केस' है, जिस में लगभग 60 हजार रुपए खर्च होने की संभावना है.

'60 हजार?' सोमेश्वर का मुंह खुला का खुला रह गया. 'इतना रुपया कहां से आएगा? कौन देगा इतना रुपया और क्यों देगा?'

तभी बंशीधर ने 1 हजार रुपए डाक्ट के सामने मेज पर रख दिए और उसे सोमेश्व की बांह पकड़ कर बाहर निकल आए.

"बंशी दा, इतना रुपया कहां आएगा?" सोमेश्वर बोला, "कौन देगा ह इतने रुपए?"

"सारा पैसा वही लोग देंगे जो हम प्रदेश के हरे सोने को रुपयों के अंबार बदलते हैं," बंशीधर गंभीर आवाज में बोल "बस, तुम चुप रहो, चिंतित मत होओ...अ मेरा काम देखते जाओ."

बंशीधर ने टेलीफोन कक्ष में घुस क फोन मिलाया. उधर से कोई आवाज आ जिस के जवाब में वह बोले, "हां...'डिलीवर के खर्च की भरपाई आप की कंप करेगी...कंपनी के मालिक का घर अ मुख्यालय यहीं है...दिक्कत न होगी...अ लोगों ने हमारे हरे सोने से बहुत कमाया है 1 लाख ज्यादा नहीं होते...हमारे पास सम ज्यादा नहीं है...हां, हमारे गर्भस्थ शिशु क कुछ हुआ तो आप लोगों के बच्चों की ख नहीं...हां, आप का तो इस मामले में क अनुभव भी रहा है न...कहीं फिर पुरा कहानी न दोहराई जाए..."

बंशीधर ने फोन रख दिया. उन का चेह निर्विकार था, मानो कुछ हुआ ही न हो. म सोमेश्वर का सर्वांग कांप उठा, 'तो पैसे व्यवस्था इस प्रकार होती है? एक गर्भ शिशु की खातिर बच्चों की हत्या धमकी...कितनी शर्मनाक बात है. क्या ठीक होगा?' उस की आंखों में कितने सवाल थे. मगर वह बंशी दा से सवाल कर सकता था, आखिर उसी की खाति वह यह सब कर रहे थे.

सोमेश्वर की नजरों के समक्ष 7 पुराना एक दृश्य घूम गया. बड़े भाई की का पहला प्रसव था. घर में उत्सव सा था. बाबा बड़े प्रसन्न थे, मां पूरे गांव प्रसव का समाचार सुनाती फिर रह प्रसव के बाद बड़े भोज का आयोजन

गया था.

मगर उस का बच्चा तो एक पराए शहर में चोरों की तरह जन्म लेने वाला था. और जिस की खातिर धमकियों के बल पर हजारोंलाखों रुपए इकट्ठा किए जा रहे थे. 'क्या यह ठीक है? क्या यह उचित होगा?' मगर बंशी दा तो जैसे कुछ सोचने का अवसर ही नहीं देते. उन की आवाज में दृढ़ता और कठोरता है.

'मगर ऐसा बच्चा, जो भय, तनाव और दहशत के माहौल में पैदा होगा, उस का जीवन कैसा होगा? हमें क्या कमी है, जिस के लिए हम यह सब संघर्ष कर रहे हैं? सभी स्थान और सभी प्रदेशों में तो लूट और भ्रष्टाचार है, अनाचार और अत्याचार है...और गरीबी, वह तो हमारे प्रदेश से कहीं अधिक दूसरे प्रदेशों में है. तभी तो दूसरे प्रदेशों के लोग हमारे प्रदेश में आते हैं.

'यह ठीक है कि उन के पास समृद्धि है, संपत्ति है, जो उन्होंने हमारे प्रदेश में ही बनाई है. मगर हम वह संपत्ति और समृद्धि क्यों नहीं बना पाते? कहीं हमीं लोगों में तो खोट नहीं. क्यों हम अपने आलस को त्याग नहीं पाते? क्यों नहीं हम भी उद्यमी बनते?'

ऐसे ही बीसियों सवाल उस के दिमाग में भरते चले जा रहे थे. अचानक बंशीधर ने कमरे में प्रवेश किया. उन के मुख मंडल पर विजेता की मुसकान थी. हाथ में लिए हुए बैग को खोल कर रुपयों का ढेर लगाते हुए बोले, "यह लो, सोमेश्वर, 1 लाख हैं...अब हमारा काम आसानी से हो जाएगा."

'शिशु का जन्म तो आसानी से हो जाएगा, मगर जब वह अपनी जन्म की कथा सुनेगा तो क्या कहेगा? दहशत भरे माहौल में, धमकी के बल पर ऐंठे गए रुपयों के द्वारा उस का जन्म हुआ था. तब यह सुन कर उसे कैसा लगेगा. और फिर अभी खतरा टला कहां है. मुंबई से असम की वापसी क्या इतनी आसान होगी. जगहजगह पुलिस, फौज और खुफिया विभाग की टोह...,' वह फिर भय की दुनिया में विचरण करने लगा था. ●


पोस्टर
न जाने कौन पोस्टर चिपका कर दीवार गंदी कर गया.
अपना शहर साफ रखें
मैं अभी इसे उतार देता हूं.
अरे! इससे तो रंग उतरने का धब्बा बन गया.
हाय! कितना भद्दा दिख रहा है. पुताई करानी पड़ेगी.
श्रीमतीजी, इस दीवार का प्लास्टर बहुत कच्चा है. पहले इसे ठीक करा लें.
!



नया करने से पहले पुराना व कमजोर प्लास्टर उतारना पड़ेगा.
?
धौड़
इस दीवार की ईंटें और चिनाई बहुत कच्ची हैं. पहले उन्हें ठीक कराइए.
तभी
हैं!! अब दूसरी दीवार पर कोई पोस्टर लगा गया.
नहीं ऽऽऽ!!
इसे हाथ भी मत लगाना. कहीं उस का भी... ....

पोल खुलने के बाद

सरिता, बीस साल पहले, अप्रैल (प्रथम) 1978

कहानी ● चंद्रशेखर अगस्त्य

सुबह से ही घर को सजाने और पड़ोस से उधार ली गई चीजों को करीने से सजाने का कार्य तेजी से चल रहा था. संगीता को देखने लड़के वाले जो आ रहे थे. अन्य बहुत से भारतीय परिवारों की तरह लड़के वालों पर अपनी संपन्नता की धाक जमाने के लिए अड़ोसपड़ोस से चीजें उधार ले कर स्वागत की तैयारी करीबकरीब पूरी हो चुकी थी.

लड़के वालों के जलपान के लि शहर के सब से महंगे होटल से खाना ला बड़े भैया जा चुके थे. यह तय हुआ था कि जब खाने की चीजें परोसी जाएं तो क जाए कि 'ये सब संगीता के हाथों की ब हैं.'

संगीता की मां कमांडर की तरह



के सदस्यों को आदेश दिए जा रही थीं. वाकई किसी भारतीय लड़की की शादी करना किसी मोरचे को फतह करने से कम थोड़े ही है.

सारी तैयारियां होने के बाद संगीता के सजने का नंबर आया. उस की मां उसे अपने हाथों से सजा रही थीं, इस कार्य में न जाने इत्र की कितनी शीशियां और फेस पाउडर के कितने डब्बे शहीद हुए. आखिर तीन घंटे के अथक परिश्रम के पश्चात संगीता का मेकअप पूरा हुआ. इस



संगीता और राजेश के पोल खुलने के बाद परिवार वाले एकदूसरे पर अपनीअपनी संपन्नता की झूठी धाक जमाना चाहते थे. इस के लिए उन्होंने अड़ोसपड़ोस से चीजें उधार मांगने में भी संकोच नहीं किया. पर जब पोल खुली तो...

कठिन परिश्रम के बाद मांबेटी दोनों ने एक लंबी सांस ली. लड़के वालों के आने तक संगीता ने एक पत्रिका को पढ़ना आरंभ किया. फिर उस की मां अपना मेकअप करने चली गई.

थोड़ी देर बाद संगीता की मां आईं और बेटी को पत्रिका पढ़ते हुए देख कर बोलीं, "संगीता बेटी, अपना चश्मा उतार दो. कहीं लड़के वालों के सामने चश्मा पहन कर मत आ जाना. हम ने उन्हें यह नहीं बताया है कि तुम चश्मा लगाती हो. शादी हो जाने दो, फिर तुम जब चाहे चश्मा पहनना."

"लेकिन, मम्मी, अगर मैं ने चश्मा उतार दिया तो मुझे तो कुछ भी नजर नहीं आएगा."

यह वास्तव में बड़ी विकट समस्या थी. चश्मे के बिना तो संगीता को आदमी चूहे जितने नजर आते थे. लेकिन लड़की की शादी का मामला हो और बीच में अड़चनें आएं तो उन का हल निकल ही आता है.

मां ने बेटी से कहा, "सुनो, बेटी, एक काम करते हैं. उन लोगों के आते ही दरवाजा मैं जा कर खोलूंगी. लड़के के मांबाप के अंदर आने तक मैं उन के साथ रहूंगी. तुम अपना चश्मा उतार कर अपने पापा का हाथ पकड़ कर आना. आवाज की दिशा का अनुमान लगा कर लड़के के मांबाप के पैर छू लेना. इतने में मैं तुम्हें सोफे पर बिठा दूंगी."

मां की यह बात सुन कर संगीता ने सहर्ष अपनी स्वीकृति दे दी.

यह तो हुआ तसवीर का एक पहलू. अब लड़के वालों की बात सुनिए. वे भी कुछ कम चिंतित नहीं थे. वैसे लड़का देखने में अच्छा था और एक अच्छे पद पर भ[illegible] आसीन था. इस ऊंचे पद पर पहुंचने के लि[illegible] उसे दिनरात पढ़ाई करनी पड़ी थी. फलस्वरू[illegible] नजर उस की भी काफी कमजोर पड़ चुक[illegible] थी और चश्मा उस के चेहरे की शोभा बढ़[illegible] लगा था.

लड़की वालों की तरह लड़के की [illegible] भी अपने बेटे के चश्मे के कारण का[illegible] परेशान थीं. वह चाहती थीं कि शादी ह[illegible] तक चश्मे वाली बात का पता लड़की वा[illegible] को न चले. लड़की वालों के यहां जाने[illegible] पूर्व वह इसी सोच में डूबी रहीं कि आ[illegible] चश्मे का क्या किया जाए.

आखिर उन्हें एक उपाय सूझा और [illegible] लड़के से बोलीं, "राजेश, मैं नहीं चा[illegible] कि शादी होने तक लड़की वालों को [illegible] बात का पता चले कि तुम चश्मा लगाते[illegible] क्या तुम चश्मा उतार कर नहीं चल सक[illegible]

समस्या काफी विकट थी. आखिर इस[illegible] हल भी ढूंढ़ निकाला गया. अपने जीवन[illegible] का सारा अनुभव काम में लाती हुई [illegible] की मां बोलीं, "ऐसा करते हैं. जैसे ही[illegible] लड़की वालों के यहां पहुंचे, तुम इ[illegible] अपना चश्मा उतार देना. फिर अपने पि[illegible] सहारा लेते हुए तुम चुपचाप मेरे पीछे[illegible] आना. दरवाजा खुलते ही मैं लड़के के [illegible] से बातें करने लग जाऊंगी. फिर तु[illegible] आवाज से दिशा का अनुमान लग[illegible] लड़की के मांबाप के पैर छू लेना [illegible] लड़की वाले यह सोचेंगे कि लड़का[illegible] सीधा है और बड़ों का आदर करना[illegible] है. बाकी मैं संभाल लूंगी."

एक सच्चे आज्ञाकारी पुत्र की भांति जेश ने सिर हिला कर हामी भर दी.

लड़की वालों की तरह लड़के वाले अपनी संपन्नता दिखाने के लिए पड़ोसी कार मांग लाए, पड़ोसी ने कार देने में छ हुज्जत भी की क्योंकि कार उस की पनी नहीं थी, पर राजेश के मित्र होने के ारण आखिर उस ने उन्हें कार की चाबी दी.

संयोग से लड़के के पिता और लड़की पिता दोनों ही इस झूठे दिखावे के एकदम रुद्ध थे. राजेश के पिता ने अपनी पत्नी समझाते हुए कहा, "पार्वती, क्यों इतना दिखावा कर रही हो?"

इस के उत्तर में राजेश की मां ने फिलासफर की भांति बोलते हुए कहा, "एक बात पूछूं, जितना गुड़ डालोगे उतना ही मीठा होगा न?"

"लेकिन तुम इस समय गुड़ की बात क्यों ले बैठी हो?"

"आप समझते क्यों नहीं हैं? अगर हम अपने संपन्न होने का दिखावा न करें तो हमें दहेज में क्या मिलेगा? हमारी शान देख कर लड़की वाले हमें ज्यादा से ज्यादा देने का प्रयत्न करेंगे. क्या आप के मांबाप ने भी यही कुछ नहीं किया था?"

"मगर वह जमाना कुछ और था. और क्या तुम उस का परिणाम इतनी जल्दी भूल गईं? बाद में सारी बातों का पता लगने पर

शुक्र है, यह भाई साहब के मित्र निकले, रना कोई और होता तो शायद..." संगीता ी मां ने राजेश की मां से कुछ कहना चाहा.



दोनों परिवारों में कितना तनाव पैदा हो गया था."

राजेश के पिता समझातेसमझाते हार गए और अंत में वही हुआ जो राजेश की मां ने चाहा.

उधर संगीता के पिता ने भी अपनी पत्नी से इस झूठे दिखावे का विरोध करते हुए कहा, "संगीता की मां, आखिर इतना आडंबर करने की क्या जरूरत है? लड़के वाले लड़की को देखने आ रहे हैं, न कि हमारी संपन्नता को." इस के जवाब में संगीता की मां बोलीं, "क्या जी, कुछ पता भी है कि आजकल लड़कियों का ब्याह करना कितना दुष्कर काम है? अगर मैं यह सब न करूं तो लड़के वाले यहां झांकेंगे भी नहीं. मेरे मांबाप ने भी यही किया था तभी तो तुम खिंच कर चले आए थे."

"तो तुम्हें उस का नतीजा भी तो याद होगा. शादी के बाद दोनों परिवार वाले एकदूसरे का मुंह तक देखना पसंद नहीं करते थे."

"लेकिन मेरी चतुराई से वह तनाव भी शीघ्र ही समाप्त हो गया था."

पतिपत्नी की जिद में अकसर पत्नी की ही विजय होती है. आखिरकार यहां भी संगीता की मां की ही विजय हुई.

आखिर मांगी हुई कार में बैठ कर लड़के वाले शान से लड़की वालों के यहां पहुंचे.

जिस तरह बम के फूटते ही चारों तरफ एक खलबली सी मच जाती है, ठीक वैसा ही हाल लड़के वालों को देख कर लड़की वालों के यहां हुआ.

कार से नीचे उतरते ही राजेश ने अपना चश्मा जेब में डाल लिया और अपने पिता का हाथ पकड़ कर आगे बढ़ा. राजेश की मां तेजी से आगे गई और दरवाजे पर लगी काल बेल बजाई. लड़की वाले तो अंदर तैयार ही बैठे थे. लड़की की मां ने झट से दरवाजा खोला.

"हीं...हीं...हीं...आइए, आइए. रास्ते में
कोई तकलीफ तो नहीं हुई, आप क
औपचारिकता निभाते हुए लड़की की म
पूछा.

"अजी तकलीफ कैसी? हम तो
से अपनी कार में आए हैं," अपनी संप
की धाक जमाने के लिए राजेश की म
कहा.

"अच्छा, बैठिए पहले एकएक ब
कोकाकोला हो जाए."

"कोकाकोला," लड़के की म
आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा.

"जी हां, क्या करें अब? आग ल
सरकार को जिस ने देश में कोकाकोल
मिलना ही बंद करवा दिया. अब इसे अ
से इंपोर्ट करवाना पड़ता है. हमारे य
इस के बिना काम ही नहीं चलता.
अच्छा हुआ कि हमारे भाई साहब अ
में बिजनेस करते हैं, वह अकसर कोक
के कनसेनट्रेट की शीशियां भेज
शरबत के एक गिलास में बस कु
डालनी पड़ती हैं और कोकाकोला
अपनी संपन्नता दिखाने का मौका न
हुए संगीता की मां ने कहा.

लड़के की मां भी कम नहीं थीं.
भी अपनी शान बघारने के लिए वि
किस्से गढ़ कर बयान कर दिए.
लड़के की मां और लड़की की मां
कब तक एकदूसरे पर अपनी संप
धाक जमाती रहतीं कि अचानक ल
लड़की अपनीअपनी माताओं के
अनुसार टटोलते हुए आगे बढ़े
एक हलकी सी टक्कर हो गई.
सोचा कि यह लड़की की मां है अ
ने सोचा कि यह लड़के की मां
एकदूसरे के पैरों पर झुके और
बोले, "पांव लागूं मांजी."

मरदानी आवाज सुन कर लड़
उसे लगा अवश्य ही उस से भूल
लड़का भी लड़की की माधुर्य से
सी आवाज सुन कर समझ गय
लड़की की मां नहीं हो सकती.

ाई सामने आ ही गई, जिसे दोनों पक्ष
ाने की भरसक कोशिश कर रहे थे.
की ने झट से अपना चश्मा लगा लिया.
के ने भी अपना चश्मा लगा लिया. दोनों
दूसरे को देख कर बुरी तरह झेंपे. लड़का
उधर देखने लगा. लड़की लाज के मारे
र चली गई.

"हीं...हीं...हीं...लड़के की नजर जरा
जोर है. डाक्टर ने कुछ दिन चश्मा लगाने
लिए कहा है," बात को संभालते हुए
के की मां ने कहा.

"हीं...हीं...हीं...अजीब संयोग है. संगीता
भी डाक्टर ने यही कहा है," लड़की
मां ने भी बिना पूछे कहा.

"हीं...हीं...हीं..."

"हीं...हीं...हीं..."

आइए, आइए न, बातोंबातों में मैं आप
अंदर बिठाना ही भूल गई. आइए बातें
होती रहेंगी, पहले कुछ जलपान हो जाए.
सामान खुद संगीता ने बनाया है. कुकिंग
में डिप्लोमा किया है न मेरी बेटी ने,"
नी बेटी की तारीफ करते हुए संगीता की
ने कहा.

पड़ोसी से मांगे गए क्राकरी सेट पर
व्यंजन सजा कर संगीता की मां ले
. संगीता भी गुपचुप आ कर एक सोफे
बैठ गई.

कहकहों के साथ जलपान शुरू हुआ.
ान के बीच राजेश की मां ने कमरे में
चीजों की तारीफ करनी प्रारंभ की और
ता की मां उन सब को इंपोर्टेड कह कर
ी झूठी संपन्नता का बखान करती

जमनाप्रसाद (राजेश के पिता) और
साद (लड़की के पिता) अपनीअपनी
यों की बातें सुन रहे थे. दोनों पुराने मित्र
ार संयोगवश काफी दिनों बाद मिले थे.
कभीकभी मुसकरा कर एकदूसरे को
लेते. इस तथ्य से दोनों की पत्नियां
वत नहीं थीं. अचानक कालबेल की घंटी
कर संगीता की मां उठीं.



काजल

तुम्हारे बदन के गुलाब पर
छाए हैं प्यार के बादल
छुप जाने दो आंचल में
बह न जाए काजल.

–बृजेश कुमार गुप्ता

दरवाजा खोलने पर एक व्यक्ति ने पूछा, "गिरीश बाबू यहीं रहते हैं?" गिरीश संगीता के भाई का नाम था.

"हां, कहिए, उस से क्या काम है?"

"जी, बिल के पैसे लेने आया था."

"कैसा बिल?"

"जो गिरीश बाबू हमारे होटल में खाना लेने आए थे, लेकिन अपना बटुआ घर भूल गए थे. खाने का बिल लाया हूं. वह कह रहे थे कि उन की बहन को देखने लड़के वाले आ रहे हैं, इसलिए हम ने खाना दे दिया."

वह आदमी इतनी जोर से बोल रहा था कि उस की आवाज लड़के वाले भी सुन रहे थे. लड़के की मां सारा माजरा समझ गई.

लड़की की मां होटल वाले सदमे से अभी संभल नहीं पाई थीं कि अचानक पड़ोसी का पप्पू आ धमका और चिल्लाचिल्ला कर कहने लगा, "आंटी, मम्मी कह रही हैं कि क्राकरी खाली हो गई हो तो लौटा दें. हमारे यहां भी मेहमान आए हैं."

संगीता की मां को सिर घूमता महसूस हुआ. 'कमबख्त, इन्हें अभी आना था,' उन्होंने सोचा.

उधर यह सब सुन कर लड़के की मां का चेहरा गुस्से से लाल हो उठा, 'इतना धोखा,' उन्होंने सोचा, 'यह तो अच्छा हुआ कि शादी से पहले ही पता चल गया.'

होटल वाले का बिल चुका कर और पड़ोसी की क्राकरी आदि लौटा कर संगीता की मां धीमेधीमे आ कर बैठ गईं. लड़के की मां से आंखें मिलाने का साहस उन में नहीं था. लड़के की मां व्यंग्यात्मक दृष्टि से उन की तरफ देख रही थीं. लेकिन झूठ बोलने वालों का पलड़ा हमेशा भारी नहीं रहता. लड़के वालों के साथ भी कुछ ऐसा

> **रक्षा**
>
> *अपनी आत्मा और अपने ईमान की रक्षा प्रत्येक को खुद करनी चाहिए. पादरी और पुरोहित के जिम्मे यह काम नहीं छोड़ा जाना चाहिए.*

ही हुआ.

अचानक कालबेल बजी और फिर कोई मुसीबत सोच कर संगीता की मां उठीं और दरवाजा खोल दिया. दरवाजे पर लड़के वालों के वह पड़ोसी थे, जिन से कार उधार ली गई थी.

वह संगीता की मां को देखते ही बोले, "सुनिए बहनजी, राजेश आप के यहां है न?" कहतेकहते उन की नजर राजेश पर टिक गई, जो घबराया हुआ बैठा था. उस महाशय ने आव देखा न ताव झट अंदर जा पहुंचे और बोले, "यार राजेश, ला, फटाफट गाड़ी की चाबी. मैं ने तो पहले ही मना किया था कि गाड़ी मत ले जा, मेरे एक दोस्त की है. उस ने फौरन गाड़ी मंगवाई है." यह कहते हुए उन्होंने राजेश के हाथों से कार की चाबी ले ली और भाग खड़े हुए.

काफी देर तक कमरे में चुप्पी छाई रही. अचानक रामप्रसाद और जमनाप्रसाद के मुंह से कहकहे फूट पड़े. दोनों मित्र गले
दोनों की पत्नियां आश्चर्य से उन्हें
लगीं.

आखिर हंसी रोक कर जमना
बोले, "यह भी खूब रही, यार. हम
बेवकूफ बनाने चले थे और तुम हमें.

यह सुन कर रामप्रसाद ने गंभी
कर कहा, "मित्र, यह सब तो तुम्हारी
का प्लान था. वैसे हम तो मध्यवर्ग के
हैं. अब यह बात और है कि तुम इस
को स्वीकार करो या नहीं."

"कैसी बात करते हो यार, हम
ने धन्ना सेठ हैं. मेरी तरफ से यह रिश्ता
समझो," जमनाप्रसाद ने अपने मित्र क
से लगाते हुए कहा.

यह देख कर दोनों की पत्नियां
गई कि उन के पति एकदूसरे को अच
जानते हैं.

"हमें माफ करना, बहन. झूठे
के चक्कर में हम क्या कर बैठे,"
की मां ने राजेश की मां से कहा.

"यह क्या कह रही हो, बहन
तो मुझे मांगनी चाहिए," राजे
मां संगीता की मां को गले लग
बोलीं.

"यह तो शुक्र है कि यह भा
के मित्र निकले, वरना कोई और
शायद..." संगीता की मां ने कुछ
चाहा.

"छोड़ो ये बातें, इनसान को
शान नहीं दिखानी चाहिए. कभी न
पोल खुल ही जाती है और...खैर
मुझे तो यह रिश्ता पसंद है, अब आ
राय दे सकती हैं," राजेश की मां

"क्या कह रही हो, बहन,
से तो हां ही समझो."

"अच्छा, तो इसी बात पर
करवाओ और चाय पिलवाओ.
चाय घर की और संगीता के हा
हो," राजेश की मां ने इस ब
कहकहा लगाया और संगीता शा
बनाने रसोई की तरफ चली ग

पासा पलट गया

मेरी चाचीजी हमेशा चाचाजी से कुछ न कुछ लाने की फरमाइश करती रहतीं. हालांकि चाचाजी बिना उन के मांगे उन्हें जबतब कोई न कोई उपहार ला कर देते रहते. परंतु फरमाइश करने की उन की आदत पड़ गई थी, जिस से चाचाजी बहुत रेशान थे.

एक दिन चाचीजी बैठी कोई पत्रिका पढ़ रही थीं. पत्रिका के किसी विज्ञापन में एक खूबसूरत सी लड़की को एक हीरे का हार पहने हुए देख कर वह चाचाजी को सुनाते हुए बोलीं, “काश, मेरे ास भी ऐसा खूबसूरत हार



ोता.”

चाचाजी ने भी एक नजर स विज्ञापन पर डाली और ौरन बोल पड़े, “काश, मेरे ास भी ऐसी खूबसूरत पत्नी ती.”

उस समय चाचीजी की रत देखने लायक थी.

–सुधीर कुमार शर्मा

*

रे मामाजी की दुकान पर एक औरत अक्सर अंडे खरीदने ाती थी. परंतु वह हमेशा ही डों में कुछ न कुछ नुक्स कालती रहती थी. मामाजी उस इस आदत से बहुत परेशान एक दिन उन्होंने ठान लिया वह उसे सबक सिखा कर ही गे.

कुछ दिन बाद जब वह फिर से अंडे लेने आई तो अंडों को देखते हुए बोली, “ये तो बहुत छोटे हैं.”

तभी मामाजी तपाक से बोल पड़े, “बहनजी, दरअसल कल करवा चौथ था और आप की तरह मेरी मुरगी ने भी व्रत रखा था. इसीलिए अंडे छोटे रह गए. कल आ कर बड़े अंडे ले जाना.”

इतना सुनते ही वह औरत झेंप गई और वहां से खिसक ली.

–कुलदीप सिंह सलूजा

*

मैं 10वीं कक्षा का विद्यार्थी हूं. मेरी ही कक्षा में एक लड़की भी है, जो बातबात पर किसी न किसी छात्र की अध्यापकों से शिकायत करती रहती है. उस की इस आदत से कक्षा के सारे छात्र तो उस से चिढ़े हुए हैं ही, साथ ही सारे अध्यापक भी बहुत परेशान हैं.

एक दिन जब हमारे गणित के शिक्षक कक्षा में दाखिल हुए तो उस लड़की ने मेरी ओर संकेत करते हुए शिकायत कर दी, “सर, यह लड़का हमेशा मेरी तरफ देखता रहता है.”

अध्यापक तो थे ही मौके की तलाश में कि कैसे इस लड़की को सबक सिखाया जाए, अतः फौरन बोल पड़े, “तुम भी तो उस लड़के को हमेशा देखती रहती होगी, तभी तो तुम्हें पता है कि वह तुम्हारी तरफ देखता रहता है.”

यह सुनते ही सभी छात्र उस का उपहास उड़ाते हुए हंसने लगे तो वह बुरी तरह झेंप गई.

–मिथिलेश कुमार

*

मेरी बूआजी कुछ उलटे ही स्वभाव की हैं. वह दूसरों को तो सावधान रहने को कहती हैं किंतु स्वयं सदा ही बेखबर रहती हैं. एक दिन मैं और बूआजी मंदिर गए. मैं ने सोने की बालियां पहन रखी थीं.

जब हम मंदिर पहुंचे तो वहां काफी भीड़ देख कर



बूआजी बोलीं, “तू अपनी बालियां उतार कर मुझे देदे, मैं भी अपनी चेन पर्स में रख लेती हूं.”

यह कह कर जैसे ही उन्होंने अपना हाथ चेन उतारने के लिए बढ़ाया तो देखा कि वह गायब है. अब तो उन का चेहरा देखने लायक था.

–शिवांकी त्रिवेदी ●

इस स्तंभ के लिए आप अपने, मित्रों व संबंधियों के अनुभव भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें: सरिता संपादकीय विभाग, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.



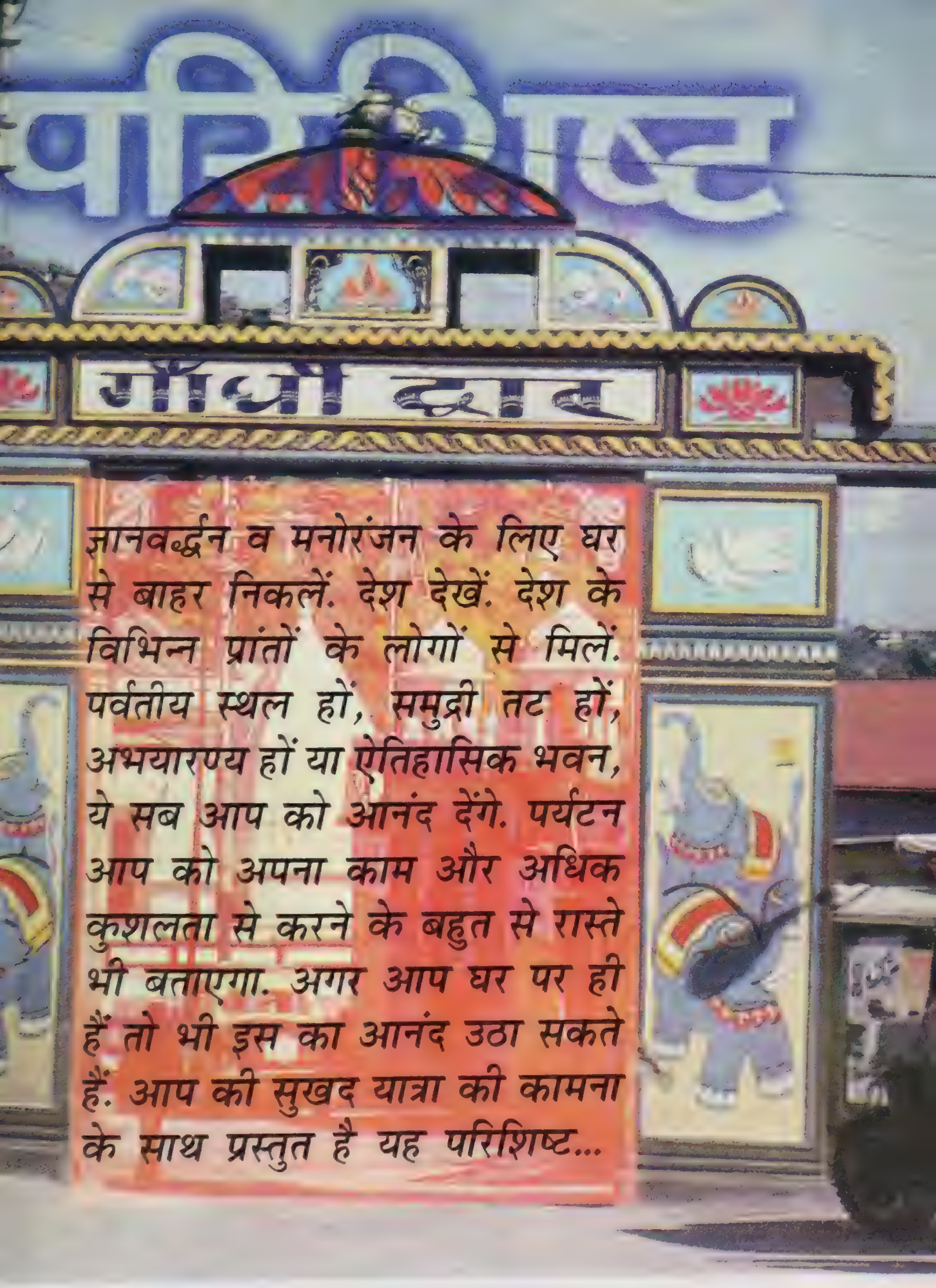
मसूरी

प्राकृतिक सौंदर्य के लिए मशहूर यह पर्वतीय स्थल पहाड़ों की रानी के नाम से भी जाना जाता है

1820 में एक अंग्रेज़ कप्तान यंग ने यहां के सौंदर्य से वशीभूत हो कर यहां अपनी रिहाइश बनाई थी

धीरे-धीरे यह स्थान प
रूप में विकसित होन
मसूरी उत्तर

परिशिष्ट



ज्ञानवर्द्धन व मनोरंजन के लिए घर से बाहर निकलें. देश देखें. देश के विभिन्न प्रांतों के लोगों से मिलें. पर्वतीय स्थल हों, समुद्री तट हों, अभयारण्य हों या ऐतिहासिक भवन, ये सब आप को आनंद देंगे. पर्यटन आप को अपना काम और अधिक कुशलता से करने के बहुत से रास्ते भी बताएगा. अगर आप घर पर ही हैं तो भी इस का आनंद उठा सकते हैं. आप की सुखद यात्रा की कामना के साथ प्रस्तुत है यह परिशिष्ट...

...री के लाइब्रेरी चौक पर हमेशा ...ड़भाड़ रहती है.

...लों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है. ...माचल की पर्वत शृंखलाओं से ...ब 2,005 मीटर की ऊंचाई पर ...ा हराभरा मसूरी एक मनमोहक ...ल है. यहां छोटीबड़ी पहाड़ियों पर स्थित आधुनिक भवनों, बाजारों और हरेभरे उद्यानों का अनुपम सौंदर्य पर्यटकों का मन मोह लेता है.

दर्शनीय स्थल

गनहिल

यह मसूरी का एक प्रमुख आकर्षण है. यहां तक जाने के लिए रोपवे का सहारा लिया जा सकता है. रोपवे कैमल बैक रोड से शुरू होता है. इस रोमांचकारी यात्रा का आनंद ही अलग है. एक पैदल रास्ता भी है, जो माल रोड स्थित कचहरी से शुरू होता है. यहां से आप मसूरी की खूबसूरती का नजारा देख सकते हैं. यहां खानेपीने की दुकानें भी हैं. इस

मसूरी

कैसे जाएं?

वायु मार्ग

वैसे निकटतम हवाई अड्डा 60 किलोमीटर दूर जौली ग्रांट है, पर यहां के लिए नियमित उड़ान सेवाएं नहीं हैं.

रेल मार्ग

यहां का निकटवर्ती रेलवे स्टेशन देहरादून (36 किलोमीटर) है. मुंबई, दिल्ली, कलकत्ता आदि शहरों से देहरादून के लिए सीधी रेल सेवाएं हैं. यहां से मसूरी के लिए बसों व टैक्सियों की पर्याप्त सेवाएं उपलब्ध हैं.

सड़क मार्ग

दिल्ली, चंडीगढ़, पंजाब, हरियाणा आदि राज्यों से परिवहन निगमों की बस सेवाएं यहां के लिए उपलब्ध हैं. इस के अलावा देश के प्रमुख पर्यटन स्थलों से टूरिस्ट बस सेवाएं भी उपलब्ध हैं.

प्रमुख नगरों से दूरी

दिल्ली–278 किलोमीटर	हरिद्वार–90 किलोमीटर
शिमला–276 किलोमीटर	चकराता–26 किलोमीटर
देहरादून–36 किलोमीटर	गंगोत्तरी–250 किलोमीटर
ऋषिकेश–77 किलोमीटर	धनोल्टी–26 किलोमीटर

कब जाएं?

यहां 15 अप्रैल से 15 जून तक और 15 सितंबर से 15 नवंबर तक सब से अच्छा मौसम रहता है. गरम इलाकों से इस मौसम में आ कर पर्यटक बेहद राहत महसूस करते हैं. सितंबर से नवंबर में मसूरी में हरियाली पूरे शबाब पर होती है.

क्या खरीदें?

यहां से लकड़ी पर काम की गई चीजें अच्छी मिलती हैं.

पहाड़ी पर आजादी से पहले एक तोप (गन) रखी होती थी, जहां से प्रतिदिन दिन में 12 बजे तोप से गोला दागा जाता था. इसलिए इस का नाम गनहिल पड़ गया.

लाल टिब्बा

लंढौर क्षेत्र में स्थित यह सब से ऊंची चोटी है. यह यहां का खूबसूरत क्षेत्र है और मसूरी का सब से पुराना हिस्सा है. यहां पर रखी एक बड़ी दूरबीन से हिमालय की चोटियां भी देखी जा सकती हैं.

कैंपटी फाल

इसे पर्यटन स्थल के रूप में 1835 में जान मेकिनन ने विकसित किया था. यहां पर 40 फुट की ऊंचाई से एक झरना गिरता है. मसूरी से 13 किलोमीटर दूर स्थित कैंपटी फाल की सुंदरता का आनंद लिया जा सकता है.

म्यूनिसिपल गार्डन

यहां विभिन्न किस्म के फूलों के अलावा एक कृत्रिम झील भी है झील में नौकायन का आनंद लि[...] जा सकता है.

म्यूनिसिपल गार्डन या क[...] गार्डन आजादी से पूर्व बोटेनि[...] गार्डन कहलाता था. इसे ब[...] वाले विश्वविख्यात भूवैज्ञानिक [...] एच. फाकनर थे. वह इस इ[...] में रहते थे. 1842 में उन्होंने [...] क्षेत्र को सुंदर उद्यान और प्रयोगश[...] में बदल दिया. बाद में इस[...] देखभाल म्यूनिसिपल प्रशासन [...] लगा तो इस का नाम म्यूनि[...] गार्डन पड़ गया. यहां खानेपी[...] समान की दुकानें व एक [...] बाजार भी है.

लेक मिस्ट

कैंपटी फाल मार्ग पर [...] किलोमीटर दूर स्थित है. य[...] और आरामदेह स्थल है. [...] प्रवेश शुल्क 25 रुपए है. यह[...] की भी व्यवस्था है.

कैंपटी फाल ने मसूरी की सुंदर[...] चार चांद लगा दिए हैं.



क्लाउड एंड

यह एक भव्य इमारत है. दूर से इसे देख कर लगता है कि बादलों का अंत यहीं कहीं हो रहा है. 1838 में एक ब्रिटिश मेजर ने हंस भवन का निर्माण करवाया था. बाद में यह होटल में तबदील हो गया. यह होटल चारों तरफ से घने जंगलों से घिरा हुआ है.

मसूरी झील

यहां से 7 किलोमीटर दूर है. यहां नौकायन का आनंद लिया जा सकता है. यहां से निकटवर्ती गांव और आसपास की प्राकृतिक खूबसूरती को देख सकते हैं.

वेन चेतना केंद्र

2 किलोमीटर की दूरी पर यह एक सुंदर पिकनिक स्थल है. पार्क के रूप में विकसित यह स्थल चीड़ के वृक्षों और झाड़ियों से घिरा हुआ है. पार्क का वन्यजीवन यहां का प्रमुख आकर्षण है.



कहां ठहरें? — मसूरी

होटल	पता	फोन
हनीमून इन	कुलरी, माल रोड	632378, 631778
कनाट कैसल	कुलरी, माल रोड	632538, 63210
अप्सरा	कुलरी, माल रोड	632066
ब्रेटवुड	कुलरी, माल रोड	632102, 632126
अमर	कुलरी, माल रोड	632183
क्लार्क्स	कुलरी, माल रोड	632393
हिलव्यू	कुलरी, माल रोड	632764
हेयर इंटरनेशनल	कुलरी, माल रोड	632818
हिल क्वीन	कुलरी, माल रोड	632984
एवरेस्ट	कुलरी, माल रोड	632954
गढ़वाल टैरेस	कुलरी, माल रोड	632682
हालीडे इन	कुलरी, माल रोड	632794, 632225
मीडोस पैलेस	माल रोड	632044, 632990
कासमांडा लाज	माल रोड	632424
मसूरी इंटरनेशनल	माल रोड	632143, 631243
पद्मिनी निवास	गांधी चौक, लाइब्रेरी प्वाइंट	632793
ग्रेस माउंट	गांधी चौक, लाइब्रेरी प्वाइंट	632423
क्लासिक हाइट्स	गांधी चौक, लाइब्रेरी प्वाइंट	632514
पार्क	कुलरी, माल रोड	632336
सेवाय	गांधी चौक, लाइब्रेरी प्वाइंट	632120
शिवा कांटीनेंटल	लंढौर बाजार	632980
नंद विला	कैमल्स बैक रोड	632088
पर्ल	मसूरीदेहरादून रोड	631045, 631046
शालीमार	ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी रोड	632410

धर्मशालाएं

लक्ष्मीनारायण मंदिर धर्मशाला	लाइब्रेरी बाजार
राधाकृष्ण मंदिर धर्मशाला	कुलरी बाजार
जैन धर्मशाला	लंढौर बाजार
सनातन मंदिर	लंढौर बाजार
आर्यसमाज मंदिर धर्मशाला	लंढौर बाजार

सरकारी आवास

पी. डब्ल्यू. डी. इंसपेक्शन हाउस	ला.ब.शा.रा.प्र. अकादमी रोड
टूरिस्ट कांपलेक्स	होटल गढ़वाल टैरेस
टूरिस्ट कांपलेक्स	गढ़वाल मंडल विकास निगम

आसपास के दर्शनीय स्थल

धनोल्टी

यहां से 26 किलोमीटर दूर मसृरीटिहरी रोड पर स्थित है. यहां की प्राकृतिक सुंदरता मनमोहक है. रास्ते में आप चीड़, देवदार के वृक्षों से घिरी हिमालय श्रृंखलाओं की खूबसूरती भी देख सकते हैं. यहां रहने की भी व्यवस्था है.

नाग टिब्बा

मसूरी से लगभग 55 किलोमीटर दूर स्थित यह ट्रैकिंग के लिए अच्छा स्थल है. यह मसूरी के आसपास के क्षेत्रों में सब से ऊंचा स्थल है. यह घने जंगलों से घिरा हुआ है. यहां ठहरने की कोई व्यवस्था नहीं है.

● *एसटीडी कोड : 0135*

देहरादून

सहस्त्रधारा

यह रमणीक स्थल लग
14 किलोमीटर दूर है. यहां गंध
जल का स्रोत बहुत प्रसिद्ध है. उ

देहरादून नगर का इतिहास बहुत ही पुराना है. गढ़वाल और उत्तरांचल का मुख्यालय देहरादून ही है. इसे दून घाटी भी कहा जाता है. पहले दून घाटी एक अति विशाल झील के रूप में थी. कालांतर में प्राकृतिक उथलपुथल के कारण झील लुप्त हो गई तथा भीषण जंगलों व हिंसक पशुओं की विचरण स्थली के रूप में रही है. विश्वसनीय प्रमाणों के अनुसार महाभारत काल में इसी घाटी में पांडवों ने गुप्त अरण्यवास के रूप में दिन व्यतीत किए थे.

मौर्यकाल में यह क्षेत्र भी उस से संबंधित रहा है. कालसी स्थित अशोक महान का प्रसिद्ध शिलालेख उस का साक्षी है.

सुप्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग भी यहां आया था. परंतु तब तक यह घाटी लगभग उजड़ चुकी थी.

16वीं सदी के अंत व 17वीं सदी के प्रारंभ में दून घाटी महारानी कर्णवती के शासन में रही थी जिन्होंने गढ़वाल के महाराजा के प्रतिनिधि के रूप में शासन किया था. 1791-1803 के काल में गोरखों ने हमला कर इस घाटी पर अपना आधिपत्य कर लिया था. बाद में 1814 में अंगरेजों ने इस घाटी पर हमला कर के गोरखों को हरा कर अपना शासन कर लिया था.

उत्तर में हिमालय पर्वत की श्रेणियां, दक्षिण में शिवालिक पर्वत की शृंखलाएं, पूर्व दिशा में गंगा नदी, पश्चिम में यमुना नदी से घिरी दून घाटी की अपनी विशिष्ट छटा है. समुद्र तल से घाटी की ऊंचाई 1,500 फुट से 2,500 फुट तक है.

दर्शनीय स्थल

राबर्स केव्स (गुच्चूपानी)

यह नगर से लगभग 8 किलोमीटर दूर गढ़ी कैंट में स्थित है. यहां ऊंचे पहाड़ों के बीच तंग दर्रे में ठंडे और गर्म जल की धारा बहती है यह पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है.

देहरादून कैसे जाएं?

वायु मार्ग

शताब्दी एक्सप्रेस (नई दिल्ली-देहरादून) चलने के कारण अब वायु
सेवा समाप्त कर दी गई है.

रेल मार्ग

देश के तमाम भागों से रेल मार्ग द्वारा जुड़ा यह नगर, उत्तर रेलवे
अंतिम प्रमुख स्टेशन है. यहां के लिए दिल्ली, नई दिल्ली, मुंबई, कलक
वाराणसी, गोरखपुर, इलाहाबाद, उज्जैन, सहारनपुर आदि से सीधी रेल से
उपलब्ध हैं.

प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	गाड़ी की संख्या व नाम	आगमन	प्र
सहारनपुर	1 डी एल एस देहरादून लक्सर सहारनपुर	19.50	
अमृतसर	0350 अमृतसरदेहरादून फास्ट पैसेंजर	11.10	
हावड़ा	3009 हावड़ादेहरादून एक्सप्रेस	07.15	
नई दिल्ली	2017 शताब्दी एक्सप्रेस (1,3,4,5,6,7)	12.25	
दिल्ली	4041 मसूरी एक्सप्रेस	07.50	
इलाहाबाद	4113 इलाहाबाद एक्सप्रेस	13.15	
वाराणसी	4265 वाराणसी एक्सप्रेस	09.20	
उज्जैन	4309 उज्जैनदेहरादून एक्सप्रेस (1, 5)	19.00	
मुंबई	9019 मुंबईदेहरादून एक्सप्रेस	16.25	
गोरखपुर	5005 गोरखपुरदेहरादून एक्सप्रेस (2, 4)	14.00	

कंप्यूटराइज्ड आरक्षण

रेलवे पूछताछ : 08.00 से 13.30 तक फोन
रेलवे आरक्षण : 14.00 से 20.00 तक फोन

सड़क मार्ग

देहरादून राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 45 द्वारा देश के प्राय:
भागों द्वारा जुड़ा हुआ है. यहां पर दिल्ली परिवहन निगम, हिमाचल
कारपोरेशन, हरियाणा राज्य परिवहन, राजस्थान राज्य परिवहन, उत्त
सड़क परिवहन की बसों द्वारा पहुंचा जा सकता है.

इन के अतिरिक्त सभी राज्यों की टूरिस्ट बसें भी [illegible]
टैक्सी, कार, वैन भी उपलब्ध हैं. [illegible]
बस अड्डे से [illegible] टैक्सी [illegible]
[illegible] बस अड्डे के [illegible]



मालसी मृग उद्यान हर उम्र के पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है.

शिखरों की गोदी में कलकल बहती हुई टोंस नदी, दूर तक फैली घाटी के मनोहर दृश्य मन को छू लेते हैं. पर्वत गुफा में छतों से पानी की सैकड़ों धाराएं अविराम गति से निरंतर बहती रहती हैं. इसी से इस स्थान का नाम सहस्रधारा पड़ा है. आसपास छोटा सा अच्छाखासा बाजार, खानेपीने के प्रमुख स्थान, लोक निर्माण विभाग का डाक बंगला, रेस्ट हाउस आदि ने इस स्थान का महत्त्व और भी बढ़ा दिया है.

प्रमुख नगरों से दूरी

आगरा–384 किलोमीटर	दिल्ली–236 किलोमीटर
अहमदाबाद–1,122 किलोमीटर	मसूरी–36 किलोमीटर
कलकत्ता–1,626 किलोमीटर	ऋषिकेश–42 किलोमीटर
मद्रास–2,341 किलोमीटर	हरिद्वार–52 किलोमीटर
शिमला–362 किलोमीटर	मुंबई–1,592 किलोमीटर

कंडक्टेड टूअर्स

यहां अनेक निजी पर्यटन टूर आयोजकों द्वारा भ्रमण टूर संचालित किए जाते हैं. इन में निजी बस व टैक्सी सेवाएं गांधी रोड, टैक्सी यूनियन, निकट मसूरी बस स्टैंड; टैक्सी चालक एसोसिएशन, अंतर्राज्यीय बस स्टैंड के सामने (फोन सं. 656577) आसानी से उपलब्ध हैं.

निजी आयोजकों में निम्न प्रमुख हैं :

- आर. के. ट्रेवल्स, 20, भट्ट मार्केट (प्रिंस होटल के सामने) फोन : 622321 (निवास), 626697 पी.पी. (कार्यालय).
- दून ट्रेवलिंग कं. 18, आढ़त बाजार, फोन : 627862, 622387.
- गुलाटी टूरिस्ट टैक्सी सर्विस, निकट लोकल बस स्टैंड, राजपुर रोड, फोन: 656555. इन के अलावा रेलवे स्टेशन के निकट गांधी रोड पर, 2 किलोमीटर के दायरे में अनगिनत ट्रेवल एजेंट व भ्रमण टूर (स्थानीय व बाहर के लिए) आयोजक हैं.

टपकेश्वर महादेव मंदिर

नगर से लगभग 5.5 किलोमीटर दूरी पर गढ़ी कैंट में यह आकर्षक व प्रसिद्ध प्रमुख पर्यटन स्थल है. पहाड़ के अंदर गहरी गुफा में शिवलिंग स्थित है. प्रमुख गुफा में टपकेश्वर महादेव के साथ ही अब कई और मूर्तियां स्थापित की गई हैं.

वन अनुसंधान संस्थान एवं विद्यालय

देहरादूनचकराता मार्ग पर लगभग 5 किलोमीटर दूर यह संस्थान एवं विद्यालय भारतीय वन सेवा एवं अधीनस्थ वन सेवा के लिए एशिया, में अपने प्रकार का विशिष्ट एवं प्रमुख प्रशिक्षण केंद्र है. लगभग 11,000 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ यह स्थान पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है.

कहां ठहरें? देहरादून

होटल	पता	फोन	श्रेणी
अजंता	कांटीनेंटल राजपुर रोड	659595, 657722	उत्तम
ग्रेट वेल्यू	74 सी, राजपुर रोड	654086, 654763	उत्तम
मंदाकिनी	हरिद्वार रोड	627860	उत्तम
मीडो ग्रैंड	राजपुर रोड	657171	उत्तम
नंदा टेल्स	113/2, राजपुर रोड	652654	उत्तम
प्रेसीडेंट	6 ऐश्ले हाल	658883	उत्तम
आकाशदीप	त्यागी रोड	627278	मध्यम
मोनार्क	42-ईस्ट केनाल रोड	652252	मध्यम
निवेश	चकराता रोड	624970	मध्यम
प्रिया	65/23, राजपुर रोड	656511	मध्यम
अरोमा	गांधी रोड	654481	साधारण
अतिथि	त्यागी रोड	627278, 629148	साधारण
ओरियंटल	दर्शनी गेट	627019	साधारण
प्रिंस	गांधी रोड	627070	साधारण
रंगमहल	गांधी रोड	655924	साधारण
रिलेक्स	7 कोर्ट रोड	657776	साधारण
रीजेंट	ईस्ट केनाल रोड	659438, 659486	साधारण
स्टैंडर्ड	गांधी रोड,		

धर्मशालाएं

कलावती	262 पार्क रोड	जैन	गांधी रोड
हलवाई	घोसी गली	कालूमल	राज रोड
शिवाजी	सहारनपुर रोड	लाला दीपचंद	गांधी रोड
अग्रवाल	गांधी रोड		

गेस्ट हाउस

सीताराम आश्रम	10 वसंत विहार	620851
दून गेस्ट हाउस	राजपुर रोड	
लक्ष्मी गेस्ट हाउस	2 पार्क रोड	626960

खानेपीने के प्रमुख स्थल

रेस्तरां का नाम	पता	फोन
सेलर रेस्टोरेंट	29 राजपुर रोड	655946
मोती महल	राजपुर रोड	
बुफे रेस्टोरेंट	गांधी पार्क के सामने, राजपुर रोड	
पंजाब रेस्टोरेंट	राजपुर रोड	
क्वालिटी रेस्टोरेंट	19 बी, राजपुर रोड	652789
वेजीटेरियन रेस्टोरेंट	ऐश्ले हाल	657078
लक्ष्मी रेस्टोरेंट	पल्टन बाजार	
जुगनू रेस्टोरेंट	57 गांधी रोड	653558
यती रेस्टोरेंट	राजपुर रोड	652256
बोनी चिकन शाप	13 बी राजपुर रोड	656505
ग्रेट वैल्यू	74 सी, राजपुर रोड	654763
अजंता टाउन कार्नर	74 राजपुर रोड	654596
डाउन टाउन कार्नर	65 बी, राजपुर रोड	655293
एस.के. रिफ्रेशमेंट	80 राजपुर रोड	653408
कुंदन पैलेस रेस्टोरेंट	राजपुर रोड	659196

मुख्य भवन प्रसिद्ध वास्तुशिल एडविन यूटिंस द्वारा तैयार किया ग है. दूरदूर तक फैली हुई हरियाल घने जंगल पर्यटकों को अनायास मोह लेते हैं. मुख्य इमारत में विशाल संग्रहालय वानिकी तथा उत्पादनों से संबंधित जानकारी देते वनस्पतिशास्त्र के विद्यार्थियों शोधकर्त्ताओं के लिए तो यह स्थ विशेष महत्त्वपूर्ण है. विशाल हाउस में असंख्य महत्त्वप वनस्पतियों के दुर्लभ नमूने हैं. ब के लिए मृग उद्यान महत्त्वपूर्ण है

मुख्य भवन में ही जलपान गृह है, जो स्वादिष्ठ लागत मूल्य पर उपलब्ध व्यंजनों लिए प्रसिद्ध है.

भारतीय सैन्य अकादम

देहरादूनचकराता मार्ग प लगभग 7 किलोमीटर पर यह सैन्य अधिकारियों का प्रशिक्षण है. यहां भारतीय थल सेन अधिकारी तैयार किए जाते हैं का मुख्य भवन भी वास्तुकल एक अनूठा उदाहरण है.

तपोवन

अंतर्राज्यीय बस अ लगभग 6 किलोमीटर दू नालापानी स्थान पर स्थित पुराणों में वर्णित ऋषियों क तपस्थली रहा है. कथन है द्रोणाचार्य का आश्रम ए प्रशिक्षण विद्यालय यहीं पर उस समय यह नगर द्रोण न द्रोणदून कहलाता था.

कलंग स्मारक

कलंग स्मारक सह पर स्थित है. यह स्मार ब्रिटिश की 180 वर्ष पु की यादगार को अभी त बनाए हुए है. यह स्था लगभग 5 किलोमीटर प

कलंग स्मारक गि तट पर लगभग 1,00 पहाड़ियों पर स्थित पहुंचने के लिए आज किलोमीटर से अधिक तय करनी पड़ती है

डाट मंदिर

देहरादूनसहारनपुर मार्ग पर स्थित लगभग 14 किलोमीटर पर प्रसिद्ध डाट मंदिर है, जो शिवालिक पर्वत मालाओं के बीच बनाई गई सुरंग (डाट) को पार कर है.

मालसी मृग उद्यान

देहरादूनमसूरी मार्ग पर नगर से लगभग 9 किलोमीटर पर मालसी क्षेत्र में यह मनोरंजक स्थल हर उम्र के पर्यटकों, विशेषकर बच्चों के आकर्षण का केंद्र एवं प्रिय आमोद स्थल है. यहां पर विभिन्न प्रकार के झूले तथा पार्क में हिरन, चीतल, खरगोश, बत्तख, मोर, बंदर, तोते, भेड़िया आदि पशुपक्षियों का संग्रह है. पार्क के अंदर ही खूबसूरत जलपान गृह, ऊंचा वाच टावर व वाहनों की पार्किंग का अच्छा प्रबंध है.

बीजापुर नहर

गढ़ी क्षेत्र स्थित यह सुंदर भ्रमण स्थल है. यहां पर बांध का विशेष महत्त्व है.

मच्छी वाला

नगर से लगभग 15 किलोमीटर दूर, शहर की भागमभाग, भीड़भाड़, प्रदूषित वातावरण से दूर, यह स्थान घने जंगलों के बीच बहुत ही मनभावन, शांतिप्रिय स्थान है. ऊंचे घने वृक्षों के मध्य तीव्रगति से बहती हुई पहाड़ी नदी का अपना अलग ही आकर्षण है. सप्ताहांत में सैर और मनोरंजन के लिए यह सर्वप्रिय स्थान है.

डाक पत्थर

शिवालिक पहाड़ियों की तलहटी में यमुना नदी के किनारे स्थित, यमुना जल विद्युत परियोजना के कारण डाक पत्थर एक नए आकर्षक, महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल के रूप में उभरा है. यह अत्यंत मनोरंजक पर्यटन स्थल कहलाता है. एशिया महाद्वीप की सब से बड़ी विद्युत परियोजना के कारण इस का महत्त्व अधिक बढ़ गया है.

खरीदारी के प्रमुख स्थल

सुशील डिपार्टमेंटल स्टोर, डिस्पेंसरी रोड; **सुशील ट्रेड टावर**, पल्टन बाजार; **अनेकांत पैलेस**, राजपुर रोड; **विंडलास शापिंग कांपलेक्स**, राजपुर रोड; **आर.जी.एम. प्लाजा**, चकराता रोड; **कैपरी ट्रेड सेंटर**, चकराता रोड; **जनपथ कांपलेक्स**, चकराता रोड; **रोहिणी प्लाजा**, राजपुर रोड; **सुपर बाजार**, राजपुर रोड; **पल्टन बाजार**, राजपुर रोड; तिब्बती मार्केट.

डाक पत्थर से लगभग 8 किलोमीटर आगे आसन नदी के जलाशय पर पिकनिक स्थल बनाया गया है. यहां पर वाटर स्कीइंग, नौकायन, नौका विहार, कैनोइंग, कैयेकिंग आदि की भी व्यवस्था है. भव्य बाजार, फील्ड होस्टल, तरणताल, टूरिस्ट बंगला आदि इस की शोभा में चार चांद लगा देते हैं.

डाक पत्थर देहरादून नगर से लगभग 45 किलोमीटर पर है.

लक्ष्मण सिद्ध

लक्ष्मण सिद्ध देहरादूनहरिद्वार मार्ग पर लगभग 12 किलोमीटर पर नगर की दक्षिण दिशा में पड़ता है. यह प्रसिद्ध स्थान है. यहां लक्ष्मण सिद्ध की समाधि है. घने जंगल के अंदर स्थित इस प्रसिद्ध स्थल पर रविवार व अन्य अवकाश दिवस पर बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं. यह बिलकुल ही एकांत निर्जन स्थान है, जहां न कोई दुकान है न मकान. यहां के लिए नियमित बस सेवा उपलब्ध है.

लाखा मंडल

मसूरीयमुनोत्तरी मार्ग पर देहरादून से लगभग 134 किलोमीटर पर यह प्रसिद्ध स्थान है. यह वही ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण स्थान है जहां दुर्योधन ने पांडवों को जीवित जला डालने के लिए लाख से निर्मित भवन तैयार कराया था.

यहां पर स्थित मंदिर की अवशेष शिलाओं पर भीम, अर्जुन आदि के चित्र खुदे हुए हैं. चित्रों की बनावट, खुदाई देखने योग्य है. यहां के लिए मसूरी से भी टैक्सी उपलब्ध है. मसूरी से पैदल मार्ग भी है. यद्यपि यहां ठहरने के लिए कोई स्थान उपलब्ध नहीं है.

चकराता

समुद्रतल से 2,113.6 मीटर (7,000 फुट) पर स्थित, देहरादून से लगभग 22 किलोमीटर पर यह एक अति शांत, रमणीक स्थल है.

यहां ब्रिटिश सैनिकों की छावनी होती थी. यह दो पहाड़ियों चकराता और कलिना पर बसा हुआ छोटा सा हिल स्टेशन है जो लगभग 115 वर्ष पुराना है.

फारेस्ट रेस्ट हाउस के अतिरिक्त यहां साधारण होटल भी उपलब्ध हैं.

चकराता क्षेत्र विदेशियों के लिए पूर्णतया प्रतिबंधित है.

रायपुर फाल (प्रपात)

नगर से लगभग 5 किलोमीटर पर यह खूबसूरत मनोरंजन स्थल है. यहां नगर बस सेवा द्वारा भी आसानी से पहुंचा जा सकता है.

टाइगर फाल (प्रपात)

नगर से लगभग 97 किलोमीटर दूर चकराता क्षेत्र में स्थित टाइगर फाल का अपना विशेष महत्त्व एवं स्थान है.

लगभग 1,395 मीटर की ऊंचाई से गिरता हुआ झरना एक विचित्र, मनोहारी दृश्य उत्पन्न करता है.

तापमान

यहां का अधिकतम तापमान गरमियों में 45 डिगरी सेंटीग्रेड तथा न्यूनतम 25 डिगरी सेंटीग्रेड रहता है. सर्दियों में अधिकतम 23.4 डिगरी सेंटीग्रेड और न्यूनतम 3 डिगरी सेंटीग्रेड रहता है.

● *एसटीडी कोड : 0135*

–देवेंद्र अष्ठाना



हर की पैड़ी पर सुबहशाम पर्यट
का मेला सा लगा रहता है

हरिद्वार

हरिद्वार शिवालिक पर्वतों की तलहटी में स्थित है, जहां पर गंगा नदी हिमालय पर्वत से अवतरित हो कर बहती है और धीरेधीरे मैदानों से होती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है. हरिद्वार में कुंभ और अर्धकुंभ का मेला लगता है तथा लाखों लोग यहां स्नान करते हैं.

सायंकाल के बाद गंगा में बहते हुए दीए यहां का एक प्रमुख आकर्षण है, जो सब को मोहित कर लेता है.

दर्शनीय स्थल

हर की पैड़ी

यह हरिद्वार का प्रमुख घाट है. प्रतिदिन हजारों लोग यहां घूमने आते हैं. शाम को यहां गंगा की आरती होती है.

मनसा

मनसा देवी का मंदिर बिलवा पर्वत पर स्थित है. यहां तक पैदल

हरिद्वार कैसे जाएं?

वायु मार्ग

हरिद्वार के लिए हवाई सेवा अभी उपलब्ध नहीं है

रेल मार्ग

हरिद्वार रेल मार्ग द्वारा देश के अन्य भागों से जुड़ा है
दिल्ली, मुंबई, लखनऊ, चंडीगढ़, लखनऊ, वाराणसी, कल
गंगानगर व देहरादून आदि स्थानों से रेल सेवाएं उपलब्ध हैं

प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	गाड़ी की संख्या व नाम	आ
मुंबई	मुंबईदेहरादून एक्सप्रेस	2
उज्जैन	उज्जैनदेहरादून एक्सप्रेस	1
कलकत्ता	हावड़ादेहरादून एक्सप्रेस	3

वाराणसी	वाराणसीदेहरादून एक्सप्रेस	08.55	07.15
नई दिल्ली	शताब्दी एक्सप्रेस	07.15	11.09
पुरानी दिल्ली	मसूरी एक्सप्रेस	22.20	05.50
देहरादून	देहरादूनमुंबई एक्सप्रेस	11.45	13.28
	देहरादूनउज्जैन एक्सप्रेस	05.52	07.25
	देहरादूनहावड़ा एक्सप्रेस	20.30	21.55
	देहरादूनवाराणसी एक्सप्रेस	18.20	20.00
	शताब्दी एक्सप्रेस	17.00	17.59
	मसूरी एक्सप्रेस	21.30	23.00

सड़क मार्ग

हरिद्वार सड़क मार्ग द्वारा देश के कई नगरों से जुड़ा है. दिल्ली, जयपुर, जोधपुर, आगरा, शिमला, चंडीगढ़, लखनऊ, मुरादाबाद, मथुरा, अलीगढ़ व देश के अन्य कई नगरों से यहां के लिए सीधी बस सेवाएं उपलब्ध हैं. मसूरी, बदरीनाथ, केदारनाथ के लिए यहां से टैक्सी सुविधा भी उपलब्ध है.

प्रमुख नगरों से दूरी

देहरादून–52 किलोमीटर	दिल्ली–210 किलोमीटर
मसूरी–90 किलोमीटर	यमुनोत्तरी–264 किलोमीटर
आगरा–386 किलोमीटर	ऋषिकेश–24 किलोमीटर
नैनीताल–386 किलोमीटर	जयपुर–480 किलोमीटर

कब जाएं?

यों तो हरिद्वार में 12 महीने पर्यटक आते हैं परंतु मौसम की दृष्टि से उचित समय है सितंबर से जून तक, खासतौर पर गरमियों में गंगा स्नान का पूरा आनंद लिया जा सकता है. जुलाई व अगस्त में यहां पर बरसात का मौसम रहता है.

हर की पैड़ी व अन्य गंगा घाटों पर काफी भिखारी हैं, जो यात्रियों के लिए असुविधा का कारण बन जाते हैं. हर की पैड़ी पर नाई घाट मुंडन के लिए प्रसिद्ध है.

भी पहुंचा जा सकता है और ट्राली रोपवे द्वारा भी. ट्राली की यात्रा बहुत ही रोमांचकारी प्रतीत होती है.

ब्यूटी प्वाइंट

यह प्वाइंट मनसा देवी मंदिर मार्ग पर लगभग 2 किलोमीटर दूर है. यहां से हरिद्वार तथा आसपास के वनों का मनोहारी दृश्यावलोकन किया जा सकता है.

गुरुकुल कांगड़ी

यह हरिद्वार ज्वालापुर बाईपास मार्ग पर स्थित है. यह प्राचीन शिक्षा पद्धति के लिए प्रसिद्ध है. यहां के म्यूजियम में प्राचीन कलाकृतियां देखी जा सकती हैं.

भारत माता मंदिर

यह कईमंजिला मंदिर है.

नीलधारा पक्षी विहार

सर्दियों में आकर्षक चिड़ियां, खासतौर पर साइबेरियन क्रेन यहां पर लालजीवाला के चारों ओर गंगा के किनारे पर देखे जा सकते हैं.

सप्तऋषि

यहां पर गंगा छोटीछोटी धाराओं में विभाजित होती है. यह

रोपवे ट्राली द्वारा मनसा देवी मंदिर तक जाना काफी रोमांचकारी है.



कहां ठहरें? हरिद्वार

होटल	पता	फोन	श्रेणी
क्लासिक रेजीडेंसी	ज्वालापुर रोड	428005	उत्तम
प्रमिला	बाईपास रोड	425041	उत्तम
सुविधा डीलक्स	श्रवण नाथ नगर	427023	उत्तम
मानसरोवर	अपर रोड	426501	उत्तम
तीर्थ	सुभाष घाट	425311	उत्तम
विनायक डीलक्स	रानीपुर मोड़	422433	उत्तम
मोटल राही (राजकीय सरकार द्वारा संचालित)	रेलवे स्टेशन के समीप	426430	उत्तम
आरती	रेलवे रोड	427456	मध्यम
कैलाश	रेलवे रोड	427789	मध्यम
अशोक	जस्साराम रोड	427328	मध्यम
गंगा निहार	जस्साराम रोड	422728	मध्यम
मिडटाउन	रेलवे रोड	427507	मध्यम
शिवा	बाईपास रोड	427365	मध्यम
अलका	सुभाष घाट	427244	मध्यम
पुरोहित लाज	हर की पैड़ी	426850	मध्यम
विक्रांत	विष्णु घाट	426343	मध्यम
सिटिजन	श्रवणनाथ नगर	427905	साधारण
दर्शन	सब्जी मंडी	425276	साधारण
दीप	श्रवणनाथ नगर	427609	साधारण
मद्रास	श्रवणनाथ नगर	426356	साधारण
मयूर	सब्जी मंडी	427586	साधारण
पनामा	जस्साराम रोड	427506	साधारण
साहनी	श्रवणनाथ नगर	426067	साधारण
होलीडे इन	श्रवणनाथ नगर	426037	साधारण
राज	विष्णु घाट	426639	साधारण
नवीन	ललिता राव पुल	426268	साधारण
अजंता	श्रवणनाथ नगर	425242	साधारण
धर्मशालाएं			
सिंधु पंचायती	रेलवे रोड	427148	
सेठ खुशीराम	अपर रोड	427996	
नरसिंह भवन	अपर रोड	424219	
गुजराती धर्मशाला	श्रवणनाथ नगर	427153	
गुजरांवाला भवन	श्रवणनाथ नगर	426293	
राम कुमार सेवा सदन	भीमगौड़ा	427779	
पंजाब सिंध क्षेत्र	भीमगौड़ा	426138	
जयपुरिया धर्मशाला	रामघाट	427217	
देवी बाई सिंधी धर्मशाला	भोलागिरी रोड	426570	
बिरला हाउस	बिरला रोड	427076	
होटल का किराया			
उत्तम श्रेणी	500 से 1200 रु. तक प्रतिदिन		
मध्यम श्रेणी	200 से 500 रु. तक प्रतिदिन		
साधारण श्रेणी	100 से 200 रु. तक प्रतिदिन		
अन्य आवासीय स्थल			
कैनाल निरीक्षण भवन	मायापुर	426546	उत्तम
टूरिस्ट बंगला	बेलवाला	426379	उत्तम

दृश्य बहुत ही मनोहारी है.

चीला

प्रकृति प्रेमियों के लिए एक रमणीय स्थल है. यहां पर गेस्ट हाउस है. गरमियों में पिक के लिए अच्छा स्थल है.

भारत हैवी इलेक्ट्रिकल

यह एक बहुत विश्वविख्यात कारखाना है, जह बिजली के विशेष उपकरण जाते हैं. यहां पर करीब 11 कर्मचारी कार्यरत हैं.

तापमान

यहां का अधिकतम ता गरमियों में 40 डिगरी सेंटीग्रेड न्यूनतम 25 डिगरी सेंटीग्रेड रह सर्दियों में अधिकतम 30 सेंटीग्रेड और न्यूनतम 4 सेंटीग्रेड रहता है. सर्दियों में ऊन साथ ले जाएं.

- *एसटीडी कोड* :

–उषा जैन



ऋषिकेश

हिमालय की कोख से निकलने वाली गंगा नदी इसी स्थान पर पहाड़ का दामन छोड़ कर मैदानी क्षेत्र में प्रवेश करती है. ऊंचेनीचे पर्वतीय राहों से अल्हड़, उछलतीकूदती गंगा यहां चौड़े पाट में शांत, गंभीर मुद्रा में प्रवाहित होती है. घने हरेभरे जंगलों की छांव में गंगा नदी का मंथर बहता प्रवाह पर्यटक मन को बरबस ही आनंदित और पुलकित करता है. छोटा सा शहर होते हुए भी यह अपने विशिष्ट धार्मिक और आध्यात्मिक महत्त्व के कारण विश्व के मानचित्र पर अपना खास स्थान रखता है. यही कारण है शाम को गंगा तट पर घूमते यहां के स्थान मुनि की रेती, स्वर्गाश्रम, शिवानंद आश्रम की ओर निकल जाइए, आप को भारत के अलावा अमेरिका, जापान, फ्रांस, जर्मनी, यूरोप आदि देशों के तत्त्व चिंतक अनेक प्रकार की भावमुद्रा में बैठे, ध्यान लगाए हुए मिल जाएंगे.

इसे संतों और मंदिरों की नगरी भी कहा जाता है. आज यह शहर प्राचीन परंपराओं व आधुनिक विकास का बेजोड़ संगम बन गया है. इस का आध्यात्मिक रूप मिटा नहीं बल्कि और भी प्रखर होता गया है.

यह नगर जितनी आस्थाओं से जुड़ा है, उतना ही प्राकृतिक छटाओं के कारण मुग्ध भी करता है. यही कारण है कि पर्यटक इस नगरी को बहुत पसंद करते हैं. ऋषिकेश के आसपास रिवर राफ्टिंग, खेल व अभ्यास प्रशिक्षण के कारण जलक्रीड़ा के दीवाने यहां खूब आने लगे हैं.

यहां नौका विहार का अपना अलग आनंद है. गंगा नदी के दूसरी तरफ घने जंगलों में वन्यजीवन का भरपूर लुत्फ उठाया जा सकता है.

समुद्र तल से लगभग 1,160 फुट ऊंचाई पर 30° उत्तरी अक्षांश तथा 78° पूर्वी देशांतर तक फैला है. ऋषिकेश सुप्रसिद्ध गंगा तीर्थनगरी हरिद्वार यहां से 25 किलोमीटर आगे है. दून घाटी का प्रसिद्ध शहर देहरादून यहां से 42 किलोमीटर पर है.

स्कंदपुराण में इस स्थान का प्राचीन नाम 'कुब्जाम्रक' बताया गया है. कालांतर में यहां का नाम हृषिकेश पड़ गया, जो बिगड़ कर ऋषिकेश हो गया है. गढ़वाल स्थित चारों प्रसिद्ध धामों बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्तरी व यमुनोत्तरी का अकेला प्रवेशद्वार होने के कारण यहां का महत्त्व और भी बढ़ जाता है.

प्राचीनकाल से यहां तीर्थयात्रियों का जमघट लगा रहता है. पहले इन चारों धामों की यात्रा बेहद कठिन हुआ करती थी. अब तो ऋषिकेश से मोटर मार्गों के जरिए सुविधाजनक स्थितियों में चारों धाम पहुंचा जाता है. अब तीर्थयात्रियों के अलावा पर्यटकों का एक बड़ा वर्ग भी यहां दृश्यावलियों को देखने के



लक्ष्मण झूला : गंगा नदी के ऊपर लोहे के तारों से बना यह पुल खासा लोकप्रिय है.

ऋषिकेश

कैसे जाएं?

सड़क मार्ग

भारत के किसी भी महानगर से ऋषिकेश पहुंचने के लिए सड़क मार्ग ही उपयुक्त और उत्तम साधन है. वैसे तो यहां से 20 किलोमीटर दूर जौली ग्रांट हवाई अड्डा भी है, किंतु फिलहाल यहां नियमित विमान सेवाएं उपलब्ध नहीं हैं. यहां रेलवे स्टेशन भी है किंतु सभी नगरों से रेल सेवाएं उपलब्ध नहीं हैं. यहां पहुंचने के लिए आसपास के महानगरों से बस द्वारा ही आसानी से जाया जा सकता है.

दिल्ली, आगरा, देहरादून, मसूरी, चंडीगढ़, पटियाला, लखनऊ, सहारनपुर, शिमला आदि स्थानों से निजी तथा सरकारी साधारण एवं लग्जरी बसें उपलब्ध हैं.

स्थानीय यातायात

स्थानीय भ्रमण के लिए रिकशा, आटोरिकशा, तांगे तथा टैक्सियां किराए पर उपलब्ध होती हैं, इन का पहले से ही किराया तय कर लेना पड़ता है. मीटर सिस्टम नहीं है.

प्रमुख नगरों से दूरी

दिल्ली–238 किलोमीटर
उत्तरकाशी–154 किलोमीटर
देहरादून–42 किलोमीटर
केदारनाथ–228 किलोमीटर
हरिद्वार–25 किलोमीटर
बदरीनाथ–297 किलोमीटर
चंडीगढ़–252 किलोमीटर
गंगोत्तरी–258 किलोमीटर
यमुनोत्तरी–288 किलोमीटर
मसूरी–77 किलोमीटर

कहां ठहरें? ऋषिकेश

होटल	पता	फोन नं.
जीएमवीएन टूरिस्ट बंगला	मुनि की रेती	30373
मंदाकिनी	हरिद्वार रोड	31081
गंगाकिनारे	16, वीरभद्र रोड	30566, 31645
नटराज	देहरादून रोड	31099, 31262

खानेपीने के प्रमुख स्थल

ऋषिकेश में घूमते हुए आप को लगभग हर दर्शनीय स्थलों के पास अल्पाहार के लिए ढाबे तथा ढेरों रेस्तरां मिल जाएंगे. इस के अलावा विशिष्ट तथा स्वाद भोजन के लिए निम्नलिखित स्थानों पर जाया जा सकता है:

नाम	पता	नाम	पता
चोटीवाला	स्वर्गाश्रम	टंडन कैफे	रेलवे स्टेशन के पास
अंजलि रेस्तरां	स्टेशन रोड	नीलम रेस्तरां	लक्ष्मण झूला रोड

लिए आता है. विदेशी पर्यटकों को ऋषिकेश बहुत ही रास आता है. गंगा तट पर योगध्यान प्रवृत्तियों को बढ़ावा देने वाले आयोजन उन्हें प्रभावित करते हैं. यहां बेशुमार आश्रम, मठ धर्मशालाएं, मंदिर, योगकेंद्र व ध्यानस्थल होने से पर्यटकों व जिज्ञासुओं की व्यस्त आवाजाही लगी रहती है.

दर्शनीय स्थल

लक्ष्मण झूला

गंगा के ऊपर सन 1939 ... बना विशाल झूलता हुआ पुल ... लोकप्रिय है, जो लोहे के तारों ... तैयार किया गया है. समुद्रतल से ... की ऊंचाई 150 मीटर है. यहां से ... नदी का अनूठा सौंदर्य मुग्ध कर... गरमियों के दिनों में इस पुल पर ... कर शीतल हवा के झोंके मन ... को पुलकित कर देते हैं. इसे पार ... के स्वर्गाश्रम क्षेत्र में पहुंचा जा...

यहां नाव में बैठ कर ... आरपार जाया जा सकता है. आ... गोलियां डालते ही मछलियों ... झपटने की क्रीड़ा बहुत अच्छी ... है.

रामझूला

लक्ष्मण झूला के निक... झूलता हुआ पुल कुछ साल ... बना है. इसे शिवानंद झूला ... हैं.

भरत मंदिर

नगर का सर्वाधिक ... प्राचीन स्थल भरत मंदि... जाना जाता है. यह यहां ... व प्रसिद्ध मंदिर है. इस ... शहर में राम, लक्ष्मण, भर... के मंदिर दर्शनीय हैं.

त्रिवेणी घाट

यह एक स्नान ... सुबह स्नानार्थियों की ... आरती देखने वालों ... रहती है. घाट की ... कर गंगा की लहरों ... आसपास के प्राकृ... देखने का अपना अ...



रिवर राफ्टिंग प्रतियोगिताएं ऋषिकेश का प्रमुख आकर्षण हैं.

स्वर्गाश्रम

यहां आश्रम व मंदिरों की भरमार है. यहां आध्यात्मिक वातावरण मन में एक नई ताजगी भरता है. यहां तमाम दुकानें, खानेपीने के रेस्टोरेंट भी हैं. आकर्षक मूर्तियों की झलक पर्यटकों को आनंदित करती है.

नीलकंठ महादेव

ऋषिकेश से 12 किलोमीटर की दूरी पर मनोरम स्थल है, नीलकंठ महादेव. दंतकथा है कि शिवजी ने समुद्र मंथन में निकले विष को यहीं गटका था, जिस के कारण उन का कंठ नीला पड़ गया था. यह मंदिर 1,700 मीटर ऊंचाई पर शांत वन क्षेत्र में बना है.

अन्य दर्शनीय स्थल

नगर क्षेत्र में तपोवन, झड़ी आश्रम, शंकराचार्य नगर (चौरासी कुटी), भगवान आश्रम, शिवानंद आश्रम भी दर्शनीय हैं. ऋषिकेश से लगे चीला अभयारण्य क्षेत्र में नाना प्रकार के पक्षी दिखाई देते हैं. जंगलों में हाथी, हिरन भी दिखाई देते हैं.

रिवर राफ्टिंग

ऋषिकेश से बदरीनाथ मार्ग पर कौड़ियाला, व्यासी के आसपास कई एजेंसियां रिवर राफ्टिंग खेलों का समुचित प्रशिक्षण देती हैं. यहां प्रशिक्षुओं के रहने के लिए टैंट लगाए जाते हैं. साल भर में यहां एकदो राफ्टिंग प्रतियोगिताएं भी होती हैं.

निकटवर्ती स्थल

चीला

300 मीटर की ऊंचाई पर ऋषिकेश से 20 किलोमीटर की दूरी पर मनोरम पर्यटन स्थल है चीला. सरकार ने इस क्षेत्र को अभयारण्य बना दिया है. यहां गंगा नदी से नहर निकाल कर जलाशय का निर्माण किया गया है. यहां जंगली जानवर खूब दिखाई देते हैं. रहने के लिए शानदार पर्यटक आवासगृह है. हरिद्वार से यहां की दूरी मात्र 10 किलोमीटर है.

नरेंद्र नगर

मात्र 15 किलोमीटर की दूरी पर टिहरीचंबा मार्ग पर शांत छोटा से नगर इतिहास की अनेक यादों को अपने आगोश में समेटे हुए है. इसे टिहरी रियासत के राजा नरेंद्रशाह ने बसाया था. राजमहल दर्शनीय है. नंदी बैल की प्रतिमा भी दर्शनीय है.

कुंजापुरी

नरेंद्र नगर के निकट 7,000 फुट ऊंचाई पर बांज बुरांस के जंगलों से घिरा यह अत्यंत मनोरम तीर्थस्थल है. यहां से चोटियों व घाटियों के रमणीक दृश्य दिखाई देते हैं.

देवप्रयाग

ऋषिकेशबदरीनाथ मार्ग पर इस संगम स्थल में पर्वतीय क्षेत्र से आने वाली अलकनंदा व भागीरथी नदी संगम बनाती है. यहीं से आगे गंगा नाम पड़ जाता है. यहां रघुनाथजी का प्राचीन मंदिर दर्शनीय है.

क्या खरीदें?

यहां हस्तशिल्प की चीजें मिलती हैं. सीपी, शंख, मोतियों से ले कर हींग, रंगबिरंगे पत्थर बेचने वाले खूब मिलते हैं. धार्मिक कैसेट व किताबें भी मिलती हैं.

पर्यटक सूचना केंद्र

उत्तर प्रदेश सरकार का टूरिस्ट ब्यूरो, रेलवे स्टेशन रोड पर है. फोन नं. : 817.

यात्रा कार्यालय : गढ़वाल मंडल विकास निगम, मुनि की रेती. फोन नं. : 372

बदरीकेदार मंदिर समिति, देहरादून रोड.

● एसटीडी कोड : 01364

–प्रकाश पुरोहित 'जयदीप'

औली

बर्फ पर फिसलते रोमांच की एक स्वप्निल जगह है–औली, जो गढ़वाल में अब शीतकालीन पर्यटन का प्रमुख आकर्षण केंद्र बन चुका है. यहां देश का सब से नया स्कीइंग केंद्र स्थापित है. बर्फ के इस दिलचस्प खेल के प्रारंभ होने से यह पर्यटन स्थल दुनिया के नक्शे में तेजी से उभरा है. बर्फ की चादर जैसे ही यहां की खूबसूरत ढलानों पर बिछती है वैसे ही स्कीइंग खेलों की गतिविधियां शुरू हो जाती हैं. स्कीइंग खेलों के दीवानों के अलावा इस मौके पर देशविदेश से पर्यटक भी यहां आते हैं और मिलजुल कर लुत्फ उठाते हैं.

आकाश छूते शिखर, हरेभरे जंगल, फैले हुए चरागाह, ढलानें, घाटियों में छितरे गांव सब मिल कर औली को एक नया सौंदर्य प्रदान करते हैं. चुप्पी में डूबा हुआ बर्फीला परिवेश चित्तचोर लगता है. यहां स्कीइंग सेंटर में रहने, खानेपीने की बेहतर सुविधाएं हैं. जोशीमठ (निकटवर्ती नगर) से औली पहुंचने के लिए लगभग 4 किलोमीटर लंबी रोपवे सेवा है. सड़क और पैदल मार्ग से भी आवागमन की सुविधा है.

औली से एकदम सामने सर्वोच्च चोटी नंदादेवी (7,817 मीटर) के दर्शन होते हैं. साथ ही हाथीगौरी पर्वत, नीलकंठ, कामेट, ऐरावत पर्वत के दर्शन भी होते हैं.

यूं तो औली 2,519 मीटर से ले कर 3,049 मीटर ऊंचाई तक 6 वर्ग किलोमीटर में फैला एक विस्तृत चरागाह है, जिसे स्थानीय भाषा में 'बुग्याल' कहा जाता है. आदिकाल से स्थानीय गांव वाले गरमियों में यहां अपने पशु चराया करते थे. यहां वर्षाकाल में घास के साथ ही असंख्य किस्म के फूल खिले रहते हैं. 70 के दशक में भारततिब्बत सीमा पुलिस द्वारा यहां शीतकला प्रभाग की स्थापना अपने व पैरामिलिट्री के जवानों को स्कीइंग कला का प्रशिक्षण देने हेतु की गई. इस से पूर्व जोशीमठ से औली तक सुरक्षा की दृष्टि से वन टेन रोड बना दी गई थी. 1962 में भारत पर चीन के हमले के बाद इस सड़क के जरिए सैनिकों को रसद और सामान भेजा जाता था. कहना न होगा कि सर्वप्रथम भारततिब्बत सीमा पुलिस द्वारा इस जगह में स्कीइंग खेलों की संभावनाओं को तलाशा गया. इस खेल के श्रीगणेश का श्रेय भी सीमा पुलिस को ही जाता है.

औली कैसे जाएं?

सड़क मार्ग

औली जाने के लिए सब से सुगम तरीका है बसयात्रा. चूंकि पह
इलाका है, इसलिए वहां रेल तथा वायुमार्ग की व्यवस्था नहीं है. औली पह
के लिए पहले ऋषिकेश पहुंचना पड़ता है. ऋषिकेश भारत के लगभग स
महानगरों से सड़क मार्ग द्वारा सीधा जुड़ा हुआ है. फिर ऋषिकेश से जोशी
जाने वाली बसों तथा टैक्सियों द्वारा औली पहुंचा जा सकता है.

रेल मार्ग

औली तक पहुंचने के लिए कोई रेलमार्ग नहीं है. औली से
किलोमीटर दूर ऋषिकेश ही एकमात्र निकटवर्ती रेलवे स्टेशन है.

प्रमुख नगरों से दूरी

दिल्ली–500 किलोमीटर	ऋषिकेश–253 किलोमीट
कोटद्वार–297 किलोमीटर	जोशीमठ–12 किलोमीटर
हरिद्वार–277 किलोमीटर	पीपलकोठी–41 किलोमी
पौड़ी–176 किलोमीटर	श्रीनगर–147 किलोमीटर
देहरादून–298 किलोमीटर	गोपेश्वर–68 किलोमीटर

कब जाएं?

वैसे तो घूमने के लिए औली गरमियों में भी जाया जा सक
यदि हिमपात और स्कीइंग का आनंद उठाना हो तो इस के लिए
मार्च का महीना उपयुक्त होता है.

खानेपीने के प्रमुख स्थल

औली में परिवहन निगम के एक रेस्तरां के अलावा
छोटेछोटे रेस्तरां तथा ढाबे हैं जहां उत्तम खानपान की व्यवस्था
है. यहां फास्टफूड, स्थानीय व्यंजन तथा पारंपरिक भारतीय
होते हैं. इस के अलावा चाइनीज तथा दक्षिण भारतीय व्यं
सकते हैं.

सन 1984 में उत्तर प्रदेश सरकार के उपक्रम गढ़वाल मंडल विकास निगम द्वारा यहां शीतकालीन स्कीइंग खेल केंद्र की स्थापना की गई. केंद्र का उद्देश्य स्कीइंग खेलों को बढ़ावा देने व लोकप्रिय बनाने के लिए रखा गया. केंद्र में पर्याप्त खेल प्रशिक्षण व्यवस्था रखी गई. निगम ने प्रशिक्षित स्टाफ नियुक्त किया. धीरेधीरे आवास, खानेपीने, आधुनिक उपकरण व खेल सामान को जुटाया गया. स्की लिफ्ट, चेयर लिफ्ट, रोपवे जैसे सुविधाओं से यह केंद्र लैस हो गया.

सन 1994 में जोशीमठ से औली तक 4 किलोमीटर लंबी पैसेंजर रोपवे बन कर तैयार हुई. इस से औली के आकर्षण में एक अनूठा अध्याय जुड़ गया. यह हिमालय क्षेत्र में एशिया की सब से लंबी स्वचालित रोपवे है. इस में 10 टावर हैं, 2 केबिन हैं. प्रत्येक में 25 लोग बैठ सकते हैं. बस्ती, जंगल, खेतों से गुजरते हुए जैसे ही औली के करीब पहुंचते हैं तो अखंड हिमराशि के भव्य दर्शन से पर्यटक आत्मविभोर हो जाता है. हिमशिखरों के रोमांचक दृश्य आनंदित करते हैं. ढलानों पर स्कीइंग खेलों में मशगूल युवक और युवतियां बहुत मोहक लगते हैं.

आज स्कीइंग केंद्र में 105 शैयाएं उपलब्ध हैं. भव्य कैंटीन व रेस्टोरेंट है. केंद्र में 7 व 15 दिनों के 2 अलगअलग प्रशिक्षणों की सुविधा है, जिन की फीस क्रमशः 1,000 व 2,000 रुपए है. पर्यटन के लिहाज से यहां आसपास कई मनोरम स्थल दर्शनीय हैं. कुछ दिलकश ट्रैकिंग रूट इस प्रकार हैं :

औली–गुरसौं ट्रैक (3 किलोमीटर)
औली–छत्राकुंड (4 किलोमीटर)
औली–जोशीमठ (4 किलोमीटर)
औली–तपोवन (10 किलोमीटर)
औली–क्वांरी बुग्याल (30 किलोमीटर)

निकटवर्ती दर्शनीय स्थल

गुरसौं बुग्याल

यह औली से 3 किलोमीटर की दूरी पर ओक व कोनीफर के जंगलों से घिरा मीलों फैला चरागाही मैदान है. यहां की ऊंचाई 3,056 मीटर है. जोशीमठऔली रोपवे के आखिरी टावर से यहां की दूरी मात्र 1½ किलोमीटर शेष रह जाती है. गरमियों में यहां असंख्य फूल खिले रहते हैं.

छत्राकुंड

गुरसौं से 1 किलोमीटर की दूरी पर जंगल के बीच मीठे जल का लघु सरोवर दर्शनीय है. औली से गुरसौं होते यहां पहुंचा जा सकता है.

सेलधार तपोवन

जोशीमठ नीती घाटी मार्ग पर तपोवन नामक कस्बे में गर्म जल के कई प्राकृतिक स्रोत देखने लायक हैं. 3 किलोमीटर आगे सेलधार में अति उष्ण जल के फव्वारे बेहद मोहक लगते हैं.

क्वांरी बुग्याल

3,350 मीटर ऊंचाई पर एक ऐसा स्थल है, जो किसी जन्नत से कम नहीं. मीलों फैले रुपहले ढलान अनूठा सौंदर्य बिखेरे रहते हैं. गुरसौं से यहां की दूरी 15 किलोमीटर है. साहसिक ट्रैकिंग करने वालों के लिए यह अत्यंत आकर्षक पर्यटन स्थल है.

जोशीमठ

औली से 12 किलोमीटर नीचे सीमांत जिला चमोली का यह प्रमुख नगर अनेक मठ, मंदिर, स्मारकों के

औली स्थित मैदान में स्कीइंग के लिए ढलान तैयार करते स्नोकैटर.



लिए प्रख्यात है. ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, पौराणिक महत्त्व के अलावा पर्यटन पर्वतारोहण के आकर्षण के कारण यह नगर पर्यटकों को प्रिय लगता है. फूलों की घाटी व बदरीनाथ का यह प्रवेशद्वार है.

चिनाब झील

जोशीमठ नगर के सब से दूर बसे गांव थैंग से घने जंगल, मखमली घास के मैदान से होते हुए 15 किलोमीटर बाद मनमोहक झील के दर्शन होते हैं. दुर्गम क्षेत्र में होने व आवागमन की दिक्कत के कारण यह झील पर्याप्त प्रचार नहीं पा सकी. यहां रहनेखाने की व्यवस्था स्वयं करनी पड़ती है.

वंशीनारायण कल्पेश्वर

जोशीमठ से 12 किलोमीटर की दूरी पर हेलंग नामक बस्ती से पैदल 10 किलोमीटर बाद मनोरम दुर्गम घाटी में पहुंचा जाता है. घाटी से 2 किलोमीटर आगे कल्पेश्वर गुफा दर्शनीय है. 10 किलोमीटर की दूरी पर वंशीनारायण स्थल भी अद्वितीय सौंदर्य से घिरा हुआ है.

भविष्य बदरी

तपोवन से पैदल 3 किलोमीटर की दूरी पर घने देवदार जंगल के बीच यह तीर्थ आस्था सौंदर्य का बेजोड़ संगम है.

तापमान

यहां का तापमान गर्मियों अधिकतम 13 डिगरी सेंटीग्रेड त सर्दियों में न्यूनतम 9 डिगरी सेंटीग्रे तक रहता है.

–प्रकाश पुरोहित 'जयदी

गंगोत्तरी

एक साथ हिमालय की पवित्रता और प्राकृतिक सुंदरता से मुग्ध और मोहित करने वाला तीर्थ गंगोत्तरी, गंगा नदी के उद्गम क्षेत्र में बसा विश्वप्रसिद्ध स्थल है. कल तक जहां कठिन पैदल यात्रा कर श्रद्धालु लोग यहां पहुंचते थे वहां अब के एकदम पास तक मोटर मार्ग जाने से यहां की यात्रा बहुत आ हो गई है. अब तीर्थयात्रियों के बड़ी संख्या में पर्यटक व पर्व लोग भी यहां आते हैं.

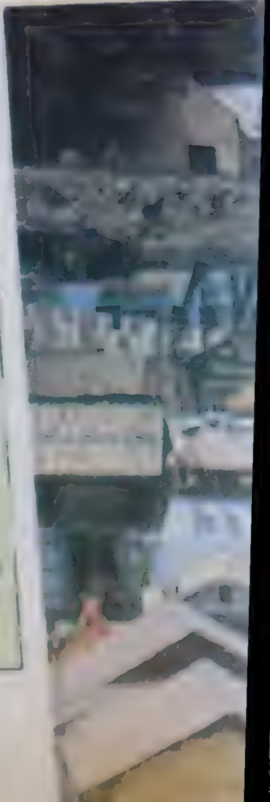
गंगा का मूल उद्गम यहां से 18 किलोमीटर दूर यात्रा पैदल तय करनी पड़ती है. लोग गंगोत्तरी पहुंचते हैं उन आधे लोग गोमुख जाते हैं. घुमक्कड़ व पर्वतारोहियों की गोमुख से आगे फूटती हैं. गो आगे नंदनवन, तपोवन तो विभूषित हैं.

कहां ठहरें? औली

गढ़वाल मंडल विकास निगम ने यहा यात्रियों के ठहरने के लिए 19 हट्स तथा 3 फाइबर ग्लास हट्स बनवाए हैं. कुल व्यवस्था 105 बिस्तर की है. हट में 600 रुपए प्रति व्यक्ति किराया है तथा डारमेट्री का 75 से 200 रुपए है. यहां खानेपीने के लिए कैंटीन तथा रेस्तरां भी हैं. जहां शाकाहारी तथा मांसाहारी भोजन प्राप्त होता है.

औली में उपलब्ध सुविधाएं

- जोशीमठ औली तक 4 किलोमीटर लंबी रोपवे
- 500 मीटर लंबी स्की लिफ्ट (फीस 15 रुपए एक दिन की)
- 800 मीटर लंबा चेयर लिफ्ट (किराया 50 रु. प्रति व्यक्ति)
- दूरभाष सुविधा.
- 7 व 15 दिन के स्कीइंग पाठ्यक्रम कोर्स (फीस 1,100 रुपए व 2,200 रुपए. इस में खानेपीने रहने की व्यवस्था भी है)
- दो स्नोबीटर मशीनें (बर्फ की ढलों को खुलने के अनुकूल बनाने के लिए).
- स्कीइंग उपकरण (किराए पर मिलते हैं. छात्रों को 50 रु. व अन्य को 100 रुपए प्रतिदिन के हिसाब से).
- रहने के लिए 108 शैयाएं (19 हट्स, 3 फाइबर, ग्लास हट्स, किराया 75 रुपए से 600 रुपए प्रति रात्रि तक)
- कैंटीन व रेस्टोरेंट.
- स्कीइंग प्रशिक्षण के लिए [illegible] देहरादून 248001.



गंगा के प्राचीन मंदिर के ारण गंगा की चंचल वेगवती लहरों के किनारे बसा गंगोत्तरी धाम 3,200 मीटर) का सौंदर्य मनप्राण ांध लेता है. शांत खड़े देवदार वन ौर उन के बीच से सरसराती बहती डी हवा एक नई स्फूर्ति बांट जाती

कहा जाता है कि इसी स्थान राजा भगीरथ सगर के पुत्रों के द्धार के लिए गंगा को धरती पर ार लाए थे. यहां पर गंगा त्तरवाहिनी हो जाती है. इस स्थान ी सुंदरता को आंका नहीं जा सकता यहां आते ही दुनियावी पचड़ों को ल कर पर्यटक प्राकृतिक छटाओं डूब सा जाता है.

गंगोत्तरी मंदिर को गोरखा मांडर अमर सिंह थापा ने 18 वीं ताब्दी के प्रारंभ में बनवाया था. क्षय तृतीया (मई माह में एक र्धारित दिन) के दिन परंपरागत दिक मंत्रोच्चारण के साथ यहां दिर के कपाट खोले जाते हैं. फिर ोत्तरी आबाद होती है और यात्रा रू हो जाती है. ठीक दीपावली के दिन नवंबर में गंगोत्तरी धाम के कपाट शीतकाल के लिए बंद हो जाते हैं. पूरी नगरी निर्जन हो जाती है. गंगा की मूर्ति 6 माह तक पूजा के लिए निकटवर्ती मुखवा (मुखीमठ) गांव में आ जाती है. कपाट खुलने से एक दिन पूर्व मूर्ति को डोली में रख कर एक भव्य शोभा यात्रा के साथ सैकड़ों लोग गंगोत्तरी धाम पहुंचाते हैं.

ोत्तरी मंदिर के आसपास का ातावरण प्राकृतिक छटाओं से भरा ा है.



गंगोत्तरी कैसे जाएं?

गंगोत्तरी पहुंचने के लिए बस ही एकमात्र और उत्तम साधन है. यहां से सब से निकट रेलवे स्टेशन ऋषिकेश है, जो 249 किलोमीटर दूर है. वायुमार्ग नहीं है. गंगोत्तरी तक सीधी साधारण तथा लग्जरी बस सेवाएं उपलब्ध हैं. इस के अलावा ऋषिकेश, देहरादून, हरिद्वार, टिहरी, श्रीनगर, पौड़ी, उत्तरकाशी आदि स्थानों से त्वरित बस सेवाओं के साथसाथ टैक्सी तथा जीप भी किराए पर उपलब्ध होती हैं. स्थानीय यातायात के लिए भी बसें उत्तम साधन हैं. इस के अलावा टैक्सियां तथा आटो भी किराए पर उपलब्ध होते हैं.

प्रमुख नगरों से दूरी

देहरादून–298 किलोमीटर	उत्तरकाशी–100 किलोमीटर
ऋषिकेश–249 किलोमीटर	भटवाड़ी–70 किलोमीटर
हरिद्वार–274 किलोमीटर	बड़कोट–1 किलोमीटर
नरेंद्र नगर–234 किलोमीटर	हरसिल–25 किलोमीटर
टिहरी–167 किलोमीटर	धराली–20 किलोमीटर
धरासू–125 किलोमीटर	लंका–8 किलोमीटर
यमुनोत्तरी–232 किलोमीटर	मसूरी–250 किलोमीटर

दर्शनीय स्थल

भगीरथी जल प्रपात

इसे गौरीकुंड भी कहते हैं. गंगा नदी को यहां भगीरथी कहते हैं. एक जगह पर यह धारा बड़े झरने के रूप में गिरती है. झरनों का सौंदर्य इतना अद्भुत है कि निगाहें इन से हटती नहीं हैं.

भगीरथ शिला

मंदिर के पास भगीरथ शिला दर्शनीय है. यहां पास ही स्नान व धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं. कुछ आगे चल कर केदारताल से आने वाली केदारगंगा, भगीरथी नदी में मिल जाती है.

पटांगणा

गंगोत्तरी धाम से डेढ़ किलोमीटर आगे देवदार व कोनीफर के सघन वन साम्राज्य के बीच यह मनोरम



गोमुख ग्लेशियर के निकट स्थि
रमणीक स्थल तपोवन पर्यटकों
आकर्षित करता है

सैरगाह है. यहां मैदानाकार विशाल शिलाएं दर्शनीय हैं. गंगा नदी यहां संकरी घाटी में से हो कर बहती है.

जलमग्न शिवलिंग

यह भगीरथी के अंदर डूबा हुआ प्राकृतिक रूप से बना पत्थर का शिवलिंग है. नदी का पानी जब कम होता है तब यह दिखाई देता है.

निकटवर्ती अन्य दर्शनीय स्थल

गोमुख ग्लेशियर

गंगा का उद्गम गोमुख, गंगोत्तरी से 18 किलोमीटर आगे 4,200 मीटर ऊंचाई पर है. सब से बड़ी बात यह है कि यह पैदल सफर बहुत तकलीफदेह नहीं है. घाटियों से गुजरता रास्ता चढ़ाइयों वाला नहीं है. रास्ता गंगा की उछलती, कलकल करती वेगवती धाराओं के किनारेकिनारे है. पूरे रास्ते में देवदार, कैल, पद्म, थुनेर व भोजपत्र के वृक्ष अनुपम शोभा बिखेरे रहते हैं.

सुबहसुबह जब गंगोत्तरी से चलते हैं तो सीधे रास्ते से चलते हुए 10 किलोमीटर बाद चीड़वासा नामक पड़ाव में पहुंचते हैं. यहां पर कई दूकानें हैं. 4 किलोमीटर बाद भोजवासा (3,792 मीटर) पड़ाव है.

यहां पर्यटक आवासगृह, लाल
आश्रम व एकाध लाज में अ
व्यवस्था है. खाने के लिए वै
भोजपत्र वृक्षों की बहुतायत के
यहां का नाम भोजवासा पड़ा
गोमुख जा कर रात्रि विश्राम
यहीं आते हैं.

भोजवासा से गो
किलोमीटर रह जाता है.
विशाल हिमराशि के
विशाल गुफा के नीचे से
जन्म जलधार के रूप में हो
का हिममंडित सौंदर्य मुग्ध
है. ग्लेशियर के पृष्ठभाग
शिखर समूह बहुत भव्य
है. गंगोत्तरी से गोमुख के
दूकानें है जहां गर्म चाय,
नूडल्स, पराठे, नाश्ता व
जाता है. गंगोत्री से घो
सुविधा भी है. भोजवासा
भरल (हिरन) के झुंड
हैं

तपोवन

गोमुख ग्लेशि
निकट पत्थर व चट्टानें
4 किलोमीटर की

कहां ठहरें? **गंगोत्तरी**

गंगोत्तरी में ठहरने के लिए कोई बड़ा होटल नहीं है किंतु गढवाल मंडल विकास निगम ने 2 अलगअलग जगहों पर पर्यटक आवासगृह बनवाए हैं गंगोत्तरी अतिथिगृह, लोक निर्माण विभाग विश्रामगृह. इस के अलावा वन विभाग विश्रामगृह. चंद्रलोक काटज जलसंस्थान विश्रामगृह भी यात्रियों के लिए उपलब्ध हैं

इन के अलावा यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था आश्रमों तथा धर्मशालाओं में ही उपलब्ध है. कुछ आश्रम तथा धर्मशालाएं निम्नलिखित हैं

गंगायमुना लाज भागीरथी सदन ईशावास्य आश्रम. दंडी आश्रम शांतिनिकेतन. सोमाणी भवन मौनीबाबा आश्रम. योगनिकेतन. मंगल निकेतन कैलाश संगम. बिड़ला धर्मशाला बाबा काली कमली पंचायती धर्मशाला रामानंद आश्रम. अवधूत आश्रम ट्रस्ट. अच्युतानंद आश्रम [illegible]

रमणीक तपोवन नामक मैदानी भाग में पहुंचा देता है.

शिवलिंग पीक (6,543 मीटर) की गोद में स्थित इस मैदान में साक्षात स्वर्गिक सौंदर्य आ उतरा है. मैदान में मखमली घास व सैकड़ों फूल खिले रहते हैं. बीचबीच में शोख जलधाराएं बहती हैं.

नंदनवन

गोमुख से एक दूसरा मार्ग कठिन दर्रे से होता हुआ रमणीक नंदनवन पहुंचा देता है. यहां ठहरने की कोई व्यवस्था नहीं है. साहसी पर्यटक स्वयं टेंट गाड़ कर गाइड पोर्ट ले कर चलते हैं. यहां से आगे एक मार्ग वासुकीताल, कालिंदीखाल (5,590 मीटर) होते बदरीनाथ धाम के लिए जाता है.

सहयोग से करनी पड़ती है. झील का वर्णनातीत सौंदर्य मुग्ध करता है.

हरसिल

गंगोत्तरी धाम से 25 किलोमीटर पीछे अत्यंत शांत सुंदर मुग्धमोहित करने वाला पर्यटन स्थल है, हरसिल. शोख नदीनालों, झरनों व अनेक जलधाराओं ने घाटी की सुंदरता को भव्यता दी है. यहां कई होटल, गेस्ट हाउस, रेस्टोरेंट हैं, गंगा नदी का पाट दर्शनीय है.

सातताल

गंगोत्तरी से 20 किलोमीटर पीछे धराली गांव से 6 किलोमीटर की परिधि में 7 छोटीछोटी प्राकृतिक झीलों का समूह दर्शनीय है. इस में से 2 झीलें सूखती जा रही हैं. शेष



हरसिल शांत, सुंदर तथा मुग्ध करने वाला पर्यटन स्थल है.

केदारताल

गंगोत्तरी से 18 किलोमीटर विकट दुस्साहमिक पदयात्रा के बाद हिमानी झील केदारताल (4,901 मीटर) के दर्शन होते हैं. यह झील मानो उच्च हिमालय शिखरों के बीच एक दर्पण की तरह है, जिस में शिखरों का प्रतिबिंब झलकता है.

यहां रहने, खाने की स्वयं व्यवस्था गाइड, पोर्टर के विश्वस्त

झीलों में निर्मल जल भरा रहता है. धराली गांव से यहां तक का पैदल ट्रैक मनोहर प्राकृतिक छटाओं से भरा पड़ा है. गांव का जनजीवन भी आकर्षित करता है.

गंगनानी

गंगोत्तरी से 58 किलोमीटर पर यहां अति गर्मजल के स्रोत व कुंड हैं. यात्री इन में नहा कर सारी थकान भूल जाता है. लंबी यात्रा के बाद इन कुंडों में उतरते ही एक नए स्फूर्ति व उल्लास का संचार होने लगता है.

महिलाओं के लिए अलग कुंड बनाया गया है. पानी में सल्फर की ज्यादा मात्रा है. यहां पाराशर ऋषि का प्राचीन मंदिर है. रहने, खाने की अच्छी व्यवस्था है. अंगरेज पर्यटक इस जगह को बहुत पसंद करते हैं.

दयारा बुग्याल

गंगोत्तरी से उत्तरकाशी आते वक्त 70 किलोमीटर पीछे भटवाड़ी कस्बा है. यहां से 10 किलोमीटर ऊपर रैथल आखिरी बस स्टाप है. रैथल से पैदल 10 किलोमीटर बाद मीलों फैला दयारा चरागाह स्कीइंग खेलों के लिए प्रसिद्ध है. ग्रीष्मकाल में यहां फूल खिले रहते हैं. सर्दियों में बर्फ के आगोश में ये ढलानें ढक जाती हैं.

डोडीताल

उत्तरकाशी से 10 किलोमीटर आगे संगमचट्टी से 21 किलोमीटर की ट्रैकिंग कर सुप्रसिद्ध झील डोडीताल पहुंचा जाता है. सारा मार्ग अत्यंत खूबसूरत दृश्यों से भरा पड़ा है.

उत्तरकाशी

यहां से गंगोत्तरी 99 किलोमीटर है. यह जिला मुख्यालय व गढ़वाल का सब से सुरम्य नगर है. यहां मंदिरों की भरमार है.

यहां नेहरू पर्वतारोहण संस्थान स्थित है. यहां बेहतरीन होटल, गेस्ट हाउस, आश्रम, धर्मशालाएं, रेस्टोरेंट हैं.

मनेरी

उत्तरकाशी से आगे 11 किलोमीटर पर यहां विशाल जल विद्युत परियोजना का कार्यस्थल है. गंगा नदी यहां विशाल झील के रूप में बेहद आकर्षक प्रतीत होती है.

पर्वतारोहण व साहसिक खेल

गंगोत्तरी क्षेत्र अनेक प्रसिद्ध ऊंचे शिखरों से घिरा है. दुनिया में पर्वतारोहण आकर्षण की दर्जनों चोटियां अकेले इस क्षेत्र में हैं. उत्तरकाशी स्थित नेहरू पर्वतारोहण

संस्थान पर्वतारोहण का समग्र प्रशिक्षण यहां देते हैं.

यहां 5 पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं. उत्तरकाशी में दर्जन भर एजेंसियां पर्वतारोहण के लिए गाइड, पोर्टर, कुली, कुक व सामान जुटाते हैं. ये एजेंसियां गंगोत्तरी रोड पर हैं.

वस्त्र

गरमियों में हल्के ऊनी व शेष दिनों भारी ऊनी कपड़े ले जाएं

भोजन

गंगोत्तरी में शाकाहारी भारतीय भोजन उपलब्ध है.

तापमान

यहां का तापमान गरमियों में अधिकतम 20 डिगरी सेंटीग्रेड, सर्दियों में न्यूनतम शून्य डिगरी के आसपास रहता है.

सुविधाएं

गंगोत्तरी में डाकघर, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, किराए के लिए टैक्सियां, भारवाहक, गाइड, गोमुख जाने के लिए टट्टू की व्यवस्था उपलब्ध है.

–प्रकाश पुरोहित 'जयदीप'

यमुनोत्तरी

यमुना नदी के उद्गम क्षेत्र में स्थित यमुनोत्तरी तीर्थ तीर्थयात्रियों के साथसाथ पर्यटकों को भी बेहद प्रिय है. उत्तरकाशी जनपद में 3,233 मीटर ऊंचाई पर यह तीर्थस्थल बंदरपूंछ (6,316 मीटर) शिखर के पश्चिम भाग में अवस्थित है. यहां निकटवर्ती आखिरी बस स्टाप हनुमानचट्टी से 14 किलोमीटर की पैदल यात्रा करनी पड़ती है. इस पैदल सफर में प्रकृति की गोद में काफी कुछ वक्त बिताने का अनुपम अवसर मिलता है. वैसे इस मार्ग पर घोड़ा, खच्चर, डंडीकंडी की माकूल सुविधाएं हैं. यहां यमुनाजी की प्रतिमा स्थित है. पुराने मंदिर का जीर्णोद्धार कर अब नया मंदिर बनाया गया है. मंदिर के आसपास गर्म जल के प्राकृतिक सोते, झरने, कुंड दर्शनीय हैं. पूरे यात्रा मार्ग में वन्य छटा, नदी, नाले, प्रपात, गांव, खेत, जनजीवन आकर्षित कर[illegible] हैं.

यमुना का मंदिर प्राकृतिक आपदाओं से कई बार क्षतिग्रस्त हुआ है. प्राचीन मंदिर टिहरी नरेश महाराज प्रतापशाह ने संवत 1919 में बनवाया था. वर्तमान मंदिर कलकत्ता के सेठ जालान के सहयोग से बन सका है.

दर्शनीय स्थल

गर्म जल कुंड

मंदिर के बगल में पह[illegible] चट्टान के अंदर से खौलता हुआ [illegible] गर्म जल निकलता रहता है. इस [illegible] में यात्री कपड़े की पोटली में [illegible] और चावल बांध कर रखते हैं. [illegible] ही पलों में ये दोनों चीजें भली[illegible] पक कर तैयार हो जाती हैं [illegible] सूर्यकुंड कहलाता है. इसी के न[illegible] अन्य गर्म कुंड (एक पुरुष और [illegible] महिलाओं के लिए) स्थित हैं [illegible] गर्म जल के स्रोत भी दर्शनीय [illegible]

सप्तऋषि कुंड झील

यमुनोत्तरी से 10 कि[illegible] कष्टसाध्य दुर्गम यात्रा के ब[illegible]



सप्तऋषि कुंड झील के आसपा[illegible] दुर्लभ ब्रह्मकमल पुष्प खिले रह[illegible]

यमुनोत्तरी
कैसे जाएं?

सड़क मार्ग

यमुनोत्तरी पहुंचने के लिए कोई सीधा यातायात साधन उपलब्ध नहीं है. यमुनोत्तरी से 14 किलोमीटर पहले हनुमानचट्टी तक ही बस सेवाएं उपलब्ध हैं. फिर वहां से पैदल चलना पड़ता है. ऋषिकेश, देहरादून, विकासनगर, मसूरी, उत्तरकाशी, गंगोत्तरी तथा बड़कोट से नियमित बस सेवाएं हनुमानचट्टी तक के लिए उपलब्ध हैं. इन स्थानों से टैक्सी तथा जीप भी किराए पर उपलब्ध होती हैं.

रेल मार्ग

निकटतम रेलवे स्टेशन यहां से 236 कि.मी. दूर ऋषिकेश में है. किंतु यहां तक बहुत कम ही रेल सेवाएं उपलब्ध हैं. यहां के लिए विमान सेवा उपलब्ध नहीं है.

प्रमुख नगरों से दूरी

ऋषिकेश–236 किलोमीटर	**टिहरी–157 किलोमीटर**
देहरादून–278 किलोमीटर	**धरासू–107 किलोमीटर**
चंबा–176 किलोमीटर	**ब्रह्मखाल–85 किलोमीटर**
बड़कोट–50 किलोमीटर	**सयानाचट्टी–21 किलोमीटर**
उत्तरकाशी–134 किलोमीटर	**हनुमानचट्टी–14 किलोमीटर**

कब जाएं?

प्रत्येक साल मई प्रथम सप्ताहांत तक अक्षय तृतीया को यहां के कपाट खोले जाते हैं व दीपावली के दिन पुन: कपाट बंद किए जाते हैं. बरसात के दिनों में भारी परेशानियां उठानी पड़ सकती हैं. शेष सुहावने दिनों में यहां की यात्रा की जा सकती है.

कहां ठहरें? यमुनोत्तरी

यमुनोत्तरी में ठहरने की बहुत सीमित सुविधा उपलब्ध है, इसलिए इस के आसपास के पर्यटन स्थलों पर ही ठहरने की व्यवस्था उपलब्ध हो सकती है. यहां पर मंदिरों की धर्मशालाएं भी उपलब्ध हो सकती हैं जो आरामदेह नहीं होतीं.

गढ़वाल मंडल विकास निगम का **पर्यटक आवासगृह**, गंगाजमुना लाज, जानकीचट्टी तथा बड़कोट में आरामदेह होटल तथा विश्रामगृह उपलब्ध हैं.

नोरम हिमानी झील में पहुंचा जाता . यही वास्तविक यमुना नदी का द्गम स्थल है. झील में ग्लेशियरों का पानी जमा होता रहता है. झील का पानी गहरे नीले रंग का है. झील के किनारे कुदरती तौर पर तराशे हुए स्लेटी पत्थर बिछे हुए हैं. झील के आसपास दुर्लभ ब्रह्मकमल पुष्प खिले रहते हैं.

जानकीचट्टी

यमुनोत्तरी से 7 किलोमीटर पीछे प्रमुख यात्रा पड़ाव है जानकीचट्टी. यहां कई होटल, ढाबे, धर्मशालाएं हैं. इस घाटी में यह रहने, खाने के लिए सब से उपयुक्त स्थान है. यहां से एक रास्ता क्षेत्र के आखिरी गांव खरसाली को चला जाता है.

खरसाली

जानकीचट्टी से 1 किलोमीटर की दूरी पर इस गांव में प्राचीन मंदिर दर्शनीय है. गांव के मकानों पर पत्थर और लकड़ी पर की गई नक्काशी देखते ही बनती है. चारमंजिले मंदिर में उकेरा हुआ शिल्प अनूठा ही है.

हनुमानचट्टी

यमुनोत्तरी धाम के लिए यह अंतिम बस स्टाप है. यहां हनुमान का मंदिर है. यहां होटल, ढाबे, सरकारी बंगले हैं. यहां से आगे के लिए घोड़े, खच्चर या डंडीकंडी की समुचित सुविधाएं हैं.

बड़कोट

हनुमानचट्टी से 36 किलोमीटर पहले बड़कोट उपनगर का सुरम्य ग्रामीण परिवेश पर्यटकों को आकर्षित करता है. यहां अनेक होटल, बंगले, रेस्टहाउस रहने के लिए हैं.

तापमान

यहां का तापमान गरमियों में अधिकतम 20 डिगरी सेंटीग्रेड तथा न्यूनतम 0.6 डिगरी सेंटीग्रेड और सर्दियों में हिमाच्छादित शून्य के आसपास रहता है.

वस्त्र

भारी ऊनी कपड़े हमेशा रखें. बरसात में यहां का सफर न करें. हनुमानचट्टी से यमुनोत्तरी के लिए सुबह चल देना चाहिए. रास्ते में बहुत देर तक विश्राम करना ठीक नहीं. कुछ जरूरी दवाएं (पेट दर्द, सिर दर्द) रख लें. पैदल चलते हुए सहारे के लिए लाठी जरूर रख लें.

–प्रकाश पुरोहित 'जयदीप'



बदरीनाथ मंदिर स्थापत्य कला क
दृष्टि से दर्शनीय है

बदरीनाथ

आकाश की बुलंदियों को छूते नर एवं नारायण पर्वत की गोद में बसे आदितीर्थ बदरीनाथ धाम न सिर्फ श्रद्धा व आस्था का अटूट केंद्र है बल्कि अद्वितीय प्राकृतिक सौंदर्य के कारण भी मुग्ध और सम्मोहित करता है. हिंदुओं के 4 प्रमुख धामों में से एक इस धाम में पांव रखते ही यात्री और पर्यटक स्वयं को रुपहले शिखरों के बीच सुनहली घाटी में पाता है. घाटी के बीचोबीच अलकनंदा नदी अपने कलकल करते बहाव के शोर से अविराम संगीत भरा माहौल बनाए रखती है. पर्वत की ओट पर विशाल अलंकृत मंदिर व आबादी क्षेत्र किसी देव नगरी का आभास कराते हैं. मंदिर के पास गर्म जल के कुंड, आप की थकान को सेकंडों में गायब करने की क्षमता रखते हैं. कुदरती तौर पर इस भूमिगत गर्म जल को 3-4 कुंडों में विभक्त किया गया है. सल्फर युक्त इस खौलते पानी में नहाने का अलग ही आनंद है.

3,133 मीटर ऊंचाई पर बदरीनाथ धाम का मंदिर विष्णु को समर्पित है. स्थापत्यकला की दृष्टि से मंदिर दर्शनीय है. मंदिर को 3 भागों में बांटा गया है. गर्भगृह, दर्शन मंडप और सभा मंडप. विष्णु की मुख्य मूर्ति के इर्दगिर्द कई अन्य मूर्तियां विराजमान हैं. कहते हैं प्राचीन समय में यहां बेर वृक्ष का सघन साम्राज्य था. इसे तब बदरीवन कहते थे.

कल तक जहां बदरीनाथ की यात्रा बेहद कठिन व कष्टकारी हुआ करती थी, वहीं अब यहां तक मोटर मार्ग बन जाने से यह यात्रा काफी सुविधाजनक और कम समयखाऊ हो गई है.

तीर्थयात्रियों के साथसाथ बड़ी संख्या में पर्यटक यहां आते हैं. यहां आसपास कई स्थल पर्यटन की दृष्टि से बेजोड़ व दर्शनीय हैं.

दर्शनीय स्थल

माणा गांव

बदरीनाथ धाम से 3
किलोमीटर आगे भारत का अ
गांव है, माणा. पुराने ग्रंथो
'मणीभद्रपुर' कहा गया है
अनुसूचित जनजाति के भोटि
6 माह तक रहते हैं. यहां
परिवारों का समूह रहता है. ब
के कपाट खुलने के साथ ही
यहां आ जाते हैं व कपाट
तक ये नीचे घाटियों में ब
दूसरे गांवों में आ जाते हैं.
ये लोग दोदो गृहस्थियों क
हैं. ये लोग बहुत मेहनती
पराक्रमी होते हैं. महि
कालीन कला में दक्ष होती
अपनी परंपराओं व संस्कृ
गहरे जुड़े हुए हैं. पहले ये
के साथ व्यापार करते थ
यह व्यापार बंद हो गया
यहां खूब आते हैं.

भीम पुल

माणा गांव के न
कर सरस्वती नदी के
रूप से बना विशाल
दर्शनीय है. कहते हैं इ

बदरीनाथ

कैसे जाएं?

बदरीनाथ पहुंचने के लिए विमान तथा रेल सेवाएं उपलब्ध नहीं हैं. यहां पहुंचने के लिए सर्वोत्तम साधन बस ही है. बदरीनाथ के आसपास यहां से 297 किलोमीटर ऋषिकेश तथा 327 किलोमीटर दूर कोटद्वार में रेलवे स्टेशन हैं. फिर यहां से बस द्वारा बदरीनाथ पहुंचना होता है.

देहरादून, ऋषिकेश, हरिद्वार, कोटद्वार, दिल्ली तथा इस के आसपास के स्थलों से नियमित साधारण तथा डीलक्स बस सेवाएं उपलब्ध हैं. वैसे टैक्सियां तथा जीप भी उपलब्ध होती हैं.

प्रमुख नगरों से दूरी

दिल्ली–512 किलोमीटर	गोपेश्वर–99 किलोमीटर
कर्णप्रयाग–111 किलोमीटर	देहरादून–335 किलोमीटर
रुद्रप्रयाग–139 किलोमीटर	ऋषिकेश–297 किलोमीटर

कहां ठहरें? बदरीनाथ

बदरीनाथ में ठहरने के लिए गढ़वाल मंडल विकास निगम द्वारा बनवाए गए पर्यटक आवासों तथा विभिन्न आश्रमों एवं धर्मशालाओं में ठहरने की व्यवस्था उपलब्ध है. कुछ विश्राम स्थलों का विवरण निम्नलिखित है:

आंध्र भवन, कौड़िया धर्मशाला, रूपाली धर्मशाला, चांद काटेज, महाराष्ट्र भवन, मानसिंह धर्मशाला, जल संस्थान धर्मशाला, लोकनिर्माण विश्रामगृह, हलवासिया धर्मशाला, जल निगम विश्रामगृह, सीमा संगठन विश्रामगृह, मानव कल्याण धर्मशाला, वन विश्रामगृह, देवलोक होटल, ऋषि गंगा धर्मशाला, बाजोरिया धर्मशाला, गुजरात भवन, बांगड़ धर्मशाला, गुजरात भवन आदि उपलब्ध हैं.

अन्य जानकारियां

ऋषिकेश से बदरीनाथ तक के मार्ग में जगहजगह पर पेट्रोल पंप की व्यवस्था है–डोईवाला, मुनि की रेती, देवप्रयाग, श्रीनगर, रुद्रप्रयाग, सुमेरपुर, कर्णप्रयाग, पीपलकोटी, सेलंग, जोशीमठ.

बदरीनाथ के लिए कई संस्थाएं/एजेंसियां कंडक्टेड टूर आयोजित करते हैं. ऋषिकेश से डीलक्स बसें, टैक्सियां किराए पर मिल जाती हैं.

स्थानीय यातायात

बदरीनाथ से जोशीमठ के बीच (46 किलोमीटर) एकमार्गीय यातायात की व्यवस्था है. बदरीनाथ से माणा के लिए टैक्सियां मिल जाती हैं. धाम में सामान ढोने के लिए मजदूर मिल जाते हैं. डंडीकंडी की व्यवस्था भी है.

बदरीनाथ में सुविधाएं

डाकघर, दूरभाष केंद्र, अस्पताल, पुलिस थाना, सूचना विभाग, मंदिर कमेटी का संपर्क कार्यालय.

रखा था. नीचे नदी का भीषण शोर ऊपर इस असाधारण चट्टान को देख कर पर्यटक रोमांचित हो जाते हैं. माणा गांव के पास 3-4 गुफाएं दर्शनीय हैं.

वसुधारा

भीम पुल से गुजरते हुए 5 किलोमीटर के सफर के बाद इस आश्चर्यजनक ऊंचे झरने का दर्शन अत्यंत आकर्षित करता है. सब से बड़ी खासियत यह है कि इस का सारा पानी वाष्प बन कर वायुमंडल में उड़ जाता है. आकाश में देखने से ऐसा लगता है जैसे आकाशगंगा ही नीचे उतर रही हो.

सतोपंथ झील

माणा गांव से 18 किलोमीटर आगे हिमालय के दुर्लभ दृश्यों के बीच एक किलोमीटर परिधि में फैली शांत, मनोहर सतोपंथ झील किसे आत्ममुग्ध न कर दे. गजब की कशिश है इस की स्वर्गिक सुंदरता में. झील का पानी शांत रहता है. हवा चलने से लहरों की क्रीड़ा अद्भुत समां बांध देती है.

झील के किनारे दुर्लभ व तेज सुगंध वाले ब्रह्मकमल पुष्पों का साम्राज्य फैला हुआ है. सामने स्वर्गारोहिणी शिखर है. माणा से चल कर लक्ष्मीवन, चक्रतीर्थ होते हुए यहां पहुंचा जाता है. बदरीनाथ से यहां तक पैदल लौटने में 3 दिन लग जाते हैं.

पांडुकेसर

बदरीनाथ से 20 किलोमीटर पीछे पांडवों की स्मृति से जुड़ा पौराणिक स्थल है यह. यहां 2 मंदिर वास्तुकला का बेजोड़ उदाहरण प्रस्तुत करते हैं. यह काफी बड़ा गांव है. यात्रा के दिनों में यहां खूब चहलपहल रहती है.

गोविंदघाट

यह पांडुकेसर से 2 किलोमीटर पूर्व विश्वविख्यात पर्यटनस्थल फूलों की घाटी व हेमकुंड झील का प्रवेशद्वार है. यहां से पैदल 17 किलोमीटर पर फूलों की घाटी

कब जाएं?

मंदिर के कपाट मई में तय किए गए दिन को खोले जाते हैं व एक निर्धारित दिन को नवंबर में बंद कर दिए जाते हैं. मई से नवंबर तक यात्रा चलती है. यहां के मुख्य पुजारी दक्षिण भारतीय मूल के रावल होते हैं. यह व्यवस्था आदिगुरु शंकराचार्य के समय से प्रारंभ हुई है.

मईजून एवं सितंबर से नवंबर प्रथम सप्ताह तक पर्यटन के लिए सुहावने मौसम हैं. बरसात में सड़कें भूस्खलन से कुछ जगहों पर अवरुद्ध हो जाती हैं. मंदिर में प्रातः व सायंकालीन आरतियां होती हैं. बदरीनाथ में रहने, खाने की उत्तम व्यवस्थाएं हैं. सर्वथा शाकाहारी भोजन यहां के रेस्टोरेंट व ढाबे परोसते हैं. रहने के लिए बदरीनाथ मंदिर समिति के 14-15 विश्रामगृह हैं. इस के अलावा धर्मशालाएं, पर्यटक बंगले व सरकारी विश्रामघर भी हैं.

व 20 किलोमीटर पर हेमकुंड साहिब है. यहां गुरुद्वारा लंगर, अनेक होटल और ढाबे हैं.

हनुमानचट्टी

बदरीनाथ से 13 किलोमीटर पीछे हनुमान मंदिर के लिए प्रसिद्ध स्थान है. यहां पर गांव भी है. निकट ही दुर्लभ भोजपत्र वृक्ष की नर्सरी है.

खिरौं घाटी

हनुमानचट्टी से बेनाकूली में अलकनंदा नदी पर बने पुल को लांघते ही अनुपम सौंदर्य घाटी में पहुंचा जा सकता है. यहां से 4 किलोमीटर पर खिरौं गांव है, जहां 4-5 महीने स्थानीय लोग रहते हैं. गांव से ऊपर कई स्थल जैसे, तातापाणी, उन्याणी ताल दर्शनीय हैं. यहां से एक रास्ता बदरीनाथ धाम के लिए जाता है.

कागभुषंडि ताल

फूलों की घाटी मार्ग पर भ्यूंडार नामक गांव से 20 किलोमीटर की दूरी पर साहसिक ट्रैकिंग के बाद इस विशाल अनुपम झील के दर्शन होते हैं. पूरे मार्ग पर अनिंद्य सौंदर्य बिखरा हुआ है. झील की सुंदरता का कोई जवाब नहीं. मार्ग दुर्गम होने के कारण अभी यहां कम ही पर्यटक पहुंचते हैं.

–प्रकाश पुरोहित 'जयदीप'

फूलों की घाटी

बर्फ से हिमालय को यदि सलोना रूप मिला है तो उस की गोद में महकती फूलों की वादियों से उसे एक सपनीला रंग मिला है. बात फूलों की आ गई तो उस घाटी का जिक्र किए बिना बात बनेगी नहीं, जो दुनिया भर में 'फूलों की घाटी' के नाम से ही मशहूर है और जहां पहुंचना ज्यादा तकलीफदेह भी नहीं मैदानी इलाकों में जब सूरज का गोला बेतरह आग बरसाने लगता है तब इस मनोरम घाटी में असंख्य प्राकृतिक फूलों की बहार महका करती है. इन दिनों देशविदेश से प्रकृतिप्रेमी सैलानी यहां पहुंचते हैं और कुदरत के दिलकश नजारों में खो जाते हैं. यह घाटी आज भी उतनी ही चित्तचोर है जितनी पहले थी. प्राचीन ग्रंथों में नंदनकानन व गंध मादन नाम से इस घाटी का जिक्र आया है लेकिन दुनिया को इस घाटी के बारे में तब पता चला जब प्रसिद्ध ब्रिटिश पर्वतारोही फ्रैंक स्माइथ यहां पहुंचे.

दर्शनीय स्थल

घाटी की खोज

बात सन 1931 की है. तब फ्रैंक स्माइथ गढ़वाल में कामेट नामक चोटी पर पर्वतारोहण करने आए थे. सफल अभियान के बाद लौटते समय वह पश्चिमी दर्रे से रास्ता भटक गए तो बड़ी मुश्किलों के बाद सर्वथा एक नए रास्ते से एक ऐसी घाटी में पहुंच गए जहां फूलों का समुंदर लहरा रहा था. बरबस फूलों के बीच अपने को घिरा हुआ देख कर स्माइथ साहब अपनी सुधबुध खो बैठे. हिमालय में भटकना उन के लिए एक ऐसा दुर्लभ संयोग था. फिर वे तंबू गाड़ कर कई दिन घाटी में रहे. इस दौरान उन्होंने फूलों की 260 प्रजातियों के नमूने इकट्ठे किए. कुछ फूलों के बीज वह विदेश भी ले गए. सन 1937 में वह दोबारा इस घाटी में आए व लंबे समय तक रहे. फिर उन्होंने 'वैली आफ फ्लावर्स शीर्षक' से एक किताब लिख डाली और देखते ही देखते यह घाटी विश्व भर में मशहूर हो गई. प्रकृतिप्रेमी, वनस्पतिविद, शोधार्थी दल आने लगे. पहले इस घाटी को स्थानीय लोग विषतोली, द्वारीरवर्क नाम से जानते थे.

सैकड़ों किस्म के रंगबिरं अनूठे फूलों की भरमार के अला तरहतरह के जीवजंतु, पक्ष तितलियां, यहां के आकर्षण को भी बढ़ा देते हैं. 3,500 मीटर से कर 6,500 मीटर तक स्थित



न तरफ से ऊंचेऊंचे पर्वतों
हुई है.

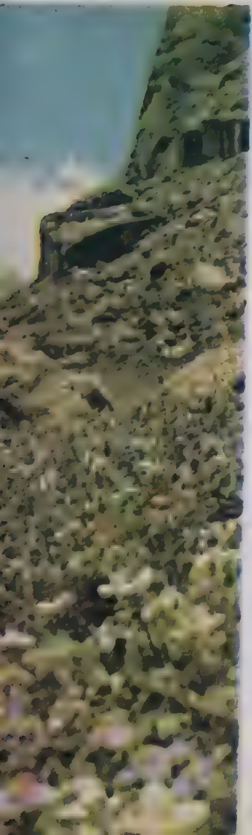
पार्क

सन 1982 में इस घाटी को
पार्क घोषित किया गया. इस
फल 87.5 वर्ग किलोमीटर
किया गया. यहां पाए जाने
कुछ खास फूलों के नाम
सिटी, सैक्सीफ्रेग्स, सेडम्स,
पोपी, कैलेंडुला, डेजी,
टरमोप्सिस, प्रिमुला,
टा, पोंटेटिला, जेरेनियम,
नेपोलेसिस, हौली, पेंजी,
पिटूनिया, ल्फौक्स,
स डाइंथस आदि. घाटी के
हने वाली चंचल जल धाराएं
को एक नया रूप देती हैं.
चारों तरफ खड़े ऊंचे पर्वत
भूमिका निभाते हैं. उन के
सरे हुए ग्लेशियर बहुत
करते हैं.

में एक समाधि

फ्रेंक स्माइथ की पुस्तक पढ़

घाटी में सैकड़ों किस्म
गे फूल हमेशा खिले



फूलों की घाटी

कैसे जाएं?

रेल मार्ग

निकटवर्ती रेलवे स्टेशन ऋषिकेश है.

सड़क मार्ग

फूलों की घाटी पहुंचने के लिए सब से पहले ऋषिकेश पहुंचना होगा. ऋषिकेश देश के सभी बड़े नगरों से सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा है. ऋषिकेश से जोशीमठ तक बस व टैक्सी सेवाएं हैं. जोशीमठ से गोविंदघाट तक बस, टैक्सी मिल जाती है.

पैदल मार्ग

'फूलों की घाटी' गढ़वाल में चमोली जनपद में स्थित है. सुविख्यात बदरीनाथधाम से 20 किलोमीटर पूर्व एक कस्बा है–गोविंदघाट. यहां से पैदल 17 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, फूलों की घाटी. घाटी से मात्र 3 किलोमीटर दूर आखिरी रात्रि विश्राम पड़ाव है, घांघरिया. यहां पर गुरुद्वारा लंगर के अलावा अच्छे होटल, ढाबे व रेस्टोरेंट हैं. फास्ट फूड, नूडल्स, शीतल पेय, शाकाहारी भोजन मिल जाता है. घांघरिया से एक मार्ग फूलों की घाटी को जाता है तो दूसरा मार्ग खड़ी चढ़ाई से 6 किलोमीटर बाद हेमकुंड झील पहुंचा देता है. यह दुनिया भर में सिख धर्मावलंबियों का पवित्र श्रद्धा स्थल व तीर्थ है. यहां विशाल गुरुद्वारा है. हिंदू धर्मावलंबियों का आदि लक्ष्मण तीर्थ भी यहां है. घांघरिया से पर्यटक फूलों की घाटी जा कर घूमघाम कर वापस घांघरिया आ जाते हैं.

गोविंदघाट में गुरुद्वारा, होटल, रेस्टहाउस में रहने की पर्याप्त व्यवस्था है. 4 किलोमीटर पर पुलना गांव फिर 5 किलोमीटर बाद भ्यूंडार गांव आता है, जहां से घांघरिया 4 किलोमीटर रह जाता है. पूरे मार्ग पर ढाबे व दुकानें हैं. गोविंदघाट से घोड़े खच्चर, डंडीकंडी की भरपूर सुविधाएं हैं. घांघरिया में रहने की पर्याप्त व्यवस्थाएं हैं.

कर कई विदेशी पर्यटक यहां पहुंचे, उन्हीं में से एक थी लंदन मूल की नीली आंखों वाली युवती जान मारग्रेट लेग, जो सन 1939 में फूलों की घाटी पहुंची. उसे फूलों से बेहद प्यार व लगाव था. 4 जुलाई को जब वह एक दुर्लभ फूल को तोड़ने के लिए प्रयास कर रही थी तो एक चट्टान से फिसल कर गहरी खाई में जा गिरी और हमेशा के लिए घाटी में सो गई. उस की स्मृति में उस की कब्र पर एक शिलालेख लगाया गया है, जिस पर लिखा है, 'मेरी आंखें सदा उन पर्वतों को निहारती रहेंगी जहां से मुझे शक्ति और प्रेरणा मिली है.'

घाटी में आने वाले पर्यटक इस समाधि स्थल तक जरूर जाते हैं व नम आंखों से श्रद्धासुमन चढ़ाते हैं.

सलाह

गर्म कपड़े ले कर जाएं. छाता जरूर रखें. वाटरप्रूफ जैकेट रखें तो बेहतर रहेगा. फूलों को जड़ से न उखाड़ें. पर्यावरणीय स्वच्छता का विशेष रूप से ध्यान रखें, पोलिथीन, कचरा न फैलाएं.

–प्रकाश पुरोहित 'जयदीप'

केदारनाथ

तीर्थयात्रा के साथसाथ पर्यटन हो जाए तो जैसे सोने में सुहागा हो जाता है. ऐसा विलक्षण संयोग गढ़वालहिमालय के चारों विश्वविख्यात धामों में सहज रूप से प्राप्त होता है. चारों धाम प्रकृति के सुरम्य सौंदर्य छटा से भरे पड़े हैं. ऐसा ही एक दर्शनीय धाम है, केदारनाथ धाम. यहां आज भी 14 किलोमीटर का सफर पैदल तय करना पड़ता है. पूरा मार्ग मनमोहक छटाओं से घिरा हुआ है.

यहां का सौंदर्य दिलोदिमाग पर ऐसा असर डालता है कि पर्यटक आत्ममुग्ध हो कर जैसे प्रकृति का ही एक अंग बन जाता है. चमकते हिमशिखरों, दमकते ग्लेशियरों, अल्हड़ नदीनालों, मचलते झरनों और मखमली घास व फूल से ढके रास्तों से होते जो भी पर्यटक इस धाम में पग रखता है वह स्वयं को धन्य मानता है. हर साल बड़ी संख्या में तीर्थयात्री व पर्यटक यहां आते हैं.

मई माह के निर्धारित दिन को आगामी 6 माह के लिए भक्तों के लिए कपाट खोल दिए जाते हैं. नवंबर में निश्चित तिथि को कपाट 6 माह तक बंद कर दिए जाते हैं. मई से नवंबर के बीच का समय यहां की यात्रा का होता है. नवंबर से मई तक यहां की पूजा उखीमठ नामक गांव में होती है.

समुद्रतल से 3,581 मीटर ऊंचाई पर केदारनाथ मंदिर वास्तुकला का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करता है. विशाल पत्थरों को तराश कर पांडवशैली में विशाल मंदिर का निर्माण किया गया है. गर्भगृह में ग्रेनाइट पत्थर की त्रिभुजाकार विशाल शिला दर्शनीय है.

चारों धामों में केदारनाथ की सब से बड़ी विशेषता यह है कि बर्फ ढके अथाह हिमराशि से आच्छादित शिखरों व ग्लेशियर के जितने नजदीकी दर्शन यहां से होते हैं उतने कहीं और से नहीं. अद्भुत हिम सौंदर्य व हरियाली से भरी घाटी के बीच बस्ती, दूकानें, धर्मशालाएं, विश्रामगृह देख कर पर्यटक रोमांचित हो जाते हैं.

दर्शनीय स्थल

चोरवाड़ी ताल

मंदिर से 4 किलोमीटर की दूरी पर प्राकृतिक रूप से बना यह बर्फीला सरोवर दर्शनीय है. यहां राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की अस्थि, भस्मि प्रवाहित की गई थी. इसलिए इसे गांधी ताल भी कहते हैं.

वासुकी ताल

केदारनाथ से 10 किलोमीटर की विकट चढ़ाई के बाद अनुपम सौंदर्य से घिरा वासुकी ताल हमेशा से साहसी पर्यटकों को मूक आमंत्रण देता रहा है. यहां की ऊंचाई 4,135 मीटर है. इतनी ऊंचाई पर विशाल ताल अलग ही सौंदर्य पैदा करता है, जिस का आनंद लेने साहसी पर्यटक यहां बरसात के बाद आते हैं. केदारनाथ में गाइड, पोर्टर, कुक मिल जाते हैं.

गौरीकुंड

केदारनाथ यात्रा के लिए यह स्थान आखिरी बस स्टाप है. यह स्थान खौलते गर्मजल के स्रोत व कुंड के लिए प्रसिद्ध है. यहां पार्वती का मंदिर है व पर्याप्त धर्मशालाएं, ढाबे, लाज उपलब्ध हैं.



केदारनाथ मंदिर वास्तुकला की दृष्टि से बेजोड़ है

केदारनाथ धाम स्थित शंकराचार्य की समाधि दर्शनीय है.



शंकराचार्य समाधि

कहते हैं 8वीं शताब्दी में आदिगुरु शंकराचार्य ने इस धाम में आ कर मंदिर के दर्शन किए थे व 32 वर्ष की उम्र में यहीं समाधि ली थी. यह समाधि दर्शनीय है

ीनारायण

गौरीकुंड से 7 किलोमीटर ोनप्रयाग स्टेशन से एक दूसरा ार्ग 6 किलोमीटर बाद सुरम्य त्रियुगीनारायण पहुंचा देता है. ेदारनाथ शैली का शिवमंदिर त है.

मठ

उखीमठ केदारनाथ से 62 ीटर पीछे पौराणिक महत्त्व से मुख स्थल है. यह तहसील लय है. यहां का ओंकारेश्वर वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है. ेदारनाथ धाम की शीतकालीन र्चना होती है. कहा जाता है, ान पर राजा मांधाता ने गहन या था. स्थान शांत व रमणीक , खाने की सभी सुविधाएं हैं, एक खूबसूरत मार्ग चमोली ए चला जाता है.

काशी

केदारनाथ से 50 किलोमीटर ुरम्य उपनगर है, गुप्तकाशी. चीन शिवपार्वती मंदिर दर्शनीय से चौखंभा शिखर के भव्य ते हैं. यहां से एक मार्ग प्रसिद्ध ठ कालीमठ के लिए जाता है. ार में रहने, खाने की पर्याप्त ं हैं.

दार

केदारनाथ क्षेत्र के अंतर्गत 5 स्थल (जिन में केदारनाथ) आज दुनिया के सर्वश्रेष्ठ थलों में गिने जाते हैं. दुर्गम



केदारनाथ
कैसे जाएं?

सड़क मार्ग

केदारनाथ तक पहुंचने के लिए यहां से 14 किलोमीटर पहले गौरीकुंड तक ही बस, जीप तथा टैक्सी सुविधाएं उपलब्ध हैं. यहां पहुंचने के लिए सर्वोत्तम साधन बस है. यहां का निकटतम रेलवे स्टेशन यहां से 23 किलोमीटर दूर ऋषिकेश में है.

केदारनाथ पहुंचने के लिए गौरीकुंड से आगे 14 किलोमीटर की दूरी पैदल तय करनी पड़ती है अथवा खच्चर तथा डंडीकंडी की सेवाएं लेनी पड़ती हैं. डंडीकंडी तथा खच्चरों के किराए जिला प्रशासन तथा जिला पंचायतों द्वारा तय किए जाते हैं.

प्रमुख नगरों से दूरी

ऋषिकेश–223 किलोमीटर	कोटद्वार–250 किलोमीटर
हरिद्वार–247 किलोमीटर	गोपेश्वर–128 किलोमीटर
देहरादून–266 किलोमीटर	रुद्रप्रयाग–92 किलोमीटर
राम बाड़ा–7 किलोमीटर	उखीमठ–60 किलोमीटर
चमोली–138 किलोमीटर	गुप्तकाशी–49 किलोमीटर
सोनप्रयाग–21 किलोमीटर	

कहां ठहरें? केदारनाथ

विश्रामगृह

गढ़वाल मंडल विकास निगम पर्यटकगृह, आरती, मोदी भवन, बिड़ला भवन, मुंबई भवन.

धर्मशालाएं

काली कमली धर्मशाला, गुजरात भवन, भजन आश्रम, नेपाली धर्मशाला, भारत सेवा आश्रम, मद्रास भवन, विटको काटेज.

खानेपीने के प्रमुख स्थल

केदारनाथ में जगहजगह छोटेबड़े ढाबे, रेस्तरां तथा चायनाश्ते की दुकानें उपलब्ध हैं, जहां अल्पाहार तथा पारंपरिक भोजन सुविधाएं उपलब्ध होती हैं. इस क्षेत्र में मांसाहार तथा नशीले पदार्थों का सेवन पूर्णतया वर्जित है.

कब जाएं?

मईजून व फिर बरसात खत्म होने के बाद सितंबरअक्तूबर माह यहां की यात्रा के लिए सर्वोत्तम हैं.

सफर के कारण भले ही पर्यटक सीमित संख्या में यहां आते हैं पर जो भी इस स्वर्गिक क्षेत्र में आता है वह अनमोल जादुई सौंदर्य को देख कर ठगा सा रह जाता है. बंगाली पर्यटकों में तो पंचकेदार घूमने का जुनून सा रहता है. विदेशी पर्यटक भी यहां आना बहुत पसंद करते हैं

निकटवर्ती दर्शनीय स्थल

मदमहेश्वर

3,289 मीटर ऊंचाई पर मखमली घास व बेहिसाब फूलों से ढके ढलानों व मैदान के बीच हिमालय के आंगन में इस स्वर्गिक स्थल में पहुंच कर कौन न सुधबुध खो बैठे? गुप्तकाशी से कालीमठ बस, टैक्सी में पहुंच कर शेष 23 किलोमीटर का पैदल सफर और भी दिलकश है. रास्ते में रहने, खाने की व्यवस्था है. यहां शिव मंदिर दर्शनीय है.

तुंगनाथ

उखीमठ से 31 किलोमीटर दूरी पर चोपता बस स्टाप से मात्र 3 किलोमीटर पैदल चलने पर दूसरा सौंदर्य स्वर्ग है, तुंगनाथ (3,680 मीटर). यहां विशाल पत्थरों से बना शिव मंदिर कला की दृष्टि से दर्शनीय है. सावनभादों में यहां श्रद्धालु भक्तों की भीड़ रहती है. स्थान इतना रमणीक है कि शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता है.

रुद्रनाथ

चोपता से 30 किलोमीटर आगे सागर गांव में सड़क छोड़ कर 20 किलोमीटर पैदल यात्रा के बाद इस रमणीक मोहक सौंदर्य भूमि में पहुंचा जाता है. जुलाई से सितंबर तक यहां दर्जनों फूलों की घाटियां महकती रहती हैं. यहां एक कुदरती गुफा में शिव की पाषाण मूर्ति है. स्थान अत्यंत रमणीक है.

कल्पनाथ

बदरीनाथ मार्ग पर चमोली से 34 किलोमीटर बाद हेलंग चट्टी में सड़क छोड़ कर 10 किलोमीटर पैदल यात्रा के बाद इस आखिरी केदार के दर्शन होते हैं. यहां एक गुफा में शिव मंदिर है. घने जंगल में झरनों से घिरा यह एक खूबसूरत स्थल है.

तापमान

यहां का तापमान गरमियों में अधिकतम 18 डिगरी सेंटीग्रेड व न्यूनतम 9 डिगरी सेंटीग्रेड रहता है. शीतकाल में हिमाच्छादित उपशून्य रहता है.

वस्त्र

गरमियों में हलके व सर्दियों में भारी ऊनी कपड़े पहनने चाहिए. दस्ताने, टोपी भी साथ रखनी चाहिए.

सुविधाएं

स्वास्थ्य केंद्र तथा डाकघर.

–प्रकाश पुरोहित 'जयदीप'

नैनीताल

भारत के पर्यटन स्थलों में नैनीताल का स्थान प्रमुख है. यहां का मुख्य आकर्षण यहां स्थित विशाल मनोरम झील है. झील के चारों ओर बसा नैनीताल छोटा लेकिन अत्यंत रमणीक स्थान है.

नैनीताल की खोज 1841 में बैरन नामक एक अंगरेज ने की थी. ब्रिटिश शासनकाल में नैनीताल को संयुक्त प्रांत की ग्रीष्मकालीन राजधानी बना दिया गया.

झीलों की अधिकता के कारण इस क्षेत्र को कभी 'छकता' भी कहा जाता था. 'छकता' अर्थात 60 झीलों का क्षेत्र. धीरेधीरे प्राकृतिक विषमताओं के कारण झीलों की संख्या कम होती चली गई और कई

नैनी झील में नौकायन का अपना अलग ही मजा है.



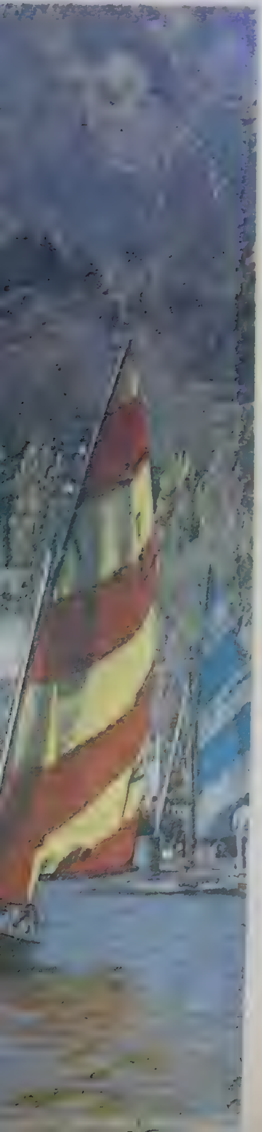
ाखरों में परिवर्तित हो गई.
ी नैनीताल के आसपास कई
लें हैं, जो पर्यटकों का ध्यान
नुपम प्राकृतिक सौंदर्य के
बरबस खींच लेती हैं.

य स्थल

2,270 मीटर की ऊंचाई पर
नोव्यू पैदल अथवा टट्टुओं
कर जाया जा सकता है. यहां
हिमालय की चोटियां साफ
देती हैं. नैनीताल शहर से
रा भी स्नोव्यू जाया जा सकता
यू में स्थित दूरबीन से नैनीताल
रा ले सकते हैं. यहां खानेपीने
त रेस्तरां हैं.

पीक

ना पीक की समुद्र तल से



नैनीताल

कैसे जाएं?

रेल मार्ग

रेल द्वारा नैनीताल के सब से करीबी स्टेशन काठगोदाम तक जाया जा सकता है. यहां के लिए दिल्ली व हावड़ा से नियमित रेल सेवाएं हैं. लखनऊ से लालकुआं तक आप रेल द्वारा जा सकते हैं. काठगोदाम व लालकुआं से नैनीताल के लिए नियमित बस तथा टैक्सी सेवाएं हैं. हवाई सेवा उपलब्ध नहीं है.

प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	*गाड़ी की संख्या व नाम*	*प्रस्थान*	*आगमन*
काठगोदाम से दिल्ली	5013 रानीखेत एक्सप्रेस	20.45	06.00
काठगोदाम से हावड़ा	3019 हावड़ा एक्सप्रेस	19.30	08.15
छोटी लाइन की ट्रेनें			
लालकुआं से आगरा	5311 आगरा फोर्ट	19.10	08.30
लालकुआं से लखनऊ	5307 नैनीताल एक्सप्रेस	20.45	06.20

सड़क मार्ग

नैनीताल जाने के लिए उ.प्र. के सभी प्रमुख स्थानों से उ.प्र. राज्य परिवहन निगम, दिल्ली से डी.टी.सी. व पर्यटक बसें मिलती हैं. इस के अतिरिक्त राजस्थान परिवहन व हरियाणा परिवहन की भी नैनीताल के लिए बस सेवाएं हैं.

प्रमुख नगरों से दूरी

दिल्ली–322 किलोमीटर
लखनऊ–401 किलोमीटर
हल्द्वानी–40 किलोमीटर
अलमोड़ा–67 किलोमीटर

कब जाएं?

नैनीताल में बरसात के मौसम को छोड़ कर कभी भी जाया सकता है. अप्रैल से जून व सितंबर से नवंबर माह में मौसम काफी सुहावना रहता है. हिमपात कम होता है. गर्मियों में भी सुबहशाम ठंड से बचने के लिए हलके ऊनी कपड़ों की आवश्यकता होती है. सर्दियों में अधिक गरम कपड़े साथ ले जाएं.

ऊंचाई 2,611 मीटर है. यह नैनीताल की सर्वाधिक ऊंची चोटी है. किसी समय इसे 'चाइना पीक' के नाम से जाना जाता था. यहां से नैनीताल एक कटोरे की भांति नजर आता है. नैना पीक से पूरे शहर का विहंगम दृश्य अत्यंत मनोरम लगता है. पास ही में स्थित 'कैमल बैक' चोटी साफ नजर आती है. खानेपीने की चीजों का यहां अभाव है. बेहतर होगा कि अपने साथ ही खानेपीने का सामान ले जाएं. पैदल व टट्टुओं के माध्यम से नैना पीक जाया जा सकता है.

किलबरी

किलबरी से हिमालय का दृश्य

कहां ठहरें? नैनीताल

होटल	पता	फोन	श्रेणी
रायल गार्डन	मल्लीताल	35531, 36242	उत्तम
आरिफ कैसल्स	मल्लीताल	35801, 35802	उत्तम
नैनी रिट्रीट	अयारपाटा	35105, 35108	उत्तम
अलका	द माल	35220	उत्तम
राधा कांटीनेंटल	मल्लीताल	36267	मध्यम
शेरवानी हिलटाप इन	मल्लीताल	35398, 36128	उत्तम
अरविंद	बलरामपुर कंपाउंड	36762	मध्यम
यूथ होस्टल	मल्लीताल (केवल (सदस्यों के लिए)	36353	
राज्य अतिथिगृह	मल्लीताल (केवल शासकीय आरक्षण होने पर)	35420	
अंजुमन ए इसलामिया मुसाफिरखाना	मल्लीताल	–	
आर्य समाज मंदिर	मल्लीताल	–	

इस के अतिरिक्त यहां कई विभागों के विश्रामगृह भी हैं. जहां विभागीय अधिकारी/कर्मचारी आरक्षण होने पर ठहर सकते हैं

प्रमुख स्थलों तक टैक्सी का किराया

प्रमुख स्थल	नैनीताल से दूरी	किराया (टैक्सी)
हल्द्वानी से नैनीताल	40 किलोमीटर	रु. 30/- प्रति व्यक्ति अथवा 150.00 रु. टैक्सी (एक ओर का)
नैनीताल से लेक टूर (सातताल, भीमताल व नौकुचियाताल	27 किलोमीटर	रु. 425.00 (1/2 दिन)
नैनीताल से रानीखेत	54 किलोमीटर	रु. 750.00 (1 दिन)
नैनीताल से रामनगर/कार्बेट पार्क	114 किलोमीटर	रु. 1,200.00 (1 दिन)
नैनीताल से अल्मोड़ा	67 किलोमीटर	रु. 600.00 (1 दिन)
नैनीताल से कौसानी	120 किलोमीटर	रु. 1,400.00 (2 दिन)

खानेपीने के प्रमुख स्थल

रेस्तरां का नाम	पता	फोन	खाने के किस्म
शिवा रेस्टोरेंट	मल्लीताल	–	सभी प्रकार का खाना
आहार विहार	द माल	35446	गुजराती व राजस्थानी खाना
हैरीटेज रेस्टोरेंट	द माल	–	सभी प्रकार का खाना
फैंसी रेस्टोरेंट	द माल	–	विशेषकर चाइनीज व्यंजनों के लिए
शेर ए पंजाब रेस्टोरेंट	द माल		विशेषकर मांसाहारी भोजन के लिए
शिवालिक रेस्टोरेंट	तल्लीताल	–	सभी प्रकार का खाना

अत्यंत मनोरम दिखाई देता है. यहां वन्य जीवन, पक्षी, वनस्पति और शहर से दूर प्रकृति के शांत वातावरण का लुत्फ उठाया जा सकता है.

हनुमानगढ़

बाबा नीम करौली द्वारा स्थापित हनुमानगढ़ समुद्र तल से 1,951 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है. यहां स्थित हनुमान का भव्य मंदिर



दर्शनीय है. यहां से सूर्यास्त का नजारा लिया जा सकता है. यहा से आप पैदल हनुमानगढ़ जा सकते हैं.

वेधशाला

हनुमानगढ़ के पास ही स्थित वेधशाला देश की आधुनिकतम वेधशालाओं में से एक है. यहां स्थित विशाल दूरबीन से ग्रहों, उपग्रहों, चांद, तारों की स्थिति का अवलोकन किया जा सकता है. पर्यटकों के लिए वेधशाला घूमने का दिन व समय निश्चित है. इस की जानकारी आप फोन नं. 35337 से प्राप्त कर सकते हैं.

नैना मंदिर

नैनीताल झील के एक किनारे में स्थित नैनादेवी का अत्यंत प्राचीन मंदिर है. रात्रि में यहां से चारों ओर पहाड़ियों पर स्थित घरों के प्रकाश का झील पर पड़ता प्रतिबिंब मन मोह लेता है.

णी उद्यान

यहां शेर, भालू, हिरन की जातियां देख सकते हैं. उद्यान की वच्छता मनमोहक है. पैदल अथवा क्सी द्वारा जाया जा सकता है.

ासपास के दर्शनीय स्थल

ीमताल

भीमताल के संबंध में मान्यता





भीमताल के मध्य टापू पर बना रेस्तरां आकर्षक है.

मल्ली ताल में पार्किंग की अच्छी सुविधा उपलब्ध है

कि यहां स्थित विशाल झील का र्माण महाभारत काल में हुआ. यहां लिए नैनीताल से नियमित बस ाएं व टैक्सियां उपलब्ध हैं. ितालभीमताल मार्ग पर महरा गांव डा. यशोधरा मठपाल के प्रयासों तैयार लोक संग्रह में आप राखंड के पुरातात्त्विक व स्कृतिक महत्त्व की वस्तुएं, त्तिचित्र व कलाकृतियां देख सकते भीमताल में नौकायन का अपना ंद है. झील के ही मध्य में टापू रेस्तरां है. पर्यटकों के ठहरने के पर्याप्त होटल, रेस्ट हाउस व स्ट बंगला आदि हैं.

कुचियाताल

भीमताल से मात्र 4 लोमीटर की दूरी पर चियाताल जलक्रीड़ा करने तथा काश बिताने की उत्तम जगह है. के लिए नैनीताल व भीमताल से नियमित बस सेवाएं हैं. प्राइवेट टैक्सियों से भी यहां पहुंचा जा सकता है.

यहां स्थित विशाल झील के नौ कोनों के कारण इस झील का नाम नौकुचियाताल पड़ा. कुमाऊं मंडल विकास निगम का यहां टूरिस्ट रेस्ट हाउस है. ठहरने के लिए गेस्ट हाउस व होटल भी पर्याप्त संख्या में हैं. झील में नौकायन का भी आप आनंद ले सकते हैं.

सातताल

नैनीतालभीमताल मार्ग पर यह 7 छोटीबड़ी झीलों का समूह है. यहां सरकारी टूरिस्ट बंगले में रुकने की व्यवस्था है. नैनीताल से यहां के लिए बस सेवा व टैक्सियां उपलब्ध हैं.

रामगढ़

नैनीताल से 26 किलोमीटर दूर रामगढ़ में आप को चारों ओर मेवों और अन्य फलों के बगीचे नजर आएंगे. स्वास्थ्य की दृष्टि से यहां की आबोहवा अत्यंत गुणकारी है. रामगढ़ में ठहरने के लिए पर्यटक आवास-गृह हैं. नैनीताल से 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित भवाली से यहां के लिए प्राइवेट टैक्सियां मिल जाएंगी.

मुक्तेश्वर

किसी समय अंगरेजों की छावनी रहे मुक्तेश्वर में आज अखिल भारतीय स्तर का पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान है. यहां से हिमालय की चोटियां अत्यंत साफ नजर आती हैं. मुक्तेश्वर नैनीताल से 52 किलोमीटर दूर है. यहां के लिए गिनीचुनी बसें हैं, लेकिन भवाली से नियमित प्राइवेट टैक्सियां उपलब्ध हैं.

रामनगर

नैनीताल, दिल्ली, हल्द्वानी आदि जगहों से रामनगर के लिए नियमित बस सेवाएं हैं. रामनगर से कार्बेट नेशनल पार्क 49 किलोमीटर की दूरी पर है. जहां आप वन्य जीवन को निकट से देख सकते हैं. पर्यटक सीजन में नैनीताल की ट्रेवल एजेंसियां वाई.टी.डी.ओ. दर्शन ट्रेवल्स, जिना टूअर्स व सिटी हार्ट, पर्वत टूअर्स आदि कार्बेट पार्क का एक दिन का टूअर आयोजित करती हैं. पास ही में गर्जिया का सुप्रसिद्ध मंदिर है.

कंडक्टिड टूअर्स

नैनीताल से आसपास के दर्शनीय स्थानों के लिए कई तरह के कंडक्टिड टूअर्स वाई.टी.डी.ओ., तल्लीताल (फोन : 35702), वाई.टी.डी.ओ., द माल (फोन : 35557), हिना टूअर्स व सिटी हार्ट ट्रेवल्स, मल्लीताल (फोन : 35860, 35128), सी.टी.डी.सी., द माल आदि आयोजित किए जाते हैं.

उत्सव

नैनीताल में प्रति वर्ष सितंबर माह में नैना देवी का पारंपरिक मेला लगता है. अक्तूबर, नवंबर में उ.प्र. पर्यटन विभाग शरदोत्सव का आयोजन करता है, जिस में उत्तराखंड की सांस्कृतिक छटा दर्शाई जाती है.

पर्यटक सूचना केंद्र

उ.प्र. पर्यटक सूचना केंद्र, माल रोड (फोन : 35337). प्रातः 10.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक. रविवार अवकाश. कुमाऊं मंडल विकास निगम द्वारा संचालित सूचना केंद्र पर्वत टूअर्स, तल्लीताल (फोन : 35656).

रेल सेवा

रेलवे आउट एजेंसी, तल्लीताल (फोन : 35518). यहां रेलवे आरक्षण की सुविधा उपलब्ध है.

बस/टैक्सी सेवा

उ.प्र. राज्य परिवहन बस स्टैंड, तल्लीताल. कुमाऊं मोटर ओनर्स यूनियन लि. बस स्टैंड, तल्लीताल व टैक्सी स्टैंड, तल्लीताल.

अस्पताल

बी.डी. पांडे गवर्नमेंट अस्पताल, मल्लीताल (फोन : 35012), जी.बी. पंत (रामजे) अस्पताल, तल्लीताल (फोन : 35388).

तापमान

गरमियों में अधिकतम 27.5 डिगरी सेंटीग्रेड तथा न्यूनतम 11 डिगरी सेंटीग्रेड तथा सर्दियों में अधिकतम 16 डिगरी सेंटीग्रेड व न्यूनतम 2 डिगरी सेंटीग्रेड रहता है.

• *एसटीडी कोड : 05942*

–मोहन सिंह रावत

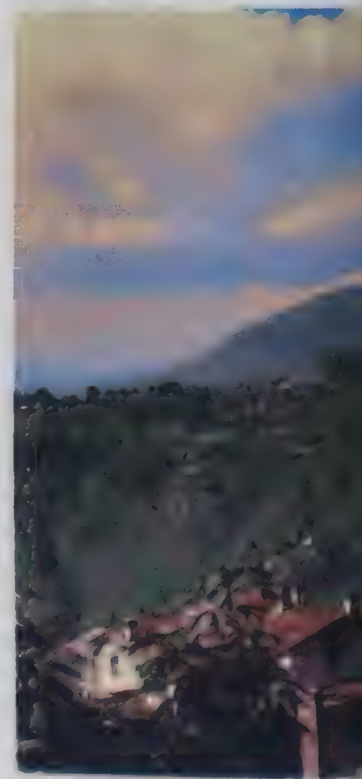
मनोरंजन

मनोरंजन के प्रमुख साधनों में नैनीताल (मल्लीताल) में कैपिटल व अशोक टाकीज हैं. मल्लीताल में ही बोट हाउस क्लब के निकट नगरपालिका परिषद का गार्डन व सचिवालय भवन के निकट कंपनी गार्डन है. पैडल बोट, चप्पू नौका व पाल नौका द्वारा आप नौकायन का आनंद उठा सकते हैं. मल्लीताल से आप टिफिनटाप, स्नोव्यू, ठंडी सड़क व नैना पीक आदि के लिए घुड़सवारी कर सकते हैं. नौकायन, घुड़सवारी व फोटोग्राफरों के लिए नगरपालिका परिषद द्वारा दरें निर्धारित हैं. इन की सेवाएं लेने से पूर्व आप प्रमुख स्थानों में लिखी दरें अवश्य पढ़ लें. झील, सड़क अथवा सार्वजनिक स्थानों में गंदगी फैलाने अथवा गलत ढंग से पार्किंग करने पर स्थानीय प्रशासन दंडित कर सकता है.

खरीदारी

ऊनी कपड़े, काष्ठकला की वस्तुएं व सजावटी मोमबत्तियां नैनीताल में खरीदारी का मुख्य आकर्षण हैं. ऊनी कपड़ों के लिए भोटिया बाजार प्रसिद्ध है. सजावटी रंगीन मोमबत्तियां व काष्ठकला कृतियां आप माल रोड व मल्लीताल बाजार से खरीद सकते हैं.

अलमोड़ा



शहरी चकाचौंध से दूर अलमोड़ा एक शांत पर्यटन स्थल है.

पर्यटन स्थलों की चकाचौंध से दूर अलमोड़ा शांति से कुछ समय गुजारने तथा प्रकृति से सीधा साक्षात्कार करने की सब से उपयुक्त जगह है. अर्धगोलाकार पर्वत शिखर पर स्थित अलमोड़ा ऐसी जगह है, जो शहरी सभ्यता से आज भी अछूती है.

अलमोड़ा का अपना विशेष ऐतिहासिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक महत्त्व है. कभी कुमाऊं की राजधानी रहे अलमोड़ा को 1563 में राजा बालो कल्याण चंद ने बसाया था. यहां कभी कत्यूर वंश और चंद वंश के शासकों का शासन था. आज भी इन राजवंशों के राजाओं द्वारा बनवाए गए किले व अन्य ऐतिहासिक भवनों में जिले की कचहरी व सरकारी दफ्तर आदि विद्यमान हैं. कौशिक (कोशी) तथा शालमाली (सुयाल) नदियां शहर के पास से हो कर गुजरती हैं.

हिमालय के हिमाच्छादित शिखरों की एक लंबी कतार का नयनाभिराम दृश्य यहां से दिखाई पड़ता है. अलमोड़ा का कणकण प्राकृतिक सौंदर्य से भरा है. इस नगर ने अपने प्राचीन परंपरागत स्वरूप को आज भी कायम रखा हुआ है. पटालियों से आवृत मकानों की छतें

अलमोड़ा
कैसे जाएं?

रेल मार्ग

निकटतम रेलवे स्टेशन काठगोदाम 91 किलोमीटर की दूरी पर है. ल्ली, हावड़ा, लखनऊ, आगरा, बरेली, रामपुर से यहां के लिए नियमित ट्रेनें छोटी लाइन की ट्रेनें लालकुआं (112 किलोमीटर) तक आती हैं. काठगोदाम लालकुआं से अलमोड़ा के लिए बसें व टैक्सियां लगातार मिल जाएंगी.

ड़क मार्ग

अलमोड़ा के लिए उत्तरप्रदेश के सभी प्रमुख नगरों व दिल्ली से राज्य वहन निगम की सीधी बस सेवाएं हैं. कुमाऊं मोटर ओनर्स यूनियन लि. बसें हल्द्वानी से ली जा सकती हैं. नैनीताल से अलमोड़ा के लिए ट्रेवल सियों की नियमित बस सेवा है. अलमोड़ा के आसपास के दर्शनीय स्थलों सैर के लिए भी टैक्सियां मिल जाती हैं.



ट पत्थर की बनी गलियां इस ी साक्षी हैं.

ीय स्थल

ीय संग्रहालय

अलमोड़ा बस स्टैंड के पास गोविंद बल्लभ पंत राजकीय संग्रहालय है. यह मध्य हिमालय के पुरातत्त्व, इतिहास व संस्कृति आदि से संबंधित महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक वस्तुओं का अनूठा संग्रह है. कुमाऊं की लोक चित्रकला 'ऐंपण' के विविध रूप आप यहां देख सकते हैं. संग्रहालय सोमवार व सरकारी छुट्टियों के अतिरिक्त प्रतिदिन प्रातः 10.30 से सायं 4.30 तक खुला रहता है.

नंदा देवी मंदिर

सैकड़ों वर्ष पुराना यह मंदिर अलमोड़ा नगर का प्रमुख आकर्षण है. इस की दीवारों पर उकेरी गई मूर्तियां दर्शनीय हैं. यहां हर वर्ष एक विशाल मेला लगता है, जिस में नाचतेगाते पर्वतीय युवकयुवतियों के समूह दूरदूर से आते हैं.

ब्राइट एंड कार्नर

अलमोड़ा से 2 किलोमीटर की दूरी पर ब्राइट एंड कार्नर से सूर्योदय व सूर्यास्त का नयनाभिराम दृश्य दिखाई पड़ता है. पास ही में सर्किट हाउस के शांत वातावरण में एकांत के क्षण बिताना अच्छा लगेगा.

यहां आकाशवाणी के निकट रामकृष्ण कुटीर के विवेकानंद पुस्तकालय में आध्यात्मिक चिंतन पर काफी साहित्य उपलब्ध है. कुछ ही दूरी पर विवेकानंद स्मारक है, जहां स्वामी विवेकानंद अपनी हिमालय यात्रा के दौरान रुके थे.

डियर पार्क

यह अलमोड़ा से 3 किलोमीटर की दूरी पर एन. टी. डी. में स्थित है. शाम के वक्त यहां घूमने का अपना अलग ही मजा है.

चित्तई मंदिर

पर्वतीय लोगों में चित्तई मंदिर की बहुत अधिक मान्यता है. चित्तई मंदिर अलमोड़ा से 8 किलोमीटर की दूरी पर है.

यदि आप प्रकृति प्रेमी हैं और प्रकृति के शांत वातावरण का आनंद उठाते हुए मंदिर जाना चाहें तो चीड़ के जंगल से होते हुए पैदल रास्ता मंदिर को जाता है.

सिमतोला

3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित सिमतोला चीड़ व देवदार से ढकी सुंदर पहाड़ियों को निहारने का

कहां ठहरें? — अलमोड़ा

होटल	पता	फोन	श्रेणी
शिखर	माल रोड	-	उत्तम
हालीडे होम	माल रोड	601519	उत्तम
रेणुका	माल रोड	624970	उत्तम
अशोक	माल रोड	623635	मध्यम
अलका	माल रोड	600187	मध्यम
एंबेसडर	माल रोड	623308	मध्यम
सेवाय	माल रोड	622452	मध्यम
धर्मशालाएं			
हरिप्रसाद टम्टा धर्मशाला	अलमोड़ा बाजार		

खानेपीने के प्रमुख स्थल

नाम	पता	खाने की किस्में	फोन
हालीडे होम	माल रोड	देशीविदेशी खाना	22250
शिखर होटल कम रेस्तरां	माल रोड	सभी प्रकार का खाना	22253
सोनी रेस्तरां	निकट बस स्टैंड	सभी प्रकार का खाना	-
अशोक रेस्तरां	मुख्य बाजार	विशेषतया चाट आदि	-

क्या खरीदें?

आप अलमोड़ा आएं तो वहां की मिठाइयों का स्वाद चखना न भूलें यहां की बाल मिठाई और सिंगौड़ी देश भर में मशहूर है मिठाइयों के अतिरिक्त अलमोड़ा अंगोरा खरगोश के ऊन से बने वस्त्रों तथा तांबे व पीतल के घरेलू बरतनों और सजावटी सामानों के लिए भी प्रसिद्ध है शिखर होटल परिसर में कुमाऊं अनुसूचित जनजाति विकास निगम के प्रतिष्ठान गरुड़ वूलंस में यह ऊनी वस्त्र आप को वाजिब दाम में मिल जाएंगे. तांबे और पीतल के घरेलू बरतनों व सजावटी सामान की अलमोड़ा के लाला बाजार व चौक बाजार में काफी दुकानें हैं.

एक आदर्श पिकनिक स्थल है.

जागेश्वर

अल्मोड़ा से 34 किलोमीटर दूरी पर जागेश्वर शिव मंदिर है. घने देवदार के जंगल के मध्य जागेश्वर पुरातात्विक महत्त्व के मंदिरों की श्रृंखला है. मंदिरों की स्थापत्य कला दर्शनीय है

गणनाथ

अल्मोड़ा से 47 किलोमीटर की दूरी पर गणनाथ प्राकृतिक गुफाओं और अत्यंत प्राचीन शिव मंदिर के लिए प्रसिद्ध है. प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा के दिन यहां मेला लगता है

कालीमट

अलमोड़ा से 4.5 किलोमीटर की दूरी पर कालीमट से आप अल्मोड़ा शहर और आसपास की पहाड़ियों का विहंगम दृश्य देख सकते हैं.

कसार देवी

कालीमट के पास ही कसार देवी मंदिर है. दूसरी शताब्दी का यह अत्यंत प्राचीन मंदिर यहां पहाड़ी की चोटी पर स्थित है. कालीमट से कसार देवी का 1 किलोमीटर से भी कम रास्ता पैदल तय कर सकते हैं.

कटारमल

कटारमल में 800 वर्ष पुराना उड़ीसा के बाद देश का दूसरा महत्त्वपूर्ण सूर्य मंदिर है. अलमोड़ा से 17 किलोमीटर की दूरी पर कटारमल में ऐतिहासिक महत्त्व का यह सूर्य मंदिर जर्जर हालत में है. यह वास्तुकला व मूर्तिकला का अनूठा नमूना है.

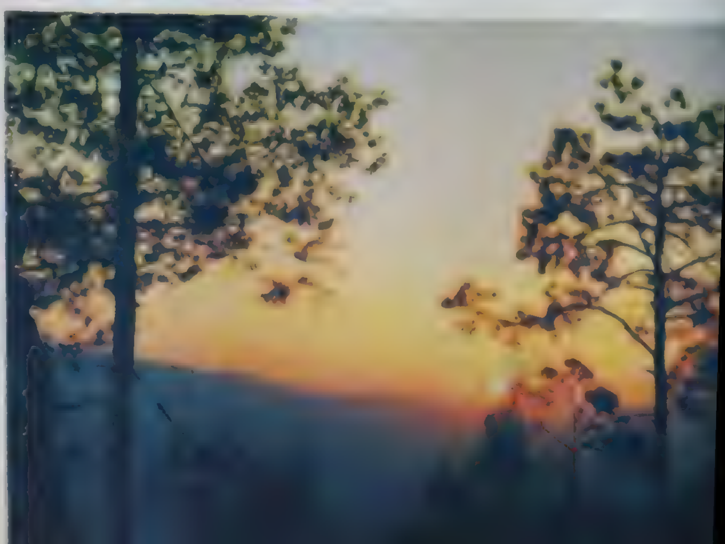
बिनसर

अलमोड़ा से 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित बिनसर का नाम बिनेश्वर देव (शिव) के नाम पर पड़ा. समुद्रतल से 2,412 मीटर की ऊंचाई पर स्थित इस मंदिर का निर्माण चंदवंशीय राजा कल्याण ने करवाया था. बिनसर का शांत प्राकृतिक वातावरण मन को शांति प्रदान करता है.

बागेश्वर

अलमोड़ा से 90 किलोमीटर

कसार देवी मंदिर से सूर्यास्त का दृश्य बड़ा सुहावना लगता है



प्रमुख नगरों से दूरी

दिल्ली–380 किलोमीटर	नैनीताल–67 किलोमीटर
बरेली–195 किलोमीटर	रानीखेत–52 किलोमीटर
हल्द्वानी–95 किलोमीटर	

कब जाएं?

बारिश का मौसम छोड़ कर आप कभी भी अलमोड़ा घूमने का कार्यक्रम बना सकते हैं. सर्दियों में पहाड़ों में बिखरी गुनगुनी धूप में घूमने का अपना अलग ही आनंद है. गरमियों में यहां का तापमान अन्य पहाड़ी पर्यटन स्थलों की तुलना में अधिक रहता है. गरमियों में सुबहशाम की ठंड से बचने के लिए हलके ऊनी कपड़े व सर्दियों में अधिक गरम कपड़े साथ ले जाएं.

ी दूरी पर बागेश्वर कुमाऊं की ापारिक मंडी है. सरयू के तट पर से बागेश्वर में 1450 में निर्मित गनाथ का पुरातात्विक महत्त्व का दिर है. यहां ठहरने के लिए धुनिक सुविधाओं से युक्त होटल, र्यटक आवासगृह आदि हैं. इसी के ागे पिंडारी हिमनद (ग्लेशियर) है.

ंडक्टिड टूअर्स

नैनीताल की ट्रैवल एजेंसियां ई.टी.डी.ओ., हिना टूअर्स एंड सिटी र्ट, दर्शन ट्रैवल्स, पर्वत टूअर्स, सी. .डी.सी. आदि अलमोड़ा व आसपास दर्शनीय स्थानों का दैनिक टूअर योजित करती हैं. वाई.टी.डी.ओ. पने पर्यटकों को विशेष टूरिस्ट कज उपलब्ध कराती है, जिस के ध्यम से पूरे कुमाऊं का भ्रमण ाया जाता है.

सव

अलमोड़ा में हर मौसम में तों की छटा बिखरी रहती है. वरी में बागेश्वर में मकर संक्रांति अवसर पर सप्ताह भर का रायणी मेला लगता है, जिस में ाऊं की सांस्कृतिक परंपराओं से चित हो सकते हैं. शिवरात्रि के सर पर जागेश्वर में तथा कार्तिक ामा के दिन गणनाथ में मेला ता है. अलमोड़ा का दशहरा मेला काफी लोकप्रिय है. दशहरे के सर पर यहां बनने वाले पुतलों कदकाठी और उन की साजसज्जा के अन्य भागों में बनने वाले तों से सर्वथा भिन्न होती है, जो लोगों को आकर्षित करती है.

मनोरंजन

अलमोड़ा में जगन्नाथ व रीगल टाकीज हैं. ट्रैकिंग में रुचि रखने वाले पर्यटक अलमोड़ा से शीतलाखेत, मुक्तेश्वर, जालना, लमगड़ा, शहरफाटक मोरनौला आदि रमणीक स्थानों की ट्रैकिंग का कार्यक्रम बना सकते हैं.

तापमान

गरमियों में अधिकतम 29 डिगरी सेंटीग्रेड तथा न्यूनतम 11 डिगरी सेंटीग्रेड और सर्दियों में अधिकतम 15 डिगरी सेंटीग्रेड व न्यूनतम 4 डिगरी सेंटीग्रेड होता है.

अन्य महत्त्वपूर्ण जानकारी

उत्तर प्रदेश सरकार का पर्यटक ब्यूरो (फोन : 22180), सिविल अस्पताल (फोन : 22322).

- *एसटीडी कोड : 05962*

–मोहन सिंह रावत

रानीखेत

कुमाऊं की पहाड़ियों में अद्वितीय प्राकृतिक सौंदर्य को अपने दामन में समेटे निहायत शांत एवं रमणीक पर्यटन स्थली है–रानीखेत, जहां प्रकृति झूमतीगाती नजर आती है. यहां आप कहीं भी रहें, खिड़की खोलते ही दूर आकाश में लगभग 400 किलोमीटर दूर बर्फ से ढकी चोटियों की कतार के दर्शन होते हैं. इन चोटियों की छांव में दूरदूर तक फैली हरीभरी घाटियां, घने वन क्षेत्र, छितरे गांव, खेत व अल्हड़ जलधाराओं के दृश्य पर्यटकों के मन में जादुई असर डालते हैं. गहन शांति में डूबा वातावरण थके मन को मानो एक नई स्फूर्ति की चमक से झंकृत सा करता है. एकबारगी यहां पहुंच कर वापस लौटने का जी नहीं करता.

प्रदूषण से एकदम मुक्त ताजा ठंडी हवाओं के बीच रानीखेत आज प्रकृति प्रेमियों की खास पसंदीदा जगह बनती जा रही है. छावनी क्षेत्र होने के कारण यह शहर बेहद साफसुथरा है. प्रकृति की बेजोड़ विरासत के साथ किसी तरह की मानवीय छेड़छाड़ नहीं है. चीड़ के घने जंगल से ढके बलखाती पगडंडियों से गुजरने का आनंद ही निराला है. यह नगर अल्मोड़ा जनपद में समुद्रतल से 1,829 मीटर ऊंचाई पर है. कुदरत ने खुले दिल से इस नगरी को सजाया और संवारा है. 25 वर्ग मील तक इस शहर का क्षेत्रफल है. नगर के आसपास कई दिलचस्प सैरगाहें सब कुछ भुला देने की क्षमता रखती हैं.

रानीखेत का बाजार भी निराला है. पहाड़ के ढलान पर बसा यह बाजार मुंबई के झूलते बागों की तरह देखने योग्य है. सीधी खड़ी चढ़ाई पर बसे होने के कारण इसे 'खड़ी बाजार' कहा जाता है. बाजार का सब से निचला हिस्सा 5,000 फुट ऊंचाई पर स्थित है और सब से ऊपरी हिस्सा 8,000 फुट ऊंचाई पर बसा है.

रानीखेत की सड़कें इस ढंग से काटी गई हैं कि कहीं भी हरियाली आहत नहीं हुई है. यहां के बंगलों व मकानों की एक खासियत यह है कि यहां प्रत्येक मकान के दरवाजे तक गाड़ी जा सकती है. यहां चारों तरफ

रानीखेत

कैसे जाएं ?

रानीखेत जाने के लिए यहां से 180 किलोमीटर दूर पंतनगर तक विमान सेवाएं उपलब्ध हैं तथा 84 किलोमीटर दूर काठगोदाम तक रेल सेवाएं उपलब्ध हैं. फिर इन स्थानों से नियमित उत्तम बस सेवाएं उपलब्ध हैं. दिल्ली, शिमला, चंडीगढ़, लखनऊ, नैनीताल, ऋषिकेश आदि स्थानों से रानीखेत के लिए सीधी साधारण तथा लग्जरी बस सेवाएं उपलब्ध हैं.

प्रमुख नगरों से दूरी

दिल्ली–381 किलोमीटर **अलमोड़ा–52 किलोमीटर**
नैनीताल–59 किलोमीटर **कौसानी–62 किलोमीटर**

कब जाएं?

बरसात तथा सर्दी के कुछ महीनों को छोड़ कर अप्रैल से जून तक गरमियों में तथा सितंबर से नवंबर तक का शरद ऋतु में मौसम सुहावना होता है. दिसंबर, जनवरी तथा फरवरी में यहां हिमपात होता है. जुलाई से अगस्त तक बरसात का मौसम होता है.

सड़कों का जाल बिछा है. अल्मोड़ा, मसूरी, नैनीताल में इस तरह की कोई सुविधा नहीं है. सड़कें इतनी साफ व हरियाली से ढकी हैं कि धूल के बवंडर कभी उठते नहीं देखे जाते हैं.

हिमालय की चोटियों के जैसे भव्य दर्शन यहां से होते हैं, उस का कोई जवाब नहीं है. ठेठ बंदरपूंछ (उत्तरकाशी) से ले कर नरीजंग (नेपाल) तक की बेशुमार चोटियां देख कर अद्भुत रोमांच का अनुभव होता है.

दर्शनीय स्थल

गोल्फ का मैदान

रानीखेत से अल्मोड़ा मार्ग पर 6 किलोमीटर पर खूबसूरत गोल्फ का मैदान दर्शनीय है. 9 छेदों वाला यह मैदान घने चीड़ वनों के बीच में 6,000 फुट ऊंचाई पर शांत वातावरण के बीच स्थित है. इस जगह को 'उपात' कहते हैं. मैदान के बीच खिलाड़ियों के रहने के लिए बंगला बना है. हरी घास का यह दिलकश मैदान फिल्मों की शूटिंग के लिए मशहूर है. कुछ दूरी पर कालिका नामक जगह पर कालिका देवी का मंदिर है.

चौबटिया

बागबगीचों के लिए मशहूर घने जंगलों के बीच यह स्थल रानीखेत से 10 किलोमीटर दूर सड़क मार्ग से जुड़ा है. सरकार ने यहां विशाल उद्यान व फल संरक्षण विभाग और प्रदर्शन प्रक्षेत्र की स्थापना की है. यहां तरहतरह के मौसमी फल उगाए जाते हैं. पिकनिक सैरसपाटे के लिहाज से उत्तम स्थान है.

हेड़ाखान मंदिर

6 किलोमीटर की दूरी पर यहां पहुंचने के लिए रानीखेत के आखिरी छोर में बसे दूसरे बस स्टाप से बराबर टैक्सी, जीपें मिल जाती हैं. प्रसिद्ध साधु हेड़ाखान का यहां आधुनिक विशाल मंदिर दर्शनीय है. यहां एक धर्मार्थ अस्पताल व भव्य पर्यटक आवासगृह है. यहां का नाम 'चिलियानौला' है. पिकनिक के लिए यह बहुत सुहावनी जगह है. फूलों के बगीचे मनभावन लगते हैं.

निकटवर्ती अन्य दर्शनीय स्थल

शीतलाखेत

रानीखेत से 35 किलोमीटर दूरी पर मोटर मार्ग से जुड़ा दर्शनीय पर्यटन स्थल है शीतलाखेत. चाहें तो

कहां ठहरें? — रानीखेत

होटल	स्थान	फोन
वेस्ट व्यू	अपर माल	2396
मेघदूत	अपर माल	2475
पार्वती इन	रतन पैलेस कंपाउंड	2325
राजदीप	बाजार	2447
नार्दन	द माल	2377
मून	सदर बाजार	2258
अलका	सदर बाजार	–
टूरिस्ट	सदर बाजार	2307
टूरिस्ट बंगला	द माल	2297
त्रिभुवन		–
नटराज		2378
वन विश्रामगृह		2254
लोक निर्माण विश्रामगृह		
रानीखेत क्लब		
जल निगम विश्रामगृह		
कालिका फारेस्ट रेस्ट हाउस		
शिवमंदिर धर्मशाला		

अल्मोड़ा से भी यहां पहुंच सकते हैं. ऊंचाई पर निहायत शांत व खूबसूरत नजारों से भरे इस स्थान की शोभा निराली है. यहां रहने के लिए पर्यटक आवासगृह, सरकारी बंगला व निजी होटल हैं. यहां से हिमचोटियों के दृश्य लुभाते हैं. ट्रैकिंग के लिए यह क्षेत्र बहुत सुंदर है. 3 किलोमीटर की दूरी पर मंदिर दर्शनीय है.

द्वाराहाट

38 किलोमीटर की दूरी पर ऐतिहासिक कत्यूरी काल का महत्त्वपूर्ण केंद्र है द्वाराहाट. अनेक मंदिरों से ढकी इस नगरी में पत्थरों व मूर्तियों पर तराशी गई कला बेहद आकर्षित करती है. कत्यूरी राजाओं ने इसे अपना प्रशासनिक केंद्र बनाया था. उस काल में यहां 55 मंदिर हुआ करते थे. ये 11वीं से ले कर 16वीं शताब्दी के बीच बनाए गए. यहां होने वाले कई मेले व त्योहार दर्शनीय हैं. घाटी का सौंदर्य मोहित करता है.

...नागिरी

द्वाराहाट से 14 किलोमीटर ...ड़क मार्ग पर एक स्थान बेहद ...णीक है. यहां कई मंदिर हैं. यहां ... चोटियों व घाटियों के मनोरम दृश्य दिखाई देते हैं. यहां पर सन 1181 के शिलालेख पाए गए हैं. रात्रि विश्राम के लिए धर्मशाला है.

बिनसर महादेव

19 किलोमीटर दूरी पर यहां चीड़ के वृक्षों का सुंदर साम्राज्य फैला हुआ है.

खैरना–मनीला

रानीखेत से 22 किलोमीटर के फासले पर खैरना व 66 किलोमीटर पर मनीला नामक स्थान (मछुवाही) के लिए जाने जाते हैं.

क्या खरीदें?

ताजे रसीले फल, पहाड़ी शाकभाजियां, रिंगाल (केन) से बुनी सजावटी वस्तुएं, लकड़ी की कलाकृतियां, ऊनीसूती शालें, ग्रीटिंग कार्ड्स, यादगार के तौर पर खरीदे जा सकते हैं.

क्या खाएं?

सदर बाजार व माल रोड में खानेपीने के शानदार अच्छे रेस्टोरेंट हैं. इस के अलावा शहर में खूब सारे ढाबे व भोजनालय हैं. ये सभी भारतीय भोजन परोसते हैं.

अन्य जानकारियां

रानीखेत से इधरउधर जाने के लिए टैक्सियां या जीपें मिल जाती हैं. किराया पहले तय कर लें. ट्रैकिंग में रुचि रखने वालों के लिए यहां बीसियों दिलकश राहें हैं, जहां वे मनचाहे सौंदर्य का आनंद उठा सकते हैं. हिमपात के दिनों में यह नगर परीलोक में बदल जाता है. तब भी अनूठे सौंदर्य को देखने आया जा सकता है. यहां रेलवे आउट एजेंसी है, जहां रेल आरक्षण की सुविधा है.

तापमान

यहां का तापमान गरमियों में अधिकतम 32.4 डिगरी सेंटीग्रेड व सर्दियों में न्यूनतम 3.3 डिगरी सेंटीग्रेड रहता है.

गरमियों में सूती कपड़े व सर्दियों में गर्म ऊनी कपड़े लाएं.

● *एसटीडी कोड : 05966*

–प्रकाश पुरोहित 'जयदीप'



रानीखेत से हिमालय की चोटी पंचचूली का विहंगम दृश्य नजर आता है.

कौसानी

प्राकृतिक सौंदर्य के अनूठेपन के कारण, जिस का कोई सानी नहीं है, उस जन्नत सी दिलकश जगह का नाम है कौसानी. किसी भी तरह की व्यावसायिक आपाधापी व दुनियावी शोरशराबे से अछूती यह जगह पर्यटकों को अपने खास आकर्षण की रेशमी डोर से यूं बांध लेती है कि पर्यटक कुछ पलों के लिए इन नजरों में खो सा जाता है. 300 किलोमीटर के घेरे में बर्फ से ढकी चोटियों की खड़ी कतार इस जगह को भव्य रूप प्रदान करती है. यहां रोचक जनजीवन, रोमांचक वन्यजीवन, महकतेचहकते जंगल व बगीचे, पक्षियों का कलरव, दूर तक फैली घाटियों के मंजर आनंदित और रोमांचित करते हैं.

इस की छविछटा से मुग्ध हो कर महात्मा गांधी ने इसे 'भारत का स्विट्जरलैंड' कहा था. सन 1929 में गांधीजी यहां पूरे 14 दिन तक स्थानीय बंगले में रहे थे. आज यह बंगला अनासक्ति आश्रम कहलाता है. यहीं बैठ कर गांधीजी ने गीता पर नए सिरे से चिंतन कर 'अनासक्ति योग' नामक किताब लिखी थी. जिस बंगले में गांधीजी रहे वह तब एक चायबागान मालिक का अतिथिगृह था. बाद में उत्तर प्रदेश गांधी स्मारक निधि ने इसे गांधी स्मृति के लिए प्राप्त किया. पुस्तक के नाम पर ही इस बंगले का नाम रखा गया. यह स्थान इतना रमणीक है कि सारे पर्यटक इस परिसर में सूर्योदय, सूर्यास्त देखने आते हैं. जैसी शांति और सुंदरता कौसानी में बिखरी है वैसी कम जगहों पर अब देखने को मिलती है. अनासक्ति आश्रम में 300 लोगों तक के रहने की व्यवस्था है. अनासक्ति आश्रम में शाकाहारी भोजन मिलता है. शाम को प्रतिदिन गांधी हाल में प्रार्थना होती है.

कौसानी में नानाए होटल बन गए हैं. परिवार भ्रमण के लिए यह सर्वश्रेष्ठ जगह है. सूर्योदय का दृश्य इतना भव्य और सम्मोहक है कि इस विशेष दृश्य को देखने के लिए साल भर पर्यटक यहां आते रहते हैं. सुबह से शाम तक चोटियों से ले कर घाटियों तक यहां कई रंग बिखरते हैं.

दर्शनीय स्थल

पंत संग्रहालय

कौसानी बस स्टेशन से कुछेक दूरी पर महाकवि सुमित्रानंदन पंत संग्रहालय दर्शनीय है. यहां पंतजी का बाल्यकाल बीता था. यह उन का पैतृक मकान रहा है. अब इसे राज्य पुरातत्त्व विभाग ने संग्रहालय का रूप दे दिया है. यहां महाकवि के दैनिक उपयोग में आने वाली चीजों, कविताओं की पांडुलिपियां, पत्र, पुरस्कार, प्रशस्ति पत्रादि रखे गए हैं.

लक्ष्मी आश्रम

अनासक्ति आश्रम से 1 किलोमीटर की दूरी पर पर्वतीय क्षेत्र की अग्रणी स्वयंसेवी संस्था है. यहां महिलाओं से संबंधित कई कल्याणकारी कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं. गांधीजी की अनन्य शिष्या सरला बहन आजीवन यहां रह कर लेखन व समाजसेवा में जुटी रहीं. आश्रम घने जंगल के बीच एकांत में है.

निकटवर्ती दर्शनीय स्थल

पिनाकेश्वर

9,050 फुट की ऊंचाई पर अत्यंत रमणीक यह पर्वतीय स्थल कौसानी से 20 किलोमीटर की दूरी पर है. यहां शिव मंदिर है और दूर तक फैली घाटियों के मोहक दृश्य दिखाई देते हैं. पिनाकेश्वर के आसपास बूढ़ा पिनाकेश्वर, गोपालकोट, हुरिया स्थल भी चित्ताकर्षक हैं.

बैजनाथ मंदिर समूह

कौसानी से 17 किलोमीटर की दूरी पर यह महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल मूर्तिकला और नक्काशी की दृष्टि से देखने लायक है. गोमती नदी तट पर स्थित यह मंदिर समूह इतने भव्य हैं कि वहां के पत्थरों पर तराशी गई कला की जितनी तारीफ की जाए उतनी कम है. ये मंदिर एक हजार वर्ष पुराने हैं. कौसानी पहुंचने वाले

कौसानी से नंदा देवी की चोटी साफ नजर आती है



क साइड टूर के तौर पर यहां हैं.

री ग्लेशियर

बागेश्वर से 25 किलोमीटर कपकोट हो कर 16 किलोमीटर लोहारखेत आखिरी बस स्टाप हां से प्रसिद्ध पर्यटन स्थल पिंडारी यर के लिए 35 किलोमीटर की त्रा करनी पड़ती है. बर्फ के ल ग्लेशियर की अद्‌भुत छटा के लिए पर्यटक रास्ते भर 2-3 डाल कर यहां जीरो प्वाइंट 00 मीटर) तक पहुंचते हैं, जहां शियर का नजदीकी भव्य दर्शन है. पूरे मार्ग पर रहने, खाने की धाएं हैं. लोहारखेत से 18 मीटर बाद खाती गांव एक है. फिर 12 किलोमीटर बाद कया में दूसरा पड़ाव डाला जा है. फुरकिया से जीरो प्वाइंट लोमीटर रह जाता है. पूरे मार्ग ल चलते हुए प्रकृति के अद्‌भुत को बहुत नजदीक से देखने नूठा अवसर मिलता है. अप्रैल, सितंबर, अक्तूबर का समय जाने के लिए सब से उत्तम है.

ढुंगा व कफनी ग्लेशियर

साहसिक पर्यटन के शौकीनों ए ये दोनों ग्लेशियर एक दुर्लभ



कौसानी
कैसे जाएं?

कौसानी पहुंचने के लिए सिर्फ सड़क मार्ग द्वारा बस से अथवा जीप या टैक्सी से जाया जा सकता है. यहां से 180 किलोमीटर दूर पंतनगर में हवाई अड्डा तथा 142 किलोमीटर दूर काठगोदाम में रेलवे स्टेशन है. इन स्थानों से बस अथवा टैक्सी सेवाएं उपलब्ध हैं.

दिल्ली, चंडीगढ़, लखनऊ, नैनीताल, पंतनगर, रानीखेत, गोपेश्वर आदि स्थानों से सीधी नियमित उत्तम बस सेवाएं उपलब्ध हैं.

कब जाएं?

अप्रैल से जून तथा सितंबर से नवंबर तक का महीना कौसानी में भ्रमण के लिए उपयुक्त होता है. इस समय मौसम भी सुहाना होता है.

कहां ठहरें? कौसानी

होटल	फोन
सागर	22084
सन एंड स्नो इन	45010
प्रशांत	45037
न्यू पाइन	45051
जीतू	45023
अमर हालीडे होम	45015

इन के अतिरिक्त कुमाऊं विकास निगम के बंगला पाइन व्यू, नीलकंठ, उत्तराखंड, शक्ति लाज, अनासक्ति आश्रम, जिला परिषद, विश्रामगृह, वन विभाग विश्रामगृह, कृष्णा पैलेस आदि विश्रामगृह भी हैं, जहां यात्रियों के ठहरने की समुचित व्यवस्था उपलब्ध है.

प्रमुख नगरों से दूरी

दिल्ली–425 किलोमीटर	पिथौरागढ़–198 किलोमीटर
रानीखेत–62 किलोमीटर	रामनगर–174 किलोमीटर
मसूरी–355 किलोमीटर	चौकोड़ी–174 किलोमीटर
अल्मोड़ा–51 किलोमीटर	बदरीनाथ–215 किलोमीटर

रोमांच के अनुभवों से दोचार होने का अवसर देते हैं. दोनों स्थल पिंडारी ग्लेशियर क्षेत्र में अलगअलग दिशा में स्थित हैं. किसी पारंगत गाइड को ले कर व पूरा सामान ले कर ही जाना उचित है. सुंदरढुंगा अपने खूबसूरत पत्थरों के लिए प्रसिद्ध है. वहां के लिए उमला जतोली गांव होते हुए जाना पड़ता है. धाकुड़ी पड़ाव से यहां की दूरी 35 किलोमीटर है. कफनी ग्लेशियर (3,800 मीटर) के लिए द्वाली कैंप से 20 किलोमीटर का दुर्गम सफर तय करना पड़ता है.

सोमेश्वर

कौसानी से 19 किलोमीटर दूर रमणीक घाटी में बसे सोमेश्वर का शिवमंदिर प्रसिद्ध है. मान्यता है कि कुमाऊं के राजा सोमचंद ने इस मंदिर का निर्माण करवाया था. कत्यूरी शैली में बना मंदिर दर्शनीय है.

चौकोड़ी

कौसानी से 75 किलोमीटर दूर हिमालय की चोटियों के अति भव्य दर्शन के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है. यहां रहने के लिए पर्यटक आवासगृह है.

ट्रैकिंग के आकर्षण

कौसानी का समूचा क्षेत्र प्राकृतिक सौंदर्य से अटा पड़ा है. यहां कहीं भी दुर्गम भौगोलिक स्थिति नहीं है. कुछ स्थानों में आसानी से पहुंचा जा सकता है. ऐसा ही एक ट्रैक है पिनाकेश्वर तक की यात्रा. कौसानी से गरुड़ घाटी का ट्रैक भी बेहद खूबसूरत नजारों से भरा पड़ा है. इस ट्रैक में कुमाऊं के जनजीवन की खुली झलक देखने को मिलती है. कौसानी से सोमेश्वर तक बल खाते रास्तों से चलने का अलग ही आनंद है.

- ***एसटीडी कोड : 05962***

–प्रकाश पुरोहित 'जयदीप'

पिथौरागढ़

कुमाऊं मंडल की पहाड़ियों में आज भी एक ऐसा आकर्षण है, जिस के वशीभूत हो कर पर्यटक बरबस इस ओर खिंचे चले आते हैं. यहां का एकएक पर्वत सौंदर्य और सम्मोहन के नएनए द्वार खोलता चला जाता है. श्रद्धालुओं के लिए यह विराट तीर्थस्थल है तो कलाप्रेमियों के लिए कलामय प्रदेश. घुमक्कड़ों के लिए जीतीजागती जन्नत तो शोधकर्ताओं व जिज्ञासुओं के लिए यह किसी बड़े तिलिस्मी क्षेत्र की तरह है. पर्यटन व पर्वतारोहण की असीम संभावनाओं से भरे इस के सीमांत क्षेत्र में दर्शनीय रमणीक स्थल है पिथौरागढ़.

पिथौरागढ़ शहर जो कि जिले का मुख्यालय भी है, अनेक पर्यटन आकर्षणों को अपने आगोश में समेटे हुए है. लगभग 8 किलोमीटर लंबी व 5 किलोमीटर चौड़ी घाटी में यह अलबेला शांत शहर बसा हुआ है. प्राचीन काल में यहां विशाल झील के होने का स्पष्ट प्रमाण मिला है. सरोवर घाटी के कारण इसे सौर घाटी के नाम से भी जाना जाता है. विख्यात कैलाशमानसरोवर महायात्रा का मार्ग भी इसी शहर से हो कर जाता है. मिलम ग्लेशियर जैसे पर्यटन स्थल व आदिकैलाश पर्वतधाम हेतु भी इसी नगर से प्रवेश करना पड़ता है.

समुद्रतल से 1,650 मीटर ऊंचाई पर बसा यह शहर एक ऐसी बड़ी घाटी में स्थित है जहां कई अधखुली घाटियां पर्यटकों को रोमांचित करती हैं. इस शहर में परंपराओं व आधुनिकता का सुंदर मेल देखते ही बनता है. यह शहर मध्य युग का महत्त्वपूर्ण स्थल रहा है.

पिथौरागढ़ से बैठेबिठाए नंदादेवी पूर्व (7,434 मीटर) त्रिशूल (7,045 मीटर), पंचचूली ग्रुप (6,904 मीटर), हरदेवल (6,565 मीटर) आदि चोटियों के दीदार हो जाते हैं. पर्यटन के लिहाज से शहर के इर्दगिर्द निम्न स्थल दर्शनीय हैं :

दर्शनीय स्थल

चंडाक

यह शहर से 7 किलोमीटर दूर मनोरम प्राकृतिक छटा से घिरा घूमने योग्य स्थल है. 6,000 फुट ऊंचाई पर होने से यहां से पिथौरागढ़ घाटी के विहंगम दृश्य दिखाई देते हैं.

थल केदार

शहर से 6 किलोमीटर दूर यहां के शिव मंदिर दर्शनीय हैं. शिवरात्रि के दिन यहां बड़ा मेला लगता है. सुंदर दृश्यों के कारण यह पर्यटन योग्य स्थल है.

ध्वज मंदिर

पिथौरागढ़ से 16 किलोमीटर दूर 7,000 फुट ऊंची चोटी पर यह रमणीक स्थल पर्यटन के लिए बेहद आकर्षक है. यहां से हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियां बहुत मनोहारी लगती हैं. सूर्य के प्रकाश में वे कभी सुनहली तो कभी रुपहली जान पड़ती हैं.

पिकनिक स्थल

पिथौरागढ़ में सैरसपाटे के कई और भी ठिकाने हैं. उल्काहेवी मंदिर शहर से 1 किलोमीटर दूरी पर है. करीब इतनी ही दूरी पर राधाकृष्ण मंदिर, राइ गुफा व भातकोट है. एक अन्य स्थल हनुमानगढ़ी 2 किलोमीटर की दूरी पर है.

निकटवर्ती दर्शनीय स्थल

चौकोड़ी

पिथौरागढ़ से 112 किलोमीटर दूर यह स्थल हिमालय दर्शन के लिए

पिथौरागढ़ अनेक पर्यटन आकर्षणों को अपने आगोश में समेटे हुए है





ड़ी से हिमालय के दर्शन हो
हैं.

प्रसिद्ध है कि पर्यटक बिना
घूमे कुमाऊं दर्शन यात्रा को
मानता है. यहां से हिमाच्छादित
र इतने निकट व भव्य जान
हैं कि लगता है जैसे हाथ
ा नहीं कि उन्हें छू लिया. यहां
शांत वातावरण में गजब की
श घुली है. चाय के बगीचे,
बांज, बुरांस, देवदार के जंगल
को भाते हैं. पक्षियों का कलरव
ा बिखेरता है. यहां पर रहने के
कुमाऊं निगम का टूरिस्ट रेस्ट
है, जहां 40 रुपए से 200
तक की दरों पर आवासीय
ा उपलब्ध है.

ूरा मृग विहार

चौकोड़ी से धरमघर की ओर
लोमीटर की दूरी तय करने पर
ी नामक जंगल में सरकार ने
मृग अनुसंधान केंद्र की
ा की है. यहां 14 मृग रखे गए
ान घने जंगल से घिरा हुआ है.

ल भुवनेश्वर

पिथौरागढ़ से 147 किलोमीटर
कृति के अद्‌भुत तिलिस्मों से
अनूठा स्थल है, पाताल
वर. यहां धरती के अंदर बहुत
क फैली प्राकृतिक गुफाएं व
विशेष आश्चर्यजनक हैं. यहां
किरी गुफा में प्रवेश कर 84
ीचे उतर कर विशाल सुरंग व
गुफाओं में पहुंचा जाता है. यहां विद्युत प्रकाश की सुविधा है, जिस से पर्यटक प्रकृति के इस आश्चर्य लोक को स्पष्ट देख सकता है.

पिथौरागढ़

कैसे जाएं?

पिथौरागढ़ जाने के लिए विमान से पंतनगर तक, जो कि यहां से 249 किलोमीटर तथा रेल से टनकपुर तक, जो कि यहां से 150 किलोमीटर दूर है, तक जाना पड़ता है. फिर वहां से बस अथवा किराए की टैक्सियां ले कर जाना पड़ता है.

वैसे दिल्ली, लखनऊ, हलद्वानी, टनकपुर, नैनीताल, अल्मोड़ा, रानीखेत, ग्वालदम तथा आसपास के अन्य पर्यटन स्थलों से सीधी उत्तम बस सेवाएं उपलब्ध हैं.

प्रमुख नगरों से दूरी

दिल्ली–505 किलोमीटर	बरेली–268 किलोमीटर
टनकपुर–150 किलोमिटर	लोहाघाट–60 किलोमीटर

खानेपीने के प्रमुख स्थल

यहां गिनेचुने अच्छे रेस्टोरेंट हैं. सभी भारतीय भोजन ही परोसते हैं. अलका, आनंद, शैलजा, त्रिशूल, ज्योति अच्छे रेस्टोरेंट हैं. ढाबे व भोजनालय काफी हैं.

कब जाएं?

वैसे तो पिथौरागढ़ कभी भी जाया जा सकता है, किंतु अप्रैल से जून तक तथा सितंबर से नवंबर तक का मौसम ज्यादा सुहावना होता है. दिसंबर तथा जनवरी में भारी ठंड होती है, किंतु घूमा जा सकता है.

गंगोलीहाट

पिथौरागढ़ से 77 किलोमीटर दूरी पर यहां हाटकाली मंदिर समूह

कहां ठहरें? पिथौरागढ़

होटल	फोन	होटल	फोन
आनंद	25681	राजा	2224
ज्योति	2311	अलंकार	2475
रंजना	2269	एवरेस्ट	-
सम्राट	2480	उत्तरांचल	
त्रिशूल	2545	लक्ष्मी	
प्रियदर्शिनी	2345	ज्योतिर्मय	

दर्शनीय है. यह कुमाऊं का महत्त्वपूर्ण धार्मिक केंद्र है. पुरातत्त्व की दृष्टि से यह स्थान महत्त्व रखता है. यहां वर्ष में दो बार मेले लगते हैं.

बेरीनाग

पिथौरागढ़ से 102 किलोमीटर दूर चौकड़ी के पास यह शांत कस्बा पर्यटन की दृष्टि से सर्वोत्तम है. यहां पुराने चाय बागान हैं तथा यहां से हिमालय का दृश्य बहुत अच्छा दिखाई देता है.

नारायण आश्रम

कैलाशमानसरोवर मार्ग पर पिथौरागढ़ से 130 किलोमीटर दूरी पर इस आश्रम की वास्तुकला दर्शनीय है. प्राकृतिक दृश्य बहुत रमणीक है. काली नदी का नजारा भी दिलकश है.

जौलजीवी

बेरीनाग व गंगोलीहाट से यहां पहुंचा जा सकता है. यह 68 किलोमीटर दूर है. मुख्यत: यह सीमांत का व्यापारिक मंडी पड़ाव है, गोरी व काली नदी के संगम पर बसा है. साल में यहां एक बड़ा व्यापारिक मेला लगता है. पहले यह स्थल व्यापार व तीर्थ के लिए तिब्बत जाने वालों के लिए मार्गीय पड़ाव के रूप में जाना जाता था.

मुंस्यारी

पिथौरागढ़ से 154 किलोमीटर दूर इस नगर को हिमनगरी कहा जाता था. 7,000 फुट ऊंचाई पर यहां चारों ओर बिखरे प्राकृतिक सौंदर्य का विस्तार मन को छू लेता है. यहां से पंचचूली की चोटियों के भव्य दर्शन होते हैं. स्थानीय जनजीवन की झलक मनोहारी लगती है. यहां रहने, खाने, घूमने की खूब सुविधाएं हैं.

मिलम व रालाम ग्लेशियर

साहसिक ट्रैकिंग करने वालों के लिए मिलम ग्लेशियर जानापहचाना नाम है. 7,182 मीटर ऊंचाई पर यह ग्लेशियर अपने धवल सौंदर्य के कारण जगविख्यात है. मुंस्यारी से लीलाम, बुगद्यार, रेलकोट होते पैदल मिलम तक जाना पड़ता है.

रालाम ग्लेशियर (6,465 मीटर) के लिए मुंस्यारी से 51 किलोमीटर की पैदल यात्रा करनी पड़ती है.

पर्यटन सूचना केंद्र

उत्तर प्रदेश सरकार का पर्यटन कार्यालय (फोन नं. 2527), जिला सूचना एवं जन संपर्क कार्यालय, फोन नं. 2549.

खरीदारी स्थल

पुरानी बाजार, सिल्थाम, नया बाजार, सिनेमा लाइन व मेन मार्केट.

क्या खरीदें?

ऊनी वस्त्र, रिंगाल (केन) से बनी चीजें, लोहे के बर्तन, लकड़ी की बनी कलाकृतियां, स्थानीय पर्यटनस्थलों के ग्रीटिंग कार्ड्स.

तापमान

यहां का तापमान गरमियों में अधिकतम 32.5 डिगरी सेंटीग्रेड रहता है तथा सर्दियों में न्यूनतम 0.5 डिगरी सेंटीग्रेड रहता है.

- **एसटीडी कोड : 05964**

–प्रकाश पुरोहित 'जयदीप'

लोहाघाट

यदि आप पहाड़ों में बिखरे सौंदर्य और प्रकृति में छिपे हुए रोमांच का एक साथ भरपूर लुत्फ उठाना चाहते हैं तो लोहाघाट चलिए, जहां आसपास अनेक ऐसे स्थल हैं, जो आप को अभिभूत कर देंगे. आप खुद को कुदरत के अनकहे तिलिस्म से घिरा हुआ पाएंगे. यहां चारों ओर गहरी शांति व्याप्त है और ताजादम सौंदर्य का साम्राज्य फैला हुआ है

लोहाघाट का प्राकृतिक सौंदर्य चित्ताकर्षक है. देवदार वृक्षों, मखमली घास और फूलों से ढके रास्ते चित्तचोर हैं. कभी अंगरेजों को यह स्थल बेहद प्रिय था. अंगरेजों के कई बंगले आज भी उन की हिमालयप्रियता की याद दिलाते हैं. लोहाघाट में रहने के लिए सुविधाजनक होटल, विश्रामगृह, गेस्ट हाउस हैं, स्थानीय भोजनालय उपलब्ध हैं.

दर्शनीय स्थल

घटोत्कच मंदिर

16 किलोमीटर की दूरी पर इस मंदिर के साथ महाभारत कालीन स्मृतियां जुड़ी हैं. कहा जाता है कि कर्ण के हाथों मारे गए अपने बेटे घटोत्कच की याद में भीम ने यह मंदिर बनवाया था.

एक हथियानौला

17 किलोमीटर की दूरी पर (चंपावत से 3 किलोमीटर पैदल) यहां के बारे में कहा जाता है कि



...वत स्थित बालेश्वर मंदिर देखने ... हैं.

...लीन राजा ने एक कलाकार का ... हाथ इसलिए कटवा दिया था ...ह अद्भुत कलाकारी का प्रदर्शन ... जगह न कर पाए. एक हाथ ... पर भी उस कलाकार ने एक ... बावड़ी की दीवार पर एक हाथ ...सी कलाकारी की कि सब देखते ...ए. उस बावड़ी को देखने पर्यटक ... भी आते हैं.

... माउंट

लोहाघाट से 10 किलोमीटर ...री पर एवट नामक अंगरेज के ...र पहाड़ी का नाम एवट माउंट ... दिया गया. अंगरेजों को यह ... अत्यंत प्रिय थी. उन्होंने यहां ... बनाए थे. आज भी ये बंगले ... हैं. यहां सुंदर गोल्फ मैदान है. नीरव शांति है. सघन हरियाली फैली हुई है. पैदल घुमक्कड़ी का यहां मजा ही मजा है. हिमालय की चोटियों के यहां से विहंगम दर्शन होते हैं. यहां की ऊंचाई 2,009 मीटर है.

मायावती आश्रम

लोहाघाट से एक दूसरा मार्ग 12 किलोमीटर दूर मायावती आश्रम के लिए चला जाता है. घने जंगलों से घिरा गहन शांति में डूबा यहां का प्राकृतिक वातावरण मन पर जादुई असर डालता है. यहां रामकृष्ण व अद्वैत आश्रम स्थापित हैं. आश्रम का जनहितार्थ अस्पताल है. इस आश्रम में कभी स्वामी विवेकानंद दो हफ्ते रहे थे.

चंपावत

लोहाघाट से 14 किलोमीटर की दूरी पर यह नगरी कभी चंदवंशीय राजाओं की राजधानी थी. पुरानी राजधानी के महल व किले के स्मृति चिह्न आज भी देखे जा सकते हैं. वास्तुकला की दृष्टि से यहां के कई मंदिर विशेष रूप से दर्शनीय हैं. इस में बालेश्वर व नागनाथ मंदिर के नाम उल्लेखनीय हैं. चंपावत घाटी बेहद सुंदर है. अब यह कुमाऊं का नया

लोहाघाट कैसे जाएं?

लोहाघाट जाने के लिए कोई भी सीधी विमान अथवा रेलसेवा उपलब्ध नहीं है. इस के लिए हवाईजहाज से पंतनगर जो कि यहां से 311 किलोमीटर दूर है तथा रेल से टनकपुर (89 किलोमीटर) तक जाना पड़ता है. फिर वहां से बस अथवा टैक्सी द्वारा लोहाघाट तक जाना पड़ता है.

वैसे लोहाघाट जाने के लिए सड़क मार्ग सर्वोत्तम है. यहां के लिए दिल्ली, चंडीगढ़, इलाहाबाद, लखनऊ, बरेली तथा आसपास के सभी पर्यटन स्थलों से उत्तम बस सेवाएं उपलब्ध हैं.

कहां ठहरें? लोहाघाट

लोहाघाट में ठहरने के लिए गढ़वाल मंडल विकास निगम का विश्राम स्थल, पर्यटक आवासगृह, सरकारी विश्रामगृह उपयुक्त स्थान हैं. इन के अलावा और भी कुछ छोटेमोटे होटल तथा धर्मशालाएं हैं जहां ठहरा जा सकता है. इस के अलावा लोहाघाट के आसपास चंपावत, गैठा साहिब, श्यामलाताल, टनकपुर तथा पूर्णागिरि में भी रात्रिविश्राम की उचित व्यवस्था उपलब्ध है.

जनपद बन गया है. यहां रहने के लिए अनेक होटल, रेस्ट हाउस हैं. यहां स्थानीय जनजीवन की झलक देखने को मिलती है. यहां की ऊंचाई 1,615 मीटर है.

देवीधूरा

45 किलोमीटर की दूरी पर प्राचीन मंदिरों की इस बस्ती में रक्षाबंधन के दिन विचित्र पत्थरमार बग्वाल मेला लगता है, जिसे देखने दूरदूर से लोग यहां आते हैं.

श्यामलाताल

66 किलोमीटर की दूरी पर सूखीढांग नामक जगह से 5 किलोमीटर चल कर एक सरोवर के दर्शन होते हैं. यही श्यामलाताल है. 1,525 मीटर ऊंचाई पर यह सरोवर बेहद चित्ताकर्षक है. यहां से एक तरफ ऊंची चोटियां दिखाई देती हैं तो दूसरी तरफ ढलान पर मैदानी भूभाग दृष्टिगोचर होता है. पर्यटन की दृष्टि से बेहद शांत मनोरम स्थल है.

पूर्णागिरी

89 किलोमीटर दूर टनकपुर शहर से एक मार्ग सुप्रसिद्ध तीर्थ पूर्णागिरी के लिए जाता है. यहां पहुंचने के लिए टनकपुर से ठुलीगाड़ तक 35 किलोमीटर का मोटर मार्ग है. फिर 12 किलोमीटर पैदल सफर तय करना पड़ता है.

क्या खरीदें?

रिंगाल (केन) से बनी सजावटी चीजें, चटाइयां, हस्तकला की वस्तुएं, पहाड़ी फल, मेवे, दाल, ऊनी कपड़े खरीदे जा सकते हैं.

–प्रकाश पुरोहित 'जयदीप'

लखनऊ

बेशक नवाबी शानोशौकत की याद दिलाने वाली आलीशान इमारतों के इस नगर में अब सियासी धमाचौकड़ी ही दिखाई पड़ती है, जिस से लखनऊ की दुनिया भर में मशहूर तहजीब भी छिपती जा रही है. अब यहां दिल बागबाग कर देने वाले हरेभरे पेड़ों और फूलों से पटे लंबेचौड़े बाग भी नजर नहीं आते. फिर भी लखनऊ में एक ऐसी कशिश है जो पर्यटकों को यहां तक खींच लाती है. यहां के खंडहरों में गाइड जब गुजरे जमाने की दास्तान सुनाता है तो उठने को जी नहीं चाहता. गोमती के किनारे शामे. अवध का नजारा आज भी पर्यटकों को बांध लेता है.

इस नगर ने कला, संस्कृति, संपन्नता और स्वाधीनता संग्राम का शानदार सफर देखा है. इस की छाप लखनऊ पर आज भी साफ नजर आती है.

बाद में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अंगरेजों को क्रांतिकारियों ने यहां खूब मजा चखाया. उस समय लखनऊ राजनीतिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बन गया था. अंगरेजों के साथ स्वाधीनता सेनानियों की हुई जबरदस्त लड़ाई की गवाह रेजीडेंसी जैसी कई इमारतें आज भी शान से खड़ी हैं. लखनऊ में एक विशेषता यह भी है कि यहां ब्रिटिश, इटैलियन तथा फ्रांसीसी शिल्पकारी वाली इमारतें भी देखने को मिलती हैं.

दर्शनीय स्थल

बड़ा इमामबाड़ा

अकाल राहत के लिए नवाब आसिफुद्दौला ने 1784 में इस विशालकाय भव्य इमारत का निर्माण कराया था. इस इमारत का बाहरी हिस्सा देख कर ऐसा लगता है जैसे

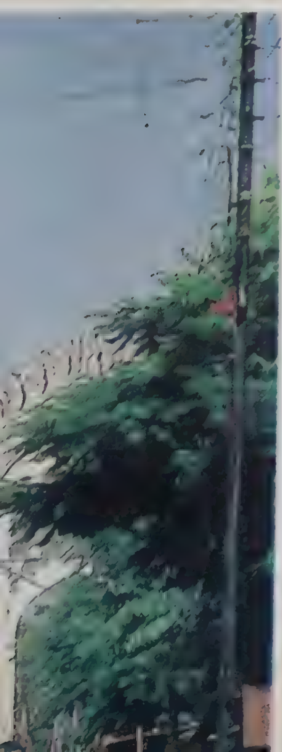


सी किले के सामने खड़े हों. मगर र जाने पर एक और खूबसूरत रत नजर आती है जिस में 489 रहित गलियारे हैं. इस इमारत में विश्वप्रसिद्ध भूलभुलैयां है जिस लोग रास्ता भटक जाते हैं. इमारत अगले भाग में 49.4 मीटर लंबा, 2 मीटर चौड़ा और 15 मीटर से ऊंचा एक विशाल कक्ष है जिस नवाब अपना दरबार लगाते थे. भुलैयां के रास्तों से नवाब इस में कहां से प्रकट होते थे, यह के दरबारी भी नहीं जान पाते थे. विश्व का सब से बड़ा स्तंभ मेहराबदार कक्ष है. इस का ी हिस्सा मधुमक्खी के छत्ते के ार का है. इमामबाड़े में नफुद्दौला की मजार भी है. प्रांगण क ऊंचे चबूतरे पर काफी बड़ी मसजिद बनी है. भूलभुलैयां के से बड़े कक्ष की एक विशेषता भी है कि वहां एक छोर पर ज फाड़ा जाए तो उस की आवाज छोर पर सुनाई पड़ती है.

ा इमामबाड़ा

अवध के तीसरे नवाब मुहम्मद

इमामबाड़ा के पास बना खूनी ना इतिहास प्रसिद्ध है.



लखनऊ

कैसे जाएं?

वायु मार्ग

लखनऊ उत्तर प्रदेश की राजधानी होने के साथसाथ मुगल सल्तनत के इतिहास से जुड़ा हुआ शहर है. इस प्रकार यहां राजनीतिक हलचलों के अलावा पर्यटन संबंधी चहलपहल भी साल भर बनी रहती है. इसलिए यह शहर भारत के सभी प्रमुख नगरों से सीधे वायु मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है.

प्रमुख उड़ानें

इंडियन एअरलाइंस

कहां से	दिन	उड़ान संख्या	प्रस्थान	किराया
कलकत्ता	1,3,5,6	सीडी 412	17.15	4,225 रु.
दिल्ली	प्रतिदिन	सीडी 435	06.00	2,350 रु.
	1,3,5,7	सीडी 411	17.40	2,350 रु.
मुंबई	2,4,6	आई सी 695	10.50	6,725 रु.
पटना	1,3,5,6	सीडी 412	18.40	2,545 रु.
वाराणसी	2,4,6	आई सी 695	13.40	1,710 रु.
सहारा एअरलाइंस				
मुंबई	प्रतिदिन	एस 2 907	15.15	6,725 रु.
दिल्ली	प्रतिदिन	एस 2 513	12.45	2,350 रु.
वाराणसी	2,4,6,7	एस 2 907	17.55	1,000 रु.
पटना	1,3,5	एस 2 905	17.55	2,245 रु.

रेल मार्ग

इस शहर में पहुंचने के लिए देश के सभी प्रसिद्ध नगरों से सीधी रेल सेवाएं उपलब्ध हैं.

प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	गाड़ी की संख्या व नाम	प्रस्थान	आगमन
दिल्ली	2004 शताब्दी एक्सप्रेस	06.20	12.45
	4230 लखनऊ मेल	22.00	07.15
	2420 गोमती एक्सप्रेस	14.20	22.30
	4058 काशीविश्वनाथ एक्सप्रेस	13.30	23.15
अहमदाबाद	5045 अहमदाबादगोरखपुर एक्सप्रेस	05.45	13.20
हावड़ा	3073 हावड़ाजम्मूतवी हिमगिरी एक्सप्रेस	23.00	19.20
	3049 हावड़ाअमृतसर एक्सप्रेस	13.10	15.30
	3309 हावड़ादेहरादून एक्सप्रेस	20.30	18.45
चेन्नई	6093 मद्रासलखनऊ एक्सप्रेस	05.30	21.00
जम्मूतवी	3152 जम्मूतवीसियालदह एक्सप्रेस	18.55	18.25

सड़क मार्ग

लखनऊ के लिए उत्तर प्रदेश के सभी प्रमुख पर्यटन स्थलों से सीधी बस सेवाएं उपलब्ध हैं. इस के अलावा दिल्ली, चंडीगढ़, जयपुर आदि शहरों से उत्तर प्रदेश परिवहन तथा टूरिस्ट बसें चलती हैं. उत्तर प्रदेश के सभी पहाड़ी स्थानों से लखनऊ पहुंचने के लिए बस सेवाएं ही सुविधाजनक होती हैं.

प्रमुख नगरों से दूरी

अमृतसर–945 किलोमीटर	देहरादून–647 किलोमीटर
कलकत्ता–963 किलोमीटर	अहमदाबाद–1,133 किलोमीटर
मुंबई–1,370 किलोमीटर	पटना–532 किलोमीटर
बंगलौर–1,900 किलोमीटर	वाराणसी–286 किलोमीटर
दिल्ली–569 किलोमीटर	भोपाल–703 किलोमीटर

खरीदारी के प्रमुख स्थल

यहां के चिकन के कपड़े देश भर में पसंद किए जाते हैं. लखनऊ से चिकन की कढ़ाई के कुरते, पाजामे और साड़ियां इत्यादि विदेशों में भी निर्यात किए जाते हैं. चिकन के कपड़ों के मुख्य बाजार चौक, अमीनाबाद, नजीराबाद, हजरतगंज और निशातगंज हैं. चौक और हजरतगंज रविवार को तथा अमीनाबाद गुरुवार को बंद रहता है. इन के अलावा जनपथ भी चिकन के कपड़ों तथा अन्य खरीदारी के लिए बड़ा बाजार है. यह भी रविवार को बंद रहता है.

लखनऊ का हजरतगंज क्षेत्र सर्वाधिक गुलजार रहता है. यहां रायल कैफे, मोतीमहल, मार्क्स मैन, कपूर होटल तथा चौधरी रेस्टोरेंट में हमेशा भीड़ नजर आती है. चारबाग स्टेशन से यह क्षेत्र सिर्फ 4 किलोमीटर दूर है. लखनऊ में बने चांदी मिट्टी के बरतन, रंगीन मिट्टी के खिलौने और रेवड़ी देश भर में मशहूर हैं. नगर में घूमने के लिए साइकिल रिक्शा ही सब से सस्ता साधन है. सिटी बसें ज्यादा न चलने के कारण जल्दी पहुंचने के लिए टैंपो या टैक्सी का सहारा लिया जा सकता है.

अली शाह ने 1840 के आसपास इस खूबसूरत इमारत को बनवाया था. इस का वास्तविक नाम हुसैनाबाद इमामबाड़ा है. इमारत के भीतर बेल्जियम की कीमती झाड़फानूस, कंदीलें और शमादान हैं. आंतरिक सज्जा की दृष्टि से यह अद्वितीय है. रूस के एक राजकुमार ने इसे 'भारत के क्रेमलिन' की संज्ञा दी थी. इमारत के भीतर मुहम्मद अली शाह तथा उन की मां की कब्रें हैं. इस के परिसर में एक 'शाही हमाम' भी बना हुआ है. संगमरमर के हौज और मेहराब की वजह से इस का शिल्प कुछकुछ ताजमहल के आधार पर बनाया गया लगता है.

रूमी दरवाजा

इस का निर्माण भी नवाब आसिफुद्दौला ने बड़े इमामबाड़े के साथसाथ कराया था. लगभग 60 फुट ऊंचे इस भारीभरकम दरवाजे को देख कर पर्यटक दांतों तले अंगुली दबा लेते हैं. इस पर शिल्प कला के अद्भुत नमूने देखने को मिलते हैं. इस दरवाजे के निर्माण में कहीं भी लकड़ी या लोहे का प्रयोग नहीं किया गया है. रूमी दरवाजे को बड़े इमामबाड़े का प्रवेशद्वार भी कहा जा सकता है. इस के अलावा नगर में शेर दरवाजा और गोल दरवाजा भी देखने योग्य हैं.

घड़ी मीनार

देश की सब से ऊंची कही जाने वाली यह घड़ी मीनार ब्रिटिश शासन के दौरान सन 1881 में गोमती के किनारे बनवाई गई थी. इस घंटाघर की ऊंचाई 221 फुट है. इस मीनार पर यूरोपीय शिल्पकारी की गई है. घंटाघर की घड़ी के सभी कलपुर्जे गनमेटल के बने हैं और इस के चारों ओर घंटियां लगी हैं. घड़ी का डायल 12 पंखड़ियों वाले खिले फूल जैसा लगता है. इस का पेंडुलम 14 फुट लंबा है. घड़ी मीनार रूमी दरवाजे से चंद कदम की दूरी पर ही है.

पिक्चर गैलरी

घड़ी मीनार के ठीक बगल में पिक्चर गैलरी है. नवाब मुहम्मद शाह द्वारा निर्मित एक बड़ी सी बारादरी में अवध के नवाबों के प्राचीन एवं आधुनिक तैलचित्र तथा अन्य छायाचित्र रखे गए हैं. इसे पिक्चर गैलरी का रूप दिया गया है. इस बारादरी के ठीक सामने हुसैनाबाद का मशहूर तालाब है. बेहद कलात्मक ढंग से बनाए गए इस तालाब की खासियत यह थी कि इस में ठंडा व गरम पानी एक साथ मौजूद रहता था.

सतखंडा पैलेस

हुसैनाबाद तालाब की दाईं ओर नवाब मोहम्मद अली शाह द्वारा फ्रेंच और इटैलियन शैली में बनवाया गया एक सातमंजिला महल है जिसे सतखंडा पैलेस कहा जाता है. हालांकि यह अब खंडहर हो चला है, लेकिन इस का अद्भुत शिल्प आज भी देखने योग्य है. इसे इटली की मीनार 'पीसा' की शैली में निर्मित किया गया था. लखनऊ की इमारतों पर नजर रखने के लिए 'वाच टावर' के रूप में इसे बनवाया गया था.

रेजीडेंसी

शहर के मुख्य बाजार हजरतगंज से लगभग 4 किलोमीटर दूर स्थित रेजीडेंसी का निर्माण नवाब आसिफुद्दौला ने 1780 में शुरू करवाया था जो सआदत अली खां के समय में सन 1800 में पूरा हुआ. बेली गारद कहलाने वाली इस मशहूर इमारत पर प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान 1857 में अंगरेजों ने इस पर कब्जा कर लिया और इसे अपना निवास स्थान बनाया. यहां अंगरेजों और स्वतंत्रता सेनानियों के बीच जबरदस्त गोलाबारी हुई थी जिस में यह इमारत काफी क्षतिग्रस्त हुई.



ा इमामबाड़ा ताजमहल की कृति लगता है.

रेजीडेंसी के अवशेष देख कर टक रोमांचित हो जाते हैं. इस रत के चारों ओर खूब हरियाली और घास के मैदान हैं. यहां फ्लड टिंग की व्यवस्था है जिस से रात मारत देखने का आनंद बढ़ जाता यहां लोग पिकनिक के लिए भी हैं.

ीद स्मारक

रेजीडेंसी के ठीक सामने ी के तट पर स्वतंत्रता सेनानियों मृति में एक स्मारक बना है. इस निर्माण 15 अगस्त 1957 को हुआ था. स्मारक के करीब रमर के पत्थरों से बने चबूतरे ठ कर पर्यटक गोमती का दृश्य हैं. यहां नौका विहार की भी था है.

म बुद्ध पार्क

बड़ा इमामबाड़ा और शहीद क के बीच रास्ते पर गोमती के नगर का मशहूर बुद्ध पार्क ां बच्चों के लिए 'अप्पू घर' ई झूले लगे हैं. पार्क में हरेभरे दान के बीच एक चौड़ी नहर स में लोग पैडल बोट चलाते

कहां ठहरें? — लखनऊ

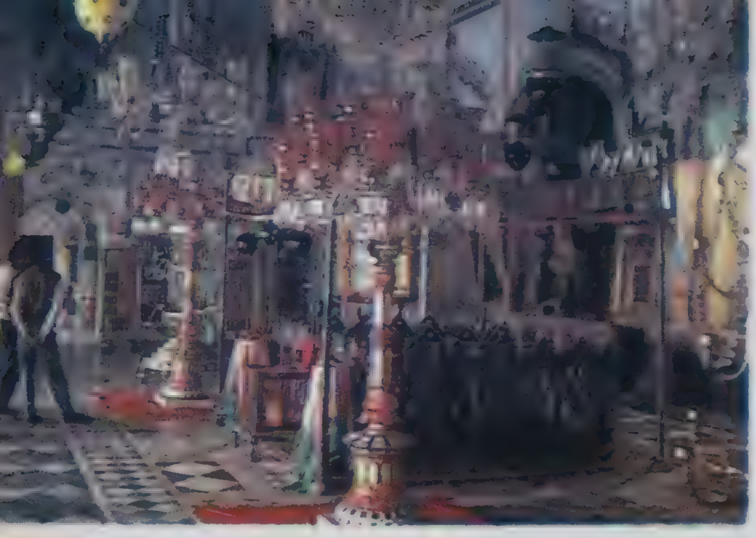
होटल	*पता*	*फोन*	*श्रेणी*
ताज रेजीडेंसी	विशाल खंड, गोमती नगर	393939	उत्तम
क्लार्क्स अवध	महात्मा गांधी मार्ग, हजरतगंज	220131	उत्तम
आरिफ कांटीनेंटल	4, राणा प्रताप मार्ग	211314	उत्तम
चरन इंटरनेशनल	16, विधान सभा मार्ग	227219	उत्तम
कार्लटन	शाहनजफ रोड	224021	उत्तम
कोहिनूर	6, स्टेशन रोड	217693	उत्तम
एलोरा	लालबाग	221100	मध्यम
मोहन	चारबाग	451768	मध्यम
गुलमर्ग	अमीनाबाद	211227	मध्यम
दीप अवध	नाका हिंडोला	216521	मध्यम
स्वास्तिक	13-1, राणाप्रताप मार्ग	280840	मध्यम
कपूर	हजरतगंज	223958	मध्यम
नरेश	नरही बाजार	215605	साधारण
मधुबन	शिवाजी मार्ग	214824	साधारण
मयूर बाग	चार बाग	50464	साधारण
अप्सरा.	लाटूश रोड	225156	साधारण

धर्मशालाएं

छेदीलाल	अमीनाबाद	भोलानाथ	चौक
गंगा प्रसाद	अमीनाबाद	मुन्नालाल कागजी	चारबाग
शीतल	चौक	शाह गया प्रसाद	चारबाग

अन्य आवासीय सुविधाएं

अवध गेस्ट हाउस	रकाबगंज	216047
अवधलाज	सिकंदराबाग	223821
वाई.एम.सी.ए. होस्टल	राणा प्रताप मार्ग	227227
रेलवे विश्रामगृह	चारबाग	



बड़ा इमामबाड़ा की आंतरिक साजसज्जा अद्वितीय है.

हैं. बुद्ध पार्क से थोड़ी ही दूर हाथी पार्क है. यहां भी बच्चों के लिए झूले लगे हैं. इस के अलावा इमामबाड़े के पीछे स्थित नीबू पार्क भी देखा जा सकता है.

जामा मसजिद

इसे मसजिद मलकाजहां भी कहते हैं. छोटे इमामबाड़े के पश्चिम में स्थित इस मसजिद को 1840 में नवाब मुहम्मद अली शाह ने बनवाना शुरू किया था, मगर बीच में ही शाह की मृत्यु हो गई. बाद में उन की बेगम मलकाजहां ने इसे पूरा करवाया. एक टीले पर बनी इस विशालकाय मसजिद के गोलाकार दरवाजे इस की भव्यता दर्शाते हैं. इस में अरबी स्थापत्य कला और विभिन्न प्रकार की चित्रकारी देखने लायक है. जामा मसजिद लखनऊ की सब से बड़ी मसजिद है. इस के अलावा आसफी और मोती मसजिद भी मशहूर हैं.

मकबरा सआदत अली

चारबाग स्टेशन से लगभग 4 किलोमीटर दूर कैसरबाग क्षेत्र में नवाब सआदत अली खां और उन की बेगम खुर्शीदजादी के मकबरे हैं. इन मकबरों का निर्माण उन के पुत्र नवाब गाजीउद्दीन हैदर ने करवाया था. इतालवी शैली में बने इन मकबरों की बनावट काफी आकर्षक है. मकबरों के चारों तरफ हरी घास के बगीचे हैं जहां पर्यटक घूमफिर सकते हैं. 1857 में यहां भी स्वतंत्रता सेनानियों का अंगरेजों से घमासान युद्ध हुआ था. इन मकबरों के ठीक सामने लखनऊ का मशहूर बेगम हजरत महल पार्क है, जहां बड़ी प्रदर्शनियां वगैरह लगती हैं.

छतर मंजिल

बेगम हजरत महल पार्क के करीब ही गोमती के किनारे एक काफी बड़ी इमारत बनी है. इसे छतर मंजिल कहते हैं. इसे नवाब गाजीउद्दीन हैदर ने बनवाना शुरू किया था. निर्माण के दौरान ही उन की मृत्यु के बाद नवाब नसीरुद्दीन हैदर ने इसे पूरा करवाया. इस इमारत में बड़ा दीवानखाना, तहखाने और सुरंगें हैं. अब इस इमारत में केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान की प्रयोगशाला और कार्यालय है. गोमती के दूसरे किनारे से छतर मंजिल का शानदार स्वरूप दिखाई पड़ता है.

प्राणी उद्यान

चारबाग स्टेशन से 4 किलोमीटर दूर बनारसी बाग में प्राणी उद्यान है. इसे 1921 में बनाया गया था. यहां विभिन्न प्रकार के जानवरों और पक्षियों के अलावा एक बड़ा अजायबघर तथा मछलीघर भी है. प्राणी उद्यान के परिसर में एक बच्चों की रेल चलती है. यहां जवाहरलाल नेहरू द्वारा प्रयोग में लाया जाने वाला विमान राजहंस भी रखा हुआ है. प्राणी उद्यान में बच्चों के खेलने के लिए काफी बड़ा मैदान है.

लक्ष्मण टीला

इसे शेष तीर्थ भी कहा जाता था. बड़े इमामबाड़े के पास स्थित लक्ष्मण टीले पर आलमगीर मसजिद है. इस का निर्माण औरंगजेब के शासनकाल में अवध प्रांत के गवर्नर सुलतान अली शाह कुली खां ने करवाया था. जनश्रुति है कि राम के भाई लक्ष्मण ने इसे बसाया था. उस के बाद ही इस नगर को लखनावती के नाम से जाना गया.

मूसा बाग

लखनऊ से काकोरी और मलीहाबाद के रास्ते पर नवाब आसिफुद्दौला द्वारा बनवाया गया मूसा बाग है. 1857 में 'गदर' के समय यहां भी स्वाधीनता सेनानियों और अंगरेजों में भीषण युद्ध हुआ था. नवाब वाजिद अली शाह के समय में यह फौज का परेड ग्राउंड था. काफी घने वृक्षों से घिरा यह बाग दर्शनीय है.

कुकरैल

मूसा बाग की तरह यह भी एक अच्छा पिकनिक स्थल है. शहर से बाहर होने के कारण यहां का शांत वातावरण पर्यटकों को आकर्षित करता है. यहां मगरमच्छों की प्रजातियां विकसित की जाती हैं. कुकरैल की तरह दिलकुशां बाग तथा राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान का बाग भी दर्शनीय है.

ला मार्टीनियर

नवाब आसिफुद्दौला के शासनकाल में एक फ्रांसीसी शिल्पकार क्लाड मार्टिन ने इस इमारत को स्वयं रहने के लिए बनवाया था. यह भवन 1795 में बन कर तैयार हुआ. कई सीढ़ियों के ऊपर बने इस भारीभरकम भवन में मार्टिन के नाम पर ही 1840 में एक स्कूल खोला गया. फ्रांसीसी शैली में बना स्कूल का भवन देखने योग्य है.

विधान भवन

ब्रिटिश शासनकाल में

नऊ को अवध की राजधानी
जाने पर हरफोर्ट बटलर और
साहब महमूदाबाद के सहयोग
922 में विधान भवन का निर्माण
हुआ. 6 साल में बनी इस विशाल
खूबसूरत इमारत के निर्माण में
लाख रुपए खर्च हुए. चारबाग
न से मुख्य बाजार हजरतगंज
वक्त भी इसे देखा जा सकता

टन कार्यालय

● भारत सरकार का पर्यटक
लय, जनपथ, लखनऊ.

● पर्यटन निदेशालय, नवल
र रोड, हजरतगंज, लखनऊ.
: 211319.

● क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी,
प्रू मार्ग, लखनऊ. फोन :
05.

● पर्यटक स्वागत केंद्र, रेलवे
न, चारबाग, लखनऊ.

आरक्षण वायु सेवा :

इंडियन एअरलाइंस

होटल क्लार्क्स अवध, फोन : 224030, 228081; अमौसी हवाई अड्डा, फोन : 436132, 436352; प्री रिकार्डेड : 220926, 224433.

एअर इंडिया

होटल क्लार्क्स अवध, फोन : 226171.

वायुदूत

आरक्षण : 215409; 225407.

उड़ान संबंधी जानकारी

एअरपोर्ट : 450792

● **एसटीडी कोड : 0522**

–सुनील पावगी

इलाहाबाद

लाहाबाद का प्राचीन नाम प्रयाग
जो तीर्थराज कहा जाता है.
6 तथा 12 वर्ष पर अर्द्धकुंभ
भ मेला लगता है. इस नगर
राजनीतिक, साहित्यिक,
तिक महत्त्व भी है. पर्यटन की
से विकास की अभी अनंत
नाएं हैं. जैसे प्राचीन स्थानों का
करण, नवनिर्माण, यमुना के
र चौपाटी जैसा निर्माण (जिस
हत्त्वाकांक्षा अमिताभ बच्चन ले
आए, जब वे सांसद बने).
दिसंबर 1997 में सरस्वती घाट
नेहान घाट पर साहसिक जल
के लिए राज्यपाल ने 'बोट
जलक्रीड़ा संकुल का उद्घाटन
है.

इलाहाबाद की भौगोलिक
पुराणकाल, मुगलकाल और
काल में बदलती रही है. सन
1801 में ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन होने पर वर्तमान नाम पड़ा और वर्तमान स्वरूप ने आकार लेना शुरू किया.

राजनीति की दृष्टि से भी इलाहाबाद का महत्त्व है. इस कारण भी पर्यटक यहां आने को आकर्षित होते हैं. राष्ट्रीय नवजागरण का उदय इलाहाबाद की भूमि पर हुआ. स्वाधीनता के गांधी युग में यह नगर प्रेरणा केंद्र था. राष्ट्रीय कांग्रेस के संगठन और उन्नयन में भी इस नगर का योगदान रहा है. महामना मालवीयजी और पं. मोतीलाल नेहरू के नाम को भुलाया नहीं जा सकता. जवाहरलाल नेहरू, पुरुषोत्तम दास टंडन आदि यहीं की देन हैं. सन 1857 के गदर में इस नगर का बड़ा योगदान रहा. यह नगर क्रांतिकारियों का केंद्र रहा. चंद्रशेखर आजाद, बाल पद्मधर सिंह आदि के स्मारकों पर लोग पहुंच जाते हैं.

इलाहाबाद 15 किलोमीटर लंबाई और इतनी ही चौड़ाई के क्षेत्रफल में है. यहां गर्मी और जाड़ा दोनों कठोर पड़ते हैं. पर्यटन के लिहाज से अक्तूबर से अप्रैल की अवधि ठीक रहती है. संगम और अन्य धार्मिक स्थलियों–मंदिरों में पंडेपुजारियों की ठगविद्या का शिकार होने से सतर्क रहना चाहिए.

दर्शनीय स्थल

आनंद भवन, स्वराज भवन

आनंद भवन पंडित जवाहर लाल नेहरू का पैतृक घर था. उन की स्मृतियों की धरोहर यहां सुरक्षित है. नजदीक ही स्वराज भवन है जो उन्होंने कांग्रेस पार्टी को दे दिया था. आनंद भवन में ही तारामंडल है. स्वराज भवन में नेहरू के जीवन की झांकी चित्रों में प्रदर्शित है.

मंदिर

आनंद भवन के समीप ही भारद्वाज आश्रम है. वर्तमान में यहां



मुना, सरस्वती तीनों नदियों
न स्थल 'संगम' पर नौका
या जा सकता है.

स्मृति के रूप में एक मंदिर है. दारागंज का नाग वासुकी, सिविल लाइंस व रामबाग के हनुमान मंदिर, संगम बांध पर लेटे हनुमान मंदिर, स्टैंची रोड पर राममंदिर, अलोपी मंदिर, कल्याणी देवी, ललिता मंदिर, शिवकुटी, शंकर मंडप (बांध पर) प्रसिद्ध हैं.

विश्वविद्यालय

आनंद भवन के पास ही इलाहाबाद विश्वविद्यालय है. यह 1887 में बना था. 1921 में इसे आवासीय विश्वविद्यालय का रूप दिया गया. इस के इतिहास विभाग में ऐतिहासिक वस्तुओं का संग्रहालय देखा जा सकता है.

संग्रहालय

कमला नेहरू मार्ग पर आजाद पार्क परिसर में प्रयाग संग्रहालय है. यहां 13वीं शताब्दी की अनेक दुर्लभ वस्तुएं उपलब्ध हैं. यहां पुरानी मूर्तियों की प्रतिकृतियां बना कर बेची जाती हैं तथा उन्हें बनाने का प्रशिक्षण भी दिया जाता है.

कौशांबी

यह 48 किलोमीटर दूर कभी बौद्ध केंद्र था. यहां 5वीं शती के स्तूप और भिक्षुगृह हैं. वासवदत्ता के प्रेमी उदयन की यह राजधानी थी. यहां की खुदाई से महाभारत काल की ऐतिहासिकता का भी पता लगता है.

संगम और किला

गंगा, यमुना, सरस्वती तीनों नदियों का मिलन स्थल है संगम. यह रेलवे स्टेशन से 8 किलोमीटर दूर है. लोग यहां वर्ष भर स्नान करने आते रहते हैं. यहां नजदीक ही अकबर का किला है. इस में 3 खूबसूरत दरवाजे हैं. अशोक स्तंभ, जोधाबाई महल व अक्षय वट यहां देखे जा सकते हैं. अकबर का किला अनुमति पत्र ले कर देखा जा सकता है.

खुसरो बाग

यह एक ऐतिहासिक स्मारक है. यहां बाग में जहांगीर के पुत्र खुसरो, उस की मां और बहन की कब्र है. खुसरो को उस के पिता जहांगीर ने मार डाला था. यहां लोग व्यायाम और सैरसपाटे के लिए आते हैं. यहां इलाहाबाद के प्रसिद्ध मीठे अमरूद, सफेदा की नर्सरी भी है, जिन्हें लोग खूब ले जाते हैं.

लक्षागिरी

इलाहाबाद से 39 किलोमीटर

इलाहाबाद कैसे जाएं?

वायु मार्ग

इलाहाबाद नागरिक वायुसेवा के मानचित्र पर नहीं है. हवाई जहाज से लखनऊ, कानपुर, वाराणसी पहुंच कर रेल या सडक मार्ग से आ सकते हैं.

रेल मार्ग

इलाहाबाद उत्तर रेलवे का प्रमुख जंक्शन है. यह दिल्ली हावड़ा की मुख्य लाइन पर है. मुंबई की रेलें इलाहाबाद हो कर जाती हैं. भारत के सभी प्रमुख नगरों से यह रेल मार्ग से जुड़ा हुआ है.

प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	गाड़ी संख्या व नाम	प्रस्थान	आगमन
नई दिल्ली	2302 कलकत्ता राजधानी एक्सप्रेस	17.15	00.22
	2418 नई दिल्लीइलाहाबाद प्रयागराज एक्सप्रेस	21.23	06.50
	2382 नई दिल्लीहावड़ा पूर्वा एक्सप्रेस	16.30	01.40
	2802 नईदिल्लीपुरी पुरुषोत्तम एक्सप्रेस	22.35	07.25
	5622 नईदिल्लीगुवाहाटी एक्सप्रेस	23.40	08.55
कालका	2312 कालकाहावड़ा मेल	23.30	17.25
श्रीगंगानगर	3008 उद्यानआभा तूफान एक्सप्रेस	22.20	
पठानकोट	8102 पठानकोट टाटा/हटिया एक्सप्रेस	16.45	15.40
अंबाला	4518 अंबालाइलाहाबाद ऊंचाहार एक्सप्रेस	17.30	11.15
मेरठ	4164 मेरठसिटीइलाहाबाद संगम एक्सप्रेस	12.35	08.00
गुवाहाटी	5621 एन. ई. एक्सप्रेस	04.30	06.45

सड़क मार्ग

सड़क मार्ग से इलाहाबाद देश के सभी प्रमुख नगरों से जुड़ा हुआ है जैसे दिल्ली, कलकत्ता, मुंबई, अहमदाबाद, चेन्नई, भोपाल, जयपुर, पटना, आगरा, झांसी, लखनऊ, कानपुर, वाराणसी आदि

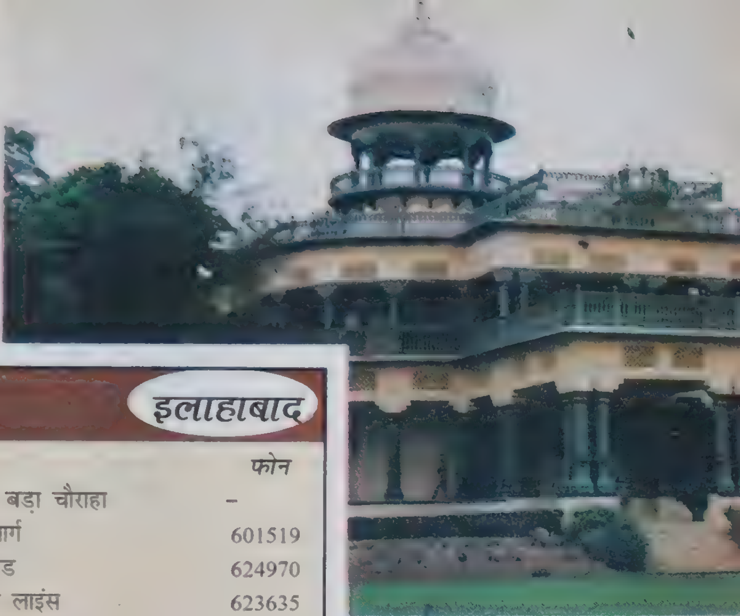
प्रमुख नगरों से दूरी

आगरा – 433 किलोमीटर
मुंबई – 1,444 किलोमीटर
चंडीगढ़ – 892 किलोमीटर
अहमदाबाद – 1,207 किलोमीटर
कलकत्ता – 799 किलोमीटर
जयपुर – 673 किलोमीटर

हंडिया रेलवे स्टेशन के पास 951 की खुदाई से लक्षागिरी की चीनता का पता चला है कि हाभारतकाल का लाक्ष्यागृह यहीं . अब यहां जैन व हिंदू मंदिर हैं.

सी

प्रतिष्ठानपुर या झूंसी संगम पार चंद्रवंशीय राजाओं की राजधानी थी. अत्यंत प्राचीन मंदिरों के अलावा वर्तमान में यहां अनेक साधुसंतों के आश्रम हैं. राजा पुरूरवा यहीं के राजा थे. मनु की पुत्री इला ने इसे बसाया था.



आनंद भवन में पंडित जवाहरलाल नेहरू की स्मृतियों की धरोहर सुरक्षित है.

कहां ठहरें? इलाहाबाद

होटल	पता	फोन
कान्हा श्याम	सिविल लाइंस बड़ा चौराहा	–
लाहाबाद रीजेंसी	16 ताशकंद मार्ग	601519
कल्पतरु	76-ए म्योर रोड	624970
प्सो	13/27 सिविल लाइंस	623635
ाउसी	स्टैनली रोड	600187
सीडेंसी	19-डी सरोजनी नायडू रोड	623308
कनैरो	8 न्याय मार्ग	622452
ात्रिक	33 सरदार पटेल मार्ग	601713
ानसरोवर	चौक	652412
ौर्या	151ए, मिनहाजपुर	651916
मलन	46, लीडर रोड	400021
ायल	साउथ रोड	623285
श्रांत	121/27 म. गांधी मार्ग	624370
वलास	सिविल लाइंस	622878
म्राट	49-ए म. गांधी मार्ग	624960
र्ष	14 म. गांधी मार्ग	622197
लाब मेंशन	लीडर रोड	402522
न. सी.	108 लीडर रोड	401166
याग	रेलवे स्टेशन के पास	602729
शिष्ठ	जानसनगंज	400416

र्मशालाएं

रवाड़ी धर्मशाला	क्रास्टवेट रोड	**हलवाई धर्मशाला**	मीरगंज जीरो रोड
ष्णा धर्मशाला	मुट्ठीगंज	**जैन धर्मशाला**	मीरगंज जीरो रोड
गढ़ धर्मशाला	बैरहाना	**चीनी धर्मशाला**	मीरगंज जीरो रोड

रकारी आवास

ई. एम. सी. ए. होस्टल	सरोजनी नायडू मार्ग	624028
रेस्ट बंगला	सिविल लाइंस	601440
ई. डब्ल्यू. सी. ए. होस्टल	कमला नेहरू मार्ग	

खानपान व खरीदारी

इलाहाबाद में आधुनिक बाजार क्षेत्र सिविल लाइंस है, जहां आधुनिक ानें और होटल, रेस्तरां हैं. अन्य बाजार क्षेत्र चौक-लोकनाथ, बहादुरगंज, ग, दारागंज आदि में हैं. खरीदारी के लिए एकमात्र प्रसिद्ध हैं यहां के सफेदा रूद, जो जाड़ों में मिलते हैं, नवंबर से फरवरी तक. अमरूद खुसरो बाग लाजवाब होते हैं.

भीटा

भीटा या सहजात (24 किलोमीटर दूर) 1910 में खुदाई से पुरातत्त्व मानचित्र पर आया. मौर्यकाल से गुप्तकाल तक के ध्वंसावशेष यहां मिले हैं. प्राचीन मंदिरों के अलावा 15वीं शती के वल्लभाचार्य की गद्दी यहां है.

खैरागढ़

खैरागढ़ मेजारोड स्टेशन से 41 किलोमीटर दूर एक गढ़ है, जो पुरातत्त्व विभाग के अधीन है. इस का कुछ भाग टोंस नदी में समा गया है.

तापमान

यहां का अधिकतम तापमान 32 डिगरी सेंटीग्रेड और न्यूनतम 16 डिगरी सेंटीग्रेड रहता है.

● ***एसटीडी कोड : 0532***

–संत कुमार टंडन 'रसिक'

वाराणसी

धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से परंपरा और आधुनिकता के मध्य समन्वय स्थापित करने की विशिष्टता से परिपूर्ण वाराणसी कुछेक ऐसे पर्यटन केंद्रों के रूप में विख्यात है, जिस की विशिष्टताएं देखी जाने के साथ ही साथ महसूस की जा सकती हैं. गंगा के पश्चिमी तट पर अर्धचंद्राकार आकार में बसे इस शहर को नाव से निहारना अपूर्व सुखदायक होता है. लगभग 2,500 वर्ष प्राचीन इतिहास को अपने में समेटे इस शहर के बारे में कहने को तो बहुत कुछ है लेकिन समय की मार से सारनाथ के बौद्ध अवशेषों को छोड़ कर अन्य कुछ भी नहीं बच पाया है. गंगा के घाट, मंदिर, स्मृति चिह्न और हस्तनिर्मित कलात्मक वस्तुएं प्रसिद्ध हैं. विदेशी पर्यटकों की भारी भीड़ के चलते पर्यटन व्यवसाय में जालसाजी की प्रवृत्ति भी बढ़ी है.

दर्शनीय स्थल

काशी हिंदू विश्वविद्यालय

2,000 एकड़ में फैला यह एशिया का सब से बड़ा आवासीय विश्वविद्यालय है. इसी विश्वविद्यालय के परिसर में बिड़ला द्वारा निर्मित संगमरमर का विशाल विश्वनाथ मंदिर भी है. इसी विश्वविद्यालय में स्थित सुंदरलाल चिकित्सालय चिकित्सा की आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है.

भारत कला भवन

काशी हिंदू विश्वविद्यालय में ही भारत कला भवन नामक संग्रहालय भी है जिस में बहुमूल्य एवं ऐतिहासिक महत्त्व की कलात्मक मूर्तियां, चित्र एवं अभिलेखों का संग्रह है. गर्मियों में सुबह 8 बजे से 2 बजे तक तथा सर्दियों में प्रातः 9 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक यह खुला रहता है.

रामनगर दुर्ग

काशी हिंदू विश्वविद्यालय से 2 किलोमीटर गंगा नदी के पार स्थित यह किला पूर्व काशी नरेश का पैतृक निवास है. इसी किले के एक हिस्से में एक संग्रहालय है जिस में तत्कालीन राजसी वैभव के विविध पक्षों का दर्शन होता है. रामनगर पड़ाव मार्ग के दाहिनी ओर एक भव्य दुर्गा मंदिर है जिस में पत्थरों पर बहुत ही सुंदर मूर्तियां और बारीक नक्काशी बनाई गई है.

वाराणसी के घाट

गंगा के तटवर्ती क्षेत्र में बने हुए घाटों का सौंदर्य सुबह के समय अपनी अलग ही छटा बिखेरता है. अपने भ्रमण के दौरान एक दिन सूर्योदय के एक घंटा पूर्व ही दशाश्वमेध या राजेंद्र प्रसाद घाट से नौका ले कर नौका विहार अवश्य

वाराणसी का दशाश्वमेध घाट बहुत मशहूर है.



रें. नौका चालकों से किराया पहले तय कर लेना श्रेयस्कर होगा.

ाशी विश्वनाथ मंदिर

मुगल आक्रमणों के शिकार मंदिर के वर्तमान स्वरूप का र्माण सन 1717 ई. में महारानी हिल्याबाई होल्कर ने कराया था. ाब के महाराजा रणजीत सिंह ने .5 मीटर ऊंचे इस मंदिर के शिखर सन 1889 ई. में 820 किलोग्राम स्वर्णपत्रों से मंडित करवाया था. मान समय में सुरक्षा की दृष्टि से मंदिर के सभी मार्गों पर तुखोजी यंत्रों से तलाशी ली जाती अतः अपने साथ कोई झोला या मान न ही ले जाएं तो अच्छा है.

ानवापी मस्जिद

प्राचीन विश्वेश्वर मंदिर को स्त कर मुगल शासक औरंगजेब इस मस्जिद का निर्माण कराया था. मस्जिद की पश्चिमी दीवार पर ज भी प्राचीन मंदिर के अवशेष ष्ट दिखाई देते हैं जो प्राचीन ल्पकला का उत्कृष्ट उदाहरण हैं. ोध्या विवाद के बाद इस मस्जिद चारों ओर रातदिन सुरक्षा के ूतपूर्व प्रबंध किए गए हैं जिस के रण पर्यटकों को काफी असुविधा नी पड़ती है.

रत माता मंदिर

वाराणसी रेलवे स्टेशन से 1 किलोमीटर की दूरी पर त्मा गांधी काशी विद्यापीठ में त माता मंदिर है जिसे बाबू प्रसाद गुप्त ने बनवाया था. इस में संगमरमर के पत्थरों को ा कर अविभाजित भारत का यामी मानचित्र बनाया गया है में पर्वतों, मैदानी क्षेत्रों और ों को उन की ऊंचाई एवं गहराई नुपात में प्रदर्शित किया गया है.

ली मंदिर

ललिता घाट पर महाराज ा का बनवाया हुआ सुप्रसिद्ध ी मंदिर है. इस को 'काठवाला ' भी कहते हैं. इस की अद्वितीय कला देखने के लिए विश्व के

वाराणसी
कैसे जाएं?

वायु मार्ग

यहां जाने के लिए देश के विभिन्न भागों से इंडियन एअरलाइंस, सहारा इंडिया एअरलाइंस और मोदीलुफ्त एअरलाइंस की सीधी सेवाएं उपलब्ध हैं. यहां का हवाई अड्डा वाराणसी शहर से 22 कि.मी. पर स्थित बाबतपुर हवाई अड्डा है.

प्रमुख उड़ानें

कहां से	उड़ान संख्या	दिन	प्रस्थान	आगमन	किराया
इंडियन एअरलाइंस					
आगरा	सीडी 407	1,2,4,6	15.30	17.20	2,805 रु.
	सीडी 407	3,5,7	11.05	12.55	2,805 रु.
दिल्ली	सीडी 407	3,5,7	10.00	12.55	3,315 रु.
	सीडी 497	1,2,4,6	10.30	12.25	4,260 रु.
खजुराहो	सीडी 407	3,5,7	12.15	12.55	1,975 रु.
	सीडी 497	1,2,4,6	11.55	12.35	1,975 रु.
मुंबई	आईसी 695	2,4,6	10.50	13.00	6,325 रु.
काठमांडू	आईसी 751	प्रतिदिन	14.50	15.30	2,104 रु.
सहारा इंडिया एअरलाइंस					
मुंबई	एस 2907	2,4,6,7	18.00	21.25	6,325 रु.
दिल्ली	एस 2521	प्रतिदिन	14.40	15.55	3,315 रु.
लखनऊ	एस 2907	2,4,6,7	17.55	18.40	1,710 रु.

रेल मार्ग

वाराणसी भारत के छोटेबड़े नगरों से उत्तर तथा पूर्वी रेलवे से जुड़ा हुआ है. यहां का मुख्य रेलवे स्टेशन वाराणसी कैंट है और सहायक रेलवे स्टेशन मुगलसराय (दीनदयाल नगर) है जो पूर्वी रेलवे से जुड़ा है.

प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	गाड़ी की संख्या व नाम	प्रस्थान	आगमन
नई दिल्ली	2310 राजधानी एक्सप्रेस	17.00	03.50
	8476 नीलांचल एक्सप्रेस	06.35	19.50
	2402 श्रमजीवी एक्सप्रेस	13.20	02.35
	4258 काशीविश्वनाथ एक्सप्रेस	12.30	05.05
मुंबई (सेंट्रल)	1093 महानगरी एक्सप्रेस	23.55	04.00
	1065 रत्नागिरी एक्सप्रेस	05.20	16.00
हावड़ा	3151 जम्मूतवी एक्सप्रेस	11.45	02.00
	3073 हिमगिरी एक्सप्रेस	23.00	14.35
चेन्नई	6039 गंगाकावेरी एक्सप्रेस	17.30	08.00
अहमदाबाद	9165 साबरमती एक्सप्रेस	20.05	13.30

उपरोक्त सभी ट्रेनें वाराणसी कैंट रेलवे स्टेशन के लिए हैं. मुगलसराय रेलवे स्टेशन के लिए नजदीकी रेलवे स्टेशन से संपर्क करें.

सड़क मार्ग

यह नगर राष्ट्रीय राजपथ संख्या 27 तथा 29 पर स्थित है तथा देश के विभिन्न भागों से जुड़ा हुआ है.

प्रमुख नगरों से दूरी

कलकत्ता–677 किलोमीटर	दिल्ली–765 किलोमीटर
इलाहाबाद–122 किलोमीटर	लखनऊ–286 किलोमीटर
पटना–246 किलोमीटर	आगरा–565 किलोमीटर
जयपुर–795 किलोमीटर	गोरखपुर–225 किलोमीटर
बोधगया–234 किलोमीटर	जौनपुर–58 किलोमीटर

क्या खरीदें?

यहां की बनारसी साड़ी अपनी उत्कृष्ट बुनाई, जरी और रेशम की गुणवत्ता के लिए विश्वप्रसिद्ध है. हर भारतीय नारी चाहे वह विदेश में ही क्यों न हो विवाह और मांगलिक कार्यों में बनारसी साड़ी अवश्य पहनती है. बनारसी साड़ियां मंडी चौक के निकट कुंज गली में तथा मदनपुरा में मिलती हैं. साड़ियों की खरीदारी के दौरान उस की क्वालिटी की परख और कीमतों का सही अनुमान अवश्य रखें. इस के अतिरिक्त हैंडलूम के वस्त्र, चंदन की मूर्तियां, पीतल तथा तांबे के बर्तन, लकड़ी के खिलौने आदि भी खरीदे जा सकते हैं. कालीनों का भी यह एक प्रमुख बाजार है. यहां के कालीन बाहर के अनेक देशों को निर्यात किए जाते हैं.

कब जाएं?

वाराणसी जाने के लिए सितंबर से मार्च तक का समय अति उत्तम है. इस के अलावा गर्मियों में यहां भीषण गर्मी और ठंड के मौसम में खूब सर्दी पड़ती है. बरसात के मौसम में बिलकुल न जाएं. सर्दी के मौसम में गर्म ऊनी कपड़े ले जाना न भूलें.

हरेक कोने से सहस्त्रों पर्यटक आते हैं. भारत में ऐसा दूसरा मंदिर नहीं है. नेपाल नरेश ने इसे नेपाली शिल्पियों द्वारा ही बनवाया था. इस में लगा हुआ काष्ठ नेपाल में पैदा होने वाला एक खास किस्म का काष्ठ है, जिस में कीड़े वगैरह नहीं लगते.

जयसिंह वेधशाला

राजेंद्र प्रसाद घाट से ऊपर की ओर आने पर तथा रेलवे स्टेशन से 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित जयसिंह वेधशाला का निर्माण महाराजा सवाई जयसिंह के द्वारा सन 1600 ई. में हुआ. इस वेधशाला में दिगश यत्रम, चक्रम यंत्र, नाड़ी वलय, इत्यादि यंत्र हैं, जिस से ग्रह, नक्षत्रों के क्रियाकलापों की जानकारी प्राप्त की जाती थी. इस तरह की वेधशालाएं वाराणसी के अतिरिक्त दिल्ली, जयपुर, मथुरा व उज्जैन में स्थित हैं.

अन्य दर्शनीय स्थल

मिर्जापुर जनपद, वाराणसी से 45 किलोमीटर दक्षिण में बाबू देवकी नंदन खत्री के उपन्यास 'चंद्रकांता' में वर्णित चुनारगढ़ स्थित है जो प्राचीन स्थापत्य कला, चीनी मिट्टी तथा पीतल के बर्तनों के लिए प्रसिद्ध है. वाराणसी से 70 किलोमीटर दूरी पर राजदरी एवं देवदरी प्रपात भी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र हैं.

सावधानियां

वाराणसी पर्यटन के दौरान निम्न सावधानियों पर अवश्य अमल करें:

- घाटों और मंदिरों के आसपास पंडेपुजारियों के चक्कर में न पड़ें.
- रिकशे तथा आटोरिकशे वालों से कहीं जाने से पहले किराया तय कर लें. यहां टैक्सी तथा आटो रिकशे में मीटर पद्धति नहीं है. बेहतर होगा कि किसी नागरिक से अपने गंतव्य की दिशा तथा वहां का अनुमानित किराए का अंदाज ले लें.
- साड़ियों तथा हैंडीक्राफ्ट की वस्तुओं में दलाली की प्रथा है. इसलिए खरीदारी के पहले किसी दलाल के चक्कर में न पड़ें.
- मंदिरों में दर्शन के दौरान आभूषणों या बटुए की छीनाझपटी आम बात है. अत: ढीलेढाले जेवर तथा बड़े नोट अपने होटल के कमरे में ही रख कर जाएं.



गंगाघाट पर पंडेपुजारी अकसर पर्यटकों को ठग लेते हैं

विश्वनाथ मंदिर तथा ज्ञानवापी ...द परिसर में झोला, डलिया अन्य सामान अथवा लाइसेंसी ...यार ले कर न जाएं. सुरक्षा के प्रबंधों के कारण असुविधा होगी.

...क्टेड टूर

उत्तर प्रदेश राज्य परिवहन ...म तथा प्राइवेट ट्रेवल एजेंसियों होटलों द्वारा वाराणसी दर्शन के ...ए टूरिस्ट कोच उपलब्ध हैं. एक के अंतर्गत गंगा घाटों का भ्रमण, ...रों का दर्शन तथा काशी हिंदू ...वविद्यालय का भ्रमण कराया ...ता है और एक अन्य टूर में ...नाथ तथा रामनगर किले का ...ण शामिल है. रेलवे स्टेशन के ...मने परेड कोठी से बसें मिलती

...पमान

यहां का तापमान गर्मियों में ...धकतम 46 डिग्री सेंटीग्रेड, ...तम 32 डिग्री सेंटीग्रेड, सर्दियों अधिकतम 25 डिग्री सेंटीग्रेड न्यूनतम 5 डिग्री सेंटीग्रेड रहता

...वा केंद्र

वाराणसी पर्यटन के दौरान ...ी भी प्रकार की असुविधा या ...नी हो तो निम्न सूचना केंद्रों से ...यता प्राप्त की जा सकती है:

1. उ. प्र. पर्यटक विश्रामगृह, कोठी, कैंट, वाराणसी. फोन : ...018

2. उ. प्र. पर्यटक विश्रामगृह, ...थ, वाराणसी. फोन : 348515

3. पर्यटक सूचना केंद्र, कैंट स्टेशन, वाराणसी.

4. बिहार राज्य पर्यटक ...लय, कैंट, वाराणसी. फोन : ...21

5. भारत सरकार पर्यटक ... केंद्र, दी माल कैंटोनमेंट, ...सी. फोन : 343744.

...एसटीडी कोड : 0542

–अजय मिश्रा

कहां ठहरें? वाराणसी

होटल	पता	फोन नं.
हिंदुस्तान इंटरनेशनल	मलदहिया	351484-90
ताज गैंजेज	नदेशर पैलेस, नदेशर	345100-118
द क्लार्क वाराणसी	द माल, कैंटोनमेंट	348501-10
वाराणसी अशोक	द माल, कैंटोनमेंट	46020-32
आइडियल टाप्स	द माल, कैंटोनमेंट	348091-92
द पेरिस	द माल, कैंटोनमेंट	46601-08
डायमंड	भेलूपुर	310696-700
अशोक	काशी विद्यापीठ रोड, सिगरा	350058, 350358, 350392
टेंपल आन गैंजेज	अस्सी घाट	312340
गैंजेज व्यू	अस्सी घाट	313218
पल्लवी इंटरनेशनल	हथुआ मार्केट, लहुराबीर	356939-42
अजय	रामकटोरा	344763, 43707
दिवान	परेड कोठी, कैंट	343856
नर इंद्रा	कैंट	342017
मानसरोवर	कैंट	343546
लारा इंडिया	दशाश्वमेध घाट रोड	320323, 320327
पर्यटक आवास गृह	सारनाथ	342515
पर्यटक आवास गृह (उ.प्र. सरकार)	परेड कोठी, कैंट	342018
पर्यटक आवास गृह	कैंटोनमेंट	342182, 344545
धर्मशालाएं		
दिगंबर जैन धर्मशाला	सारनाथ	385595
बिड़ला धर्मशाला	सारनाथ	385595

खानेपीने के प्रमुख स्थल

रेस्तरां	पता	फोन	व्यंजन
ला बेला रेस्तरां	लंका	310970	चाइनीज, इंडियन
आम्रपाली रेस्तरां	सोनारपुरा		साउथ व इंडियन
मोंगा रेस्तरां	दशाश्वमेध रोड	321043	चाट व चाइनीज
बावला रेस्तरां	गोदौलिया	327864	इंडियन, चाइनीज
अरोमा रेस्तरां	गोदौलिया	320323	तंदूरी व इंटरनेशनल
एलचीको बार	गिरजाघर	323228, 323753	चाइनीज
शाही रेस्तरां	रथयात्रा	351069	साउथ इंडियन
केरला कैफे	भेलूपुरा	312105	साउथ इंडियन
काफी हाउस	भेलूपुरा	323890	साउथ इंडियन
सिंधी रेस्तरां	भेलूपुरा	-	साउथ इंडियन
बसंत बिहार रेस्तरां	लहुराबीर	358634	मिठाई व साउथ इंडियन
रंगोली गार्डेन रेस्तरां	सारनाथ	385025, 331113	साउथ इंडियन व चाइनीज
बाबा ठंडाई घर	बांस फाटक		ठंडाई
बसंत बार	चेतगंज	358634	चाइनीज, मुगल

खजुराहो

विश्व प्रसिद्ध खजुराहो के मंदिर जहां रति क्रीड़ाओं में संलग्न मूर्तियों के लिए पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र हैं, वहीं आसपास के इलाके के झरने और घने वन भी उन्हें लुभाते हैं. चंदेला राजपूतों के काल के राजा चंद्रवर्मन के साथ कुछ कथाएं इसी क्षेत्र से जुड़ी हैं. हालांकि बीच के समय में यह शानदार मंदिरों का समूह जनसामान्य की नजरों से ओझल रहा. किंतु वनों के अतिक्रमण के समय जब ये मंदिर जानकारी में आए तो पूरे विश्व के लिए कुतूहल व रोमांच का विषय बन गए. इस वर्ष खजुराहो मंदिरों के गौरवशाली एक हजार वर्ष पूरे होने के सिलसिले में भव्य समारोह आयोजित किया जा रहा है.

दर्शनीय स्थल

पश्चिमी समूह के मंदिर

कंदरिया महादेव

पश्चिमी समूह के कंदरिया महादेव का मंदिर विशाल व भव्य है. विशाल गर्भगृह पर बने इस मंदिर की भव्यता देख कर चंदेल काल के वैभव का परिचय मिलता है. मंदिर की बाहरी दीवारों पर रतिरत नायिकाओं का कई पुरुषों के साथ संभोगरत रहना व शाईल के साथ (एक प्रकार का घोड़ानुमा पौराणिक जानवर) महिलाओं की रतिक्रिया एक अलग संस्कृति व शैली का परिचय कराती है.

चौंसठ योगिनी

इस मंदिर में ग्रेनाइट से बना देवी काली की प्रतिमा है. इस में भी मूर्तियों पर तत्कालीन जीवन के विविध रूपों का चित्रण है

चित्रगुप्त मंदिर

हालांकि यह मंदिर कोणार्क की भांति सूर्य मंदिर तो नहीं है, किंतु देवता को समर्पित इस मंदिर में नृत्यरत नायिकाओं की मिथुनरत प्रतिमाएं हैं. यह मंदिर रथ पर बना हुआ है. इस में चित्रगुप्त की प्रतिमा भी है.

विश्वनाथ मंदिर, यंतगेश्वर मंदिर, लक्ष्मण मंदिर भी इसी प्रांगण में बने भव्य मंदिर हैं. इन सभी मंदिरों की बाहरी दीवारों पर नायिकाओं की विभिन्न स्थितियों में बनी मूर्तियां आश्चर्यजनक व रोमांचकारी हैं.

पूर्वी समूह के मंदिर

इस समूह में विशालतम जैन मंदिर हैं. इन में पार्श्वनाथ की प्रतिमाएं हैं. यहां जैन संग्रहालय भी है. घंटाल मंदिर व आदिनाथ मंदिर भी पूर्वी समूह में हैं.

दक्षिणी समूह के मंदिर

दक्षिण समूह के मंदिरों में

खजुराहो कैसे जाएं?

वायु मार्ग

खजुराहो व दिल्ली के मध्य में नियमित विमान सेवाएं हैं, आगरा व वाराणसी से भी नियमित उड़ानें हैं.

रेल मार्ग

खजुराहो हालांकि रेलमार्ग से सीधा नहीं जुड़ा है, किंतु झांसी (172 किलोमीटर), महोबा (61 किलोमीटर) व सतना से (117 किलोमीटर) है. कलकत्ता, मुंबई और वाराणसी से आने वाले पर्यटकों के लिए सतना उतरना ठीक रहेगा.

सड़क मार्ग

झांसी, सतना, सागर व भोपाल से खजुराहो के लिए प्रतिदिन बस सेवा उपलब्ध है.

कहां ठहरें? खजुराहो

खजुराहो में मध्यप्रदेश पर्यटन विकास निगम के अच्छे होटल उपलब्ध हैं.

होटल राज चंदेला, खजुराहो अशोक, ओबराय जैसे महंगे होटल हैं तो पर्यटन विभाग के झनकार, पायल, राहिल जैसे होटल भी हैं, जो मध्यम बजट के अच्छे होटल हैं. कम बजट में पर्यटक होटल सनसेट व्यू, लेकसाइड व्यू होटल आदि हैं.

यातायात

बस स्टैंड से आधा किलोमीटर की दूरी पर पश्चिमी समूह के मंदिर हैं. इन के आसपास ही अन्य मंदिरों तक जाने के लिए टैक्सी उपलब्ध हो जाती है. [illegible] सौ से [illegible] सौ रुपए ले कर ये टैक्सियां सभी मंदिरों में घुमाती हैं.



हो के मंदिर देखने के लिए विश्व
नेकोने से पर्यटक आते हैं.

व व चतुर्भुज मंदिर हैं. चतुर्भुज
में ब्रह्मा, विष्णु व शिव एक
मा में हैं. दूल्हादेव मंदिर में
भी संभोगरत युगल प्रतिमाएं हैं.

पर्यटन के लिए खजुराहो के पास ही रेंच फाल, पांडव फाल, बांधवगढ़ व नेशनल पार्क हैं.

● *एसटीडी कोड : 076861*

–अवध श्रीवास्तव

जबलपुर

राजाओं की राजधानी तथा
चीन काल में कलचुरी
की कर्मभूमि रहा जबलपुर
श के पांच महानगरों में एक
विद्युत मंडल के मुख्यालय,
च्च न्यायालय के कारण
क और कार्यपालिका क्षेत्रों
में यह नगर अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है, गौंड राजाओं तथा गौंडवाना की वीरांगना रानी दुर्गावती की कर्मस्थली होने के कारण इतिहास में भी जबलपुर को महत्त्व मिला है. प्राचीन शिलालेखों के आधार पर यह जानकारी मिलती है कि यहां नर्मदा तट पर जाबालि ऋषि ने अपना आश्रम स्थापित कर तपस्या आरंभ की थी. उन के ही नाम पर इस का नाम जाबालिपुरम पड़ा, जो बाद में जबलपुर हो गया.

जबल यानी पत्थरों का शहर होने के कारण भी इसे जबलपुर की संज्ञा दी गई है. इतिहासकारों के अनुसार चंद्रवंशी हैहय क्षत्रिय राजाओं ने नर्मदा क्षेत्र के इस भूभाग पर हजारों साल राज किया. पूर्व काल में यह क्षेत्र चेदिमंडल या डाहल क्षेत्र कहलाता था. कहते हैं कि कलचुरी नरेश कर्णदेव ने अपनी प्रिय हूण रानी के सम्मान में इस क्षेत्र का नाम जाबालिपत्तम रखा था, जो कालांतर में जबलपुर हो गया. एक शोधपत्र के अनुसार कलचुरी राजा जाजल्यदेव ने जबलपुर बसाया था.

1818 के आसपास ब्रिटिश सरकार ने इसे अपने आधिपत्य में ले लिया. वर्तमान में मध्यप्रदेश का प्रमुख नगर होने के साथसाथ जबलपुर एक पर्यटन स्थल के रूप में भी विख्यात है. संगमरमर की चट्टानों के बीच से कलकल करती बहती नर्मदा ने इसे विश्वविख्यात पर्यटन स्थल के रूप में मान्यता दी है. हजारों विदेशी पर्यटक हर साल इस संगमरमरी सौंदर्य का रसपान करने जबलपुर आते हैं.

दर्शनीय स्थल

भेड़ाघाट

जबलपुर से करीब 22 किलोमीटर की दूरी पर विश्वप्रसिद्ध भेड़ाघाट है. बड़ेबड़े संगमरमर के पहाड़ों के बीच से निकलने वाली नर्मदा की खूबसूरती का आनंद चांदनी रात में नौका विहार के साथ उठाया जा सकता है. लगभग 3 किलोमीटर की लंबाई में होने वाले नौका विहार के दौरान कहींकहीं नर्मदा की गहराई 700 से 900 फुट तक है. अगलबगल के पहाड़ों के बीच बहने वाली नर्मदा के एक स्थान को बंदरकूदनी कहा जाता है. कहते हैं कभी बंदर भी नर्मदा को एक छलांग में पार कर लेते थे, यहीं है भूलभुलैयां. नाव कहां जाएगी, यह कोई भी यात्री नहीं बता पाता.

धुआंधार जलप्रपात

भेड़ाघाट से ही 3 किलोमीटर दूरी पर धुआंधार जलप्रपात है, अत्यंत ऊंचाई से नर्मदा का पानी नीचे गिरने से लहरों से धुआं उठता दिखाई देता है. इसलिए इस का नाम धुआंधार जलप्रपात रखा गया है.

चौंसठ योगिनी

भेड़ाघाट से ही एक किलोमीटर दूरी पर चौंसठ योगिनी के प्राचीन मंदिर हैं, चौंसठ योगिनियों की भग्न मूर्तियां कलचुरी राजाओं के कार्यकाल की शिल्पकला के बेजोड़ नमूने हैं. इस चौंसठ योगिनी मंदिर का निर्माण कलचुरी राजा ने करवाया था.

शहीद स्मारक

शहर के बीचोबीच स्थित शहीद स्मारक शहीदों की याद में बनाया गया था. दोमंजिला गोल इमारत में जहां नीचे एक नाट्यगृह है वहीं अनुसंधान कक्ष और वाचनालय भी है. सन 1857 से ले कर 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन तक के स्वतंत्रता संग्राम का रोमांचकारी इतिहास वृत्त शांतिनिकेतन के कलाकारों की तूलिकाओं ने स्मारक की भित्तियों पर उकेरा है.

पिसनहारी की मढ़िया

जैन धर्मावलंबियों का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल पिसनहारी की मढ़िया शहर से तकरीबन 12 किलोमीटर की दूरी पर है. कहते हैं इस मंदिर को बनाने में एक बुढ़िया ने इतनी मेहनत की थी कि उसे कई साल चक्की पीसपीस कर इस मंदिर के लिए पैसा इकट्ठा करना पड़ा था. इसलिए इस का नाम पिसनहारी की मढ़िया पड़ा. इसी के बगल से विराट नंदीश्वरद्वीप मंदिर भी है.

मदन महल किला

गौंडवाना की अप्रतिम वीरांगना रानी दुर्गावती का मदन महल किला भी शिल्पकला का अद्भुत नमूना है. एक विशाल चट्टान पर

जबलपुर कैसे जाएं?

वायु मार्ग

जबलपुर में वर्तमान में वायुसेवा की व्यवस्था नहीं है. सब से पास का हवाई अड्डा नागपुर या भोपाल है. जहां से ट्रेन या बस द्वारा 7 घंटे में जबलपुर पहुंचा जा सकता है.

रेल मार्ग

रेल मार्ग की तमाम सुविधाएं जबलपुर में उपलब्ध हैं तथा यह देश के प्रमुख रेल मार्गों तथा कलकत्ता, दिल्ली, मुंबई, बनारस, लखनऊ, पटना, मद्रास, आगरा आदि से सीधा जुड़ा है.

प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	गाड़ी का नाम	प्रस्थान	आगमन
दिल्ली	1450 महाकौशल एक्सप्रेस	16.20	10.30
कलकत्ता	3003 हावड़ामुंबई मेल	20.00	17.15
मुंबई	3004 मुंबईहावड़ा मेल	21.10	13.50
भोपाल	8233 नर्मदा एक्सप्रेस	23.00	05.50
इंदौर	8233 नर्मदा एक्सप्रेस	15.00	05.50
लखनऊ	5010 चित्रकूट एक्सप्रेस	17.30	09.00
पटना	6044 पटनाचेन्नई एक्सप्रेस	14.45	02.25
वाराणसी	6040 वाराणसीमद्रास गंगाकावेरी	1[illegible].50	03.00

सड़क मार्ग

राज्य परिवहन निगम की बस सेवाएं ग्वालियर, इंदौर, भोपाल, नागपुर, दुर्ग, रायपुर, वाराणसी, इलाहाबाद के लिए सीधी हैं. इस के अलावा टैक्सियां भी उपलब्ध होती हैं.

प्रमुख नगरों से दूरी

मुंबई–1,128 किलोमीटर
शिमला–1,170 किलोमीटर
दिल्ली–802 किलोमीटर
लखनऊ–588 किलोमीटर
कन्याकुमारी–1,975 किलोमीटर
बंगलौर–1,301 किलोमीटर
अहमदाबाद–900 किलोमीटर
नागपुर–267 किलोमीटर
मैसूर–1,436 किलोमीटर
पटना–696 किलोमीटर
मद्रास–1,439 किलोमीटर
जयपुर–832 किलोमीटर
कलकत्ता–1,127 किलोमीटर
आगरा–602 किलोमीटर
भोपाल–329 किलोमीटर
चंडीगढ़–1,051 किलोमीटर
हैदराबाद–735 किलोमीटर
इलाहाबाद–351 किलोमीटर



ड़े संगमरमर के पहाड़ों के कारण घाट विश्व प्रसिद्ध है.

यत मदन महल किले का उपयोग टावर या निगीक्षण चौकी के में होता रहा होगा. 1100 ई. में गए इस मदन महल के किले मदन सिंह नामक गौंड राजा ने या था. इसे एक पर्यटन स्थल प में विकसित कर दिया गया

ताल उद्यान

नगर में बस स्टैंड के समीप निगम द्वारा संचालित भंवरताल एक लंबे भूभाग में फैला हुआ ां दुर्गावती की गजारूढ़ प्रतिमा त है.

टा घाट

नर्मदा नदी के किनारे बने क लम्हेटा घाट का भू क, धार्मिक तथा पौराणिक है. लम्हेटा क्षेत्र में ऐसे पत्थर ते हैं जिन में रचनागुण तत्त्व न हैं. इसलिए शोध छात्र यहां . लम्हेटा घाट शोध कार्यों की दृष्टि से तो अहम स्थान रखता ही है, साथ ही यह एक दर्शनीय स्थल के रूप में भी जाना जाता है. विशालकाय डायनासोरों के लिए भी यह स्थान जाना जाता है.

कहां ठहरें? — जबलपुर

होटल	स्थान	फोन	श्रेणी
समदड़िया	रसल चौक	316800	उत्तम
ऋषि रीजेंसी	सिविल लाइंस	323261	उत्तम
अशोका	राइट टाउन	22167	उत्तम
जेक्संस	सिविल लाइंस	322320	उत्तम
सूर्या	राइट टाउन	28114	मध्यम
एंबेसेडर	रसल चौक	21771	मध्यम
आनंद	नौदरा पुल	323918	मध्यम
रूपाली इन	इनकमटैक्स चौराहा	235566	मध्यम
सम्राट	रसल चौक	21668	मध्यम
चांदनी	राइट टाउन	27599	मध्यम

धर्मशालाएं

गोकुलदास धर्मशाला (नगर निगम द्वारा संचालित)	रेलवे स्टेशन के पास
भूरामल धर्मशाला	लार्डगंज
सिंधी धर्मशाला	घंटाघर
अग्रवाल धर्मशाला	सर्राफा बाजार
खरया धर्मशाला	सर्राफा बाजार

शक्ति भवन

मध्यप्रदेश विद्युत मंडल का मुख्यालय शक्ति भवन भी देखने लायक भवन है. पहाड़ियों को काट

खरीदारी के प्रमुख स्थल

जबलपुर में खरीदारी के लिए परंपरागत बाजार के रूप में जवाहरगंज बड़ा फुहारा हैं. वहीं आधुनिक बाजार के रूप में सदर, गोरखपुर के बाजार हैं.

बड़ा फुहारा (रेलवे स्टेशन से 5 किलोमीटर) पीपल वाला शाप, सौभाग्य साड़ी भंडार, जे.के. ऊन वाला, शीशमहल, रेमंड रिटेल शाप (कपड़े/साड़ियां) ***सदर बाजार*** (3 किलोमीटर) सभी वस्तुएं. ***नौदरा पुल*** (3 किलोमीटर) इलैक्ट्रानिक सामान, कपड़े, अन्य सामान की खरीदारी. ***गोरखपुरसंपतलाल एंड ब्रदर्स,*** दिग्जाम शो रूम (तमाम तरह की साड़ियां, कपड़े इत्यादि).

कर एकदम प्राकृतिक रूप दे कर बनाए गए शक्ति भवन की लागत सोलह करोड़ रुपए आई है. इसे म.प्र. का सब से खूबसूरत भवन होने का सम्मान भी प्राप्त है. यहां विद्युत मंडल का मुख्यालय है जो सारे प्रदेश को रोशनी देता है.

पैकेज टूर

मध्यप्रदेश पर्यटन निगम द्वारा जबलपुर से वर्तमान में कोई पैकेज टूर उपलब्ध नहीं है.

किसे देखें किसे छोड़ें

जबलपुर आने वाले पर्यटकों को भेड़ाघाट, धुआंधार, चौंसठ योगिनी, मदन महल का किला, शक्ति भवन, जैसे स्थल अवश्य देखने चाहिए. इस के अलावा शहीद स्मारक भी देखा जा सकता है. रानी दुर्गावती संग्रहालय, भंवरताल पार्क, लम्हेटा घाट जैसे पर्यटन स्थल समय उपलब्ध होने पर देखे जा सकते हैं

एक अनजान व्यक्ति के लिए जरूरी है कि वह किसी स्थानीय व्यक्ति को अपने साथ ले ले. किसी होटल में रुकने पर वे इस तरह की व्यवस्था कर सकते हैं. इस के अलावा रेलवे स्टेशन के पर्यटन सूचना केंद्र से भी संपर्क किया जा सकता है.

किरायाभाड़ा

जबलपुर में आटो रिकशा, साइकिल रिकशा, टैक्सियां, मिनी बसें यातायात के रूप में उपलब्ध हैं. आटो रिकशा मीटर न होने के कारण ज्यादा पैसा भी वसूल लेते हैं. इस से बेहतर है कि शहर में घूमने के लिए साइकिल रिकशा कर लिया जाए. वैसे भेड़ाघाट, धुआंधार के लिए टैंपो भी मिलते हैं जो बस स्टैंड से 5 रुपए में वहां पहुंचा देते हैं. शहर के परंपरागत बाजार फुहारा में सस्ती चीजें उपलब्ध हैं जबकि सदर तथा गोरखपुर में महंगी वस्तुएं मिलती हैं. किराया 5 से 7 किलोमीटर के लिए साइकिल रिकशा में 10 से 15 रुपए तथा आटो में 30 से 40 रुपए है. मिनी बस या टैंपो इसी के लिए 3 से 5 रुपए लेते हैं.

पर्यटन सूचना केंद्र

रेलवे स्टेशन फोन : 322111
होटल कलचुरी सिविल लाइन फोन : 321492

● *एसटीडी कोड : 0761*

–चैतन्य भट्ट

सांची

सांची सम्राट अशोककालीन बौद्ध स्तूपों व स्तंभों के लिए प्रसिद्ध है. यहां देशीविदेशी पर्यटक व बौद्ध तीर्थयात्री वर्षभर आते रहते हैं भोपाल व विदिशा के मध्य एक छोटी पहाड़ी पर स्थित सांची स्तूप सम्राट अशोक ने बनवाए थे. सम्राट अशोक उज्जैन के राज्यपाल रहे थे. उन्होंने विदिशा के एक व्यापारी की पुत्री देवी से विवाह किया, जिस से



सांची के प्राचीन स्तूपों को देखने के लिए वर्षभर पर्यटक आते रहते हैं.

महेंद्र व संघमित्रा उत्पन्न हुए, जिन्होंने बड़े हो कर दूरदूर तक बौद्ध धर्म का प्रचार किया था.

दर्शनीय स्थल

बड़ा स्तूप क्रमांक (1)

विशाल पत्थरों से बना भारत का यह प्राचीनतम स्तूप कहा जा सकता है. इस स्तूप के चारों ओर बने तोरण द्वार अद्भुत हैं. पत्थरों पर बौद्ध कथाओं का अंकन अन्य बौद्ध स्मारकों के मुकाबले में सर्वोत्तम माना जाता है. इस स्तूप के द्वारों पर युवा गौतम बुद्ध की आध्यात्मिक यात्रा की कहानियां अंकित हैं.

स्तूप क्रमांक 2 व 3

ये स्तूप भी बलुआ पत्थर के बने स्तूप क्रमांक 1 की ही प्रतिकृति हैं. इन के ऊपर की छतरी चिकने पत्थर की बनी है.

अशोक स्तंभ

इस बौद्ध स्तंभ का निर्माण ईसा पूर्व तीसरी सदी में हुआ था. यह बड़े स्तूप के दक्षिणी द्वार के पास है. आज यह जीर्णशीर्ण अवस्था में है.

बौद्ध विहार, पाकशाला एवं 5वीं शताब्दी का बना गुप्त मंदिर भी दर्शनीय है.

सतधारा

विश्वप्रसिद्ध स्तूपों के



क्त सांची से 10 किलोमीटर
री पर इन्हीं के समकालीन बौद्ध
अभी खोजे गए हैं. ये स्तूप सांची
हाड़ी पर उपलब्ध स्तूपों से कहीं
क आकर्षक हैं.

गिरी की गुफाएं

सांची से 10 किलोमीटर की
र सम्राट अशोक की ससुराल
ा नगरी है. यहां अशोककालीन
री की गुफाएं अत्यंत प्रसिद्ध
में वाराह अवतार की प्रतिमा
बलुआ पत्थर से बनाई गई
ा 20 गुफाएं हैं. इन में विभिन्न
एं अशोककालीन मूर्ति शिल्प
नदार उदाहरण हैं.

ोडोरस स्तंभ

उदयगिरी गुफाओं से 2
ीटर की दूरी पर हेलियोडोरस
र्शनीय है.

मंदिर

विदिशा नगरी में ही कोणार्क
मंदिर की शैली पर अभी
विजय मंदिर खुदाई में निकला
अब भारत का दूसरा प्रसिद्ध
ीन सूर्य मंदिर स्थापित हो
. इस मंदिर में सूर्य देवता की
रथ के बड़ेबड़े पहिए और
मंदिर की शैली में ही मंदिर
यौन क्रियाओं में रत युग्म
भी पर्यटकों को आकर्षित
.

ा संग्रहालय

ंग्रहालय में यक्ष की विशाल

सांची

कैसे जाएं?

वायु मार्ग

सांची भोपाल से मात्र 46 किलोमीटर दूर है. भोपाल तक हवाई जहाज से आने वाले पर्यटकों के लिए दिल्ली, मुंबई, इंदौर व ग्वालियर से इंडियन एअरलाइंस की नियमित उड़ानें उपलब्ध हैं.

रेल मार्ग

सांची, इटारसी, झांसी रेल मार्ग पर स्थित है. मध्य रेलवे की कई ट्रेनें यहां रुकती हैं. दिल्ली से पंजाब मेल, मुंबई से दादरअमृतसर एक्सप्रेस से यहां पहुंचा जा सकता है. पर बड़ी गाड़ियां विशेष अनुरोध पर ही रुकती हैं. वैसे यहां से 10 किलोमीटर दूर विदिशा स्टेशन पर उतरना अधिक सुविधाजनक है. विदिशा से हर 30 मिनट पर बस सेवा है और टैक्सियां भी उपलब्ध हैं.

सड़क मार्ग

भोपाल, इंदौर, ग्वालियर व सागर से सांची सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है. वैसे भोपाल व विदिशा से अच्छी बसें व टैक्सियां हरदम उपलब्ध रहती हैं.

कहां ठहरें? सांची

ट्रैवलर्स लाज

यह पर्यटन विकास निगम का भव्य होटल है. यहां 200 रुपए से 300 रुपए प्रतिदिन की दर से वातानुकूलित कमरे उपलब्ध हैं. स्वादिष्ठ भोजन के लिए यहां एक रेस्टोरेंट भी है.

कैफेटेरिया

म.प्र. पर्यटन विकास निगम का यह होटल भी पर्यटकों को ठहरने के लिए उत्तम स्थान है. इस में भी 200 रुपए प्रतिदिन की दर से कमरे उपलब्ध हैं एवं भोजन के लिए उत्तम रेस्टोरेंट है.

इन के अलावा सर्किट हाउस, रेस्ट हाउस, बौद्ध गेस्ट हाउस में भी ठहरने के लिए उत्तम व्यवस्था है एवं सरकारी अधिकारियों के लिए पी.डब्ल्यू.डी. का रेस्ट हाउस भी है.

प्रतिमाएं भी दर्शनीय हैं.

वट वृक्ष

विदिशा से लगभग 35 किलोमीटर की दूरी पर स्थित एशिया का सर्वाधिक विशाल वृक्ष है, जो कि लगभग आधा किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है. इस वटमाला के 108 तने जमीन पर पसरे हैं व इस के नीचे एक गांव जैसा बसा है.

किला

सांची की पहाड़ी से दक्षिण दिशा की ओर देखने पर एक भव्य किला दिखाई देता है जो कि सांची से करीब 25 किलोमीटर की दूरी पर स्थित रायसेन का किला है. इसे परमार राजाओं द्वारा बनाया गया था. रायसेन का यह भव्य किला भी दर्शनीय है.

–अवध श्रीवास्तव

पचमढ़ी

खिलखिलाते पहाड़, उदास खड़े पहाड़, चहकते झरने, चांदी बरसाते जलप्रपात अगर आप को देखना है तो पचमढ़ी जरूर जाएं. अनमने जंगलों के बीच शोर मचाते अद्भुत जलप्रपातों का नाम है, पचमढ़ी. यह एक ऐसा पर्वतीय स्थल है जो न अधिक महंगा है, न अधिक नखरे वाला.

दर्शनीय स्थल

जटाशंकर

बस स्टैंड से 1.5 किलोमीटर दूर जटाशंकर की गुफाएं प्रकृति की कारीगरी का अद्भुत नमूना हैं. यहां 2 चट्टानों के बीच कुंड के ऊपर उधर से लटकती चट्टान को देख कर कोई भी रोमांचित हुए बिना नहीं रहता. यहां अकसर फिल्मों की शूटिंग होती रहती है.

महादेव

30 फुट लंबी इस गुफा में शीतल जल लगातार रिसता रहता है. इस में पानी एक झरने के द्वारा अंदर आता है. बीच गुफा में पानी का एक कुंड है. गुफा के अंदर शिवलिंग स्थापित है जहां हर साल एक मेला लगता है. प्रति वर्ष 4-5 लाख यात्री शिवरात्रि के समय यहां आते हैं. सन 1857 में स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी तांत्या टोपे ने अपनी सेना का पुनर्गठन यहां पर किया था. इस के नजदीक ही गुप्त महादेव की संकरी गुफाएं हैं.

बी फाल

पचमढ़ी से 3 किलोमीटर दूर लगभग आधा किलोमीटर नीचे उतर कर आप खुद को एक मनोरम झरने के सामने खड़ा पाएंगे. इस झरने के नीचे खड़े होने पर ऐसा लगता है जैसे सफेद ठंडी पिघली चांदी लगातार बरस रही हो. 150 फुट ऊपर से गिरता झरना गरमी में तपते मन और तन को प्रसन्न कर देता है.

चौरागढ़ धूपगढ़

ये पचमढ़ी की 2 अलगअलग पहाड़ियां हैं जहां से सूर्यास्त व सूर्योदय के मनोहारी दृश्य देखे जाते हैं. चौरागढ़ पर प्राचीन शिव मंदिर भी दर्शनीय है. धूपगढ़ से सूर्योदय का दृश्य देख कर अद्भुत रोमांच होता है. धूपगढ़ की पहाड़ी पर रात में ठहरने की व्यवस्था है.

अन्य दर्शनीय स्थल

वैसे पचमढ़ी में देखने व घूमने को बहुत कुछ बिखरा पड़ा है. किंतु

पचमढ़ी कैसे जाएं?

वायु मार्ग

पचमढ़ी के लिए नजदीकी हवाई अड्डा भोपाल का ही है जो यहां से 210 किलोमीटर दूर है. भोपाल हवाई मार्ग के द्वारा दिल्ली, ग्वालियर, इंदौर व मुंबई से नियमित उड़ानों के माध्यम से जुड़ा है.

हवाई जहाज से भोपाल आ कर वहां से टैक्सी, कार या बस से पचमढ़ी पहुंचा जा सकता है.

रेल मार्ग

पचमढ़ी से 47 किलोमीटर दूर पिपरिया रेलवे स्टेशन मुंबईहावड़ा रेल मार्ग पर स्थित है. लगभग सभी गाड़ियां पिपरिया रेलवे स्टेशन पर रुकती हैं.

सड़क मार्ग

भोपाल से पचमढ़ी के लिए नियमित बसें चलती हैं. वैसे पचमढ़ी नागपुर, छिंदवाड़ा व जबलपुर से भी सड़क द्वारा जुड़ी है. पिपरिया से टैक्सी आसानी से मिल जाती है.

प्रमुख नगरों से दूरी

भोपाल–210 किलोमीटर	दिल्ली–700 किलोमीटर
उज्जैन–411 किलोमीटर	नागपुर–258 किलोमीटर
जबलपुर–225 किलोमीटर	मुंबई–630 किलोमीटर

कब जाएं?

पचमढ़ी घूमने के लिए अक्तूबर से जून माह तक का समय सर्वोत्तम है. पहाड़ों से घिरे रहने के कारण यहां का मौसम ठंडा रहता है. हलके ऊनी वस्त्र साथ ले जाना ठीक रहेगा.

क्या खरीदें?

पचमढ़ी में जूट की बनी चीजें व [illegible] के खूबसूरत खिलौने खरीदे जा सकते हैं. खरीदारी बस स्टैंड के आसपास की दुकानों से की जा सकती है.

का मैदानी नजारा देखना अपनेआप में एक अद्भुत अनुभव है. 100 वर्ष पुराने बने सरकारी रेस्ट हाउस की पहाड़ी से दूरदूर तक फैली सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला को देख कर ऐसा लगता है, जैसे पहाड़ों के अलावा और कोई दुनिया है ही नहीं. तामिया में रुकने के लिए अच्छे व सस्ते होटल हैं, लोक निर्माण विभाग व वन विभाग के विश्रामगृह हैं. पचमढ़ी से जीप व कार द्वारा तामिया आने की व्यवस्था है. प्राइवेट व सरकारी बसें भी चलती हैं.



बी फाल : 150 फुट ऊपर से गिरता झरना तपते मन को राहत देता है (बाएं).

तामिया रेस्ट हाउस में रुकने की अच्छी व्यवस्था है (नीचे).



डी खो, रीछगढ़, अप्सरा विहार, रोथी दीप, राजेंद्रगिरि, रजत प्रपात, मन कैथेलिक चर्च, लिटिल फाल, शेष रूप से उल्लेखनीय हैं.

यदि आप पचमढ़ी जा रहे हैं पचमढ़ी से मात्र 50 किलोमीटर 'तामिया' पर्वतीय स्थल जाना न लें.

ामिया

तामिया में जंगल व पहाड़ों ा सौंदर्य पचमढ़ी से कहीं अधिक खरा पड़ा है. यहां 'सनसेट प्वाइंट' डूबते सूर्य का सौंदर्य निहारने के लावा करीब 500 वर्ग किलोमीटर

कहां ठहरें? पचमढ़ी

ोटल	स्थान	फोन	श्रेणी
चमढ़ी	पटेल मार्ग	2170	मध्यम
ाकेत	पटेल मार्ग	2165	मध्यम
ारि श्रृंगार	पुलिस थाना के पास	2089	मध्यम
ाउंट व्यू	अरविंद मार्ग	2062	मध्यम
ुशहाल कुटीर	पटेल मार्ग	2136	साधारण
ल व्यू	बस स्टैंड	2136	साधारण
घदूत	बस स्टैंड	2060	साधारण
ल्पा	गांधीगंज	2060	साधारण

पाताल कोट

तामिया से 15 किलोमीटर दूर पाताल में बसी एक पूरी बस्ती पाताल कोट है. जमीन से 2 किलोमीटर नीचे बसे पाताल कोट के आदिवासियों के जनजीवन का नजारा करते समय यह लगता है, हमारी दुनिया से अलग भी एक दुनिया और है.

● *एसटीडी कोड : 07578*

–अवध श्रीवास्तव

पटना

बिहार की राजधानी पटना ने कई राजवंशों का उत्थान व पतन देखा है. गंगा और सोन के संगम पर बसा यह नगर कभी चाणक्य, नंद राजाओं, चंद्रगुप्त व अशोक की राजनीतिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र था.

प्राचीन समय में यह पाटलिपुत्र के नाम से जाना जाता था. कहा जाता है कि राजा प्रमक ने अपनी रानी पाटली के नाम पर इस शहर को बसाया था. चंद्रगुप्त ने इसे मगध प्रदेश की राजधानी के रूप में विकसित किया था.

बिहार की छवि के अनुरूप यह बेहद गंदा और अव्यवस्थित शहर है. गांधी मैदान और फ्रेजर रोड के अलावा अधिकांश हिस्सों में टूटी सड़कों को घेरे दुकानें और गलत ढंग से चलता ट्रैफिक दिखता है.

दर्शनीय स्थल

संजय गांधी जैविक उद्यान

यहां अनेक पशुपक्षी देखे जा सकते हैं. यहां पर्यटकों को अपनी ओर खींचने वाला जल उद्यान भी है.

पटना संग्रहालय

यह बिहार का सब से पुराना संग्रहालय है जिस की स्थापना 1917 में की गई थी. इस में करीब 57,000 पुरावशेष और कलाकृतियों का संग्रह है, जो एक लंबे इतिहास को अपने में समेटे हुए है. यहां करीब 22,000 प्राचीन सिक्के भी हैं. पटना सिटी के निकट दीदारगंज से प्राप्त यक्षिणी की मूर्ति पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र है.

गोलघर

पटना आने वाले पर्यटकों के बीच गोलघर पर चढ़ कर यहां का नजारा देखने की काफी उत्सुकता रहती है. 1770 में वारेन हेस्टिंग्स के आदेश के तहत इस की निर्माण योजना बनी थी और 1794 में इस का निर्माण शुरू हुआ. अंगरेजों ने इस में 2 फुट 7 इंच व्यास के छिद्र से अनाज डाला, जिस से पूरा गोलघर अनाज से भर गया. बाद में अनाज निकालने के लिए दरवाजा (भीतर की ओर खुलने वाला) तोड़ना पड़ा. दरवाजा टूटते ही अनाज इतनी तेजी से बाहर निकला कि उस के पास खड़े लोग वहीं अनाज से दब गए. इसी कारण यह 1956 तक बेकार

पटना कैसे जाएं?

वायु मार्ग

पटना के लिए दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता से सीधी हवाई सेवाएं उपलब्ध हैं

प्रमुख उड़ानें

कहां से	दिन	उड़ान संख्या	प्रस्थान	किराया
इंडियन एअरलाइंस				
कलकत्ता	1,3,5,6	सीडी 412	17.15	2,570 रु.
	2,4,6	आईसी 725	12.30	2,570 रु.
दिल्ली	प्रतिदिन	आईसी 809	10.10	3,785 रु.
	1,3,5,7	सीडी 411	17.40	3,785 रु.
मुंबई	1,3,5,7	सीडी 411	19.00	2,545 रु.
सहारा एअरलाइंस				
मुंबई	1,3,5	एस 2907	15.15	5,895 रु.
दिल्ली	प्रतिदिन	एस 2521	11.40	3,785 रु.

रेल मार्ग

यहां के लिए दिल्ली, हावड़ा, अमृतसर, मुंबई आदि शहरों से सीधी रेल सेवाएं उपलब्ध हैं.

प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	गाड़ी की संख्या व नाम	प्रस्थान	आगमन
हावड़ा	3073 हावड़ाजम्मूतवी हिमगिरी एक्सप्रेस	23.00	10.15
	3049 हावड़ाअमृतसर एक्सप्रेस	13.10	02.15
	5049 हावड़ागोरखपुर एक्सप्रेस	23.00	10.15
अमृतसर	3006 अमृतसरहावड़ा एक्सप्रेस	18.30	21.30
नई दिल्ली	2310 पटनाराजधानी एक्सप्रेस	17.00	08.00
	2306 कलकत्ताराजधानी एक्सप्रेस	17.00	05.05
	5622 एन.ई. एक्सप्रेस	23.40	15.00
दादर (मुंबई)	5645 दादरगुवाहाटी एक्सप्रेस	07.55	14.05
कुर्ला (मुंबई)	3202 कुर्लापटना एक्सप्रेस	21.10	08.45

पटना संग्रहालय में हजारों पुरावशेष और कलाकृतियों का संग्रह है.

पड़ा रहा. 1991 में इस का जीर्णोद्धार किया गया.

कुम्हरार

पटना रेलवे स्टेशन से लगभग 6 किलोमीटर दूर यह एक प्राचीन ऐतिहासिक स्थल है, जहां मौर्य साम्राज्य के अनेक पुरावशेष देखने को मिलते हैं. यहां खुदाई में 80 स्तंभों वाला अशोक का सभागार मिला है. एक स्तंभ को खुदाई से निकाल कर पार्क में रखा गया है. कुम्हरार में ही प्रख्यात आयुर्वेदाचार्य चरक का औषधालय खुदाई में मिला है. हरियाली युक्त कुम्हरार अत्यंत मनोरम और खूबसूरत स्थल है.

सदाकत आश्रम

गंगा के तट पर स्थित सदाकत आश्रम आज देश के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेंद्र प्रसाद के स्मृति स्थल के रूप में दर्शनीय है. राष्ट्रपति के पद से अवकाश लेने के बाद डा. प्रसाद कुछ दिनों तक यहीं रहे थे. आज यह दिश कांग्रेस का मुख्यालय है तथा ांग्रेसी राजनीतिक गतिविधियों का ंद्र है.

ुदाबख्श लाइब्रेरी

भारत भर में खुदाबख्श ाइब्रेरी को 'दुर्लभ पांडुलिपियों के ंसार' के रूप में जाना जाता है. यहां जारों की संख्या में अरबी, फारसी, ुगल, राजपूत शैली की दुर्लभ त्रकृतियों का दुर्लभ संकलन है.

त्थर की मस्जिद

यह मस्जिद पटना के अशोक जपथ पर स्थित है. इसे 1621 ई. मुगल सम्राट जहांगीर के पुत्र रवेजशाह ने बनवाया था. इस स्जिद की वास्तुकला प्रशंसनीय है. से 'सांझी मस्जिद' भी कहा जाता

ख्त हरिमंदिर

पटना साहिब के नाम से सिद्ध तख्त हरिमंदिर सिखों के



प्रमुख तीर्थ स्थलों में से एक है. सिखों के दसवें और अंतिम गुरु गोविंद सिंह का जन्म पटना साहिब में ही हुआ था.

यहां एक सुंदर गुरुद्वारा है, जो पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह द्वारा बनवाया गया था.

तारामंडल

यहां विभिन्न भौगोलिक ग्रहों, उपग्रहों की गतिविधियों को यांत्रिक विधि से दिखाया जाता है. इस स्थल पर देशविदेश से भारी तादाद में पर्यटक पहुंचते हैं.

सड़क मार्ग

यह राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 30 से जुड़ा है. देश के सभी प्रमुख नगरों से बस व अन्य वाहनों से यहां आसानी से पहुंचा जा सकता है.

प्रमुख नगरों से दूरी

आगरा–811 किलोमीटर	मुंबई–1,824 किलोमीटर
बंगलौर–1,997 किलोमीटर	कलकत्ता–598 किलोमीटर
बरेली–776 किलोमीटर	चंडीगढ़–1,260 किलोमीटर
भोपाल–1,025 किलोमीटर	दिल्ली–1,011 किलोमीटर
भुवनेश्वर–901 किलोमीटर	गुवाहाटी–1,023 किलोमीटर

अगमकुआं

इतिहासकारों का मत है कि सम्राट अशोक ने इस कुएं का निर्माण कराया था. पानी निकालने के लिए आधुनिकतम यंत्र महीनों काम करते रहे, मगर कुएं का पानी नहीं सूखा. इस तरह इस कुएं की गहराई के बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता.

तापमान

पटना का तापमान गरमियों में 43 डिगरी सेंटीग्रेड अधिकतम तथा न्यूनतम 21 डिगरी सेंटीग्रेड और सर्दियों में अधिकतम 20 डिगरी सेंटीग्रेड व न्यूनतम 6 डिगरी सेंटीग्रेड रहता है.

- *एसटीडी कोड* : 0612

–प्रदीप कुमार झा

गया

इतिहास में मगध देश के नाम से जाना जाने वाला गया, बिहार की राजधानी पटना से लगभग 116 किलोमीटर दूर फल्गू नदी के तट पर बसा गया एक मुख्य पर्यटन स्थल है. यह हिंदुओं का एक प्रमुख तीर्थस्थान है. रामशिला और ब्रह्मयोनि पहाड़ियों से घिरा यह शहर मंदिरों की शिल्पकला के लिए भी दर्शनीय है.

दर्शनीय स्थल

संग्रहालय

गया संग्रहालय की स्थापना 23 नवंबर 1952 को एक प्रतिष्ठित स्थानीय नागरिक बलदेव प्रसाद द्वारा की गई थी. यह फल्गू नदी के किनारे गयाजहांनाबाद सड़क की बगल में पोरिया घाट पर स्थित है. इस संग्रहालय की दीर्घाओं में प्रदर्शित पुरावशेषों की संख्या करीब 3,000 है.

अहिल्याबाई का मंदिर

प्रेतशिला पर्वत पर 1787 में इंदौर की महारानी अहिल्याबाई ने एक भव्य मंदिर का निर्माण कराया था. यह मंदिर अपनी विशिष्ट शिल्पकला के लिए हमेशा से ही पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र रहा है.

विष्णु मंदिर

महारानी अहिल्याबाई ने ही फल्गू नदी के तट पर 1787 में विष्णु मंदिर बनवाया था. यह मंदिर 30 मीटर ऊंची अष्टभुजी मीनार से ढका हुआ है.

सूर्यकुंड तालाब

यह तालाब विष्णुपद मंदिर के पश्चिमी ओर स्थित है. यहां छठ व्रत (सूर्य पूजा) का विशाल मेला चैत्र एवं कार्तिक माह में लगता है.

ब्रह्मकुंड तालाब

लोग इस तालाब में स्नान कर के पिंडदान करते हैं. यह प्रेतशिला पर्वत के नीचे बना है. इस के घाट पक्के हैं.

प्रेतशिला पहाड़

इस पहाड़ के कारण गया की सुंदरता बहुत अधिक बढ़ जाती है. यह पहाड़ रामशिला पहाड़ से लगभग 10 किलोमीटर पश्चिम की ओर है. पहाड़ के नीचे ब्रह्मकुंड तालाब है,

गया कैसे जाएं?

रेल मार्ग

गया दिल्ली, पटना, मुंबई, हावड़ा से सीधा रेल मार्ग से जुड़ा हुआ है.

प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	गाड़ी की संख्या व नाम	प्रस्थान	आगमन
हावड़ा	2301 कलकत्taराजधानी एक्सप्रेस	17.00	22.09
	2311 हावड़ाकालका मेल	19.15	02.42
मुंबई	3004 मुंबईहावड़ा मेल	21.10	03.25
नई दिल्ली	8476 नीलांचल एक्सप्रेस	06.35	00.02
	2816 नई दिल्लीपुरी एक्सप्रेस	06.35	21.02

ां स्नान तर्पण कर पिंडदान किया ता है. प्रेतशिला पहाड़ पर चढ़ने लिए 400 सीढ़ियां हैं.

वली देवी का मंदिर

रामशिला दुखहरनी देवी से ाभग 2 किलोमीटर दूर रेलवे पुल नीचे से हो कर एक रास्ता गया पुल पार होते ही कवली देवी का मंदिर दिखाई देता है. यहां पर पिंडदान किया जाता है.

इस पहाड़ पर चढ़ने के लिए 357 सीढ़ियां हैं. पहाड़ पर शेतातेश्वर तथा रामलक्ष्मण के मंदिर हैं.

•*एस.टी.डी. कोड : 0631*

–प्रदीप कुमार झा

सड़क मार्ग

यहां के लिए पटना, रांची, बोधगया, मुगलसराय आदि शहरों से बस, क्सी सेवाएं उपलब्ध हैं.

प्रमुख नगरों से दूरी

टना–116 किलोमीटर	बंगलौर–1,997 किलोमीटर
गरा–811 किलोमीटर	मुंबई–1,824 किलोमीटर
ल्ली–1,011 किलोमीटर	कलकत्ता–495 किलोमीटर

स्थानीय यातायात

रेलवे स्टेशन पर ही गया घूमने के लिए टैक्सी, टैंपो, जीप, रिकशा, टम आदि किराए पर मिल जाते हैं.

कब जाएं?

साधारणतया फरवरी के आखिरी सप्ताह से अप्रैल के मध्य तक गया पर्यटन का मौसम अच्छा रहता है. अप्रैल के बाद अत्यधिक गरमी के कारण । में मौसम पर्यटन लायक नहीं रह जाता.

कहां ठहरें? — गया

टल	पता	फोन नं.	श्रेणी
द्धार्थ इंटरनेशनल	स्टेशन रोड	21480,21254	उत्तम
ı	डाक बंगला रोड	24004	मध्यम
ातशत्रु	स्टेशन रोड	-	मध्यम
न रेस्ट हाउस	स्टेशन रोड	21242	मध्यम
ɪ	एस.एन. सहाय रोड	23428	मध्यम
जा	स्टेशन रोड	21254	साधारण
शालाएं			
धर्मशाला	रमना रोड		
प्रसाद झुनझुनवाला धर्मशाला			
ला धर्मशाला			

क्या खरीदें?

पत्थर के सामान एवं सीप के गहने, हैंडीक्राफ्ट, तिलकुट (खाने की ी) आदि खरीदे जा सकते हैं.

बोधगया

गया से लगभग 12 किलोमीटर दूर निरंजना नदी के तट पर स्थित है, विश्वप्रसिद्ध शहर बोधगया. ऐतिहासिक साक्ष्यों के मुताबिक करीब 2,500 वर्ष पूर्व यहां एक पीपल के वृक्ष के नीचे कपिलवस्तु के राजकुमार गौतम ने ज्ञान की प्राप्ति की थी. इसी कारण वह गौतम बुद्ध कहलाए. उन्होंने पूरी दुनिया को शांति का संदेश दिया तथा ब्राह्मणवादी कट्टर व्यवस्था पर गहरी चोट की. जिस वृक्ष के नीचे गौतम को ज्ञान की प्राप्ति हुई उसे बोधि वृक्ष के नाम से जाना जाता है.

दर्शनीय स्थल

महाबोधि मंदिर

वास्तुकला की दृष्टि से यह मंदिर संसार में अद्वितीय है. समझा जाता है कि ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में सम्राट अशोक ने इस का निर्माण करवाया था. लंका के राजा मेधवर्ण ने बोधि वृक्ष के उत्तर में एक विशाल मठ का निर्माण करवाया था. यह कार्य समुद्रगुप्त के शासन काल में हुआ. 12वीं शताब्दी में मुसलमानों के भयंकर आक्रमण ने मंदिर को तहसनहस कर डाला. 1876 ई. में बर्मा नरेश ने भारत सरकार को मंदिर के पुनर्निर्माण का आदेश दिया. बाद में लोक निर्माण विभाग ने पुराने मंदिर के ढांचे पर इस का जीर्णोद्धार किया. मंदिर में बुद्ध की एक विशाल प्रतिमा है. मंदिर के चारों ओर छोटेछोटे खंभे और जालीदार नक्काशी का घेरा पर्यटकों को आकर्षित करता है.

बोधि वृक्ष

महाबोधि मंदिर के पश्चिम में



महाबोधि मंदिर वास्तुकला की दृष्टि से संसार में अद्वितीय है

बोधि वृक्ष स्थित है. इसी स्थान पर बैठ कर गौतम ने तपस्या की थी और ज्ञान की प्राप्ति की थी.

बोधि सरोवर

यह महाबोधि मंदिर के दक्षिण में स्थित है. तपस्या करने के पूर्व बुद्ध ने यहां स्नान किया था. यह एक दर्शनीय स्थल है

चंकामना

महाबोधि मंदिर के उत्तर की ओर बना एक चबूतरा है, जिस पर बुद्ध के पदचिह्न अंकित हैं

अन्य मंदिर

इन के अलावा यहां पर तिब्बती मंदिर, जापानी मंदिर, थाई मंदिर, भूटान का मंदिर, श्रीलंकाई मंदिर आदि अनेक मंदिर है जो पर्यटकों को अपनी ओर खींचते हैं.

संग्रहालय

इस संग्रहालय में मुख्यतः गुप्त एवं पालकालीन पत्थर तथा कांसे की मूर्तियों का संग्रह है.

● **एसटीडी कोड : 0631**

–प्रदीप कुमार झा

क्या खरीदें

महाबोधि मंदिर के पास दक्षिण वाली गली में विदेशी सामान का अच्छा बाजार है

कहां ठहरें? बोधगया

होटल	पता	फोन	श्रेणी
अशोका	जे.पी. उद्यान के पास		[illegible]
शांति बुद्धा	थाई मंदिर के पीछे	[illegible]	[illegible]
सिद्धार्थ विहार	थाई मंदिर के पास	81419	मध्यम
बुद्ध विहार		81[illegible]	
राज्य पर्यटन विकास निगम के 3 बंगले			
धर्मशालाएं			
बिड़ला धर्मशाला	महाबोधि मंदिर के पास		
महाबोधि सोसाइटी धर्मशाला	श्रीलंका रेस्ट हाउस के पीछे		
तिब्बत धर्मशाला	बिड़ला धर्मशाला के पीछे		
बौद्ध विहार मठ विश्रामालय			

नालंदा

नालंदा विश्वविद्यालय के खंडहर आज बिहार आने वाले पर्यटकों आकर्षण का केंद्र हैं. यह पटना दक्षिणपूर्व में बड़ा गांव के पास थत है.

गुप्त सम्राट कुमारगुप्त ने नालंदा एक बौद्ध विहार की स्थापना की . कुमारगुप्त का समय (415 ई. से 5 ई.) माना जाता है. प्रारंभ में यहां द्ध भिक्षु ही रहते थे तथा बौद्ध धर्म संबंधित अध्ययनअध्यापन होता था. मारगुप्त के बाद अन्य शिक्षाप्रेमी गुप्त ाटों ने नालंदा में अन्य बौद्ध विहार र भवनों का निर्माण किया और उन खर्च के लिए आर्थिक अनुदान की वस्था की.

धीरेधीरे बौद्धों के विभिन्न दायों के ग्रंथों के अनुशीलन के तिरिक्त विभिन्न धर्मों के शास्त्रों एवं र्शनिक ग्रंथों का अध्ययन होने लगा. स के कारण कालांतर में नालंदा का महाविहार एक विश्वविद्यालय में दील हो गया.

नालंदा एक स्नातकोत्तर वविद्यालय था, जिस में 8,500 तथा 1,510 आचार्य (शिक्षक) े थे. लंका, तिब्बत, मंगोलिया, न के छात्र एवं विद्वान भी यहां ययनअध्यापन के लिए आते थे.

नालंदा
कैसे जाएं?

वायु मार्ग

नालंदा के लिए पटना हवाई अड्डा सब से नजदीक है. दिल्ली, मुंबई, लखनऊ, कलकत्ता आदि नगरों से पटना पहुंचा जा सकता है. आगे बस या रेलगाड़ी से जाया जा सकता है.

रेल मार्ग

नालंदा पूर्वी रेलवे की बख्तियापुर लाइन पर स्थित है. यहां पटना, वाराणसी, गया से जाया जा सकता है.

सड़क मार्ग

यह पटना, गया, राजगीर से सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है. यहां से बसें, टैक्सियां आदि उपलब्ध हैं.

प्रमुख नगरों से दूरी

रांची –264 किलोमीटर	पटना –85 किलोमीटर
बिहारशरीफ–14 किलोमीटर	गया –77 किलोमीटर

स्थानीय यातायात

यहां के स्थानीय स्थलों पर भ्रमण के लिए तांगा व रिक्शा किराए पर मिल जाता है.

कहां ठहरें? नालंदा

यूथ होस्टल	सरकारी गेस्ट हाउस
होटल आकाश	पी.डब्ल्यू.डी. निरीक्षण बंगला
होटल तृप्ति	होटल सरस्वती निकेतन

्रमुख दर्शनीय स्थल

खुदाई स्थल में पूर्वी फाटक से प्रवेश करने वाले यात्रियों को पश्चिम की ओर मंदिरों की कतार तथा पूर्व की ओर विहारों की कतार दिखाई पड़ेगी.

ंदा के खंडहर पर्यटकों को र्षित करते हैं.



मुख्य मंदिर स्थल संख्या–3

यह मुख्य मंदिर दक्षिणी सिरे पर स्थित है. यह एक आंगन के बीचोंबीच छोटेछोटे स्तूपों से घिरा है.

विहार स्थल 1

यह विहार सब से महत्त्वपूर्ण है. इस में 9 तल हैं. प्रत्येक तल का पता कंक्रीट के आंगनों, एक के ऊपर दूसरी चुनी हुई दीवारों और नालियों से लगता है. कहा जाता है, नीचे का विहार, जिस की कोठरियां पश्चिम के प्रवेशद्वार और दक्षिणपूर्व की ओर दिखाई पड़ती हैं, को पाल

वंश के तीसरे राजा देवपाल के समय में बनवाया गया.

नालंदा के अन्य दर्शनीय स्थल

सूर्य मंदिर

सूर्य मंदिर नालंदा के खंडहरों से सटा हुआ है. इस मंदिर में हिंदू और बौद्ध मूर्तियों का आकर्षक संग्रह है. पार्वती की एक 5 फुट ऊंची मूर्ति विशेष आकर्षण का केंद्र है.

ह्वेसांग मेमोरियल हाल

7वीं सदी में प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत आया था. उस ने नालंदा में शीलभद्र (प्रसिद्ध आचार्य) के शिष्य के रूप में 6 वर्षों तक योग का अध्ययन किया था. उसी की स्मृति में ह्वेनसांग स्मारक नालंदा से करीब 1 किलोमीटर दूर बनवाया गया.

नवनालंदा महाविहार

प्राचीन नालंदा के पास ही प्रसिद्ध कमल तालाब के किनारे स्थित नवनालंदा महाविहार 1951 में खोला गया. यह एक अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा केंद्र है.

यहां मुख्य रूप से पाली एवं बौद्ध धर्म संबंधी अध्ययन एवं शोध का काम होता है. यहां विशेष कर श्रीलंका, जापान, दक्षिणी एवं उत्तरी कोरिया, तिब्बत, चीन, भूटान, इंडोनेशिया आदि देशों के छात्र आते हैं.

तापमान

नालंदा का तापमान सर्दियों में अधिकतम 27.8 डिगरी सेंटीग्रेड तथा न्यूनतम 17.8 डिगरी सेंटीग्रेड रहता है.

संग्रहालय

इस की स्थापना 1971 में की गई. इस संग्रहालय में बौद्ध प्रतिमाओं एवं प्राचीन पांडुलिपियों का अच्छा संग्रह है

● *एसटीडी कोड : 061194*

प्रदीप कुमार झा



राजगीर में पहाड़ की चोटी पर बने स्तूप पर रोपवे द्वारा पहुंचा जा सकता है.

राजगीर

नालंदाबोधगया मार्ग पर नालंदा से 15 किलोमीटर दूर स्थित राजगीर मनोहर घाटी में बसा एक रमणीय स्थल है. राजगीर पाटलिपुत्र से पहले मगध महाजनपद की राजधानी रहा था. इसे उस वक्त राजगृह के नाम से जाना जाता था. यहां घूमने का कार्यक्रम गया, पटना, नालंदा भ्रमण के दौरान बनाया जा सकता है क्योंकि यह इन स्थलों के नजदीक है.

कहा जाता है कि महात्मा बुद्ध ने यहां पर मौर्य सम्राट बिंबिसार को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया था. बौद्ध परिषद का पहला अधिवेशन भी यहीं हुआ था. सैकड़ों बौद्ध भिक्षुओं ने मिल कर यहीं पर बुद्ध के उपदेश ग्रहण किए. बुद्ध ने अपने अनेक महत्त्वपूर्ण उपदेश यहां दिए. ऐसा कहा जाता है.

पहाड़ियों से घिरे राजगीर के एक ओर पहाड़ की चोटी पर जापानी बौद्धों ने एक स्तूप बनाया है. इस पर जाने के लिए एरियल रोपवे द्वारा जाया जा सकता है.

विश्वशांति स्तूप

विश्वशांति स्तूप करीब 4 सौ मीटर ऊंची पहाड़ी पर बना हुआ है. संगमरमर से निर्मित इस स्तूप की चोटी पर चारों तरफ अलगअलग मुद्राओं में बुद्ध की 4 सुनहरी मूर्तियां लगी हैं. यहां तक पहुंचने के लिए रोपवे का सहारा लेना पड़ता है. इसे

कहां ठहरें? — राजगीर

होटल

इंडो होक होटल, फोन : 5245; होटल राजगीर, फोन : 5266; गौतम विहार, फोन : 5273; सिद्धार्थ, फोन : 5216; तथागत विहार; अजातशत्रु; मर्किट हाउस, फोन : 5227

धर्मशालाएं

श्वेतांबर, दिगंबर, विरायतन, रामेश्वर महावीर.

कब जाएं?

अक्तूबर से मार्च तक का समय भ्रमण के लिए सर्वाधिक अनुकूल है.

द्रकूट भी कहा जाता है.

जातशत्रु का किला

छठी शताब्दी में मगध के ा अजातशत्रु ने यह किला बनवाया 6.5 वर्गमीटर में अजातशत्रु का भी बना हुआ है. ऐतिहासिक पुरातत्त्व की दृष्टि से इस किले अवशेष देखे जा सकते हैं.

वन

महात्मा बुद्ध के रहने के लिए ा बिंबिसार ने वेनुवन विहार वाया था. यह सुंदर विहार दर्शनीय

इन के अलावा राजगीर में बसार की जेल, मनियार मठ, धारा, पिखलकैव आदि भी नीय हैं.

य निकटवर्ती स्थल

लपुर

राजगीर से 18 किलोमीटर इस स्थल पर कहा जाता है कि त्मा बुद्ध का जन्म हुआ था. यहां 2 झीलें भी हैं.

रशरीफ

14वीं शताब्दी के मुस्लिम संत दूम शाह शरीफउद्दीन का यहां बरा है. यह स्थल मुस्लिम रविचार एवं संस्कृति का प्रमुख था. 13वीं और 16वीं शताब्दी में रशरीफ मुस्लिम शासकों की ानी थी. राजगीर से 25 मीटर दूर यह छोटा कसबा आज धर्मावलंबियों के आकर्षण का है.

खरीदें?

राजगीर से हैंडीक्राफ्ट की ं, पत्थर व शंख के सामान, व पत्थर की मूर्तियां, आभूषण खरीदे जा सकते हैं. ारी कुंड बाजार से की जा है.

जानकारी

विशेष जानकारी के लिए किया जा सकता है:

पैराडाइज टूरिस्ट ट्रैवल्स, राजगीर, फोन: 5211.

नालंदा ट्रैवल्स, फोन: 5251.

अन्य महत्त्वपूर्ण फोन नंबर

राजगीर एरियल रोपवे डाउन हिल, फोन: 5250; आकेनागी जापानी टेंपल, 5265; टी आकेनागी शांति स्तूप, 5340; राजगीर पुलिस थाना, 5228; विरायतन हास्पीटल, 5230.

● *एसटीडी कोड : 06119*

वैशाली

वैशाली बुद्ध व जैन तीर्थंकर महावीर से जुड़ा होने के कारण एक ऐतिहासिक दर्शनीय स्थल है. पटना से 55 किलोमीटर स्थित यह शहर प्राचीन समय में प्रमुख व्यावसायिक केंद्र था. राजा विशाल के नाम पर इस का नाम वैशाली पड़ा.

यहां जैन तीर्थंकर महावीर की जन्मस्थली मानी जाती है. बुद्ध ने भी यहां तीन बार यात्राएं कीं. उन्होंने अपना अंतिम उपदेश भी यहीं दिया था, ऐसा कहा जाता है.

पटना, नालंदा भ्रमण के दौरान यहां का कार्यक्रम बनाया जा सकता है. यहां सैरसपाटे का अक्तूबर से मार्च तक का समय सब से अनुकूल है.

राजा विशाल का गढ़

राजा विशाल के नाम पर बना यह किला देखने लायक है. 1 किलोमीटर में बने हुए इस किले में कहा जाता है कि प्राचीन संसद भवन हुआ करता था. यह उस जमाने में विश्व की सब से पुरानी गणतंत्र प्रणाली मानी जाती थी.

अशोक स्तंभ

कहा जाता है कि यह स्तंभ सम्राट अशोक ने बनवाया था जिस के ऊपर शेर बना हुआ है. इस स्तंभ की शिल्पकला देखने लायक है. इसे सिंह स्तंभ भी कहते हैं.

संग्रहालय

संग्रहालय में ऐतिहासिक महत्त्व की वस्तुएं देखी जा सकती हैं.

वैशाली कैसे जाएं?

वायु मार्ग

वैशाली के लिए सीधी विमान सेवा नहीं है. यहां के लिए निकटतम हवाई अड्डा 55 किलोमीटर दूर पटना है. आगे का रास्ता रेल या बसों से तय किया जा सकता है.

रेल मार्ग

यहां के लिए सीधी रेल सेवा नहीं है. पर्यटक उत्तरपूर्वी रेलवे के पटना, हाजीपुर, मुजफ्फरपुर तक पहुंच कर आगे सड़क मार्ग द्वारा सुगमता से पहुंच सकते हैं.

सड़क मार्ग

सभी प्रमुख पर्यटन केंद्रों से पर्यटक पटना, हाजीपुर, मुजफ्फरपुर पहुंच कर टैक्सी या बसों द्वारा यहां पहुंच सकते हैं. वैशाली पटना से 55, हाजीपुर से 37 और मुजफ्फरपुर से 35 किलोमीटर दूर है.

कहां ठहरें? — वैशाली

होटल	पता
पर्यटक विश्राम गृह	पर्यटन विभाग, उच्च विद्यालय चौक
युवा आवास	पुष्करणी तालाब के उत्तर में
निरीक्षण भवन	भवन निर्माण विभाग
जैन धर्मशाला	बावन पोखर, जैन मंदिर के पास

ठहरने के लिए वैशाली में होटलों की अच्छी व्यवस्था नहीं है इसलिए पर्यटकों को सलाह दी जाती है कि वे ठहरने के लिए हाजीपुर या फिर पटना को चुनें जहां सस्ते एवं महंगे आवासों की व्यवस्था है. वैशाली में खानेपीने की भी व्यवस्था अच्छी नहीं है इसलिए दिन भर अगर वैशाली में घूमना हो तो आप पटना अथवा हाजीपुर से खाना साथ ले जा सकते हैं. वैशाली में दिन भर घूमनेफिरने के बाद पर्यटक निकटस्थ शहर मुजफ्फरपुर, हाजीपुर अथवा पटना वापस शाम को लौट सकते हैं.

कब जाएं?

यहां आने के लिए अप्रैल से मध्य जुलाई एवं मध्य सितंबर से दिसंबर तक का समय श्रेष्ठ है.

गरमी में सूती तथा सर्दी में भारी ऊनी कपड़े ले कर आएं.

इन के अलावा बौद्ध स्तूप, अभिषेक पुष्करनी, निरांजी की दरगाह आदि भी दर्शनीय हैं.

क्या खरीदें?

यहां से मिट्टी के बने खिलौने खरीदे जा सकते हैं जो नजदीकी गांवों में बनाए जाते हैं. खिलौनों में खासतौर से पशुपति और मानव को आकृतियों में ढाल कर बेचा जाता है.

तापमान

यहां का तापमान सर्दियों में 23 डिगरी सेंटीग्रेड अधिकतम, 6 डिगरी सेंटीग्रेड न्यूनतम तथा गरमियों में 55 डिगरी सेंटीग्रेड अधिकतम, 21 डिगरी सेंटीग्रेड न्यूनतम रहता है.

-प्रदीप कुमार झा

अगरतला

प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से देश के उत्तरपूर्वी राज्यों का कोई मुकाबला नहीं है. प्रदूषण मुक्त हरियाली के दर्शन करने हों तो आप किसी भी उत्तरपूर्वी राज्य में चले जाइए. आप का दिल करेगा कि वहीं रह जाएं. लेकिन वहां तक जाने में केवल 2 कठिनाइयां सामने आती हैं. एक तो आजकल उग्रवादी संगठनों की हिंसा के कारण अनेक पर्यटक वहां जाने से कतराने लगे हैं, और दूसरे, इन स्थानों तक पहुंचने में काफी समय भी लग जाता है.

ऐसा ही एक हराभरा राज्य है त्रिपुरा, जिस की राजधानी अगरतला पर्यटन की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण स्थान है. भारत के उत्तरपूर्वी भाग में स्थित स्वतंत्रता के पूर्व त्रिपुरा एक प्राचीन राज्य था, जिस का भारत में विलय सन 1949 में हुआ था. त्रिपुरा राज्य 3 तरफ से बंगला देश से घिरा है. राज्य की पूर्वी सीमा पर असम तथा मिजोरम स्थित हैं. राजधानी अगरतला भी बंगलादेश के कोमिल्ला जिले से सटी है तथा केवल कुछ किलोमीटर की यात्रा के बाद ही बंगलादेश की सीमा आ जाती है. अगरतला से बंगलादेश की राजधानी ढाका तक सड़क द्वारा पहुंचने में केवल 6 घंटे लगते हैं.

त्रिपुरा लगभग 10,500 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल वाला एक नन्हा सा राज्य है, जिस में लगभग 19 जनजातियों तथा बंगाली और मणिपुरी जातियों के लोग निवास करते हैं. यहां की भाषा बंगला है किंतु कलकत्ता की बंगला से यह थोड़ी भिन्न है, जिस पर बंगलादेश की भाषा का थोड़ाथोड़ा असर दिखाई देता है.

अगरतला लगभग डेढ़ लाख की जनसंख्या वाला एक छोटा नगर है. आमतौर पर यहां का मौसम सुहावना ही होता है. बारिश यहां पर जून से अगस्त तक होती रहती है तथा गरमियों में अधिकतम तापमान 37 डिगरी सेंटीग्रेड तथा सर्दियों में न्यूनतम तापमान 4 डिगरी सेंटीग्रेड तक जाता है.

संपूर्ण त्रिपुरा राज्य में पहले रेल नहीं थी. अब धर्मनगर तथा कुमारघाट तक रेल लाइन बन चुकी है, जिस का असम के सिल्चर नगर तक संपर्क है. किंतु कुमारघाट की अगरतला से दूरी 140 किलोमीटर है. अतः अगरतला जाने के लिए रेल यात्रा उपयुक्त नहीं है.

अगरतला में किसी छोटे नगर का माहौल दिखता है. आटोरिकशा, साइकिलें, रिकशा, बसें, टैंपो नगर में हर तरफ दिखते हैं. कारों तथा टैक्सियों की संख्या अपेक्षाकृत कम है.

अगरतला निवासी बांस की बनी वस्तुओं को तैयार करने तथा उन का उपयोग करने में दक्ष हैं. बड़ी बारीकी से पतलेपतले बांसों पर नक्काशी कर के उन्हें अद्भुत सजावटी वस्तुओं का रूप दे दिया जाता है. अनेक घरों में चौहद्दी पर बांस की बनी मजबूत बाड़ देखी जा सकती है. यह बाड़ सस्ती होती है तथा आसानी से लगाई भी जा सकती है. सजावटी वस्तुओं में बांस तथा बेंत के बने टेबल लैंप, कलात्मक मूर्तियां, फर्नीचर, पर्दे की जाली आदि प्रसिद्ध हैं.

इस के अलावा हथकरघा की
ी चादरें, साड़ियां, दूसरे वस्त्र आदि
प्रसिद्ध हैं. ये सब वस्तुएं नगर
हस्तशिल्प की दुकानों पर मिल
ी हैं.

यहां की मुख्य पैदावार धान,
न, सुपारी, चाय, कटहल, आम,
रियल आदि हैं. अनेक स्थानों पर
फी, रबड़, नारंगी तथा अनन्नास
उगाए जाते हैं. त्रिपुरा राज्य का
भग 60 प्रतिशत भाग पर्वतों तथा
लों से घिरा है, अतः भांतिभांति
लकड़ियां भी यहां उत्पन्न होती
यहां 'साल' की लकड़ी की भी
छी पैदावार है.

अगरतला नगर से लगभग 10
लोमीटर की दूरी पर हवाई अड्डा
त है, जहां पर कलकत्ता तथा
हाटी से इंडियन एअरलाइंस की
मित उड़ानें हैं. विमान द्वारा आप
दोनों स्थानों से केवल 45 मिनट
अगरतला पहुंच सकते हैं. इस के
रीत यदि रेल अथवा सड़क द्वारा
कत्ता से अगरतला तक की यात्रा
जाए तो 40 से 50 घंटे तक लग
ते हैं. इसलिए अधिकतर निवासी
चर तक विमान द्वारा ही यात्रा
ना पसंद करते हैं. विमान के
ट यहां महीनों पहले ही बुक हो
हैं. अतः यात्रियों को कम से
20-25 दिन पहले ही आरक्षण
लेना चाहिए.

नीय स्थल

जयंत महल

इस महल का निर्माण वर्ष
9-1901 में महाराजा राधा
ोर माणिक्य बहादुर ने कराया
लगभग 1 वर्ग किलोमीटर में
फैले इस महल में सुंदर वास्तुकला के दर्शन होते हैं. आजकल यहां पर विधानसभा स्थित है.

अगरतला
कैसे जाएं?

वायु मार्ग

कहां से	दिन	उड़ान संख्या	प्रस्थान	किराया
इंडियन एअरलाइंस				
कलकत्ता	1,3,6	आईसी 741	06.20	1,305 रु.
	2,7	आईसी 745	09.20	1,305 रु.
	2,3,4,5,6,7	आईसी 743	13.00	1,305 रु.
गुवाहाटी	1,4,7	आईसी 705	08.10	1,145 रु.

रेल मार्ग

निकटतम रेलवे स्टेशन कुमारघाट है, जो कलकत्ता से 1,475 कि.मी. है. कुमारघाट की अगरतला से दूरी 140 कि.मी. है. अगरतला का निकटतम बड़ा रेल स्टेशन सिल्चर है, जो वहां से 294 कि.मी. दूर है. सिल्चर का संपर्क गुवाहाटी द्वारा देश के अन्य भागों से है. इस प्रकार रेल द्वारा अगरतला की यात्रा सुविधाजनक नहीं है.

सड़क मार्ग

अगरतला बस सेवा द्वारा सिल्चर (असम), शिलांग (मेघालय), गुवाहाटी (असम), करीमगंज (असम) द्वारा जुड़ा है. इस के अलावा त्रिपुरा के अन्य नगरों से अगरतला तक की नियमित बस सेवाएं हैं.

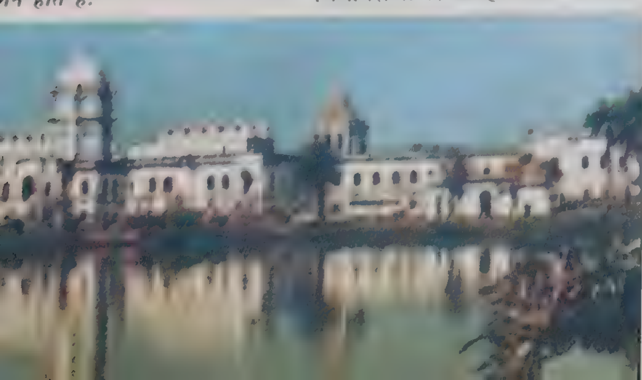
प्रमुख नगरों से दूरी

कलकत्ता–1,738 किलोमीटर
शिलांग–487 किलोमीटर
गुवाहाटी–597 किलोमीटर
सिल्चर–294 किलोमीटर

कब जाएं?

सितंबर से मार्च तक जाया जा सकता है. इस बात का भी ध्यान रखें कि अगरतला में अन्य उत्तरपूर्व के नगरों की तरह सूरज शाम को बहुत जल्दी ढल जाता है तथा प्रातः बहुत शीघ्र उगता है. अतः घूमने का सिलसिला प्रातः के 6-7 बजे ही आरंभ किया जा सकता है.

ंत महल में सर्वत्र वास्तुकला
र्शन होते हैं.



कुंजबन महल

इस महल का निर्माण 1917 में महाराज वीरेंद्र किशोर माणिक्य बहादुर ने कराया था. आजकल इस का उपयोग राजभवन के रूप में किया जा रहा है.

जगन्नाथ मंदिर

यह मंदिर वास्तुकला का उत्तम नमूना है.

कहां ठहरें? अगरतला

होटल	पता	फोन नं.
सोनाली रेस्ट हाउस	कुंजबन	
रायल गेस्ट हाउस	पैलेस कंपाउंड, पश्चिमी गेट,	225936
मीनाक्षी	खोस बागान	225810
गीतांजली गेस्ट हाउस	आफिस लेन	225457
राजश्री यात्री निवास	कुंजबन	223837
अंबर	शकुंतला मार्ग	223587
राजधानी	वी.के. रोड	223387
जनता	कमान चौमुहानी	223853
सागरिका गेस्ट हाउस	शकुंतला मार्ग	
शंकर	नेताजी चौमुहानी	
काकाली जी		223234
जयराम गेस्ट हाउस	आफिस लेन	223894

क्या खरीदें?

बांस तथा बेंत की बनी हस्तकला की उत्तम वस्तुएं, हथकरघा की चादरें, साड़ियां तथा लाई शैंग्पी नामक सुंदर मोटी चादरें आदि यहां से खरीदी जा सकती हैं.

प्रमुख दुकानें

पूर्वशा, प्रियदर्शिनी, तंतुमिता, अईतोर्मा, खादी ग्रामोद्योग भवन आदि.

कंडक्टेड टूअर्स

पर्यटन विभाग, सूचना निदेशालय, त्रिपुरा सरकार, श्वेत महल अगरतला द्वारा अनेक प्रकार के टूर संचालित किए जाते हैं, जिन का किराया 30 से 50 रुपए तक है.

बुद्ध विहार (वेणुवन विहार)

गौतम बुद्ध के इस मंदिर में बुद्ध पूर्णिमा के दिन विशाल मेला लगता है.

संग्रहालय

यहां पर त्रिपुरा तथा निकटवर्ती राज्यों की प्राचीन कला के दर्शन होते हैं.

सिपाही जल

अगरतला से लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह एक सुंदर अभयारण्य है, जिसे अब राष्ट्रीय पार्क घोषित कर दिया गया है. यहां पर 150 से भी अधिक जातियों के पशुपक्षी तथा अनेक प्रकार की वनस्पतियां देखी जा सकती हैं. घने जंगलों के बीच से गुजरने वाले वाहनों पर बैठेबैठे पशुपक्षियों को उन के प्राकृतिक वातावरण में देखा जा सकता है. यहां पर बनी झील में नौकायन किया जा सकता है तथा बच्चे छोटी रेल पर बैठ सकते हैं. सिपाही जल लगभग साढ़े 18 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है.

कमला सागर (कसबा)

बंगलादेश की सीमा से लगी यह झील अगरतला से लगभग 27 किलोमीटर की दूरी पर एक पहाड़ी के निकट स्थित है. झील का निर्माण महाराजा धन्य माणिक्य बहादुर ने 15वीं सदी में कराया था. पहाड़ी पर काली मंदिर बना है, जिस का निर्माण 1662 में महाराजा कल्याण माणिक्य बहादुर ने कराया था. यह एक अत्यंत रमणीक स्थल है, जहां लोग पिकनिक मनाने जाते हैं.

नीर महल

अगरतला से लगभग 53 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह एक अत्यंत आकर्षक जल महल है. इस महल का निर्माण 1930 में महाराजा वीर विक्रम किशोर माणिक्य ने कराया था.

यह महल रुद्रसागर नामक झील के बीच में स्थित है. झील का क्षेत्रफल 5.3 वर्ग किलोमीटर है तथा महल तक पहुंचने के लिए आधे घंटे की नौका यात्रा करनी पड़ती है. इस महल का निर्माण महाराजा ने ग्रीष्मकालीन सैरगाह के रूप में कराया था.

पर्यटन कार्यालय

1. पर्यटन विभाग, सूचना निदेशालय, श्वेत महल, पैलेस कंपाउंड, अगरतला–799001, फोन : (0381) 225930, 223893, फैक्स : 224013.

2. पर्यटन सूचना केंद्र, त्रिपुरा भवन, 1-प्रिटोरिया स्ट्रीट, कलकत्ता–700071, फोन : (033) 2425703, फैक्स : 2426842.

3. त्रिपुरा भवन, चाणक्यपुरी, कौटिल्य मार्ग, नई दिल्ली–110011, फोन : (011) 3014607, फैक्स (011) 3793837.

● *एसटीडी कोड : 0381*

–बिमल श्रीवास्तव

गंगतोक

लगभग 2.5 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 50,000 आबादी वाला पर्वत नगर गंगतोक समुद्रतल से 5,800 फुट की ऊंचाई पर है. मार्च से मई और अक्तूबर से दिसंबर तक का समय यहां आने के लिए सब से



के मुख्य बाजार में काफी
रहती है.

होता है. मौसम के अनुसार
त्र साथ रखने चाहिए.
गंगतोक पहुंचने पर आप को
तो विश्वास ही न होगा कि
रत के किसी पर्यटन स्थल
आम पर्वतीय स्थलों से भिन्न
र में चौड़ी साफ सड़कें,
न यातायात और 8-10
के मकान हैं जिनमें लिफ्टें
वातावरण बिलकुल बाहरी
द्ध लगता है. यहां के निवासी
प्रसन्न दिखते हैं.
गतोक के प्रमुख चौराहों पर
र करने के लिए ओवर ब्रिज
हैं. सरकारी दफ्तरों में अन्य
राजधानियों की तरह यहां
अव्यवस्था की सरकार भी
श्रीनगर, शिमला, नैनीताल
यह शहर बहुत ही अधिक
ाता है.

स्थल

र आफ तिब्बतोलोजी

तोक के मुख्य बाजार से

गंगतोक कैसे जाएं?

वायु मार्ग

गंगतोक जाने के लिए दिल्ली या कलकत्ता से वायुमार्ग से बागडोगरा हवाई अड्डा आना पड़ता है. यहां से 124 किलोमीटर बस या टैक्सी से सड़क मार्ग से गंगतोक पहुंचते हैं, जिस में 5 घंटे लगते हैं.

रेल मार्ग

रेल मार्ग से सिलीगुड़ी (114 किलोमीटर) या न्यू जलपाईगुड़ी (125 किलोमीटर) से गंगतोक पहुंचते हैं. इन रेलवे स्टेशनों से सड़क मार्ग से बस या टैक्सी नियत भाड़े पर मिलती हैं.

सड़क मार्ग

सड़क मार्ग से भारत के किसी भी नगर से गंगतोक आया जा सकता है. यह सड़क मार्ग दार्जिलिंग, कलिमपोंग, सिलीगुड़ी, न्यू जलपाईगुड़ी से हो कर ही जाता है. सिक्किम राज्य के भीतर सभी जिला मुख्यालय सड़कों से ही संबद्ध हैं, रेलें नहीं हैं. वर्षा ऋतु में सड़क मार्गों पर अकसर व्यवधान हो जाता है.

विदेशी पर्यटकों को सिक्किम आने के लिए परमिट लेना आवश्यक है. यह 15 दिन तक के लिए होता है और विदेशों में भारतीय दूतावासों या दिल्ली, कलकत्ता, सिलीगुड़ी या गंगतोक के सिक्किम पर्यटन के कार्यालय से एक दिन पूर्व प्राप्त किया जा सकता है.

कहां ठहरें? — गंगतोक

होटल	पता	फोन नं.
ताशी डेलेक	महात्मा गांधी मार्ग	22991
तिब्बत	पलजार स्टेडियम रोड	22523
सेंट्रल	पलजार स्टेडियम रोड	22553
डेंजांग हिल इन	पलजार स्टेडियम रोड	22692
हिमालचुली	पलजार स्टेडियम रोड	22714
स्वागत	पलजार स्टेडियम रोड	22038
मयूर (राज्य उपक्रम)	पलजार स्टेडियम रोड	22752
नार्क हिल	पलजार स्टेडियम रोड.	23186
आर्चिड	31-ए नेशनल हाइवे	23135
ग्रीन	महात्मा गांधी मार्ग	23354
कंचनव्यू	31-ए नेशनल हाइवे	22086
दीकी	महात्मा गांधी मार्ग	22402
शेर-ए-पंजाब	31-ए नेशनल हाइवे	22823
ल्हाकपा	तिब्बत रोड	23002
हंगरी जैक	31-ए नेशनल हाइवे	22353

सिक्किम सरकार का एकमात्र लाज सिनियालचू लाज इंछे मठ के पास (फोन 22074) है. अन्य होटल और लाज हैं-**होटल कर्मा** (गांधी मार्ग), **होटल वुडलैंड** (गांधी मार्ग), **होटल डोमा** (गांधी मार्ग) **होटल न्यू ग्रीन** (बलवाखानी), **होटल ल्हासा** (डेंजांग सिनेमा रोड), **लाडेनिया होटल** (लाल मार्केट), **कंचनजंघा होटल** (गांधी मार्ग), **मिगतिन लाज** (तिब्बत रोड), **क्राउन लाज** (न्यू मार्केट), **पैराडाइज लाज** (31 ए नेशनल हाइवे), **ताशी लाज** (भानुपथ, ताशीलिंग), **जयश्री लाज** (31 ए नेशनल हाइवे), **सनशाइन लाज** (न्यू मार्केट) **गेंगपू टूरिस्ट सेंटर** (गेंगपू), पश्चिम सिक्किम में पेमेयांत्से में **होटल माउंट पंडिम** और **ट्रेकर्स हट** तथा दक्षिण सिक्किम में नामची में **यूथ होस्टल** भी हैं.

प्रमुख नगरों से दूरी

आगरा–1,407 किलोमीटर
अहमदाबाद–2,171 किलोमीटर
गुवाहाटी–625 किलोमीटर
इलाहाबाद–964 किलोमीटर
कलकत्ता–724 किलोमीटर
मुंबई–2,420 किलोमीटर
भुवनेश्वर–1,204 किलोमीटर
बंगलौर–2,593 किलोमीटर
भोपाल–1,621 किलोमीटर

पैकेज तथा कंडक्टेड टूअर्स

पर्यटकों को घुमाने की सुविधा के लिए मान्यताप्राप्त ट्रेवल एजेंसियों ने अनेक पैकेज व कंडक्टेड टूअर्स की व्यवस्था कर रखी है और इन से इन की अवधि व प्रभार की जानकारी ले कर पर्यटक अपनी रुचि, सुविधा, समय के अनुसार चुनाव कर सकते हैं.

सिक्किम राष्ट्रीयकृत परिवहन की बसें गंगतोक से बागडोगरा, सिलीगुड़ी, कलिम्पोंग, दार्जिलिंग, [illegible] रुमटेक, नामची, [illegible] (सिक्किम) आदि के लिए मिलती हैं. [illegible] के पास से अनेक प्राइवेट परिवहन संस्थाओं की व्यवस्था है. पर्यटन सूचना केंद्र से पर्यटन विभाग की [illegible] गंगतोक से कलिम्पोंग, दार्जिलिंग, सिलीगुड़ी, बागडोगरा [illegible] के लिए प्राप्त की जा सकती हैं.



1 किलोमीटर नीचे ओक, मगनोलि
और बिर्च वृक्ष के जंगल के बी
विश्वप्रसिद्ध 'इंस्टीट्यूट आ
तिब्बतोलोजी' है. इस का भव
वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना है. य
के पुस्तकालय में 30,000 दुर्ल
ग्रंथों व पांडुलिपियों का संग्रह है. ए
संग्रहालय भी है जिस में बौद्ध संस्कृ
पर प्रकाश डालने वाले सिक्के
मूर्तियां, थंका (रेशमी वस्त्र प
अलंकरण चित्रण) आदि हैं.

गंगतोक के मुख्य बाजार
ऊपर चढ़ कर जाने पर 1957
स्थापित 'गवर्नमेंट इंस्टीट्यूट आ
काटेज इंडस्ट्रीज' पड़ता है. य
स्थानीय कलाकौशल की वस्
बनती हैं और उन की बिक्री के लि
एक 'एंपोरियम' भी है.

हिरन पार्क

सचिवालय भवन के पास
'हिरन पार्क' है जिसे रुस्तमजी प
भी कहते हैं. इस पार्क में कई कि
के हिरन हैं जिन में चपटे पैर व
हिरन प्रसिद्ध हैं. अलग बाड़े में
पांडा और हिमालयन बीयर 'भ
भी देखे जाते हैं. पार्क में बुद्ध
एक बड़ी मूर्ति भी है. प्रकृति



प स्थित गार्डन की छटा

ास की पहाड़ी दृश्यावली
कन करने आते हैं. पार्क
11 तक और छुट्टी के
8 से शाम 5 तक खुला

हाउस

क्कम के प्रथम
आफिसर क्लाउड व्हाइट
1932 में ब्रिटिश शैली
इट हाउस' रिज पर बना
मार्केट से 15 मिनट चल
हुंच जाते हैं. पास ही
नाम से प्रसिद्ध मुख्यमंत्री
निवास और पास ही
प्रतिमा है. जब रिज
नों से घिरी होती है, उस
अच्छी लगती है.

ांग मठ

के पास पैलेस परिसर के
लाखांग' मठ है जहां
रोह हुआ करते थे. आज
और लोसांग फेस्टिवल
ग्न मैदान में होते हैं

जिन में छाम नामक मुखौटा नृत्य होते हैं.

इंछे मठ

व्हाइट भवन से 1 किलोमीटर ऊपर 200 वर्ष पुराना 'इंछे मठ' घने वन के मध्य है, जहां से कंचनजंघा की चोटियां दिखाई देती हैं. मठ चीनी पैगोडा की शक्ल में है.

गणेश टाक

टीवी टावर के पास 6,500 फुट की ऊंचाई पर 'गणेश टाक' है, जहां गणेशजी का मंदिर है. नीचे गंगतोक शहर का खूबसूरत नजारा और पश्चिम दिशा में हिमाच्छादित पर्वत दिखाई देते हैं. इस स्थान के सामने की ओर 'हिमालयन जूलोजिकल पार्क' 205 हेक्टेयर भूमि पर है, जहां वन्य जीव देखे जा सकते हैं.

हनुमान टाक टेंपल

यह व्हाइट हाउस से 5 किलोमीटर नाथू ला हाइवे की ओर है. यहां पर्यटक प्राकृतिक दृश्यावलोकन के लिए आते हैं. नार्थ सिक्किम हाइवे

खानेपीने के प्रमुख स्थल

महात्मा गांधी मार्ग यहां का मुख्य बाजार व मार्ग है. अधिकतर होटल व जलपानगृह यहीं हैं. जैसे **ब्लू शीप, हाउस आफ बेंबू, खू-ची, ग्रीन, ब्लू पौपी, वुडलैंड, कुक्स इन, श्रीगणेश, मारवाड़ी भोजनालय** आदि. पी. एन. स्टेडियम रोड पर **होटल मयूर** का **शेपी** और **होटल तिब्बत** का **स्नोलायन**; टैक्सी स्टैंड पर **सिप-एन-बाइट**; नेशनल हाइवे पर **आर्चिड** हैं. इन में सिक्किमी, चाइनीज, तिब्बती, मंचूरियन, स्जेचवन, कांटीनेंटल, जैपनीज, भारतीय, शाकाहारी, मांसाहारी, दक्षिणी व्यंजन पसंद के अनुसार मिल जाते हैं.

खरीदारी के प्रमुख स्थल

गंगतोक में पर्यटक अपनी रुचि के अनुसार खरीदारी जरूर करता है. आप अपनी जेब को देख कर 20-25 रुपए से ले कर कई सौ रुपए तक की चीज खरीद सकते हैं. इन में मुख्य हैं हैंडीक्राफ्ट्स, कालीन, कंबल और पोशाकें, ज्वैलरी, चाय और इलायची, नक्काशीदार फर्नीचर, खूबसूरत पोशाकें, बुने हुए लेप्चा बैग, आकर्षक कालीन व दरी, बांस व लकड़ी की कलात्मक वस्तुएं, चांदीसोने, कीमती पत्थरों और काष्ठ के आभूषण पर्यटक का मन लुभा लेते हैं.

खरीदारी के लिए पर्यटकों को हैंडीक्राफ्ट एंड हैंडलूम डायरेक्टोरेट के बिक्री केंद्र एवं शोरूम (गांधी मार्ग, न्यू मार्केट चौराहा); तिब्बत रोड पर शंभू ज्वैलर्स और न्यू मार्केट पर पुत्रे राज शाक्य, आशा काजी शाक्य, बुद्धरत्न शाक्य, बाबू काजी शाक्य, सिल्वर क्वीन, शाक्य ज्वैलर्स और तिरवा ज्वैलर्स में जाना चाहिए. सिक्किम की चाय विश्वप्रसिद्ध है.



200 वर्ष पुराना इंछे मठ घने वनों के मध्य है, जहां से हिमालय की चोटियां दिखाई देती हैं.

पर 6 किलोमीटर दूर 'ताशी व्यू प्वाइंट' है. कंचनजंघा और सिनिओलचू पर्वत की हिममंडित शृंखलाओं से नेत्र बंध जाते हैं, मन वहां तक उड़ जाने को होता है. 'फूडाग' और 'ला ब्रांग' नामक बौद्ध मठ भी यहीं हैं. नगर में आर्चिडेरियम व सैंचुरी भी है.

आसपास के दर्शनीय स्थल

रूमटेक मठ

बौद्धकला का यह विश्वप्रसिद्ध मठ 24 किलोमीटर पर है. गंगतोक से 38 किलोमीटर दूर 6 प्रधान मठों में एक 'फोडोंग मठ' है और वहां से 4 किलोमीटर दूर अद्‌भुत वास्तुकला वाला 'लाब्रांग मठ' है. रूमटेक परिसर में 'नालंदा इंस्टीट्यूट फार हायर बुद्धिस्ट स्टडीज' है. नेहरू बाटेनिकल गार्डन यहां से केवल 1 किलोमीटर पर है

12,400 फुट की ऊंचाई पर गंगतोक से 35 किलोमीटर दूर 'चांगू लेक' की यात्रा में सुबह से शाम तक का समय लगता है. यह यात्रा अविस्मरणीय व अनुभवपूर्ण होती है चीन की सीमा पर नाथुला दर्रा यहां से 20 किलोमीटर पड़ता है. झील के ऊपर चांगू पर्वत है. झील के पास एक शिव मंदिर है. यहां से 20 किलोमीटर आगे 'मेनमीचो लेक' है.

गंगतोक से 100 किलोमीटर दूर 'चुंगथांग' है. यहां एक चट्टान पर चिह्न बने हैं जिन्हें बुद्ध धर्म वाले गुरु पद्मसंभव का मानते हैं, किंतु सिख लोग गुरुनानक का बताते हैं और उन्होंने यहां एक गुरुद्वारा बनाया है. यहीं से आगे 35 किलोमीटर और दूर 'युमथुंग हाट स्प्रिंग्स' है. इस घाटी का दृश्य स्विट्‌जरलैंड की घाटियों से बहुत मिलताजुलता है. यह स्थान समुद्रतल से 12,000 फुट ऊंचा है. प्रतिबंधित क्षेत्र होने से यहां परमिट ले कर आना होता है. यहां फारेस्ट रेस्ट हाउस और टूरिस्ट लाज में ठहरने की सुविधा है.

रंगित नदी पर रेशी के पास ग्यालसिंग से 25 किलोमीटर दूर 'फुरचाचू रेशी हाट स्प्रिंग्स' हैं जो औषधीय गुण रखते हैं. पास ही 'काडोसांग फू' की गुफा है. ग्यालसिंग टाउन से 6 किलोमीटर दूर 'पीमेयान्त्से मठ' का भव्य मठ न्यंगमाया मतावलंबियों का है. इसी के पास 17वीं शती के सिक्किम के द्वितीय चोग्याल की राजधानी रहा 'राब्दांतसे' है जिसे नेपालियों ने आक्रमण कर नष्ट कर दिया था और जिस के भग्नावशेष आज भी विद्यमान हैं.

पीमेयांत्से मठ के दूसरी वनाच्छादित पहाड़ी पर 'सांग चो मठ' है जो सिक्किम का सब पुराना मठ है. सिक्किम की च दिशाओं में चार गुफाएं भी हैं–उ में 'लारिंग विग्फू', दक्षिण में 'का सांगफू', पूर्व में 'पेफू' और पश्चि में 'देक्छेन फू'

पर्वतारोहण

पर्यटक अगर ट्रैकिंग क चाहते हैं तो सिक्किम में कई ट्रै स्थल हैं–ताशी व्यू प्वाइंटतिंजुरे योकसमजोंगी ट्रेक, फालुत मिंग च्यूभंजंग ट्रेक, दामथांग टेंडांग राबोंग्ला मेनम भालेडुंगा ट्रेक, ते मठ ट्रेक आदि. अत्यधिक ऊंचाई ट्रेक हैं–लाछेन–ग्रीन लेक थांगु–मुगुथांग–छोर्टेन–न्यीमाल नलेक ट्रेक तथा जाडांग–डोंक पास –छोलामु ट्रेक.

•एसटीडी कोड : 03

–संत कुमार टंडन '

कलकत्ता

पश्चिम बंगाल की राजधानी कलकत्ता पूर्वी भारत का प्रवेशद्वार कहा जाता है. सन 1690 में जाब चारनाक ने इसे ईस्ट कंपनी का व्यापारिक मुख्यालय बनाया था. यह महानगर अपने भीतर गौरवशाली सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनीतिक विरासत समेटे हुए है. हुगली नदी के किनारे बसा यह महानगर अब जुलूसों व बस्तियों का शहर नहीं रहा. शहर से हाकरों व ठेला रिकशा हटाने के अभियान से यहां वाहनों की रफ्तार तेज हुई है और इस का पर्यावरण सुधरा है.

ट्रामों व मेट्रो ट्रेनों से यात्रा काफी सुखद लगती है. महानगर में घूमनेफिरने का सब से अच्छा समय अक्तूबर से फरवरी के बीच है. सितंबरअक्तूबर में दीवाली, दुर्गापूजा के अवसर पर महानगर का सौंदर्य और भी बढ़ जाता है. पंडालों की बिजली सज्जा जहां मन मोह लेती है वहीं प्रतिमाओं व पंडालों को तत्कालीन राजनीतिक घटनाओं व संदर्भों के साथ जोड़ कर बनाने से कला प्रेमियों को अतिरिक्त आनंद आता है.

दर्शनीय स्थल

विक्टोरिया मेमोरियल

1921 में यह महारानी विक्टोरिया की याद में बनाया गया एक आलीशान स्मारक है. संगमरमर से निर्मित इस भवन के आसपास तालाब, वृक्ष और घास के मैदान हैं. यहां संग्रहालय व कलादीर्घा भी है. यहां प्रतिदिन शाम को ध्वनि व प्रकाश के कार्यक्रम भी देखे जा सकते हैं.

डलहौजी स्क्वायर

शहर के बीचोबीच स्थित यह स्थल बंगाल के 3 शहीद दिनेश, बादल और विनय की याद में बनाया गया है. यह बी.बी.डी. बाग भी कहलाता है. इस स्थल के एक ओर राजभवन, असेंबली हाउस, हाईकोर्ट तथा दूसरी ओर जनरल पोस्ट आफिस व अनेक व्यावसायिक प्रतिष्ठान हैं. उत्तर की ओर राइटर्स बिल्डिंग (सचिवालय) है.

भारतीय संग्रहालय

यह डलहौजी स्क्वायर से 2 किलोमीटर दूर है. 1878 में बनी यह इमारत इतालवी शैली का देश का सब से बड़ा संग्रहालय माना जाता है. इस में कला, मानव विकास विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान, जंतु विज्ञान, आर्थिक वनस्पति विज्ञान के 6 खंड हैं.

शहीद मीनार

48.16 मीटर ऊंची यह मीनार कलकत्ता मैदान में स्थित है. यह सर डेविड आक्टरलोनी की स्मृति में बनाई गई थी. सर डेविड ने 1812-1814 में नेपाल युद्ध के दौरान सेना का सफल नेतृत्व किया था. 1969 में इसे शहीद मीनार नाम दिया गया. रात्रि को यह मीनार बिजली की रोशनी से आकर्षक लगती है.

बिड़ला तारामंडल

यह भव्य तारामंडल लंदन के

डलहौजी स्कवायर शहर के बीचोबीच स्थित है.



ताराग्रह के समान बना है. इस से ग्रहों और सितारों के बारे में रोचक जानकारी दी जाती है. इस में एकसाथ 500 लोगों के बैठने की व्यवस्था है. यहां विभिन्न भाषाओं में कई शो होते हैं.

नेताजी म्यूजियम

यह लाला लाजपतराय सरानी में स्थित है. यहां नेताजी सुभाष चंद्र बोस से संबंधित कागज, चित्र व वस्तुएं प्रदर्शित की गई हैं. इस में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े चित्र भी देखे जा सकते हैं.

नेशनल लाइब्रेरी

यह एक पुराना भवन है. इस का मूल नाम बेलवेदरे हाउस है. ब्रिटिश वायसराय इसी भवन में ठहरते थे. इस पुस्तकालय में 10 लाख से ज्यादा किताबों का संग्रह है.

मारबल पैलेस

यहां ऐतिहासिक एवं कलात्मक वस्तुओं का दुर्लभ संग्रह देखा जा सकता है. पैलेस के पास खूबसूरत बाग है. यह मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट पर स्थित है.

चिड़ियाघर

यहां पशुपक्षियों और सांपों को देखा जा सकता है. यहां बच्चों

कलकत्ता कैसे जाएं?

वायु मार्ग

प्रमुख उड़ानें

कहां से	दिन	उड़ान संख्या	प्रस्थान	किराया
इंडियन एअरलाइंस				
अगरतला	1,2,3,5,6,7	आईसी 744	14.30	1,430 रु.
अहमदाबाद	2,4,6	आईसी 716	17.00	6,180 रु.
बंगलौर	दैनिक	आईसी 772	09.10	7,155 रु.
भुवनेश्वर	1,3,5	आईसी 778	08.15	2,270 रु.
चेन्नई	दैनिक	आईसी 766	19.00	6,060 रु.
दिल्ली	दैनिक	आईसी 401	07.00	5,345 रु.
	दैनिक	आईसी 264	18.45	5,345 रु.
गुवाहाटी	1,2,3,5,6	आईसी 230	12.00	1,970 रु.
हैदराबाद	1,3,5	आईसी 778	06.00	5,765 रु.
इंफाल	4,7	आईसी 714	11.45	2,325 रु.
जयपुर	3,5,7	आईसी 716	18.40	6,045 रु.
मुंबई	दैनिक	आईसी 675	06.10	6,180 रु.
	दैनिक	आईसी 274	16.30	6,180 रु.
	3,5,7	आईसी 716	15.20	6,180 रु.
नागपुर	2,4,6	आईसी 770	07.40	4,515 रु.
जेट एअरवेज				
नई दिल्ली	दैनिक	9 डब्ल्यू 901	05.55	5,340 रु.
मुंबई	दैनिक	9 डब्ल्यू 201	06.50	6,180 रु.
बंगलौर	दैनिक	9 डब्ल्यू 512	17.55	7,155 रु.
जोरहाट	3,5	9 डब्ल्यू 622	11.40	2,700 रु.
गुवाहाटी	1,2,4,6,7	9 डब्ल्यू 612	11.40	1,970 रु.

महारानी विक्टोरिया की याद में बनाया गया विक्टोरिया महल एक आलीशान स्मारक है.



ेल मार्ग

कलकत्ता के लिए दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, अमृतसर, जम्मू, आगरा, देहरादून दि देश के करीब सभी बड़े शहरों से रेल सेवाएं उपलब्ध हैं.

प्रमुख रेल सेवाएं

हां से	गाड़ी की संख्या व नाम	प्रस्थान	आगमन
दिल्ली	2302 कलकत्ताराजधानी एक्सप्रेस (वाया गया)	17.15	10.45
	2306 कलकत्ताराजधानी एक्सप्रेस (वाया पटना)	17.00	12.30
	2882/2304 नई दिल्ली हावड़ा पूर्वा एक्सप्रेस	16.30	06.15
लका	2312 कालकाहावड़ा मेल	23.30	06.45
रखपुर	5048 गोरखपुरहावड़ा पूर्वांचल एक्सप्रेस	10.15	04.15
ई	3004 मुंबईहावड़ा एक्सप्रेस	21.10	13.15
गरा	1160/1182 चंबल एक्सप्रेस	03.40	07.55
र	9305 शिप्रा एक्सप्रेस	19.25	07.55
मदाबाद	8033 अहमदाबादहावड़ा एक्सप्रेस	09.20	05.40
मूतवी	3074 जम्मूतवीहावड़ा हिमगिरी एक्सप्रेस	22.10	11.35
तसर	3006 अमृतसरहावड़ा मेल	18.30	07.35
	3050 अमृतसरहावड़ा एक्सप्रेस	17.45	15.30
ादून	3010 देहरादूनहावड़ादून एक्सप्रेस	20.30	07.00
ई	2842 कोरामंडल एक्सप्रेस	09.05	13.20
	6004 हावड़ा मेल	22.30	06.55
पति	8480 तिरुपतिहावड़ा एक्सप्रेस	09.45	04.15
नेश्वर	2421 राजधानी एक्सप्रेस	09.10	17.00

ड़क मार्ग

कलकत्ता सड़क मार्ग से भी देश के सभी महत्त्वपूर्ण शहरों से जुड़ा है.

प्रमुख नगरों से दूरी

रा–1,242 किलोमीटर	मुंबई–2,081 किलोमीटर
मदाबाद–2,006 किलोमीटर	देहरादून–1,626 किलोमीटर
हाबाद–799 किलोमीटर	दिल्ली–1,442 किलोमीटर
तसर–1,888 किलोमीटर	लखनऊ–963 किलोमीटर
ौर–1,883 किलोमीटर	चेन्नई–1,678 किलोमीटर
ल–1,456 किलोमीटर	तिरुपति–1,625 किलोमीटर
श्वर–480 किलोमीटर	

क छोटा चिड़ियाघर भी है. घर में दुर्लभ समुद्री मछलियां जा सकती हैं. यहां नजदीक ही वृक्षों का बाग भी है. यहां अनेक पेड़पौधे मौजूद हैं.

रवींद्र गैलरी

यहां ललित कला अकादमी स्थित है. रवींद्र शैली में रवींद्रनाथ टैगोर से संबंधित कागजात और चित्र प्रदर्शित किए गए हैं. कला के नमूने भी यहां देखे जा सकते हैं. यह सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रमुख स्थल है.

नेहरू बाल संग्रहालय

यहां विज्ञान की छोटीछोटी जानकारी देने वाली प्रदर्शनी लगी है. इस में कठपुतलियों व गुड्डेगुड़ियों के माध्यम से धार्मिक कथाएं चित्रित की गई हैं.

रवींद्र सरोवर

यह पिकनिक के लिए एक अच्छा स्थल हैं. यहां स्पोर्ट्स स्टेडियम, तैराकी का तालाब और जापानी बौद्ध मंदिर भी दर्शनीय हैं.

हावड़ा पुल (रवींद्र सेतु)

हुगली नदी पर यह पुल 270 फुट ऊंचे 2 खंभों पर टिका है. यह 1,500 फुट ऊंचा और 71 फुट चौड़ा है.

इस की निर्माण कला नायाब है. इस पर 8 वाहनों के आनेजाने का स्थान है. 2 फुटपाथ भी हैं.

विद्यासागर सेतु

हावड़ा पुल पर अत्यधिक यातायात के कारण हुगली नदी पर इस नए पुल को बनाया गया है. स्टील के 152 तारों से निर्मित इस पुल पर प्रतिदिन 85 हजार वाहन के आनेजाने की क्षमता है.

डायमंड हार्बर

प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर यह एक खूबसूरत पिकनिक स्थल है. यहां समीप ही गंगा नदी बहती है.

क्या खरीदें?

यहां से विभिन्न प्रकार की सजावटी वस्तुएं जैसे डोगरा शिल्प की मूर्तियां, तांत शिल्प के वस्त्र आदि खरीदे जा सकते हैं.

पार्क स्ट्रीट, न्यू मार्किट, चौरंगी बाजार, कालिन स्ट्रीट, हाग स्ट्रीट, काली घाट आदि स्थलों से खरीदारी की जा सकती है.

कहां ठहरें? — कलकत्ता

होटल	पता	फोन	श्रेणी
न्यू केनिलवर्थ इंटरनेशनल	1/2, लिटिल इसेल स्ट्रीट कलकत्ता 71	242-3403/2649	उत्तम
एअरपोर्ट अशोक	कलकत्ता एअरपोर्ट, कलकत्ता-52	552-9111	उत्तम
ओबेराय ग्रांड	15, जे.एल. नेहरू रोड, कलकत्ता 13	249-2323	उत्तम
ताज बंगाल	34 बी, वेलवेडियर रोड, कलकत्ता-27	248-3939	उत्तम
हिंदुस्तान इंटरनेशनल	235/1, एजसी बोस रोड, कलकत्ता-20	247-2616	उत्तम
पार्क होटल	17, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-16	249-7336	उत्तम
ग्रेट ईस्टर्न	1/2/3, ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीट, कलकत्ता-69	248-2311	उत्तम
क्वालिटी इन पियरलेस होटल	12, जे.एल. नेहरू रोड, कलकत्ता 13	248-6650	उत्तम
होटल रातदिन	21 बी, लाउडन स्ट्रीट कलकत्ता 16	247-5240	मध्यम
फेयरलान होटल	13 ए, सुद्दर स्ट्रीट, कलकत्ता 16	245-1510	मध्यम
लि इन होटल	14, सुद्दर स्ट्रीट, कलकत्ता-16	249-1875	मध्यम

धर्मशालाएं

श्याम देव भक्त धर्मशाला	150, एम.जी. रोड, कलकत्ता-7
सेठ जमुना दास धर्मशाला	164, सी.आर. एवेन्यू, कलकत्ता-7
बिन्नाजी धर्मशाला	81, पथुरिया घाट स्ट्रीट, कलकत्ता-5

तापमान

यहां का अधिकतम तापमान गरमियों में 41.7 डिगरी सेंटीग्रेड तथा सर्दियों में न्यूनतम 9.6 डिगरी सेंटीग्रेड रहता है.

- *एसटीडी कोड : 033*

दार्जिलिंग

दार्जिलिंग सपनों से ज्यादा खूबसूरत और मनमोहक है. प्राकृतिक वैभव का भंडार समेटे हुए यह पर्वत नगरी स्वास्थ्यवर्धक जलवायु देती है, कितनों को तो ट्वाय ट्रेन की यात्रा का अवसर दार्जिलिंग आने पर ही मिलता है. यह मीटर गेज ट्रेन सिलीगुड़ी से चलती है और 83 किलोमीटर की यात्रा 6-7 घंटे में पूरी करती है. ट्रेन बहुत धीमी गति से घने जंगलों, झरनों, चाय बागानों और बाजारों के बीच से गुजरती है और न भूलने वाली यादें संजोती है.

दार्जिलिंग साल भर ठंडा रहता है. पर्यटन के लिए ग्रीष्मकाल सर्वोत्तम रहता है. इस समय यहां भीड़ अधिक रहती है, इसलिए होटलों में अग्रिम आरक्षण करा लेना चाहिए.

दर्शनीय स्थल

आबजर्वेटरी हिल

कंचनजंघा की खूबसूरत चोटियों को यहीं से देखा जा सकता है. यहां एक शिव मंदिर और बौद्ध मठ भी है. तफरीह के लिए चौरास्ता बढ़िया जगह है. यहीं एक पार्क है. भ्रमण के लिए किराए पर खच्चर मिलते हैं. यह स्थान 'दार्जिलिंग का हृदय' कहलाता है.

टाइगर हिल

11 किलोमीटर दूर टाइगर हिल तक पहुंचने के लिए सुबहसुबह अंधेरे में ही चल देना चाहिए. क्योंकि कंचनजंघा की चोटियों पर सूर्य की सुनहरी किरणें देखने लायक होती हैं. ऐसा लगता है मानो प्रकृति नृत्य कर रही हो.

घूम मठ

8 किलोमीटर दूरी पर स्थित यह एक बौद्ध मठ है. इस में मैत्रेयी बुद्ध की एक भव्य मूर्ति है. यहां बौद्ध धर्म के कीमती हस्तलेख भी सुरक्षित रखे हैं.

पद्मजा नायडू प्राणी उद्यान

शहर से 2 किलोमीटर दूर इस प्राणी उद्यान में अनेक दुर्लभ पशुपक्षियों को देखा जा सकता है. स्नो लेओपार्ड, लाल पांडा, स्नो याक, साइबेरियन बाघ, ग्रेट ग्रे बर्ड के अलावा रंगबिरंगे पक्षियों को भी देखा जा सकता है. इस में जाने के लिए टिकट शुल्क लिया जाता है. इसी टिकट के आधार पर इस उद्यान के निकट स्थित पर्वतारोहण संस्थान और नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम में प्रवेश दिया जाता है.

हैप्पी वैली टी एस्टेट

यहां चाय बनाने की प्रक्रिया को देखा जा सकता है. इस चाय बागान में प्रवेश की अनुमति यहां के किसी अधिकारी से ले सकते हैं. इस में घूमना आनंददायक लगेगा. यह शहर से 3 किलोमीटर दूर है.

बताशिया लूप

5 किलोमीटर दूर स्थित यहा रेलवे इंजीनियरिंग की कारीगरी का उत्कृष्ट कमाल देखा जा सकता है. यहां प्रवेश शुल्क देना होता है. यहा



जिलिंग एक खूबसूरत और मोहक पर्यटन स्थल है.

आप स्थानीय औरतों द्वारा बनाए बैग, पर्स आदि सस्ती कीमत पर ीद सकते हैं.

ूरल हिस्ट्री म्यूजियम

इस में दार्जिलिंग क्षेत्र एवं पूर्वी ालय क्षेत्र में पाए जाने वाले ड़ों पशुपक्षियों के नमूने देखे जा ते हैं.

यहां अनेक किस्म की लियों के नमूने भी हैं. इस अनूठे ालय में अनेक प्रकार की चट्टानों अयस्कों के नमूने सजा कर रखे हैं.

टिया बस्ती मोनेस्ट्री

यह एक ऐतिहासिक बौद्ध मठ ूमने की दृष्टि से यह एक ूरत स्थान है. यहां से कंचनजंघा श्रृंखला की खूबसूरती निहारी कती है. इस वजह से भी यह और मनोहारी लगता है.

ड बोटेनिकल गार्डन

इस में सैकड़ों किस्म के पेड़पौधे, फूल, आर्किड आदि का दुर्लभ और आकर्षक संग्रह है. इस का नाम लार्ड विलियम लायड के नाम पर रखा गया है. यहां हरितगृह भी दर्शनीय है.

दार्जिलिंग कैसे जाएं?

वायु मार्ग

हवाई जहाज से बागडोगरा तक जा सकते हैं. बागडोगरा से दार्जिलिंग 10 कि.मी. दूर है. यहां से बस या टैक्सी द्वारा दार्जिलिंग पहुंचा जा सकता है.

प्रमुख उड़ानें

कहां से	*दिन*	*उड़ान संख्या*	*प्रस्थान*	*किराया*
इंडियन एअरलाइंस				
कलकत्ता	1,2,3,5	आईसी 721	13.50	2,405 रु.
दिल्ली	1,3,5	आईसी 879	10.00	3,530 रु.
जेट एअरवेज				
दिल्ली	प्रतिदिन	9 डब्ल्यू 602	14.30	5,530 रु.

रेल मार्ग

भारत के किसी भी कोने से पर्यटक सिलीगुड़ी पहुंच सकते हैं. सिलीगुड़ी से खिलौना गाड़ी द्वारा दार्जिलिंग पहुंचा जा सकता है.

श्रबरी

यहां से सिंगला घाटी और

कंचनजंघा की सुंदरता को देखा जा सकता है.

चौरास्ता

दार्जिलिंग की दो प्रमुख सड़कें नेहरू रोड और माल रोड यहां आपस में मिलती हैं. यहां हिंदू और बौद्धों के कई दर्शनीय मंदिर हैं. इस स्थान से कंचनजंघा की बर्फ से ढकी चोटियों को देखा जा सकता है. यहां से टट्टू की सवारी की जा सकती है. यहां देशीविदेशी पर्यटकों की भीड़ रहती है.

दार्जिलिंग रंगीन वैली पैसेंजर रोपवे

इस देश का पहला और अपनी तरह का अनूठा रोपवे माना जाता है. नार्थ पाइंट (7,000 फुट) से सिंगला बाजार (800 फुट) तक की 8 किलोमीटर की इस यात्रा में 45 मिनट लगते हैं. रोपवे की यात्रा पर्यटकों के लिए एक रोमांचक अनुभव है. इस के लिए आरक्षण पहले करवा लें क्योंकि इस में सीमित सीटें हैं.

अन्य निकटवर्ती स्थल

कलिमपांग

दार्जिलिंग से यहां पहुंचने में 3 घंटे लगते हैं और सिलीगुड़ी (68 किलोमीटर) से भी इतना ही समय लगता है. हवाई अड्डा सिलीगुड़ी का 80 किलोमीटर पड़ता है. देवोलो पहाड़ियां, ग्राहम्स होम, थारपा चेलिंग बौद्ध मठ, यौंग्सा मठ, डूरलिंग डोरा, मंगल धाम आदि प्राकृतिक सौंदर्य के साथ यहां की संस्कृति की धरोहर सुरक्षित रखते हैं. बस, टैक्सी, निजी कार से पहुंच कर यहां किसी होटल या राज्य पर्यटक लाज में ठहर सकते हैं.

मिरिक

सिलीगुड़ी से 52 किलोमीटर पर यह स्थान इलायची, चाय और संतरे के बागों से भरा हुआ है. खूबसूरत पहाड़ियों और घाटियों के सौंदर्य के बीच यहां पर्यटक सालभर आते हैं. मिरिक सड़क मार्ग से दार्जिलिंग से जुड़ा हुआ है. हवाई अड्डा बागडोगरा 55 किलोमीटर दूर है.

सड़क मार्ग

सड़क मार्ग से पश्चिम बंगाल व पड़ोसी राज्यों के कई नगरों से सिलीगुड़ी के लिए सीधी बस सेवाएं हैं. सिलीगुड़ी से दार्जिलिंग के लिए बस या टैक्सी मिल जाती है.

प्रमुख नगरों से दूरी

कलकत्ता–654 किलोमीटर	दिल्ली–2,095 किलोमीटर
सिलीगुड़ी–82 किलोमीटर	गुवाहाटी–513 किलोमीटर

कब जाएं?

वर्षा और शीतकाल को छोड़ कर अप्रैल से जून तक का समय यात्रा के लिए उपयुक्त है. सितंबर से नवंबर तक का मौसम भी ठीक रहता है. पर्यटक ऊनी कपड़े अवश्य साथ रखें.

खरीदारी के प्रमुख स्थल

लकड़ी, धातु, पत्थर की कलात्मक वस्तुएं, कालीन, ऊन, काठ और चमड़े की खूबसूरत वस्तुएं, बेग, टोप, स्वेटर, हस्तशिल्प की वस्तुएं दार्जिलिंग में खरीदी जा सकती हैं. पर्यटकों को खरीदारी के लिए चौरास्ता व माल रोड की दुकानें, तिब्बती रिफ्यूजी सेल्फ हेल्प सेंटर, मंजूषा बंगाल एंपोरियम आदि में जाना चाहिए. स्थानीय महिलाओं के बनाए सामान सस्ते मिल जाते हैं.

कहां ठहरें? दार्जिलिंग

होटल	पता	फोन
चांमलर	51 डा. एस.एम. दास रोड	2935
नीलकमल	15 एच.डी. लामा रोड	54837
विंडामेयर	आब्जर्वेटरी हिल	54041-2
सिनक्लेयर	18/1 गांधी रोड	54355
विलेव्यू	रेलवे स्टेशन के पास	54130
मोहित	एच.डी. लामा रोड	[illegible]
अप्सरा	61 लेडेन ला रोड	[illegible]
दार्जिलिंग टूरिस्ट लाज	माल रोड	2611
दार्जिलिंग यूथ हास्टल	जाकिर हुसैन रोड	[illegible]
टूरिस्ट लाज	भानु सरानी	54411-2
डीजीएचसी टूरिज्म	डा. एस.के. पाल रोड	[illegible]

अन्य आवश्यक जानकारी पर्यटन निदेशक (फोन 54214) तथा टूरिस्ट ब्यूरा (राज्य-फोन 54050) से प्राप्त करें.

स्थानीय टूर

पर्यटक बसें टूरिस्ट ब्यूरो और गोरखा हिल काउंसिल द्वारा चलाई जाती हैं. इन के द्वारा स्थानीय और आसपास के लिए निर्धारित कुछ टूर भी हैं. माल रोड पर इन के कार्यालय से फोन 54214 पर संपर्क किया जा सकता है. दार्जिलिंग मोटर सर्विस, फोन 52101, हिमालय ट्रेवल्स, फोन 52254, ग्रीनलैंड ट्रेवल्स, [illegible]834 और गोरखा ट्रेवल्स, फोन 52975 भी टूर आयोजित करते हैं.



...लिमपोंग से कंचनजंघा की चोटी
...फ नजर आती है.

मिरिक में मजा पैदल घूमने का ... सुमेंदु झील के किनारे घूमना, ...कनिक करना, झील में मछली ...कड़ना और नौका विहार आनंद देता है. रमीते दारा व देवसी दारा मैदानों, हिमाच्छादित चोटियों और सूर्योदय व सूर्यास्त का नजारा देखने के लिए प्रसिद्ध हैं.

• *एसटीडी कोड : 0354*

–संत कुमार टंडन 'रसिक'

भुवनेश्वर

...ड़ीसा अथवा उत्कल, जो प्राचीन काल में कलिंग के नाम से ...ख्यात था, मंदिरों और झीलों का ...श माना जाता है. कहा जाता है, ...ं पहले 7 हजार से ज्यादा मंदिर ... अब इन की संख्या 500 रह ... है. इन मंदिरों में उच्च कोटि ... वास्तुकला का निर्वाह किया ...ा है.

तीसरी शताब्दी में मौर्य सम्राट ...ोक और कलिंग के राजा के ...व लोमहर्षक युद्ध हुआ था. इस ... में अशोक विजयी हुए, किंतु ... के परिणाम रक्तपात और ...संहार को देख कर उन्हें युद्ध और ...ा से विरक्ति हो गई. उन्होंने बौद्ध ... ग्रहण कर लिया.

उड़ीसा की राजधानी पहले ...क थी. 1950 ई. में भुवनेश्वर ...राजधानी बना दिया गया. संगीत, ...त्य और कला की दृष्टि से इस नगर का विशेष महत्त्व तो है ही, यह देश का एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र भी है.

दर्शनीय स्थल

लिंगराज मंदिर

चारों ओर से ऊंचीऊंची दीवारों से घिरा लिंगराज उड़ीसा का प्रमुख मंदिर है. 11वीं सदी की स्थापत्य कला का यह उत्कृष्ट नमूना है. इस मंदिर के तीन भाग हैं. प्रत्येक भाग में एकएक मंदिर है. मुख्य मंदिर के दक्षिणी भाग में जो मंदिर है, उस में गणेश की, पिछले भाग के मंदिर में पार्वती और उत्तरी भाग के मंदिर में कार्तिकेय की प्रतिमा है. लिंगराज मंदिर के प्रवेशद्वार पर गणेश मंदिर, आगे नंदी स्तंभ और उस के बाद मुख्य मंदिर का भोगमंडप है.

लिंगराज मंदिर में शिला में बुदबुदा कर उठे हुए अंकुर वाले भागों को बुदबुदलिंग कहा जाता है. मंदिर के अंदर ग्रेनाइट पत्थर से निर्मित विशाल शिवलिंग है.

लिंगराज मंदिर को भुवनेश्वर मंदिर भी कहा जाता है. इस की बाहरी दीवारों पर की गई नक्काशी और कलात्मक मूर्तियां कला की दृष्टि से भी दर्शनीय हैं. मीलों दूर से इस मंदिर का शिखर झलकता है.



...कानन स्थित सरीसृप उद्यान
...ी रोमांचकारी है.

बिंदुसागर झील

लिंगराज मंदिर के उत्तर में 1,300 फुट लंबी और 700 फुट चौड़ी यह भुवनेश्वर की बहुत ही खूबसूरत और आकर्षक झील है. इस के चारों ओर लगे पत्थर इस की सुंदरता बढ़ा देते हैं. यहां से आसपास का दृश्य बड़ा मनोरम लगता है.

संग्रहालय और आर्ट गैलरी

गौतम नगर के संग्रहालय में ऐतिहासिक वस्तुएं उड़ीसा के प्राचीन इतिहास पर प्रकाश डालती हैं. दर्शकों के लिए सोमवार छोड़ कर यह प्रतिदिन 10 से 4 बजे तक खुला रहता है.

सेक्रेटेरिएट रोड पर स्थित हैंडीक्राफ्ट संग्रहालय भी दर्शनीय है. यह रविवार को छोड़ कर प्रतिदिन 10 बजे से 5 बजे तक खुला रहता है.

खंडगिरि एवं उदयगिरि की गुफाएं

भुवनेश्वर से 5 किलोमीटर दूर 135 फुट ऊंची खंडगिरि और 118 फुट ऊंची उदयगिरि पहाड़ियों में हजारों वर्ष पुरानी गुफाएं हैं. उदयगिरि की बौद्ध गुफाएं और खंडगिरि का पारसनाथ मंदिर तथा गुलाबी जैन मंदिर दर्शनीय हैं. यहां एक ही पत्थर को काट कर 24 जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएं बनाई गई हैं. उदयगिरि की कई गुफाओं के पास आंगन, बरामदे और कमरे भी हैं. उदयगिरि की बौद्ध गुफाओं, खासकर रानी गुफा, की नक्काशी बहुत ही सुंदर है. गुफाओं तक जाने के लिए सीढ़ियों के अलावा ढलवां रास्ता भी है. कहा जाता है कि कलिंग के राजा ने युद्ध में परास्त होने के बाद दोनों पहाड़ियों के आरपार भूमिगत रास्ता बनवाया था

नंदन कानन

भुवनेश्वर से 25 किलोमीटर दूर 400 हेक्टेयर में फैले नंदन कानन में वन्य प्राणियों एवं तरहतरह के पेड़पौधों के अलावा उद्यान और चिड़ियाघर को विभाजित करने वाली एक सुंदर झील भी है. बंद गाड़ी में बैठ कर बाघों को खुले घूमते हुए देखा जा सकता है. 10 बजे दिन से यह नंदन कानन जाने के लिए खुलती है. यह क्षेत्र सफेद बाघों और अन्य जानवरों की नस्लें तैयार करने के लिए विख्यात है.

भुवनेश्वर

कैसे जाएं?

वायु मार्ग

भुवनेश्वर के लिए दिल्ली, कलकत्ता, मुंबई, विशाखापट्टनम से इंडियन एअरलाइंस की उड़ानें उपलब्ध हैं.

प्रमुख उड़ानें

कहां से	दिन	उड़ान संख्या	प्रस्थान	किराया
इंडियन एअरलाइंस				
कलकत्ता	1,3,5	आईसी 777	18.15	2,270 रु
	2,4,6	आईसी 966	10.15	2,270 रु
दिल्ली	प्रतिदिन	आईसी 877	10.40	5,810 रु
मुंबई	1,3,5,7	सीडी 141	11.00	6,560 रु
विशाखापट्टनम	1,3,5,7	सीडी 141	13.15	3,025 रु

रेल मार्ग

भुवनेश्वर कलकत्ता, चेन्नई, पुरी, सिकंदराबाद, तिरुपति, दिल्ली, मुंबई, कोचीन, त्रिवेंद्रम आदि शहरों से रेलमार्ग द्वारा जुड़ा है.

प्रमुख रेल सेवाएं

भुवनेश्वर हावड़ा, गुवाहाटी, कोचीन, पटना, दिल्ली, मुंबई आदि नगरों से रेलमार्ग द्वारा सीधा जुड़ा हुआ है.

कहां से	गाड़ी की संख्या व नाम	प्रस्थान	आगमन
हावड़ा	2841 कोरोमंडल एक्सप्रेस	14.00	21.18
	8045 ईस्टकोस्ट एक्सप्रेस	10.15	19.25
	6003 मद्रास मेल	20.15	04.10
	2821 हावड़ाभुवनेश्वर एक्सप्रेस	06.15	13.35
	8079 हावड़ातिरुपति एक्सप्रेस	23.30	10.20
गुवाहाटी	5624 गुवाहाटीबंगलौर एक्सप्रेस	05.00	12.54
	6322 गुवाहाटीत्रिवेंद्रम एक्सप्रेस	05.00	12.54
कोचीन	5623 कोचीनगुवाहाटी एक्सप्रेस	16.40	00.40
पटना	6310 पटनाकोचीन एक्सप्रेस	13.10	6.25
दिल्ली	2422 राजधानी एक्सप्रेस (1, 5)	17.15	18.30
	2816 नई दिल्लीपुरी एक्सप्रेस	06.35	12.25
हजरत निजामुद्दीन	8478 कलिंगउत्कल एक्सप्रेस	12.50	08.10
मुंबई	1020 कोणार्क एक्सप्रेस	15.00	14.00

धौलीगिरि एवं शांति स्तूप

भुवनेश्वर से 10 किलोमीटर



रों वर्ष पुरानी खंडगिरि गुफाएं ने योग्य हैं.

धौलीगिरि पर्वत पर स्थित शांति के चारों ओर स्थित बुद्ध की प्रतिमा है, जो भव्यता और बौद्ध रा की शिल्पकला की दृष्टि से नीय है. यही वह स्थल है जहां ग युद्ध में विजयी होने के बाद ट अशोक को हिंसा से विरक्ति ई थी और उन का हृदय परिवर्तन था. शांति स्तूप के नीचे हरेभरे को देख कर मन प्रसन्न हो है.

अन्य दर्शनीय स्थल

भुवनेश्वर से 31 किलोमीटर दूर हटकेश्वर मंदिर के पास अत्रि नामक गरम झरना दर्शनीय है. भुवनेश्वर से 110 किलोमीटर दूर नीलिका झील तथा भंज राजाओं की प्राचीन राजधानी खिचिड़ में राजाओं की आराध्या देवी किचकेश्वरी का स्थान भी दर्शनीय है.

पर्यटन कार्यालय

पंथ निवास, फोन-432515/432314. यहां से पर्यटन संबंधी हर प्रकार की जानकारी प्राप्त की जा सकती है.

कंडक्टिड टूअर्स

स्थानीय स्थलों के भ्रमण के लिए उड़ीसा पर्यटन विकास निगम की बसें प्रतिदिन खंडगिरि, उदयगिरि, गुफाएं, नंदन कानन, संग्रहालय और धौलीगिरि के लिए चलती हैं. भुवनेश्वर से कोणार्क, पुरी एवं वापसी का कार्यक्रम भी संचालित किया जाता है. लेविस रोड से बसें किराए पर उपलब्ध रहती हैं.

टिकट एवं अन्य जानकारियों के लिए पंथ निवास, लेविस रोड, फोन-55515 से संपर्क किया जा सकता है. कोच और मिनी कोच का किराया प्रति किलोमीटर या प्रति घंटा के आधार पर निर्धारित होता है. इस के अलावा टूरिस्ट टैक्सियों, आटोरिकशा आदि वाहन हमेशा उपलब्ध रहते हैं.

क्या खरीदें?

भुवनेश्वर में हैंडीक्राफ्ट (हस्तकला) की वस्तुएं, जैसे रेशमीसूती हैंडलूम की साड़ियां, साजसज्जा के लिए पत्थरशिल्प की

ड़क मार्ग

भुवनेश्वर राष्ट्रीय राजमार्ग से जुड़ा हुआ है. उड़ीसा परिवहन निगम की सेवाएं प्रतिदिन कलकत्ता, रांची, रायपुर, दुर्गापुर, विशाखापट्टनम और गर से उपलब्ध रहती हैं.

प्रमुख नगरों से दूरी

ा–1,556 किलोमीटर	कलकत्ता–480 किलोमीटर
दाबाद–1,829 किलोमीटर	चंडीगढ़–1,994 किलोमीटर
र–1,913 किलोमीटर	दिल्ली–1,745 किलोमीटर
ाबाद–1,102 किलोमीटर	गुवाहाटी–1,631 किलोमीटर
–1,691 किलोमीटर	शिमला–2,113 किलोमीटर

कहां ठहरें? — भुवनेश्वर

भुवनेश्वर में ठहरने के लिए अनेक होटल, धर्मशालाएं और गेस्ट हाउस उपलब्ध हैं. कुछ प्रमुख होटलों और धर्मशालाओं का विवरण निम्न प्रकार है :

होटल	पता	फोन
प्राची	जनपथ	52689,52728
कलिंग अशोक	गौतम नगर	751014
अनारकली प्रा.लि.	110, खारवेल नगर यूनिट III	54031
कोणार्क	गौतम नगर	533330, 54330
जनपथ	26, बापूजी नगर	–
नूपुर	–	54254
न्यू केनिलवर्थ	86/ए-1 गौतम नगर	56116
पुष्पक	कल्पना एस्क्वेयर	50545
राजमहल	बापूजी नगर	–
सफारी इंटरनेशनल	721, रसूलगढ़	–
राजपति	77, बुद्ध नगर	51893
स्वास्ति	103, जनपथ	404178
वींस इन	बापूजी नगर	–
पूनम	–	53322
भुवनेश्वर	रेलवे स्टेशन के पास	–
कैमिनो लाज	बापूजी नगर	–
सर्किट हाउस	–	–
सिटी गेस्ट हाउस	–	53046
ओ.टी.डी.सी	पंथ निवास	54515
स्टेट गेस्ट हाउस		–

धर्मशालाएं

राय बहादुर हजारीमल हरगोविंद राय (बिंदुसागर के पास) मथुरादास डालमियां, दुदवां वाले की धर्मशाला, भिवानी वाले की धर्मशाला.

नक्काशीदार चीजें, पीतल निर्मित सजावटी सामान, कलात्मक पेंटिंग्स आदि खरीदे जा सकते हैं.

कब जाएं?

बरसात छोड़ कर सभी मौसम में भुवनेश्वर का भ्रमण किया जा सकता है. सर्दियों में यहां का तापमान 26 डिग्री सेंटीग्रेड अधिकतम तथा न्यूनतम 10.5 डिग्री सेंटीग्रेड और गर्मियों में अधिकतम 40.5 और न्यूनतम 26.6 डिग्री सेंटीग्रेड रहता है.

● *एसटीडी कोड : 0674*

–नारायण भक्त

कोणार्क

भुवनेश्वर से 65 किलोमीटर दूर कोणार्क 13वीं शताब्दी के सूर्य मंदिर के लिए विख्यात है. पूर्वी उड़ीसा के सागर तट पर स्थित यह सूर्य मंदिर पिछले 700 [illegible] अपने कलात्मक सौंदर्य की वजह से चर्चित रहा है. यहां जाने का कार्यक्रम पुरी और भुवनेश्वर भ्रमण के दौरान ही बनाया जा सकता है.

कोणार्क में सूर्य मंदिर की शिल्प कला के साथ ही समुद्री तट की खूबसूरती का भी आनंद उठाया जा सकता है. तैरने के शौकीन पर्यटक समुद्र में तैर कर भरपूर आनंद ले सकते हैं.



कोणार्क का सूर्य मंदिर अपने कलात्मक वैभव की वजह से चर्चित है.

दर्शनीय स्थल

सूर्य मंदिर

सूर्य मंदिर प्राचीन ओडिसी स्थापत्य कला का अनोखा नमूना है. इस का निर्माण 13वीं शताब्दी में गंग राजवंश के राजा नरसिम्हा ने करवाया था. मंदिर को बनवाने में 12,000 कुशल कारीगर लगे, जिन्होंने 12 वर्ष में इस का निर्माण किया. यह मंदिर विशालकाय रथ की आकृति में निर्मित है. रथ के ऊपर सूर्य देवता हैं. इसे 7 घोड़ों द्वारा खींचा जा रहा है. रथ के 24 विशाल पहिए हैं. मंदिर का मुख्य आकर्षण पत्थरों को बारीकी से तराश कर बनाई गई अनेक आकृतियां और मूर्तियां हैं. चौकोर परकोटे से घिरे हुए इस मंदिर के 3 तरफ ऊंचेऊंचे प्रवेशद्वार हैं. पूरब दिशा में मुख्यद्वार है जिस के [illegible] सामने समुद्र तट से सूर्योदय [illegible] है.

मंदिर की बाह्य दीवारें [illegible]



, अप्सराओं और स्त्रीपुरुषों की सक्त प्रतिमाएं उत्कीर्ण की हुई

द्र तट

कोणार्क से 3 किलोमीटर नोरम समुद्र तट स्थित है. इसे र्क बीच भी कहा जाता है. यहां य और सूर्यास्त के समय समुद्र चती लहरों का आनंद उठाया कता है. पिकनिक के लिए भी र्वश्रेष्ठ जगह है.

ड़ालय

यहां पुरातात्त्विक महत्त्व की संगृहीत हैं. यहां मूर्तियों व सूर्य के ध्वंसित हिस्से के अवशेष हैं. कोणार्क की दुर्लभ कृतियां देखी जा सकती हैं.

खरीदें?

यहां साजसज्जा के लिए ल्प की वस्तुएं खरीदी जा हैं. इन में सीपियों की बनी छतरियां आदि प्रमुख हैं.

ान

यहां गरमियों में 40.5 डिगरी सेंटीग्रेड अधिकतम व 26.6 डिगरी सेंटीग्रेड न्यूनतम तथा सर्दियों में 26 डिगरी सेंटीग्रेड अधिकतम व 10.5 डिगरी सेंटीग्रेड न्यूनतम तापमान रहता है.

- **एसटीडी कोड : 06758**

पुरी

भारत के चार धामों में एक धाम है पुरी. पुरी में जगन्नाथ का प्राचीन मंदिर है, इसलिए इसे जगन्नाथ धाम भी कहा जाता है. पुरी को पहले दंतपुर कहा जाता था. ऐसी मान्यता है कि जगन्नाथ मंदिर के निर्माण के पूर्व यहीं पर भगवान बुद्ध का दांत रखा हुआ था. पुरी उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर से 62 किलोमीटर दूर है.

दर्शनीय स्थल

जगन्नाथ मंदिर

समुद्र से लगभग डेढ़ किलोमीटर दूर नीलगिरी पर्वत पर

कोणार्क

कैसे जाएं?

वायु मार्ग

यहां का निकटतम हवाई अड्डा भुवनेश्वर (65 किलोमीटर) है. आगे के लिए बस, टैक्सियां उपलब्ध हैं.

रेल मार्ग

नजदीकी रेलवे स्टेशन पुरी है. भुवनेश्वर से भी यहां के लिए वाहन उपलब्ध रहते हैं. पुरी रेलवे स्टेशन से काफी साधन मिल जाते हैं.

सड़क मार्ग

यह भुवनेश्वर, पुरी से सीधी बस सेवाओं से जुड़ा हुआ है. उड़ीसा पर्यटन विकास निगम यहां से कोणार्क के लिए भ्रमण टूर भी संचालित करता है.

प्रमुख नगरों से दूरी

भुवनेश्वर–65 किलोमीटर
पुरी–85 किलोमीटर
पटना–966 किलोमीटर
कलकत्ता–545 किलोमीटर

स्थित 665 फुट लंबे और इतने ही चौड़े घेरे में, 22 फुट ऊंची दीवारों के बीच जगन्नाथ का भव्य मंदिर स्थित है. मंदिर के सिंहद्वार तक जाने वाली 45 फुट चौड़ी सड़क, पर्यटकों एवं तीर्थयात्रियों से हमेशा भरी रहती है. सिंहद्वार पर लगे बाजार में सूखे भात का महाप्रसाद, तालपत्र, बेंत के बने छातों, छतरियां, काष्ठ प्रतिमाएं, भोजपत्र की कलाकृतियां और सीपी तथा शंख से बनी शृंगार व साजसज्जा की वस्तुएं उपलब्ध रहती हैं. मंदिर की दीवार में हर दिशा में एक फाटक बना हुआ है. पश्चिम में 16 फुट ऊंची रत्नवेदी पर सुदर्शन चक्र रखा हुआ है.

मंदिर में जगन्नाथ (कृष्ण), उन के बड़े भाई बलराम (बलभद्र) और कृष्ण की बहन सुभद्रा की उड़िया शैली में बनी काष्ठ प्रतिमाएं हैं. हर 12वें वर्ष इन मूर्तियों और उन के कलेवर को बदल दिया जाता है. मुख्य मंदिर के आगे जगमोहन नृत्यशाला एवं भोग मंडप है. यहां प्रतिदिन एक हजार से अधिक व्यक्तियों के लिए भोजन बनता है. कहते हैं दर्शनार्थियों के लिए यह भारत का सब से बड़ा रसोईघर है. मंदिर का निर्माण मेटामार्फिक खोडोलाइट नामक काले पत्थरों को तराश कर किया गया है. यह मंदिर शिल्पकला और 12वीं सदी की स्थापत्य कला का अनुपम नमूना है. मंदिर की बाहरी दीवारों पर स्त्रीपुरुष की विभिन्न मुद्राओं का अंकन उत्कृष्ट मूर्तिकला का उदाहरण है.

रथयात्रा

पुरी में रथयात्रा का उत्सव आषाढ़ (जूनजुलाई) में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है.

समुद्रतट

पुरी का समुद्रतट विश्व के खूबसूरत, मनोरम और सुरम्य तटों में एक माना जाता है. यहां रेतीले तट पर जाड़े के दिनों में धूपसेवन तथा गरमी के दिनों में स्नान बड़ा सुखद लगता है. चांदनी रात में ऊंचीऊंची उठतीगिरती लहरों को देखते रहने में विशेष आनंद की अनुभूति होती है.

पुरी

कैसे जाएं?

पुरी का निकटतम हवाई अड्डा भुवनेश्वर (60 किलोमीटर दूर) है. हवाई सेवा से जाने के इच्छुक पर्यटक भुवनेश्वर हो कर जा सकते हैं. कलकत्ता, भुवनेश्वर, कोणार्क तथा अन्य स्थानों से पुरी के लिए नियमित बसें मिलती हैं. भुवनेश्वर से पुरी के लिए बसें, टैक्सियां हमेशा उपलब्ध रहती हैं. स्थानीय भ्रमण के लिए आटोरिक्शा, साइकिल रिक्शा और सिटी बसों के अलावा उड़ीसा पर्यटन विकास निगम की कोच एवं मिनी बसें भी लेविस रोड से किराए पर मिलती हैं.

प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	गाड़ी की संख्या व नाम	प्रस्थान	आगमन
हावड़ा	8007 हावड़ापुरी एक्सप्रेस	22.00	08.20
	8409 श्रीगंगानाथ एक्सप्रेस	19.00	06.05
हजरत निजामुद्दीन	8478 कलिंगउत्कल एक्सप्रेस	12.50	10.55
नई दिल्ली	2802 नई दिल्लपुरीपुरुषोत्तम एक्सप्रेस	22.35	19.10
अहमदाबाद	8404 अहमादाबादपुरी एक्सप्रेस	18.00	16.15
पटना	8450 पटनापुरी एक्सप्रेस	9.00	13.00
सिकंदराबाद	2714 सतवाहन एक्सप्रेस	16.45	16.15

कहां ठहरें? पुरी

होटल	पता	फोन
प्राची	स्वर्गद्वार	22638
नीलांचल अशोक	राजभवन के पास	23651
पुरी	बीच रोड	22114
सागरिका	बीच रोड	24036
तोशाली सेंड्स	कोणार्क मेरिन ड्राइव	22888
सोनाली	सी बीच	23545
विजय इंटरनेशनल	चक्रतीर्थ रोड	22702
होलीडे रिसोर्ट	सैंडी विलेज, चक्रतीर्थ रोड	22440
पंथ निवास	स्वर्गद्वार के पास	22507
सरकारी निवास	पंथ निवास	22562
ओ.टी.डी.सी.	निरीक्षण बंगला	22740

धर्मशालाएं

तनसुख राय गनपत राय, डोल मंडपशाही, खेमका चूरू वाले की धर्मशाला, रामचंद्र गोयनका धर्मशाला, धनजी मूलजी धर्मशाला, [illegible], भारत सेवाश्रम संघ, देवी प्रसाद दुधवा वाले की धर्मशाला, कन्हैयालाल बंगला, बंगला यात्री निवास आदि.

प्रमुख नगरों से दूरी

भुवनेश्वर - 62 किलोमीटर, कलकत्ता - 541 किलोमीटर, मद्रास - 1,285 किलोमीटर, कोणार्क - 85 किलोमीटर



...का झील में नौका विहार का ...द लिया जा सकता है.

...द का गर्जन दूर से ही सुनाई पड़ता ...मुद्र के किनारे कई होटल और ... हाउस हैं.

...ा बालू के मैदान

पुरी से 8 किलोमीटर दूर ... बालू के मैदान खेल और विश्राम ...लए प्रसिद्ध हैं. उसी के पास कवि ... देशभक्त गोपबंधु का स्मारक ...यहीं पर कृष्ण का बालसखा ..., 25 किलोमीटर दूर अमरनाथ ...बलिहर चंद्री की मूर्तियां दर्शनीय

...का झील

पुरी के दक्षिणपश्चिम में ...का झील में नौका विहार का ... लिया जा सकता है. 1,100 ...ल में फैली यह झील भारत की ...से बड़ी झील है. इसे हनीमून, ...लैंड और ब्रेकफास्ट आइसलैंड ...कहते हैं. यहां लोग मछलियां ...ने और पिकनिक मनाने भी ...हैं.

...घाट

भुवनेश्वर से 7 किलोमीटर दूर इस समुद्रतट पर भी लोग पिकनिक मनाने आते हैं. यहां हिरनों और रंगबिरंगे पक्षियों को देखना बहुत अच्छा अच्छा लगता है.

प्राकृतिक सुषमा

पुरी में सर्वत्र प्राकृतिक सुषमा के दर्शन होते हैं. रेतीले समुद्र तट, समुद्र की उठतीगिरती लहरें, सदाबहार हरेभरे जंगल, सरोवर आदि मन को मुग्ध कर देते हैं.

तापमान

यहां का अधिकतम तापमान गरमियों में 40 डिगरी सेंटीग्रेड तथा न्यूनतम 25 डिगरी सेंटीग्रेड रहता है. सर्दियों में अधिकतम 30 डिगरी सेंटीग्रेड और न्यूनतम 4 डिगरी सेंटीग्रेड रहता है.

क्या खरीदें?

चांदी तार के आभूषण, सूती-रेशमी वस्त्र, सीपी से बनी वस्तुएं, सीप स्टोन को काट कर बनाई गई मूर्तियां, तरहतरह के शंख, दस्तकारी की वस्तुएं, जैसे तिनकों की टोकरियां, चटाइयां आदि खरीदने लायक हैं. खरीदारी शिल्प इंपोरियम और मुख्य बाजार से करनी चाहिए.

● **एसटीडी कोड : 06752**

–नारायण भक्त

हैदराबाद

हैदराबाद की स्थापना गोलकुंडा के 5वें सुलतान मोहम्मद कुली कुतुबशाह द्वारा सन 1593 में की गई थी. अपनी प्रेयसी भागमती के नाम पर उस ने इस का नाम भाग्यनगर रखा. बाद में भागमती का नाम हैदरी बेगम हुआ और भाग्यनगर का नाम हैदराबाद हो गया.

हैदराबाद भारत का 5वां सब से बड़ा नगर है और यह आंध्र प्रदेश की राजधानी है. यह नगर अपनी संस्कृति तथा 'विविधता में एकता' का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है. इस नगर की प्रमुख भाषा दक्खिनी हिंदी है परंतु तेलुगू, उर्दू, मराठी भाषाएं भी यहां प्रचलित हैं. हैदराबाद का फिल्म



जगत में विशेष आकर्षण रहा है. नगर में कई प्रसिद्ध फिल्म स्टुडियो हैं जहां दिनरात शूटिंग चलती रहती हैं.

हैदराबाद नगर दक्षिण के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है. प्राचीन काल में राजामहाराजाओं ने यहां कई किलों का निर्माण करवाया. किलों के चारों तरफ गहरी खाइयां बनवाईं, जिन में पानी भरा रहता था. मोहम्मद कुली कुतुबशाह ने शहर में कई मसजिदें भी बनवाईं

दर्शनीय स्थल

चारमीनार

चारमीनार का निर्माण सन 1591 में गोलकुंडा के नवाब मोहम्मद कुली कुतुब शाह ने करवाया था. इस की हर मीनार 56 मीटर ऊंची है. यह मीनार एक चौराहे पर है. इस के पास ही मक्का मसजिद है. कहते हैं गोलकुंडा से चारमीनार तक पहुंचने का भूमिगत मार्ग भी था. अब इस मार्ग के अवशेष ही रह गए हैं.

विधान सभा भवन

[illegible] भारत के सर्वश्रेष्ठ उद्यानों में से एक 'पब्लिक गार्डन' में स्थित है. श्वेत तथा भव्य विधान सभा भवन बरबस ही दर्शकों का मन मोह लेता है.

सालारजंग संग्रहालय

मूसी नदी के तट पर स्थित एक नूतन भव्य भवन में स्थित यह देश का तीसरा बड़ा राष्ट्रीय संग्रहालय है. इस में निजाम के प्रधानमंत्री सालारजंग III की अनोखी धरोहर को दर्शाया गया है. इसे एक व्यक्ति द्वारा संग्रहीत संसार की सर्वश्रेष्ठ निधि माना जाता है. संग्रहालय के 36 कक्ष संसार की सर्वश्रेष्ठ कलाकृतियों से भरे पड़े हैं. इन में मुंह को ढके रबैका की मूर्ति, (मेफिस्टोफेलिस व मार्गरिटा एक मूर्ति के दो रुख), बहुमूल्य पेंटिंग, कांच व चीनी के बर्तन, घड़ियां, पांडुलिपियां तथा हीरेजवाहरात जड़ित

गोलकुंडा के किले से हैदराबाद का विहंगम दृश्य नजर आता है

प्रमुख स्थलों की दूरियां

चारमीनार व लाड बाजार हैदराबाद से [illegible] किलोमीटर तथा सिकंदराबाद से 10 किलोमीटर; **मललारगंज म्यूजियम** हैदराबाद से [illegible] किलोमीटर तथा सिकंदराबाद से [illegible] किलोमीटर; **चिड़ियाघर** हैदराबाद से [illegible] किलोमीटर तथा सिकंदराबाद से 12 किलोमीटर; **गोलकुंडा फोर्ट और कुतुब अली मकबरे** हैदराबाद से 10 किलोमीटर तथा सिकंदराबाद से [illegible] किलोमीटर; **बिरला मंदिर, बिरला विज्ञान केंद्र तथा बिरला प्लेनेटोरियम** हैदराबाद से [illegible] किलोमीटर तथा सिकंदराबाद से [illegible] किलोमीटर; **चन्द्रपूर्णिमा पार्क व टैंकबंद** हैदराबाद से [illegible] किलोमीटर, सिकंदराबाद से [illegible] किलोमीटर; **सुल्तान बाजार व कोठी** हैदराबाद से 2-3 किलोमीटर तथा सिकंदराबाद से 7-8 किलोमीटर; **पब्लिक गार्डन व विधान सभा** हैदराबाद से 1-2 किलोमीटर तथा सिकंदराबाद से 9-10 किलोमीटर; **आबिद व लीपाक्षी** हैदराबाद से 2 किलोमीटर तथा सिकंदराबाद से 9-10 किलोमीटर दूर हैं

था हाथीदांत और कांसे की तियां प्रमुख हैं.

हैदराबाद के बाह्यांचल में हरू जूलोजिकल पार्क (प्राणी) लगभग 121 हेक्टेयर भूमि ा है. इस में लगभग 1,100 व पक्षियों को उन के प्राकृतिक ण में रखा गया है. ासिक उद्यान, सफेद बाघ का सफारी उद्यान तथा रात्रिजीवी का विभाग इस के प्रमुख ण हैं.

ंकटेश्वर मंदिर रमर में संगीत)

हैदराबादसिकंदराबाद नगरद्वय लगभग 30 फुट ऊंचे काले र स्थित इस मंदिर का निर्माण औद्योगिक समूह द्वारा गया है.

यदि पर्यटकों के पास समय ास ही नौबत पहाड़ पर स्थित देख कर ब्रह्मांड दर्शन का ठा सकते हैं. उसी प्रांगण में ज्ञान संग्रहालय है जो बच्चों ान व तकनीकी ज्ञान में सिद्ध हुआ है.

बाजार

हैदराबाद को भव्य रूप देने चारमीनार के चारों ओर जार बनवाए गए थे. आज ाजार अपने प्राचीन वैभव के ख्यात हैं.

इस के चारों ओर क्रमशः बंडा, पत्थर गट्टी (पत्थरों), लाड बाजार और काली . लाड बाजार जरीगोटे के गबिरंगी चूड़ियों, कढ़ाई के लिए प्रसिद्ध है. यहां की चूड़ियां तथा मोतियां के देश भर में प्रसिद्ध हैं.

आकर्षण

हां के अन्य आकर्षण हैं का किला, कुतुबशाही उस्मानिया विश्वविद्यालय द्यान आदि, जिन्हें पर्यटक चि व सुविधा के अनुसार ते हैं.

ांध्र प्रदेश पर्यटन विभाग,

प्रथम) 1998

हैदराबाद कैसे जाएं?

वायु मार्ग

हैदराबाद के लिए देश के करीब सभी प्रमुख पर्यटन स्थलों से हवाई सेवाएं उपलब्ध हैं

कहां से	*दिन*	*उड़ान संख्या*	*प्रस्थान*	*किराया*
इंडियन एअरलाइंस				
अहमदाबाद	1,5	आईसी 982	02.15	4,525 रु.
	2,6	आईसी 564	06.25	4,525 रु.
बंगलौर	प्रतिदिन	आईसी 515	17.40	2,760 रु.
	प्रतिदिन	आईसी 915	10.45	2,760 रु.
भुवनेश्वर	1,3,5	आईसी 777	19.50	4,360 रु.
कलकत्ता	1,3,5	आईसी 777	18.15	5,765 रु.
	2,4,7	आईसी 769	18.15	5,765 रु.
	2,4,6	आईसी 255	11.00	5,765 रु.
दिल्ली	प्रतिदिन	आईसी 940	06.15	5,470 रु.
	प्रतिदिन	आईसी 839	18.00	5,470 रु.
मुंबई	प्रतिदिन	आईसी 928	06.20	3,150 रु.
	प्रतिदिन	आईसी 920	12.20	3,150 रु.
	प्रतिदिन	आईसी 617	19.35	3,150 रु.
नागपुर	2,4,7	आईसी 769	20.25	2,695 रु.
तिरुपति	2,4,6	सीडी 519	11.50	2,180 रु.
विशाखापट्टनम	2,4,7	सीडी 562	12.50	2,865 रु.
	1,3,5	सीडी 572	12.35	2,865 रु.

रेल मार्ग

हैदराबाद के लिए दिल्ली, मुंबई, चेन्नई आदि अनेक शहरों से रेल सेवाएं उपलब्ध हैं.

प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	*गाड़ी की संख्या व नाम*	*प्रस्थान*	*आगमन*
दिल्ली	2724 आंध्रप्रदेश एक्सप्रेस	17.50	20.15
	7022 हजरत निजामुद्दीनहैदराबाद एक्सप्रेस	20.30	07.15
मुंबई	7031 मुंबईहैदराबाद एक्सप्रेस	12.35	06.30
	7001 हुसैनसागर एक्सप्रेस	21.55	13.30
राजकोट	7017 राजकोटसिकंदराबाद एक्सप्रेस	05.05	11.10
भुवनेश्वर	1020 कोणार्क एक्सप्रेस	14.00	10.40
हावड़ा	8045 ईस्टकोस्ट एक्सप्रेस	10.15	18.20
चेन्नई	2759 चारमीनार एक्सप्रेस	18.10	08.30
	7053 चेन्नईसिकंदराबाद एक्सप्रेस	16.00	07.00



चारमीनार का निर्माण ताजिया शैली मे
किया गया है.

आई. टी. डी. सी. तथा अनेक प्राइवेट बस सेवाओं द्वारा पर्यटकों को सभी प्रमुख पर्यटन स्थल दिखाए जाने की सुविधा है, जिस का किराया 100 रुपए से 130 रुपए तक हो सकता है. इन बसों द्वारा पर्यटक कम समय होने पर भी सभी प्रमुख दर्शनीय स्थलों की यात्रा एक ही दिन में संपूर्ण कर सकते हैं.

इन स्थलों के अतिरिक्त यहां ओशन पार्क (गिंडीपेट), बुद्ध जयंती पार्क, इंदिरा उदयान, लालबहादुर स्टेडियम जैसे स्थान भी हैं. पब्लिक गार्डन में हैल्थ म्यूजियम, बाल भवन आर्कियोलोजिकल म्यूजियम भी है जिन्हें समय व रुचि के अनुसार देखा जा सकता है. हुसैन सागर झील तथा हैदराबाद से 17 किलोमीटर दूर स्थित हिरण उद्यान यहां के अन्य उदाहरण हैं.

हर बड़े शहर की भांति यहां भी बहुत से फास्ट फूड सेंटर हैं. उडुपी रेस्तरां यहां की संस्कृति के अभिन्न अंग हैं जो अपनी सफाई के लिए प्रसिद्ध हैं. अन्य बड़े शहरों की भांति यहां पानी प्रति गिलास के हिसाब से नहीं बिकता. अत: पर्यटक अपने साथ पानी की बोतल अवश्य रखें.

सिकंदराबाद

हैदराबाद शहर से [illegible] किलोमीटर दूर हुसैन सागर के उत्तर में ब्रिटिश शासन काल में सुपरिकल्पित नगर सिकंदराबाद की स्थापना की गई. इस का नामकरण निजाम सिकंदर के नाम पर किया गया है. सप्तम एडवर्ड की स्मृति में तैयार अस्पताल, यूनाइटेड सर्विस क्लब, राष्ट्रपति भवन, मलेरिया निवारक के आविष्कारक रोनाल्ड रास का मकान दर्शनीय हैं. कुतुबशाही द्वारा निर्मित झील ने निकटवर्ती

कहां ठहरें? हैदराबाद

होटल	पता	फोन	श्रेणी
रामदा	बेगमपेट	819917	उत्तम
ग्रीन पार्क	बेगमपेट	291919	उत्तम
कृष्णा ओबेराय	बनजारा हिल	3392323	उत्तम
वायसराय	टैंक बंद	7618383	उत्तम
रिट्ज	हिल फोर्ट	233571	उत्तम
नागार्जुन	बशीरबाग	237201	उत्तम
भास्कर पैलेस	बनजारा हिल	396040	उत्तम
ताजमहल	आबिद	237988	मध्यम
पैलेस	नामपल्ली गेट	590183	मध्यम
सिद्धार्थ	[illegible]	590222	मध्यम
हरिद्वार	[illegible]	4656711	मध्यम
महावीर	[illegible]	668611	मध्यम
पचगल्ल	[illegible]	4650358	मध्यम
यात्रिक	[illegible]	203695	मध्यम
अयोध्या	[illegible]	393420	मध्यम
राजधानी	[illegible]	[illegible]	मध्यम

सड़क मार्ग

हैदराबाद के लिए बंगलौर, चेन्नई, नागपुर, मुंबई, विशाखापट्टनम आदि ाहरों से सीधी बस सेवाएं उपलब्ध है.

प्रमुख नगरों से दूरी

आगरा–1,253 किलोमीटर	कलकत्ता–1,516 किलोमीटर
अहमदाबाद–1,220 किलोमीटर	लखनऊ–1,334 किलोमीटर
इलाहाबाद–1,086 किलोमीटर	दिल्ली–1,453 किलोमीटर
ंगलौर–566 किलोमीटर	मुंबई–739 किलोमीटर
ोपाल–813 किलोमीटर	पटना–1,431 किलोमीटर

रिवेश को और भी सुंदर बना दिया

ापमान

यहां का तापमान गरमियों में धिकतम 39 डिगरी सेंटीग्रेड तथा नतम 20 डिगरी सेंटीग्रेड रहता है. सर्दियों में अधिकतम 20-22 डिगरी सेंटीग्रेड और न्यूनतम 4 डिगरी सेंटीग्रेड रहता है.

● *एसटीडी कोड : 040*

–शकुंतला शर्मा

मद्रास

भारत का चौथा महानगर मद्रास (चेन्नई) अपने सुंदर समुद्र तटों लिए दर्शनीय है. यहां तीसरा ख बंदरगाह भी है. यह तमिल ना और संस्कृति का विशिष्ट केंद्र प्राचीन काल में यह 'मद्रासपट्टम' के नाम से जाना जाता था. उस वक्त यह छोटेछोटे गांवों का समूह और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का प्रमुख केंद्र था. 1639 में इस की स्थापना आर्मागन में ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रधान फ्रांसिस डे ने की थी. उसे यह क्षेत्र हंपी के अंतिम विजयनगर शासक चंद्रगिरी से मिला था. 1640 में नगर के उत्तर में एक छोटा सा सेंट जार्ज किला बनवाया गया था.

बाद में यह 100 वर्षों तक ब्रिटिश उपनिवेश रहा. अब इस का नाम मद्रास से बदल कर चेन्नई कर दिया गया है. 1639 में ईस्ट इंडिया कंपनी ने चेन्नई नाम के एक छोटे से गांव को अपना पहला व्यापारिक केंद्र बनाया था.

दर्शनीय स्थल

सेंट जार्ज का किला

यह यहां की एक ऐतिहासिक व विशिष्ट इमारत है. 1640 में इसे फ्रांसिस डे ने बनवाया था. यह भारत में ब्रिटिश शक्ति का गढ़ था. इस किले में अब विधान सभा, विधान परिषद और राज्य सचिवालय के दफ्तर हैं.

मेरीना बीच

इसे दुनिया का दूसरा सब से बड़ा 'बीच' (समुद्री तट) माना जाता है. मेरीना बीच प्राकृतिक सौंदर्य एवं ठंडी हवा के लिए प्रसिद्ध है. समुद्री तट पर चौड़ी सड़क वाले इस बीच

मेरीना बीच प्राकृतिक सौंदर्य एवं ठंडी हवा के लिए प्रसिद्ध है.



के एक ओर शानदार इमारतें हैं और दूसरी ओर समुद्र और रेतीला तट. इस 'बीच' पर लाइट हाउस भी है. यहीं पर अन्नादुरैई और एम.जी.आर. की समाधियां हैं.

इलियट्स बीच

पिकनिक मनाने के लिए यह उपयुक्त जगह है. यह तैरने के लिए भी सुरक्षित स्थल है. बेसेंट नगर में फैला हुआ यह 'बीच' शांत रहता है.

हार्टीकल्चर उद्यान

22 एकड़ जमीन पर फैले इस उद्यान में विभिन्न तरह के फूल, पेड़ और पौधे हैं. कैथेड्रल रोड पर स्थित यह एक खूबसूरत उद्यान है.

सरकारी संग्रहालय

यह संग्रहालय काफी पुराना है. इस में पल्लव, चोल और पांड्या राजाओं के समय की कलाकृतियां देखी जा सकती हैं. यहां एक आर्ट गैलरी भी है, जिस में आधुनिक और प्राचीन कला के नमूने देखे जा सकते हैं.

प्लेनेटेरियम

1988 में बने इस बिरला प्लेनेटेरियम में सूर्य, चंद्रमा, तारों की स्थिति, अंतरिक्षयान, ग्रह, सूर्यग्रहण और चंद्रग्रहण जैसी घटनाएं देखी जा सकती हैं.

गिंडी नेशनल पार्क

इस में बंदर, सियार, बिल्ली, हिरन और पक्षियों की विभिन्न प्रजातियां देख सकते हैं. यहां प्रवेश करते ही मगरमच्छ बैंक, सांपघर और मनोरंजन पार्क भी हैं.

वल्लुवरकोट्टम

तमिल के प्रसिद्ध कवि तिरुवल्लूर की स्मृति में बने इस भवन में उन की एक आदमकद प्रतिमा है. जो 33 मीटर लंबे रथ पर स्थापित है. इस के विशाल हाल में करीब 4,000 लोग बैठ सकते हैं.

कलाक्षेत्र

1936 में भरतनाट्यम की प्रसिद्ध नृत्यांगना रुक्मिणी देवी आरुंडेल ने इस कला मंदिर की स्थापना की थी. यह देश का प्रसिद्ध नृत्य विद्यालय है. यहां नृत्य के साथसाथ संगीत, चित्रकला, बुनाई और टेक्सटाइल का प्रशिक्षण भी दिया जाता है.

थियोसोफिकल सोसाइटी

यह एक विशाल बगीचे में

मद्रास कैसे जाएं?

वायु मार्ग

यहां के लिए देश के करीब सभी प्रमुख नगरों से वायु उड़ानें उपलब्ध हैं.

प्रमुख उड़ानें

कहां से	दिन	उड़ान संख्या	प्रस्थान	किराया
इंडियन एअरलाइंस				
बंगलौर	1,3,4,5,7	आईसी 918	15.50	1,820 रु.
	1,2,4,6	आईसी 912	10.10	1,820 रु.
	2,4,6,7	आईसी 924	16.45	1,820 रु.
भुवनेश्वर	2,4,6	आईसी 966	11.50	5,320 रु.
कलकत्ता	प्रतिदिन	आईसी 765	18.00	6,060 रु.
कालीकट	प्रतिदिन	आईसी 986	11.50	2,480 रु.
कोचीन	1,3,5,7	सीडी 532	12.25	3,090 रु.
कोयंबटूर	प्रतिदिन	आईसी 986	10.05	2,480 रु.
दिल्ली	प्रतिदिन	आईसी 439	06.30	6,955 रु.
	प्रतिदिन	आईसी 540	19.45	6,955 रु.
गोआ	2,4,6,7	आईसी 924	15.10	3,675 रु.
अहमदाबाद	प्रतिदिन	आईसी 946	07.45	2,715 रु.
मुंबई	प्रतिदिन	आईसी 272	07.15	4,350 रु.
	प्रतिदिन	आईसी 173	20.25	4,350 रु.
	2,3,5,6,7	आईसी 671	09.20	4,350 रु.
	1,4	आईसी 970	09.20	4,350 रु.

सड़क मार्ग

दक्षिण भारत के प्रमुख नगरों से मद्रास के लिए बसें उपलब्ध हैं. निकटवर्ती शहरों से टैक्सियां भी किराए पर ली जा सकती हैं.

प्रमुख नगरों से दूरी

आगरा–1,957 किलोमीटर
दिल्ली–2,157 किलोमीटर
बंगलौर–334 किलोमीटर
मुंबई–1,367 किलोमीटर
कलकत्ता–1,678 किलोमीटर
कोचीन–669 किलोमीटर
अहमदाबाद–1,848 किलोमीटर
हैदराबाद–704 किलोमीटर
कन्याकुमारी–703 किलोमीटर
लखनऊ–2,038 किलोमीटर
मदुरै–461 किलोमीटर
रामेश्वरम–583 किलोमीटर

न कवि तिरुवल्लुवर की याद में ाया गया वल्लुवरकोट्टम देखने क है.

त शांत स्थल है. इस सोसाइटी हुंच कर आप शांति का अनुभव ी. इसलिए बीच से सटा यह खूबसूरत है. यहां एक प्राचीन कालय भी है.

रपास के दर्शनीय ल

ड़ियाघर

यहां से 30 किलोमीटर दूर लूर में अन्ना प्राणी उद्यान 510 यर क्षेत्र में फैला हुआ है. यह 8 से शाम 5 बजे तक खुला है.



ेल मार्ग

मद्रास रेल मार्ग द्वारा देश के करीब सभी 6 प्रमुख नगरों से जुड़ा हुआ है.

प्रमुख रेल सेवाएं

ं से	गाड़ी की संख्या व नाम	प्रस्थान	आगमन
मदाबाद	6045 नवजीवन एक्सप्रेस	06.35	17.15
णसी	6040 वाराणसीचेन्नई गंगा कावेरी एक्सप्रेस	17.50	12.05
नऊ	6094 लखनऊचेन्नई एक्सप्रेस	16.10	12.05
ा	6044 पटनाचेन्नई एक्सप्रेस	14.45	10.50
ौर	2608 लालबाग एक्सप्रेस	06.30	11.45
	2640 वृंदावन एक्सप्रेस	14.30	20.15
	6024 बंगलौरचेन्नई एक्सप्रेस	08.00	15.10
	6008 बंगलौरचेन्नई मेल	22.15	05.00
	2008 मैसूरचेन्नई एक्सप्रेस	14.10	21.15
ी	2622 तमिलनाडु एक्सप्रेस	22.30	07.45
	2616 जी.टी. एक्सप्रेस	18.40	07.00
	2724 आंध्र प्रदेश एक्सप्रेस	17.50	13.00
बाद	2760 चारमीनार एक्सप्रेस	19.00	09.20
दराबाद	27054 सिकंदराबादचेन्नई एक्सप्रेस	16.20	06.10
	6032 जम्मूचेन्नई एक्सप्रेस	22.30	12.05
र	9768 जयपुरचेन्नई एक्सप्रेस	15.45	10.50
ा	2841 कोरोमंडल एक्सप्रेस	14.00	17.35
	6003 चेन्नई मेल	20.15	05.15
	6011 मुंबईचेन्नई एक्सप्रेस	14.00	16.55
	6009 मुंबईचेन्नई मेल	23.20	06.00
	1063 दादरचेन्नई एक्सप्रेस	19.45	20.15
त	6045 तिरुपतिचेन्नई एक्सप्रेस	10.05	13.45

लिटिल फाक

यहां से 46 किलोमीटर दूर महाबलीपुरम के रास्ते पर बच्चों के लिए एक सुंदर पार्क है. इस में इंद्रधनुषी फव्वारे, रेलगाड़ी और विशाल पियानो बच्चों के आकर्षण के खास केंद्र हैं. यहां प्रवेश शुल्क 100 रुपए है.

डैश एन स्पलैश

करीब 30 किलोमीटर दूर यह एक जल पार्क है. यहां 12 से 35 फुट की ऊंचाई से फिसल कर पानी में गिरने का आनंद लिया जा सकता है. इस में भी प्रवेश शुल्क 100 रुपए है.

चोला मंडपम

18 किलोमीटर दूर महाबलीपुरम के रास्ते में यह कलाकारों का एक गांव है. कलाकार यहां अपनी तरहतरह की कला प्रदर्शनियों का आयोजन करते हैं.

क्या खरीदें?

यहां से पत्थर, पीतल, लकड़ी, हाथीदांत तथा चमड़े से बनी सजावटी वस्तुएं, बैग, जूते आदि खरीदे जा सकते हैं. कांचीपुरम, पोचमपल्ली, लेपाक्षी साड़ियां भी प्रसिद्ध हैं. खरीदारी के प्रमुख स्थल बोस रोड, माउंट रोड, पैंथियन रोड,

कहां ठहरें? — मद्रास

होटल	पता	फोन	श्रेणी
चोल शेरेटन	10, कैथेड्रल रोड	820101	उत्तम
एंबेसडर	53, मांटीयथ रोड	8554476	उत्तम
पार्क शेरेटन	टी.टी.के. रोड	4994101	उत्तम
ताज कोरमंडल	17, नूगमबक्कम हाई रोड	8272827	उत्तम
नीलगिरी वेस्ट	58, डा. राधाकृष्णन मार्ग	827511	मध्यम
न्यू वुडलैंड	72, डा. राधाकृष्णन मार्ग	827311	मध्यम
रेजीडेंसी	49, जी.एन. चेट्टी रोड	8253435	मध्यम
सिंदूरी	ग्रीम्सलेन, ग्रीम्स रोड	8271164	मध्यम
क्वालिटी इनअसना	144, स्टर्लिंग रोड	8259090	मध्यम
सवेरा	69, डा. राधाकृष्णन मार्ग	8274700	मध्यम
प्रेसीडेंट	160, डा. राधाकृष्णन मार्ग	832211	मध्यम
मद्रास इंटरनेशनल	693, अन्नासलाई	8524111	मध्यम
पांडियन	9, कैंट लेन, एगमोर	8258459	साधारण
स्वागत	243, रायपेट्टा हाईरोड	8268466	साधारण
मारिस	9, कैथेड्रल रोड	8270541	साधारण
अन्य आवासीय स्थल			
टूरिस्ट होस्टल	आंध्र महिला सभा 12, दुर्गाबाई देशमुख रोड आर.ए. पुरम	4938311	
यूथ होस्टल	2, एवेन्यू, इंदिरा नगर	412882	
वाई.एम.सी.ए. गेस्ट हाउस	1008, पूनमलै हाई रोड	5323120	
टूरिस्ट होम	21, इंदिरा गांधी इरविन रोड, एगमोर	8250079	

अन्नासलाई तथा पौंडी बाजार हैं.

यहां के साहूकार पेट में उत्तर भारतीयों की दुकानें हैं, जहां आप को भाषा की कठिनाई न होगी.

तापमान

सर्दियों में 32 डिगरी सेंटीग्रेड अधिकतम, 19.8 डिगरी सेंटीग्रेड न्यूनतम रहता है. गरमियों में 37 डिगरी सेंटीग्रेड अधिकतम और न्यूनतम 21.1 डिगरी सेंटीग्रेड रहता है.

• *एसटीडी कोड : 044*

महाबलीपुरम

महाबलीपुरम ऐतिहासिकता के साथसाथ प्राकृतिक दृष्टि से भी दर्शनीय है. पल्लव वंश के शासकों द्वारा शासित यह शहर प्राकृतिक खूबसूरती और प्राचीन वास्तुकला का अनोखा सम्मिश्रण है.

चेन्नई से 60 किलोमीटर दूर दक्षिण में बंगाल की खाड़ी के किनारे स्थित यह नगर पल्लव वंश के समय अत्यंत विकसित शहर था. यहां ज्यादातर मंदिर उसी समय के हैं. यहां के मंदिरों, मूर्तियों और चट्टानों पर की गई शिल्पकारी व कलात्मकता देखने लायक है.

यहां किले, सागर तट तथा गुफाएं पर्यटकों को विशेष रूप से आकर्षित करती हैं.

महाबलीपुरम का पुराना नाम मामल्लापुरम था. यह किसी जमाने में एक समृद्ध बंदरगाह भी था.

दर्शनीय स्थल

गुफाएं

यहां की गुफाएं सब से अधिक आकर्षण का केंद्र हैं. यहां 9 मंदिर गुफाएं हैं जो चट्टानों को काट कर बनाई गई हैं. इन में महिषासुर मर्दिनी गुफा का विशेष महत्त्व है.

शोर टैंपल

यह यहां के पुराने मंदिरों में से है. 8वीं सदी में बना यह मंदिर द्रविड़ शैली का है. इस मंदिर में चट्टान पर विष्णु और शिव की मूर्तियां उकेरी गई हैं. इस के समुद्र तट पर स्थित होने से यहां से समुद्र को देखना भी लुभावना लगता है.

बास रिलीफ

कहा जाता है कि यह ह्वेल मछली के आकार की विश्व की सब से बड़ी चट्टान है. इस के एक तरफ देवीदेवताओं की तथा दूसरी तरफ अनेक तरह के जानवरों की मूर्तियां बनाई गई हैं.

पंचरथ

यहां अलगअलग शैली में पांच रथ बने हैं. अनेक देवीदेवताओं की मूर्तियां उकेरी गई हैं. रथों की शिल्पकला देखने लायक है. उन्हें पांच पांडव रथ भी कहते हैं.

कृष्ण मंडपम

इस में श्रीकृष्ण की कथाओं को उकेरा गया है. श्रीकृष्ण की विभिन्न लीलाएं, गोवर्धन पर्वत उठाते हुए, बलराम, गोपिकाएं और ग्वालों के भी सजीव चित्र अंकित हैं.

अन्य निकटवर्ती स्थल

क्रोकोडाइल बैंक

इस में विभिन्न प्रजातियों के करीब 5 हजार मगरमच्छ हैं. इन्हें देखना एक अलग ही रोमांच का अनुभव है. इन्हें सुबह 8.30 से शाम 5.30 बजे तक देखा जा सकता है.



मुद्र किनारे बना द्रविड़ शैली का ोर टेंपल लाजवाब है.

दंगतगल

53 किलोमीटर दूर यह स्थल क प्रसिद्ध जलपक्षी अभयारण्य है. हां नवंबर से फरवरी तक हर वर्ष देशों से उड़ कर पक्षी आते हैं. क्षी प्रेमियों के लिए यह स्थल अत्यंत र्शनीय है. यहां आवास की व्यवस्था ी है.

या खरीदें?

यहां से हस्तशिल्प की वस्तुएं, ख, सीप की सामग्री, चूड़ियां, हने आदि खरीदे जा सकते हैं. मपुहार, शोर टेंपल रोड तथा अन्य जी दुकानों से खरीदारी की जा कती है.

पमान

यहां का तापमान सर्दियों में .6 डिगरी सेंटीग्रेड अधिकतम व 3 डिगरी सेंटीग्रेड न्यूनतम और मियों में 36.6 डिगरी सेंटीग्रेड धिकतम व 22.1 डिगरी सेंटीग्रेड तम रहता है.

एसटीडी कोड : 04113

–जगदीश पंवार

महाबलीपुरम

कैसे जाएं?

रेल मार्ग

निकटतम रेलवे स्टेशन चेंगलपट्टू है, जो 30 किलोमीटर दूर पश्चिम में है. यह दक्षिण रेलवे के मद्रासतिरुचि मार्ग पर पड़ता है. चेंगलपट्टू से महाबलीपुरम का रास्ता बस या टैक्सी से तय किया जा सकता है.

सड़क मार्ग

यहां तक दक्षिण भारत के सभी प्रमुख नगरों से पर्याप्त बस सेवाएं हैं.

प्रमुख नगरों से दूरी

चेन्नई–60 किलोमीटर
कांचीपुरम–65 किलोमीटर
चेंगलपट्टू–65 किलोमीटर
तिरुपोरूर–16 किलोमीटर

कहां ठहरें? महाबलीपुरम

होटल	पता	फोन	श्रेणी
सिल्वर सेंडस	महाबलीपुरम	42228, 422283	उत्तम
टेंपल बे (आई.टी.डी.सी)	महाबलीपुरम	42251–57	उत्तम
आइडियल बीच रिसार्ट	महाबलीपुरम	42240–43	उत्तम
सिल्वर इन	महाबलीपुरम	42283	मध्यम
शोर टेंपल बीच रिसार्ट		2234, 2268	मध्यम
तमिलनाडु यूथ कैंप		2287	



वेंकटेश्वर मंदिर के पास स्वामी पुष्करणी सरोवर पर तीर्थ यात्रियों की भीड़ लगी रहती है.

तिरुपति

हरीभरी रमणीक पहाड़ियों से घिरा प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर तिरुपति दर्शनीय है. यह तिरुपति मंदिर के कारण तो विख्यात है ही, पर्यटक यहां कुदरती सौंदर्य का आनंद भी ले सकते हैं.

तिरुमलै पहाड़ियों के बीच प्राकृतिक सुंदरता, झरने, हरीभरी वादियां पर्यटकों का मन लुभा लेती हैं. यहां पहाड़ी पर स्थित मंदिर द्रविड़ वास्तुकला का अद्‌भुत नमूना है. शिल्पकला की दृष्टि से यह मंदिर बेजोड़ है.

दर्शनीय स्थल

वेंकटेश्वर मंदिर

भारतीय शिल्पकला का यह उत्कृष्ट उदाहरण है. यह देश के प्रमुख प्राचीन मंदिरों में से एक है इसे चोल, पल्लव, पंडया और विजयनगर राजवंश का संरक्षण मिला इस का धार्मिक ग्रंथों में भी उल्लेख मिलता है. इस के शिखर पर सोने का पत्तर चढ़ा हुआ है

वराहस्वामी मंदिर

वेंकटेश्वर मंदिर के समीप यह स्वामी पुष्करणी सरोवर के किनारे स्थित है. यहां विष्णु की प्रतिमा वराहस्वामी के रूप में है.

इन के अलावा पाप विनाशक और आकाशगंगा झरने तथा एक अति प्राचीन पहाड़ी, जिस के बारे में कहा जाता है कि वह 10 हजार साल से अधिक प्राचीन है, भी देखने लायक है.

तिरुपति कैसे जाएं?

वायु मार्ग

हवाई जहाज से आने के इच्छुक पर्यटक चेन्नई या हैदराबाद तक आ सकते हैं और तिरुपति तक का रास्ता बस या टैक्सियों से तय किया जा सकता है

रेल मार्ग

तिरुपति के लिए चेन्नई, मदुरै, विजयवाड़ा, हावड़ा आदि शहरों से सीधी रेल सेवाएं उपलब्ध हैं

प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	गाड़ी का नंबर व नाम	प्रस्थान	आगमन
चेन्नई	6053 चेन्नईतिरुपति एक्सप्रेस	13.50	16.50
	6057 सप्तगिरि एक्सप्रेस	06.25	09.30
	7403 चेन्नईतिरुपति इंटरसिटी एक्सप्रेस	16.30	19.50
हावड़ा	8079 हावड़ातिरुपति एक्सप्रेस	23.30	16.05
विजयवाड़ा	7406 कृष्णा एक्सप्रेस	13.15	21.30
पुरी	8439 पुरीतिरुपति एक्सप्रेस	06.20	08.30
मदुरै	6800 मदुरैतिरुपति एक्सप्रेस	[illegible]	05.30

न्य निकटवर्ती स्थल

ंद्रगिरी किला

11 किलोमीटर की दूरी पर ह किला है. यह 856 मीटर ऊंची हाड़ी पर बना हुआ है. विजयनगर ासक के अंतिम दिनों में बने इस कले में अनेक मंदिर और स्थलों के वशेष सुरक्षित हैं. किले में स्थित शाही महल उस वक्त की स्तुकला के सुंदर उदाहरण हैं.

ालकोणम

यहां से 40 किलोमीटर दूर ह एक सुंदर पिकनिक स्थल है. यहां कृति का आनंद लिया जा सकता है.

ंडक्टिड टूअर्स

यहां पर अनेक टूरिस्ट ार्यालय हैं. प्रतिदिन कई बसें भ्रमण राने हेतु उपलब्ध रहती हैं.

एसटीडी कोड : 08574

सड़क मार्ग

दक्षिण भारत के करीब सभी प्रमुख शहरों से बस सेवाएं उपलब्ध हैं. मद्रास से प्रतिदिन टूरिस्ट बसें भी चलती हैं.

प्रमुख नगरों से दूरी

कलकत्ता–1,625 किलोमीटर	कोचीन–721 किलोमीटर
बंगलौर–258 किलोमीटर	दिल्ली–2,063 किलोमीटर
हैदराबाद–651 किलोमीटर	मुंबई–1,230 किलोमीटर

कहां ठहरें? तिरुपति

यहां रहने के लिए होटलों और धर्मशालाओं की पर्याप्त सुविधाएं हैं. यहां टीडीसी काटेज भी हैं. उन का किराया भी कम है.

होटल	पता	फोन
भीमाज पैराडाइज	रेनीगुंटा रोड	20766
मयूरा	टी पी एरिया	20901
भीमाज डीलक्स	34-38 जी कार स्ट्रीट रेलवे स्टेशन के समीप	-
श्री उर्वशी इंटरनेशनल	रेनीगुंटा रोड	20202

रामेश्वरम

ामेश्वरम मनोरम प्राकृतिक सौंदर्य के साथसाथ मंदिरों की भव्य ात्मकता के लिए दर्शनीय है. यह ुओं का धार्मिक स्थल है. भारतीय ाद्वीप के पूर्वी तट पर समुद्र की में बसे रामेश्वरम में सागर तट मनोहारी दृश्य देखने लायक हैं.

रामेश्वरम मंदिर के भव्य ात्मक स्तंभ और गलियारे अपनी ता के लिए विख्यात हैं.

ीनीय स्थल

ानाथ स्वामी मंदिर

द्वीप के पूर्व में सागर तट पर न यह मंदिर द्रविड़ वास्तुकला का ष्ट नमूना है. इस मंदिर का निर्माण ों शताब्दी में अलगअलग शासकों रवाया था. मंदिर का गलियारा यात है. यह भारत का सब से गलियारा माना गया है. यह पूर्व श्चिम तक 197 मीटर तथा उत्तर क्षिण तक 133 मीटर लंबा है. मंदिर के प्रवेशद्वार पर 38.4 मीटर ऊंचा टावर है. मंदिर में 22 कुएं हैं.

मंदिर की शिल्पकला बेजोड़ है. स्तंभों पर की गई बारीक कारीगरी देखने लायक है.

अग्नितीर्थम

रामनाथ स्वामी मंदिर के पूर्व में बना यह स्थल समुद्र से मात्र 100 मीटर की दूरी पर स्थित है. इस स्थल का जल शांत एवं स्वच्छ है.

धनुषकोटि

रामेश्वरम से 18 किलोमीटर दूर इस स्थान पर राम, लक्ष्मण, सीता, हनुमान और विभीषण की मूर्तियां हैं. 1964 में आए एक तूफान में इस मंदिर की सुंदरता नष्ट हो गई थी, पर कोदंडराम स्वामी का मंदिर सुरक्षित बच गया था.

समुद्र तट पर बना रामनाथ स्वामी मंदिर द्रविड़ वास्तुकला का नमूना है.



तिरुप्पलानी

इस मंदिर की स्थापत्य कला देखने लायक है. यह रामेश्वर से 14 किलोमीटर दूर है.

क्या खरीदें?

यहां से शंख, साड़ियां, ताड़ के पत्तों से बनी वस्तुएं, कलात्मक मूर्तियां आदि खरीदी जा सकती हैं.

तापमान

यहां का तापमान गरमियों में 48 डिगरी सेंटीग्रेड अधिकतम व 46 डिगरी सेंटीग्रेड न्यूनतम रहता है. सर्दियों में अधिकतम 30 डिगरी सेंटीग्रेड और न्यूनतम 25 डिगरी सेंटीग्रेड रहता है.

- *एसटीडी कोड : 04573*

रामेश्वरम

कैसे जाएं?

रेल मार्ग

रामेश्वरम के लिए चेन्नई, कोयंबटूर, मदुरै, तिरुचि और तंजावुर आदि से ट्रेनें उपलब्ध हैं

सड़क मार्ग

यह दक्षिण भारत के करीब सभी प्रमुख नगरों से सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है

प्रमुख नगरों से दूरी

कन्याकुमारी–295 किलोमीटर	बंगलौर–599 किलोमीटर
मुंबई–1,632 किलोमीटर	तिरुपति–737 किलोमीटर
त्रिवेंद्रम–496 किलोमीटर	मद्रास–583 किलोमीटर

कहां ठहरें? रामेश्वरम

होटल	फोन
तमिलनाडु महाराजा	[illegible]
अलंकार	216, 307
स्वामी रामनाथ टूरिस्ट होम	[illegible]
टीटीडीसी यूथ होस्टल	[illegible]
देवस्थान काटेज	296

कन्याकुमारी

भारत की धरती का यह आखिरी छोर अपने शांत और सुहावने प्राकृतिक वातावरण के लिए पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है. कन्याकुमारी को वैसे तीर्थस्थल भी माना जाता है पर अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण यह दर्शनीय है.

कन्याकुमारी तीन ओर से समुद्रों से घिरा हुआ है. बंगाल की खाड़ी, अरब महासागर और हिंद महासागर का जल यहां एक ही स्थान पर आ कर मिलता है.

यह तीर्थस्थल सूर्योदय और सूर्यास्त के लिए प्रसिद्ध है. यहां किसी भी मौसम में जाया जा सकता है.

पानी से तीनों ओर से घिरे होने पर अब तरहतरह के भवन बना दिए गए हैं जिस से इस का प्राकृतिक सौंदर्य नष्ट प्राय: हो गया है.

दर्शनीय स्थल

कन्याकुमारी मंदिर

यह यहां का प्रतिष्ठित मंदिर है. इस में कन्याकुमारी की एक मूर्ति है. कन्याकुमारी को पार्वती का ही एक रूप माना जाता है. यह समुद्र तट पर स्थित है.

गांधी स्मारक

कन्याकुमारी मंदिर के समीप ही महात्मा गांधी की स्मृति में बनाया गया एक स्मारक है, यहां गांधीजी का अस्थि कलश जनता के दर्शनार्थ रखा गया है. शिल्पकला की दृष्टि से यह स्मारक देखा जा सकता है.

सूर्योदय और सूर्यास्त

यहां के रंगबिरंगे एवं रमणीक

कन्याकुमारी अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण दर्शनीय है.



र तट से सूर्योदय व सूर्यास्त का रम दृश्य देखना पर्यटकों के लिए अद्‌भुत अनुभव होगा. पूर्णिमा दिन सूर्यास्त और चंद्रोदय का हारी दृश्य एकसाथ देखा जा ता है.

कानंद स्मारक

कन्याकुमारी मंदिर के निकट मुद्रतट में उठी हुई एक विशाल न पर विवेकानंद स्मारक बना है. यहां पहुंचने के लिए फेरी ाव की मदद ली जा सकती है. क के एक कक्ष में स्वामी कानंद की विशाल धातु प्रतिमा है. स्मारक की बाहरी रेलिंग पर हो कर तीन समुद्रों का संगम को लुभा लेता है. इसे देख कर लगता है मानो दूर क्षितिज पर की सतह पर हरा, नीला और र्जी रंग बिखरा दिया गया हो.

निकटवर्ती दर्शनीय स्थल

गिरि किला

यहां से 34 किलोमीटर दूर किला 18वीं शताब्दी में राजा वर्मा ने बनवाया था. यह किला सिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है.

रकोइल

त्रिवेंद्रम मार्ग पर 13



कन्याकुमारी

कैसे जाएं?

वायु मार्ग

निकटवर्ती हवाईअड्डा त्रिवेंद्रम है. यह दिल्ली, मुंबई, मद्रास, कोचीन, बंगलौर से वायुमार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है. त्रिवेंद्रम से कन्याकुमारी बस, टैक्सी या ट्रेन से पहुंचा जा सकता है.

रेल मार्ग

कन्याकुमारी रेलमार्ग द्वारा देश के सभी भागों से जुड़ा हुआ है.

प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	गाड़ी की संख्या व नाम	प्रस्थान	आगमन
मदुरै	6318 ए. मदुरैलिंक एक्सप्रेस (रविवार को छोड़ कर)	15.35	01.30
मुंबई	1081 मुंबईकन्याकुमारी एक्सप्रेस	15.35	15.00
बंगलौर	6526 बंगलौरकन्याकुमारी एक्सप्रेस	21.10	17.30
जम्मू	6318 हिमसागर एक्सप्रेस	22.30	01.30
नई दिल्ली	6318 हिमसागर एक्सप्रेस	14.30	01.30

सड़क मार्ग

यह दक्षिण भारत के सभी नगरों से सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है.

प्रमुख नगरों से दूरी

बंगलौर–674 किलोमीटर	मद्रास–703 किलोमीटर
मुंबई–1,655 किलोमीटर	कलकत्ता–2,381 किलोमीटर
त्रिवेंद्रम–87 किलोमीटर	दिल्ली–2,693 किलोमीटर

कहां ठहरें? कन्याकुमारी

होटल	फोन नं.
तमिलनाडु	4257
केप	4229
संगम	4262
विवेकानंद राक मेमोरियल	4276

किलोमीटर दूर स्थित इस स्थल पर नागराज मंदिर है. इस में नागराज, शिव और विष्णु की प्रतिमाएं हैं. मंदिर के स्तंभों पर जैन तीर्थंकर महावीर और पार्श्वनाथ को सुंदरता से चित्रांकित किया गया है. मंदिर में चीनी वास्तुकला देखी जा सकती है.

तापमान

यहां का तापमान गरमियों में अधिकतम 34.8 डिगरी सेंटीग्रेड और न्यूनतम 21.6 डिगरी सेंटीग्रेड तथा सर्दियों में अधिकतम 33.8 डिगरी सेंटीग्रेड और न्यूनतम 22.4 डिगरी सेंटीग्रेड होता है.

• *एसटीडी कोड : 04653*

पोर्ट ब्लेयर

प्रकृति की छटा से मानव सदा से प्रभावित होता आया है. अंडमान निकोबार भारत के भूभाग से 1,200 समुद्री मील की दूरी होने के पश्चात भी हमें आकर्षित करता है.

आज यह काला पानी नहीं रहा. आकर्षक पर्यटक स्थल बन कर यह प्रतिवर्ष अनुमानित 3,000 विदेशी व 30,000 भारतीय पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है.

पोर्ट ब्लेयर कैसे जाएं?

अंडमान की राजधानी पोर्ट ब्लेयर मद्रास, कलकत्ता व विशाखापट्नम से जलमार्ग व वायुमार्ग द्वारा जाया जा सकता है.

मद्रास व कलकत्ता से पोर्ट ब्लेयर की यात्रा वायुमार्ग से 1.30 घंटे में तय की जाती है. इंडियन एअरलाइंस की उड़ानें नियमित रूप से यहां आतीजाती रहती हैं. इंडियन एअरलाइंस के किसी भी कार्यालय से आरक्षण कराया जा सकता है. प्रति यात्री किराया 4,992 रु. है. समय की कमी को ध्यान में रखते हुए अधिकतर यात्री वायुमार्ग को प्राथमिकता देते हैं.

जलमार्ग से यह यात्रा 55 से 60 घंटे में पूरी की जाती है. जलमार्ग की इतनी लंबी अवधि की यात्रा काफी रोमांचकारी होती है. मद्रास से पोर्ट ब्लेयर एम.वी. निकोबार, कलकत्ता से पोर्ट ब्लेयर हर्षवर्धन व विशाखापट्नम से एम.वी. नानकावरी जहाज द्वारा जाया जाता है. जलयान में चार श्रेणियां होती हैं :

श्रेणी	केबिन	यात्री संख्या	किराया
बंक	साधारण	सामान्य	रु. 955 प्रति व्यक्ति
ए	द्वितीय श्रेणी	6	रु. 2,243 प्रति व्यक्ति
बी	प्रथम श्रेणी	2	रु. 2,852 प्रति व्यक्ति
डीलक्स	आरामदायक	2	रु. 3,450 प्रति व्यक्ति

एक जलयान माह में 3 बार पोर्ट ब्लेयर की यात्रा करता है तथा प्रत्येक जलयान में अनुमानित 1,200 से 1,500 यात्री यात्रा करते हैं.

जलयान में आरक्षण की सूचना स्थानीय समाचारपत्र व आकाशवाणी के माध्यम से दी जाती है. जहाज रवाना होने के तीन दिन पूर्व आरक्षण प्रारंभ हो जाता है. प्रत्येक यात्री अपने तीन नवीनतम फोटो आवेदन पत्र के साथ अवश्य लगाए. आरक्षण संबंधी जानकारी निम्न स्थानों से प्राप्त करें :

व्यवस्थापक, भारतीय जहाजरानी सेवा कार्यालय, मद्रास पोर्ट ट्रस्ट, राजाजी सलाई, मद्रास.

व्यवस्थापक, भारतीय जहाजरानी सेवा कार्यालय, शिपिंग हाउस, 13, स्ट्रैंड रोड, कलकत्ता.

मेसर्स ए.वी. भगीरा और गुरुआ पट्टाभिरमय्या एंड कंपनी, [illegible]

वापसी हेतु पोर्ट ब्लेयर में : व्यवस्थापक, [illegible] 11191 से पूरी जानकारी प्राप्त की जा सकती है.

[illegible] हो जाता है. भीड़ को ध्यान में रखते हुए जल्दी पहुंचना उत्तम रहता है.



अंडमान निकोबार 556 छोटेबड़े द्वीपों का समूह है. इस का क्षेत्रफल 8,249 किलोमीटर है.

अंडमान की राजधानी पोर्ट ब्लेयर है. 6 दिन से 16 दिन में यहां की यात्रा की जा सकती है. समुद्री यात्रा के दौरान वनस्पतियों व जीवजंतुओं के दर्शन करने के साथसाथ समुद्री सूर्योदय व सूर्यास्त का आनंद भी लिया जा सकता है.

दर्शनीय स्थल

सेल्यूलर जेल

यह पोर्ट ब्लेयर समुद्र तट के समीप बना हुआ है. आज यह राष्ट्रीय स्मारक है. यह 1896 में बनना प्रारंभ हुआ व 1906 में बन कर पूर्ण हुआ. यह जेल तिमंजिला है तथा 7 भुजाओं के आकार में बना है. इस की सातों भुजाएं केंद्रीय मीनार से जुड़ी होने से एक ही पहरेदार द्वारा नियंत्रित की जाती थीं. 698 एकांत कोठरियां होने से इस का नाम सेल्यूलर जेल पड़ा.

इस जेल में क्रांतिकारियों को दिल दहला देने वाली यातनाएं दी जाती थीं. चारों ओर समुद्र होने से क्रांतिकारियों का बाहर निकलना असंभव था. इसलिए इसे काला पानी के नाम से जाना जाने लगा. वीर सावरकर, बटुकेश्वर दत्त, बाबा



ब्लेयर आज एक आकर्षक न स्थल बन गया है.

न सिंह आदि को इसी जेल में गया था.

इसी परिसर में फांसीघर व दान बेदी भी है, जो शहीदों की दिलाती है. संध्या 6 से 7 बजे हिंदी में व रात्रि 7 बजे से 8 अंगरेजी में 'प्रकाश व ध्वनि' क्रम दिखाया जाता है जो हमें तों के साहसी क्रियाकलाप व प्रेम को दर्शाता है. सेल्यूलर जेल सोमवार को बंद रहता है.

म सा मिल

यह एशिया की सब से बड़ी मिल है जो कि केंद्रीय सरकार यंत्रण में है. यहां तीन पारियों र्य किया जाता है. पड़ाक, न, बादाम, टीक, गुरजन, टंग व्हाइट चोगलम आदि लकड़ियां कर जहाज द्वारा लाई जाती हैं. में भिगो कर इन्हें क्रेन द्वारा मिल में लाया जाता है. पूर्णतया रा कार्य होता है. कंपनी का है कि यहां अब तक कोई नहीं हुई है.

चिड़ियाघर

यह छोटे बच्चों के लिए आकर्षण का केंद्र है. समय हो तो देखा जा सकता है.

सामुद्रिक वस्तु संग्रहालय

समुद्र में पाई जाने वाली वनस्पति व जीवों का यह अनोखा संग्रहालय 30 से 40 मिनट में देखा जा सकता है. यह विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है. मत्स्य संग्रहालय भी देखा जा सकता है.

आदिवासी वस्तु संग्रहालय

इस संग्रहालय में अंडमान निकोबार आदिवासियों की जीवन

पैकेज टूर का किराया

मद्रास व कलकत्ता से पोर्ट ब्लेयर के लिए पैकेज टूर की अवधि, सुविधा व किराया.

अवधि	मार्ग	सुविधा	किराया	
			वातानुकूलित रु.	सामान्य रु.
5 दिन	वायुमार्ग	स्थानीय व आसपास के दृश्यस्थल, भोजन, रहने की व्यवस्था के साथ.	17,380	16,490
6 दिन	वायुमार्ग	स्थानीय व आसपास के दृश्यस्थल, भोजन, रहने की व्यवस्था के साथ.	18,570	17,310
8 दिन	जलमार्ग जाना वायुमार्ग आना	"	14,945	13,350
10 दिन (डीलक्स)	जलमार्ग	"	10,840	8,920
15 दिन	जलमार्ग	"	16,170	12,990

2 से 9 वर्ष के बच्चों का किराया उपरोक्त दर का 65%.



शैली से संबंधित फोटोग्राफ, उन के जीवन में उपयोग आने वाली वस्तुओं का अच्छा संग्रह है. समय हो तो अवश्य देखें.

अन्य देखने योग्य टापू

जाली बाय

यहां पोर्ट ब्लेयर से बस द्वारा वंडूर हो कर जाया जाता है. बस द्वारा वंडूर की दूरी 30 किलोमीटर है. यहां पर मेरीन नेशनल पार्क है. वंडूर में वनविभाग का विश्रामगृह है. वंडूर से जाली बाय बोट द्वारा जाया जाता है. नाव में तल पर पारदर्शी ग्लास लगा होता है. जाली बाय में समुद्री जीव, रंगीन मछलियां, वनस्पति (कोजल्स) प्राकृतिक रूप से उपलब्ध रहते हैं इन्हें पारदर्शी ग्लास से देखने में आनंद आता है. यह पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है. वंडूर से जाली बाय तक बोट का किराया 75 रु. प्रति यात्री है. तैरना आता हो तो चश्मे लगा कर तैरें ये चश्मे किराए पर उपलब्ध हो जाते हैं. यहा जलपान, पीने के पानी की व्यवस्था स्वयं ही करनी होगी यहां से सूर्यास्त के पूर्व लौट जाना चाहिए क्योंकि यहां रात्रि में रुकने की कोई व्यवस्था नहीं है

हेवलाक टापू

पोर्ट ब्लेयर से हेवलाक 4 घंटे में फेनिक्स बे तथा जेट्टी फेरी बे से जाया जाता है. किराया मात्र 13 रु. प्रति व्यक्ति है. समुद्र में नाव यात्रा का आनंद भूले नहीं भुलाया जा सकता. हेवलाक स्थित राधा नगर बीच काफी प्रसिद्ध है. सफेद महीन बालू लिए समुद्र की गरजती लहरें पर्यटकों का दिल दहला देती हैं. यहां रात्रि में ठहरने की व्यवस्था है. हालीडे होम का आरक्षण पोर्ट ब्लेयर से होता है जिस का किराया रु. 200 से 800 प्रति रात्रि है. हालीडे होम की व्यवस्था बहुत ही अच्छी है. अगर आप चाहें तो समुद्र के किनारे तंबू (टेंट) की व्यवस्था मात्र 100 रु. में हो जाती है. फोटोग्राफी के लिए यह उत्तम स्थल है. विदेशियों के लिए यह आकर्षण का केंद्र है. यहां भोजन की व्यवस्था के लिए छोटेछोटे सस्ते कमबाई होटल हैं. यहां के हाटबाजार घूमघूम कर, नारियल पानी पी कर आनंद लिया जा सकता है

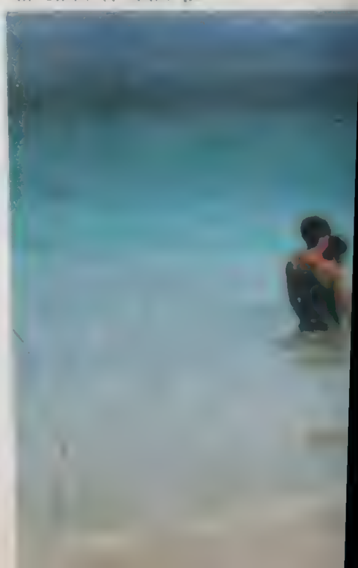
चिडिया टापू

बस द्वारा जंगल मार्ग से 25 किलोमीटर की दूरी पर स्थित चिडिया टापू प्रकृति प्रेमियों के लिए वरदान है. यहां का सूर्यास्त देखने योग्य होता है.

यहां सागर कम गहरा होने से लहरें नहीं उठतीं. काफी दूर तक जाने के पश्चात भी पानी घुटनों से अधिक नहीं है. भोजन की व्यवस्था स्वयं को करनी पड़ती है. यह पिकनिक के लिए उपयुक्त स्थान है.

पोर्ट ब्लेयर समुद्र तट के समीप बना सेल्यूलर जेल राष्ट्रीय स्मारक है.

जालीबाय में पर्यटक समुद्र में तैरने का आनंद ले सकते हैं.



...र टापू

31.19 हेक्टेयर में बसा यह टापू है. 1867 में इस टापू के का कार्य प्रारंभ हुआ. लेफ्टि- आर्ची बोल्ड ब्लेयर 1767 में र जहाज से यहां आए थे. उन ाइपर जहाज यहां पर डूब जाने स का नाम वाइपर रखा गया. बनी जेल में एक ही सांकल में कैदियों को बांधा जाता था. मेव की हत्या करने वाले पठान भली को यहीं पर मृत्युदंड दिया था. क्रांतिकारी नानी गोपाल, लाल, पुलिन दास को भूख ल करने की सजा के रूप में बंदी बना कर रखा गया था.

सेल्यूलर जेल बनने के पूर्व ा बंदियों को इसी जेल में रखा था, यातनाएं दी जाती थीं तथा भी दी जाती थी. लाल रंग की मारत अब खंडहर बन कर रह .

... टापू

पोर्ट ब्लेयर के पूर्व यह तों की राजधानी थी. अब इस वशेष मात्र रह गए हैं. पहले पर सचिवालय, गिरजाघर, र, बाजार, अस्पताल की थीं. अब यह भारतीय नौसेना, त्रालय के अधीन है. यहां समुद्र तैरना वर्जित है. यहां पर मोर, स्वच्छंदता से भ्रमण करते हुए ा सकते हैं.

मात्र 6 रुपए में पोर्ट ब्लेयर से यहां जाया जा सकता है. बुधवार को यह बंद रहता है.

कहां ठहरें? पोर्ट ब्लेयर

पोर्ट ब्लेयर में पर्यटकों के लिए ठहरने हेतु छोटेबड़े होटल, गेस्ट हाउसों की संख्या 50 से 55 तक है, जिन का किराया 40 रु. से 2,500 रु. प्रति कमरा है.

होटल	पता	टेलीफोन	श्रेणी
बे आयलैंड	मेरीन हिल	20881	उत्तम
अंडमान बीच रिसोर्ट	कोरबियन कोव	21463	उत्तम
सिन क्लेअर्स	वे ब्रिव-3812 साउथ पाइंट	21158	उत्तम
एन के इंटरनेशनल	–	20113, 21066	उत्तम
शैंपेन एवं ट्रेवल्स	2 मिडिल पाइंट	20644, 20360	उत्तम
धनलक्ष्मी	मार्केट एरिया	21306	साधारण
शालीमार	दिलानीपुर	–	साधारण
कविता	अबरदीन बाजार	21763	साधारण
बंगाल के.पी.	–	21762	साधारण
महाराष्ट्र मंडल	हिंदी भवन के सामने	21493	साधारण
यात्री निवास	मैगापाड	20207	साधारण
हार्न बिल नेस्ट	–	20018	साधारण
मेरीन हिल नुक नेस्ट	–	30365	–
अभिषेक	गोलघर	–	साधारण
यात्री निवास	–	–	साधारण
आंध्रा एसोसिएशन	–	–	–
तमिल एसोसिएशन	–	–	–
सरकारी गेस्ट हाउस	–	–	–
नगरपालिका गेस्ट हाउस	मेरीना पार्क	–	साधारण
नगरपालिका गेस्ट हाउस	दिलानीपुर	–	साधारण
दीवानसिंह गुरुद्वारा	–	–	–
अतुल स्मृति समिति	–	–	–



वाटर स्पोर्ट्स कांपलेक्स

पोर्ट ब्लेयर में सेल्यूलर जेल के समीप बना वाटर स्पोर्ट्स कांपलेक्स पर्यटकों को आकर्षित करता है. विद्युत रोशनी से सुसज्जित यह स्थान शाम को देखने योग्य होता है. यहां जलपान की व्यवस्था है. जलक्रीड़ा संबंधी नवीनतम गतिशील यंत्र यहां उपलब्ध हैं. यहां सुरक्षा की पूरी व्यवस्था है. अलगअलग स्पोर्ट्स के लिए समयानुसार अलगअलग दर है. यहां बच्चों को 9 रु. फीस पर यातायात नियम सिखाए जाते हैं.

● *एसटीडी कोड : 03192*

–नलिनी मेहता

162/13

सुमन सौरभ

किशोरों की सचेतक पत्रिका



अप्रै
199

आज का युवा अपने कैरियर के प्रति विशेष रूप से जागरूक है. सुमन सौरभ के इस कैरियर विशेषांक में कई ले
हैं जो आप के लिए पथप्रदर्शक सिद्ध होंगे.

कैरियर विशेषांक

ज्ञानवर्धक लेख



- कंपनी सचिव
- टेक्सटाइल इंजीनियरिंग : रोजगार के बेहतर अवसर
- डाइटीशियन : एक स्वर्णिम कैरियर
- मल्टीमीडिया में स्वर्णिम भविष्य
- मौसम विज्ञान में कैरियर
- कार्टोग्राफी : भविष्य सुरक्षित है

रोचक कहानियां



- खुशी के आंसू
- अप्रैल फूल
- चमत्कारी पत्थर
- फोन वाला मजनू
- तलाश अभी जारी है
- ईश्वर दर्शन

नामी
तियोगिताओं
भाग
जिए और
तिए

2,300 रुपए नकद और पुस्तकें

या आप जानना चाहते हैं कि...

प्लेनेटेरियम क्या होते हैं?

विश्व का सब से खतरनाक जानवर कौन सा है?

सामान्य तौर पर लगी आग पानी से कैसे बुझ जाती है?

इन के अतिरिक्त अन्य रोचक जानकारी, प्रेरणादायक कविताएं एवं स्थायी स्तंभ

ने की प्रति मुफ्त मंगाने के लिए 3.00 रुपए का डाक टिकट भेजें :

सुमन सौरभ
-3, झंडेवाला एस्टेट
नी झांसी रोड,
ई दिल्ली-110055.

नाम ....

पता ....

....

.... पिन कोड

यह अनूठा संग्रह खरीदना न भूलें...


नन्हे मुन्नों के लिए हास्य एवं ज्ञान से भरपूर पत्रिका
अप्रैल (प्रथम) 1998
चंपक
चंपक
मुनो कहानी
बिल्लू राजा
निडर जंबकू
ब्लैक होल
चतुर मुरगा
ज्ञान बढ़ाओ
चंपक समाचार
शब्दजाल प्रतियोगिता
मजेदार चित्रकथाएं
चीकू
नकली नोट
डिक्टाफोन
और अपहरण
मन बहलाओ
देखो हंस न देना
नन्ही कलम से
KHALIL

बच्चों के मुख से

मेरे चाचाजी के 5 वर्षीय बेटी स्वाति कुछ अधिक ही जिज्ञासु है. एक दिन वह चाचाजी के पास बैठी टीवी देख रही थी. उस समय टीवी पर हिंदी समाचार प्रसारित हो रहे थे.

तभी उस ने प्रश्न किया, "पापा, यह क्या आ रहा है?"

चाचाजी ने उत्तर दिया कि हिंदी न्यूज (समाचार) आ रही है.

कुछ देर बाद जब अंगरेजी समाचार आने लगे तो उस ने पुनः सवाल किया, "पापा, यह क्या है?"



चाचाजी बोले कि इंगलिश न्यूज आ रही है.

तभी चाचाजी की छोटी ...टी ने उत्सुकता से पूछा कि इस ...के बाद क्या आएगा तो स्वाति ...ट से बोली, "अरे बुद्धू, इतना ...भी नहीं जानती...इस के बाद ...थ्स' की न्यूज आएंगी."

इतना सुनना था कि कमरे ...हंसी का ठहाका गूंज उठा.

–प्राची माहेश्वरी

*

...रे चाचाजी के 2 बेटे हैं. बड़ा मोनू और छोटा सोनू, ...कि सिर्फ 5 वर्ष का है, ...तु है बड़ा नटखट.

एक दिन चाचाजी ...ाक में ही उस से पूछ बैठे, ...च्छा सोनू, बताओ तुम्हें ...न सी हिरोइन सब से अधिक पसंद है?"

पहले तो वह बहुत देर तक टालता रहा, परंतु फिर मनपसंद चाकलेट खाने के बाद शरमाते हुए बता ही दिया, "करिश्मा कपूर."

इस पर चाचाजी उसे छेड़ने के लिहाज से बोले, "कहे तो तेरी उस से शादी करा दूं?"

तब वह रोंआसा हो कर बोला, "चाहता तो मैं भी यही था, पर क्या करूं, मोनू भैया को भी वही पसंद है."

–कामना शर्मा

एक दिन मैं अपने पिताजी के साथ ट्रेन द्वारा जयपुर जा रहा था. साथ में मेरा 6 वर्षीय छोटा भाई सुकेश भी था.

ट्रेन एक स्टेशन पर रुकी. पिताजी उस स्टेशन का नाम जानना चाहते थे, अतः उन्होंने खिड़की के पास बैठे मेरे छोटे भाई से स्टेशन का नाम पूछा.

इस पर सुकेश तत्परता से बोला, "शौचालय स्टेशन आया है, पिताजी."

हमें बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह कौन सा स्टेशन है, अतः उत्सुकतावश जैसे ही मैं ने और पिताजी ने खिड़की से बाहर झांक कर देखा तो दोनों ठहाका लगा कर हंस पड़े.

दरअसल हमारा डब्बा एक शौचालय के सामने जा कर रुका था, जिस के बाहर मोटेमोटे काले अक्षरों में 'शौचालय' लिखा था.

–मुकेश शर्मा

*

मैं अपनी देवरानी की 14 व 8 वर्षीय बेटियों को अकसर पढ़ाती रहती हूं. मेरी छोटी भतीजी पढाई में थोड़ी तेज है और बहुत बातूनी भी है, इसलिए जबतब पढ़ाई के बीच में ही कुछ न कुछ बोल पड़ती है.

एक दिन मैं अपनी बड़ी भतीजी को समझा रही थी कि



भाषण अंगरेजी में देना हो तो बोलते हैं, 'लेडीज एंड जेंटलमैन, और अगर हिंदी में देना हो तो कहते हैं, 'सज्जनो और...,' इस से पहले कि मैं आगे कुछ बोल पाती, छोटी भतीजी तपाक से बोल पड़ी, "...सजनियो."

इतना सुनते ही मैं जोर से हंस पड़ी और वह मेरा मुंह ताकती रह गई. –रेखा अंजुम ●

इस स्तंभ के लिए आप अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बात भेज सकते है. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

दीपा एक हंसमुख, मिलनसार एवं सदैव दूसरों की सेवा के लिए तत्पर, सुसंस्कृत महिला थीं. 12 वर्ष हो गए विवाह को, इलाज पर रुपया पानी की तरह बहाया, किंतु संतान सुख नहीं मिला था, पर किसी ने भी उन्हें कभी निराश एवं हताश नहीं देखा, उस का श्रेय वह अपने पति नरेंद्र को देती थीं. उन का कहना था, 'क्या अपना, क्या पराया. समझो तो सब अपने हैं, न समझो तो अपने भी पराए हो जाते हैं.'

कहानी ● सुधा आदेश

आज की सच्चाई

'खट...खट...खट...'

"दरवाजा खुला है, अंदर आ जाओ," सुनंदा को मालूम था कि दिनेश स्नानघर में दरवाजा खोल कर घुसे होंगे. सुबह का समय वास्तव में अति व्यस्तता का होता है, उसी समय पेपर, दूध, सब्जी वालों के आने का वक्त होता है. उन को डाक्टर ने 15 दिन का आराम और बताया है, अत: यहीं से बैठेबैठे वह सब को निर्देश देती रहती हैं.

"दीदी, दलिया ले कर आई हूं, आप के लिए मीठा और जीजाजी के लिए नमकीन, मूंग की दाल का. जीजाजी से कह दीजिएगा, दोपहर का खाना भी मैं दे जाऊंगी, अत: नाहक परेशान न हों," दीपा अंदर आते हुए बोलीं.

"तुम क्यों परेशान हो रही हो, डबलरोटी, आमलेट, खिचड़ी वगैरह तो बना ही लेते हैं."

"कैसी बात कर रही हैं, मैं जानती नहीं क्या, जीजाजी को...कभी चाय बना कर पी है, उन्होंने?"

"हां, सब वक्त का फेर है, नौकरी पर थे तो सदैव नौकर रहे और अब...पैसा देने पर भी ढंग के नौकर नहीं मिलते...सब बाबू बनना चाहते हैं...घर का काम करना किसी को भी पसंद नहीं...," कह कर उन्होंने एक लंबी सांस ली.

"क्यों मन को दुखी करती हैं. नौकर चला गया तो क्या हुआ, हमारे हाथ सलामत रहें, ऐसे समय में हम एकदूसरे की मदद नहीं करेंगे तो कौन करेगा. अच्छा दीदी, मैं चलती हूं, यह घूमने गए हैं...आते ही नाश्ता चाहिए, फिर आऊंगी."



घर में ही 3 से 6 वर्ष के बच्चों के लिए 'किंडरगार्टन' पद्धति का स्कूल चला रही थीं. बच्चों की देखभाल के लिए एक नौकरानी रखी हुई थी. वह बच्चों के साथ समय बिता कर मानसिक रूप से संतुष्ट हो जातीं. उन के यहां के बच्चों को शहर के प्रतिष्ठित स्कूलों में आसानी से प्रवेश मिल जाता, अतः अधिकांश मातापिता अपने बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा के लिए उन के किंडरगार्टन में भेजना चाहते.

"कौन आया था?" दिनेश बाहर आते हुए बोले.

"दीपा दलिया दे गई है तथा दोपहर का खाना भी बना कर लाने के लिए कह गई है."

"तुम ने मना नहीं किया...मैं खिचड़ी बना लेता..."

"मना तो किया था, किंतु मानी नहीं," फिर थोड़ा रुक कर बोलीं, "मेरे कारण आप को इस उम्र में भी काम करना पड़ रहा है."

"इस में दुखी होने की क्या बात है, रिटायर होने के पश्चात घर के कामों में हाथ बंटाना ही चाहिए. स्त्री तो कभी अवकाश प्राप्त नहीं करती, अतः यदि पुरुष अपने खाली समय का उपयोग स्त्री के साथ मिल कर उस के कामों में हाथ बंटा कर करे तो मैं इस में कुछ भी अनुचित नहीं समझता. लो, दलिया खा लो, वरना ठंडा हो जाएगा," वह अपना नमकीन दलिया ले कर खुद भी खाने लगे.

"पता नहीं कल से ऋचा की बहुत याद आ रही है, 9वां महीना चल रहा है, पता नहीं कैसी है, इधर 2 दिन से फोन भी नहीं आया, वरना जब से बीमार पड़ी हूं, रोज ही फोन कर के हालचाल पूछ लेती है."



"आज सुबह ही ऋचा का फोन आया था...तुम सो रही थीं, अतः जगाया नहीं. वह

दोदो बच्चों के होते हुए भी सुनंदा और दिनेश को अकेले परेशानियों से जूझते देख कर दीपा का निसंतान होने का दुख कुछ कम हो गया. उसे लगा कि न सही खून के रिश्ते, व्यावहारिक आत्मिक संबंध भी उन से कुछ कम नहीं हैं. क्या यही था जीवन का कटु सत्य?

ठीक है, चिंता की कोई बात नहीं है...फिर सुधीर स्वयं भी डाक्टर है, सब संभाल लेगा."

"मुझे जगा दिया होता, बीमार क्या पड़ी हूं, हमेशा सोती ही रहती हूं, उस की आवाज सुन कर ही मन को शांति मिल जाती. पूरे 5 वर्ष हो गए हैं, उसे देखे हुए."

"बैंक से पैसे निकलवाने हैं, डाक्टर से तुम्हारी दवाएं लिखवानी हैं, अतः जा रहा हूं. जल्दी लौटने का प्रयास करूंगा. दवा बगल में मेज पर रखी है, एक घंटे पश्चात खा लेना. रिमोट तुम्हारे पास है ही, टीवी देखना हो तो चला लेना," उन्होंने स्विच 'आन' कर दिया और बोले, "ताला बंद कर के चाबी दीपा को दे जाऊंगा. अचानक यदि किसी चीज की आवश्यकता पड़े तो दीपा को फोन कर के बुला लेना. कुछ काम करने का प्रयत्न मत करना, आराम करना...," हिदायतें देते हुए दिनेश बोले.

"तुम ने मुझे कैदी बना दिया है," हंसते हुए सुनंदा बोलीं.

"क्या करूं, पिछले कुछ दिनों की घटनाओं ने मन को हिला दिया है. घर में अकेली स्त्री या वृद्ध लोगों को देख कर असामाजिक तत्त्व अंदर घुस कर चोरी करने का प्रयास करते हैं. विरोध करने पर मारपीट भी करने से नहीं हिचकते, सावधानी तो रखनी ही चाहिए. वैसे ताला इसलिए बंद कर के जा रहा हूं, जिस से सेल्समैन इत्यादि नाहक आ कर तंग न करें. दोढाई घंटा लग ही जाएंगे, तुम चिंता मत करना."

दिनेश तो मशवरा दे कर चले गए.

टीवी देखना सुनंदा को प्रारंभ से ही अच्छा नहीं लगता था. अवकाश के क्षणों में किताबें उन की सच्ची साथी होतीं, मानसिक तृप्ति का अहसास करातीं. अंगरेजी भाषा में एम.ए. करने के पश्चात भी अंगरेजी साहित्य में उन की कभी रुचि नहीं रही, क्योंकि उन में अपने देश की माटी की सुगंध नहीं थी. किंतु रवींद्रनाथ टैगोर, शरतचंद्र, प्रेमचंद्र, आचार्य चतुरसेन इत्यादि को खूब पढ़ा. घर में छोटी सी लाइब्रेरी थी. जब भी मन करता, किताबों में खो जातीं.

किंतु इधर कुछ दिनों से किताबों में भी मन नहीं लग रहा था. बेटी ऋचा का पहला प्रसव था, अतः सदैव मन आशंकित रहता था. वैसे तो दामाद प्रवीन एवं बेटी दोनों डाक्टर हैं किंतु प्रसव के पश्चात स्त्री का 'पुनर्जन्म' ही होता है. पिछली बार फोन पर बातें करतेकरते रो पड़ी थी, 'क्या करूं मां, विवश हूं, ऐसी हालत में चाह कर भी नहीं आ सकती. थोड़ा ठीक हो जाओ तो तुम और पिताजी यहां आ जाओ, ढंग से इलाज करवाऊंगी, यहां काफी बड़ा अस्पताल है, फिर प्रवीन हृदय रोग से संबंधित विभाग में ही कार्यरत हैं.'

बच्चों के मामले में वे अत्यंत सुखी रहे. ऋचा का मेडिकल में चयन तथा पास होने के तुरंत बाद डाक्टर लड़के द्वारा स्वयं उस का हाथ मांगना और कुछ ही समय पश्चात दोनों को ही अमेरिका में छात्रवृत्ति मिलना...सब कुछ इतनी जल्दी एवं एकाएक हुआ कि न सोचने के लिए समय मिला और न ही कुछ करने के लिए. प्रवीन जैसा सर्वगुण संपन्न पति पा कर ऋचा अत्यंत प्रसन्न है, दोनों एकदूसरे के पूरक हैं. यही विचार दूर

ह कर भी उन्हें मानसिक संतोष देता है.

बेटा नीरज प्रारंभ से ही पढ़ने में अच्छा

"नहीं बेटी, गलती कैसी, तुम तो बच्चे हो मारे. बच्चों की गलतियों पर मांबाप कभी यान नहीं देते," बोलते हुए सुनंदा की आंखें म हो गईं.

परिणाम था कि वह आई.ए.एस. की परीक्षा में सफल हुआ और अब पुलिस अधीक्षक के पद को सुशोभित कर रहा है. दिनेश स्वयं प्रशासनिक सेवा में थे, अतः चाहते भी थे कि उन का एकमात्र पुत्र उसी क्षेत्र में जाए और उस ने अपने पिता के स्वप्नों को साकार कर दिया था.



हीं था. टीवी, क्रिकेट का इतना शौकीन कि पढ़ाई उस के लिए द्वितीय वरीयता वस्तु बन गई थी, किंतु ऋचा के मेडिकल चयन के पश्चात आए परिवर्तन का ही

दिनेश को अपने दोनों बच्चों पर बहुत गर्व था. जब वह रिटायर हुए थे, तब एक प्राइवेट कंपनी में ऊंचे ओहदे की नौकरी मिल रही थी किंतु नीरज ने मना कर दिया

यह कह कर कि 'बहुत दिन काम किया आप ने, पूरा जीवन हम लोगों की परवरिश में व्यतीत कर दिया, अब आराम कीजिए.'

दिनेश भी अब स्वतंत्र जीवन बिताना चाहते थे. लिखने का अत्यंत शौक था, जब भी व्यस्ततम क्षणों से मुक्ति मिलती, डायरी के पन्ने रंगने लगते. मन के रंगों से जीवन के विभिन्न पड़ावों पर मिले चेहरों को पहचान कर उन्हें मनपसंद रूप देना चाहते थे, अतः नौकरी को ठुकरा दिया.

एक बार नीरज एवं पल्लवी छुट्टियां बिताने आए थे. जाते समय नीरज कहने लगा, 'पहले आप नौकरी में थे, तो कहते थे कि छुट्टी नहीं है. अब हमारे साथ चलिए, हमें भी सेवा करने का मौका दीजिए,' और जिद कर के उन्हें साथ ले गए.

वे भी उस के आग्रह को ठुकरा नहीं पाए और परिवर्तन की चाह लिए उन के साथ चले गए थे. नीरज का काम ही ऐसा था, सुबह का गया शाम को आता था. कभीकभी रात को भी जाना पड़ता था. पल्लवी को भी सामाजिक गतिविधियों के कारण अकसर बाहर जाना पड़ता था. यद्यपि उन के कारण अति आवश्यक काम होने पर ही जाती थी, किंतु उन के आग्रह करने पर कि 'हमारे कारण अपने दैनिक कार्यों में क्यों व्यवधान डालती हो,' निसंकोच जाने लगी थी.

नन्हा अमोल 'दादाजी, अम्मांजी' कहता हुआ उन से चिपटा रहता. कभी वह दिनेश की नाक पकड़ता, कभी बाल और कभी उन की पीठ पर चढ़ कर घोड़ा बनने के लिए विवश कर देता. दिनेश में आए परिवर्तन को देख कर सुनंदा आश्चर्यचकित रह जातीं, विश्वास ही नहीं होता था कि यह वही दिनेश हैं, जिन्होंने अपने बच्चों को कभी गोद में भी नहीं उठाया था.

एक बार सुनंदा बीमार पड़ गई थीं. नौकर छुट्टी पर गया हुआ था. उस समय नीरज मात्र 2 वर्ष का था. दिनेश डाक्टर से बोले, 'कोई ऐसी दवा दीजिए, जिस से यह तुरंत ठीक हो जाए.'

डाक्टर के कारण पूछने पर बोले, 'यार, और सब ठीक है, किंतु इस शैतान को नहीं संभाला जाता.'

लेकिन दिन में 8 घंटे अमोल के साथ व्यतीत करते, फिर भी मन नहीं भरता था. नीरज आफिस से आते ही सीधा उन के कमरे में आता और वहीं बैठेबैठे बातोंबातों में शाम से रात हो जाती. चाय, नाश्ता भी वहीं आ जाता. खाना खाने के लिए अवश्य भोजन कक्ष में जाना पड़ता था. जिस दिन किसी कार्यवश वह आफिस से जल्दी न आ पाता, देरी से आने के लिए क्षमा मांगता. पल्लवी भी उन का जरूरत से ज्यादा ध्यान रखती थी.

किंतु फिर भी दोनों का खाली बैठेबैठे मन नहीं लगता था. अपना घर याद आता, किंतु बच्चे का प्यार पैरों में बेड़ियां पहना देता था. अकेलेपन को दूर करने के लिए रोज सायं घूमने निकल जाते. अमोल भी साथ चलता और कभी चाकलेट तो कभी आइसक्रीम की फरमाइश कर बैठता.

पल्लवी ने 1-2 बार दबे स्वर में मना भी किया था कि रोजरोज उस की फरमाइश को पूरा करना उचित नहीं. लेकिन दादीदादा के लिए बच्चे की फरमाइश को टालना संभव नहीं था.

एक दिन अमोल चाकलेट ले कर आया. उस समय पल्लवी की सहेली आई हुई थी. मां को दिखा कर वहीं बैठेबैठे खाने लगा तथा गंदे हाथ वेलवेट के कीमती सोफे से पोंछ दिए. सहेली के जाते ही पल्लवी ने अमोल को मारना एवं डांटना प्रारंभ कर दिया, 'चाकलेट से सारा सोफा गंदा कर दिया.'

'बेटी, सोफे पर लगे दाग तो साफ हो जाएंगे, किंतु बच्चों के कोमल मन पर लगे जख्मों को मिटाना असंभव होगा. फूल की तरह नाजुक बच्चों को मारने से वे असमय ही कुम्हला जाते हैं.'

'पिताजी, आप बीच में मत बोलिए,

ाप के लाड़प्यार में ही बिगड़ा जा रहा है,' ल्लवी आवेश में बोल उठी थी.

दिनेश कुछ कहने ही जा रहे थे कि सुनंदा इशारे से रोक दिया. इस के पहले पल्लवी भी इतनी जोर से उन के सामने नहीं बोली ी.

उन्हें लगने लगा था, दूर से प्रेम के बंध मजबूत बने रहते हैं, पास रहने पर भी न कभी टकराव की स्थिति अनचाहे, नजाने आ ही जाती है, जो मन में दरार दा कर के संबंधों को कमजोर बना सकती . अतः उसी समय निर्णय ले लिया था, हेंगे तो अलग ही, भले ही बीचबीच में आ र बच्चों से मिलते रहेंगे.

उन्होंने दूसरे दिन लौटने का निर्णय नाया तो नीरज हक्काबक्का रह गया, 'यह या, अभी तो आप को आए एक महीना नहीं हुआ...हमारा मन भी नहीं भरा और प ने जाने का निर्णय ले लिया. क्या हम कोई भूल हो गई है?'

'नहीं, बेटा, भूल तो तुम से हो ही नहीं कती. हमारा ही मन नहीं लग रहा है, इतने न घर छोड़ कर कभी रहे नहीं...पेड़पौधे सूख रहे होंगे. कुछ व्यक्तिगत काम भी के पड़े हैं, कुछ समय पश्चात फिर आ एंगे...'

'अम्मांजी, मुझ से कोई भूल हो गई तो क्षमा कीजिए,' चलते समय पल्लवी पैर छूते हुए कहा था, शायद मन ही मन र्मिंदा थी.

'नहीं, बेटी, गलती कैसी...तुम तो बच्चे हमारे...बच्चों की गलतियों पर मांबाप ी ध्यान नहीं देते,' सुनंदा ने नम हो आई खों को आंचल से पोंछते हुए कहा था.

नन्हा अमोल आते समय खूब रोया था, बा...अम्मां, मत जाओ...फिर कभी जिद करूंगा, चाकलेट नहीं मांगूंगा...,' उस मासूम रुदन पैरों में बेड़ियां डालने लगा

किंतु सोचा, बच्चा है, कुछ समय ात सब भूल जाएगा.



आईना

चेहरा दिल का आईना
हुआ करता था अब नहीं होता,
अब तो इनसान अपने आप से भी
रूबरू नहीं होता.

—ओमप्रकाश बजाज

4-5 वर्ष कैसे बीत गए, पता ही नहीं चला. प्रत्येक होली, दिवाली पर नीरज और पल्लवी आते. अमोल उन के आंचल की छांव में आ कर ऐसे छिप जाता, जैसे मासूम, मृगछौना. ढेर सारी बातें करता...स्कूल की, घर की, मित्रों की...दादाजी के साथ बैठा घंटों वीडियो गेम खेलता रहता था, दादी से ज्यादा उसे अपने दादाजी से लगाव था, क्योंकि वह तो शैतानी करते देख उसे डांट भी देती थीं, किंतु उन्होंने तो कभी अपनी संतानों को नहीं डांटा तो उसे क्या डांटते.

नीरज, पल्लवी को सभी पड़ोसी अपने घर आने का न्योता देते तथा न आने पर बुरा भी मान लेते थे. अतः समय निकाल कर सभी के घर थोड़ीथोड़ी देर के लिए जाना ही पड़ता किंतु सब से अधिक लगाव उन से दीपा एवं नरेंद्र को ही था.

कभीकभी पल्लवी कहती, 'लगता ही नहीं है, मैं ससुराल आई हूं. सभी इतने अच्छे और मिलनसार हैं...तभी आप का हमारे पास रहने को दिल नहीं करता.'

'बेटा, मेरा तो कहीं भी दिल लग जाता है, किंतु तुम्हारे ससुर अपनी मित्रमंडली को छोड़ कर कहीं जाना ही नहीं चाहते. यहां सब के साथ दिन कैसे बीत जाता है, पता ही नहीं चलता.'

एक दिन सुनंदा घर के बगीचे में पानी दे रही थीं, अचानक उन्हें लगा, चक्कर आ जाएगा. उस समय दिनेश किसी काम से बाहर गए हुए थे. वह वहीं बैठ गईं. बेचैनी, घबराहट एवं सीने में रहरह कर उठता दर्द उन्हें व्याकुल कर रहा था.

दीपा ने उन्हें अपने घर की खिड़की से देखा तो तुरंत दौड़ीदौड़ी आई. उन की नाजुक स्थिति देख कर दिनेश के लिए परचा लिख कर और नौकरानी की सहायता से उन्हें कार में बिठा कर नर्सिंग होम ले गई.

सुनंदा को दिल का दौरा पड़ा था. दिनेश हड़बड़ाए नर्सिंग होम पहुंचे तथा स्थिति की गंभीरता को देख कर होशोहवास ही खो बैठे. मानसिक रूप से इतना टूट गए थे कि उन्हें भी नींद का इंजेक्शन दे कर सुलाना पड़ा. सभी अड़ोसीपड़ोसी आ गए थे. नीरज को भी फोन कर दिया गया. सब अपनेअपने तरीके से सहायता कर रहे थे, कोई डाक्टर के निर्देशानुसार दवा ला रहा था, कोई सुनंदा को देख रहा था तो कोई दिनेश को.

सूचना मिलते ही नीरज और पल्लवी आ गए थे. दोनों को देख कर दिनेश थोड़ा संतुलित हुए.

सुनंदा 5 दिन नर्सिंग होम में रहीं. बाद में जब दिनेश का हाल पता चला तो उन्हें एकाएक विश्वास ही नहीं हुआ कि उन को खो देने की आशंका उन्हें इतना हिला देगी कि कुछ पलों के लिए मानसिक संतुलन ही गंवा बैठेंगे. एक नवीन रिश्ता कायम हुआ था...उस दिन के पश्चात वह उन का बदला हुआ रूप देख रही थीं, पलपल उन की आवश्यकताओं की ओर ध्यान देते, कभी दवा, तो कभी फल के लिए पूछते. बेटेबहू के सामने सुनंदा को झिझक भी लगती, किंतु मन के किसी अज्ञात कोने में अपने प्यार पर गर्व भी होता.

दीपा, नरेंद्र ने भी उन की देखभाल में कोई कसर नहीं छोड़ी थी. खाना बनाने वाली नौकरानी भी उन्होंने ही ढूंढ़ कर दी थी. नीरज तो 4-5 दिन रह कर चला गया. पल्लवी को भी अमोल की वार्षिक परीक्षा के कारण जाना पड़ा था. नीरज तो उन्हें साथ ही ले जाना चाहता था, किंतु डाक्टरों ने यात्रा करने की इजाजत नहीं दी थी.

खाना बनाने वाली नौकरानी लीला की मां मर गई थी, जिस से उसे जाना पड़ा. यद्यपि घर के अन्य कार्यों के लिए दूसरी नौकरानी थी, पर वह कई जगह काम करती थी, अतः खाना बनाने के लिए उस ने मना कर दिया...

ताला खुलने की आवाज से उन की विचार तंद्रा भंग हुई.

"दीदी, यह क्या? अकेले किन विचारों में डूबी हो? टीवी ही चला लिया होता तो मन तो नहीं भटकता..." दीपा खाना मेज पर रखते हुए बोलीं.

"मन को भटकना होता है तो भटक ही जाता है, सामने आदमी खड़ा हो, फिर भी नहीं दिखता."

"दीदी, सच, आप को देख कर लगता है, मैं ने जीवन के 12 वर्ष व्यर्थ चिंता में बिता दिए. यदि जीवन के उत्तरार्ध में अकेले ही रहना है तो क्या अंतर है, संतानयुक्त और निसंतान दंपती में?"

सुनंदा समझ नहीं पा रही थीं कि क्या उत्तर दें. भरापूरा परिवार होते हुए भी कोई पास नहीं था. आकाश को लांघने के प्रयत्न में अपने दिल के टुकड़े छितर गए थे. यद्यपि एकदूसरे के लिए चिंतित अवश्य थे, किंतु विवश भी थे. उन के दिलोदिमाग में मीना के शब्द गूंजने लगे. जब भी कोई उन से 2 बेटियों के पश्चात 1 बेटे के लिए प्रयत्न करने के लिए कहता तो शांत मन से कहतीं, 'ना बाबा, आज के युग में लड़कालड़की दोनों बराबर हैं. परिपक्व होने पर न लड़का पास रहता है और न लड़की...फिर पुत्र की

ा क्यों? प्रकृति ने जो दिया है, उसी से तुष्ट हूं. दोनों की भली प्रकार परवरिश योग्य बना सकूं, इस से ज्यादा सुख और होगा?'

"दीपा, तुम क्यों हमारे लिए इतनी ान हो रही हो? इनसान को अपना बोझ उठाने की आदत होनी चाहिए," दिनेश दर आते हुए कहा.

जीजाजी, ऐसा कह कर क्यों मुझे त कर रहे हैं? क्या मैं भूल सकती हूं दिन जब नरेंद्र को डबल न्यूमोनिया हो था, उस समय जितनी आप ने और दीदी ी हिम्मत बढ़ाई थी...सहायता की थी, तो मेरे अपने भी नहीं कर सके. कोई न रह कर चला गया, कोई 4 दिन. यदि न होते तो मैं अकेली अस्पताल के र कैसे काट पाती."

फिर थोड़ा रुक कर बोलीं, ने...खून के रिश्ते तो सामाजिक दायित्वों झ तले मजबूर हैं. अब अगर हम आपस कदूसरे का साथ नहीं देंगे, सहायता नहीं तो कौन करेगा? खून का रिश्ता न व्यावहारिक एवं दैनिक आवश्यकताओं र्ति के लिए आत्मिक संबंध तो बन ही . एक को कष्ट में देख कर दूसरा शांत बैठा रह सकता है? क्या यह मानवीय र के प्रतिकूल नहीं होगा?"

तभी कार के हार्न की आवाज सुनाई दीपा बोलीं, "लगता है यह आ गए हैं...मैं चलती हूं."

दिल में तीर की तरह चुभते दीपा के वचनों को सुनंदा ने दिनेश के सामने रखा तो वह बोले, "दीपा नादान है, शायद ऐसा कह कर दिल को झूठी तसल्ली दे रही है. बच्चे तो जीवन का सार हैं...किरण हैं आने वाले कल की, किरणों को फैलने से क्या कोई रोक पाया है? उन का काम प्रकाश फैलाना है, फैलाएंगी ही. किरणों को कमरे में कैद कर के तो नहीं रखा जा सकता? किरणों के प्रकाश को हम सहन न कर सकें, उन के साथ चल न सकें तो इस में उन का क्या दोष? हमें तो प्रसन्न होना चाहिए कि हमारे ज्योतिपुंज अपनेअपने तरीकों से संसार को प्रकाशित कर रहे हैं. हमें अपना दृष्टिकोण बदलना चाहिए, नई पीढ़ी को आलोचनात्मक दृष्टिकोण से न देख कर सकारात्मक दृष्टि से देखना चाहिए, तभी हम भी प्रसन्न रह पाएंगे और वे भी स्वतंत्र रूप से कार्य करने में सक्षम हो सकेंगे."

एकाएक सुनंदा को महसूस हुआ कि सिरहाने रखे नीरज एवं ऋचा के फोटो से अनेक ज्योतिपुंजों ने निकल कर उन के तनमन को आलोकित कर दिया है तथा रहरह कर एक आवाज गूंज रही है, 'मां, हम तो आप के पास ही हैं, आप की ममता के भूखे, पर विवश हैं...'

उन्हें भी लगने लगा था, यही आज की सचाई है और शायद जीवन का कटु सत्य भी. ●

बेहतर स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है आयोडीनयुक्त नमक

भर में प्रतिवर्ष कम से कम 30,000 मृत बच्चों का जन्म होता है, जिस का मुख्य कारण है, ों में आयोडीन की कमी. पूरे विश्व में करीब 1,20,000 से भी अधिक बच्चे जन्म से 'क्रेटिन' ं. ये बच्चे मंदबुद्धि, शारीरिक रूप से कमजोर, गूंगे, बहरे तथा अपंग होते हैं.

खाने में प्रयोग होने वाले नमक का आयोडीनयुक्त होना अति आवश्यक है. यह नमक आयोडीन मी को रोकने और उसे दूर करने में सक्षम होता है. वास्तव में भारत विश्व में आयोडीन की से प्रभावित राष्ट्रों में प्रमुख है. यह आम धारणा है कि आयोडीन की कमी कुछ विशेष क्षेत्रों ी सीमित है. जबकि इस की कमी से होने वाले रोगों का फैलाव बहुत ज्यादा है.

अभी तक प्राप्त जानकारी के अनुसार आयोडीन की कमी से प्रभावित प्राइमरी स्कूल जाने वाले की संख्या लगभग 4 करोड़ है. इन बच्चों का बौद्धिक स्तर (आई.क्यू.) कुल मिला कर 430 अंक (10 अंक/प्रति बच्चा) कम है.

उस की जगह

कहानी • अश्विनी कुमार भटनागर

फोन की घंटी ने तंद्रा की स्थिति में बैठे अविनाश को लगभग चौंका दिया. उन्होंने हड़बड़ा कर रिसीवर उठाया, "हेलो."

"हेलोहेलो, क्या कर रहे हो," उधर से नाराजगी भरा मधुर स्वर सुनाई दिया, "8 बजे फोन करने का वादा किया था और घड़ी में बज रहे हैं 10..."

"मैं ने वादा किया था?" अविनाश ने आश्चर्य से पूछा.

"लो, यह भी भूल गए?" उस मधुर स्वर ने कहा, "अब इतने भोले मत बनो... और यह तुम्हारी आवाज को क्या हुआ? मैं ने कल तुम्हें खांसी की गोली खाने को दी थी...खाई? बड़े लापरवाह हो. तुम्हें अकेले छोड़ना बड़ा खतरनाक है. मैं सोचती हूं, तुम्हें शादी कर के घर बसा ही लेना चाहिए."

'बाप रे, एक सांस में इतनी बातें?' अविनाश का सिर घूम गया, 'मैं तो इसे जानता तक नहीं, शायद गलत नंबर लगा दिया.'

उन्होंने गहरी सांस ले कर कहा, "गलत नंबर है."

"गलत?" उस मधुर स्वर ने चिढ़ कर कहा, "अब यह नाटकबाजी छोड़ो. मुझे तो स्कूल में पहाड़े भी ठीक तरह से याद नहीं होते थे, पर तुम्हारा नंबर तो तोते की तरह रटा हुआ है. बोलूं क्या? अब सीधेसीधे बोलो, क्या बात है, नहीं तो पीटूंगी."

अविनाश सोचने लगे, इतना बोलती है कि सोचने तक का अवसर नहीं देती. जब इतनी आत्मीयता और धौंस से बोल रही है तो नाम, पता या फोन नंबर पूछना भी मुश्किल है. पर यह लड़की (शायद लड़की ही है) है कौन?

तभी अचानक अविनाश की समझ में बात आ गई, आ क्या गई, धीरेधीरे आ रही थी.

अविनाश की आवाज उन के बेटे अखिल से इतनी मिलती थी कि विशेषकर फोन पर सब धोखा खा जाते.

अखिल शीतल पेय की बहुराष्ट्रीय कंपनी में मार्केटिंग अधिकारी था. अच्छा वेतन और अच्छे भत्ते. बस, अधिकतर दौरे पर रहना पड़ता था. 2 दिन पहले उस ने घर में कदम रखे ही थे कि दफ्तर से फोन आ गया कि तुरंत कानपुर के लिए रवाना हो जाए.

अविनाश की पत्नी कुछ दिन पहले भानजे की शादी पर भाई के यहां पूना चली गई थी. अविनाश को इतनी जल्दी जाना नहीं था, इस कारण आराम से रिटायर जिंदगी का सदुपयोग कर रहे थे.

अविनाश ने हंस कर फोन पर वार्त्तालाप जारी रखते हुए कहा, "पीटोगी तो तब, जब मुझ से मिलोगी. वैसे यह सच है कि मुझे सुबह फोन करने की एकदम याद नहीं रही."

"वाह, बहुत खूब?" मधुर स्वर ने कटु व्यंग्य से कहा, "इतनी बार वादा किया था कि यह वादा याद रहेगा, पर कोई असर नहीं. अब कहोगे कि यह बसंती कौन है?"

अविनाश मन ही मन चहक उठे, 'वाह, तो इस मधुर स्वर का नाम बसंती है.'

"बसंती...कौन बसंती?" उन्होंने मजा



अविनाश को समय काटने का एक अच्छा अवसर मिल गया था वह फोन पर बसंती की बातों का आनंद उठा रहे थे और बसंती भी बकबक किए जा रही थी. इस बात से पूर्णतः अनभिज्ञ कि वह उस का अक्खी नहीं बल्कि...

लेते हुए कहा, "वही 'शोले' की तांगे वाली?"

"अब तो बच्चू, तुम्हें जरूर पीटूंगी," बसंती ने क्रोध से कहा, "कितनी बार कहा है कि यह घिसापिटा मजाक मुझे पसंद नहीं...पर तुम पर कोई असर ही नहीं होता...कोई शरीफजादी तुम्हारे साथ शादी नहीं करेगी."

"यह तो तुम ने बहुत अच्छा आशीर्वाद दिया है," अविनाश हंसे, "वैसे मैं शादीशुदा हूं और 1 बच्चे का बाप भी हूं."

"यह सब मुझे मालूम है," बसंती ने झल्ला कर कहा, "मुझ से पीछा छुड़ाने के लिए कितनी ही कहानियां बनाओ, पर मुझ पर कोई असर नहीं होगा. लगता है, पिताजी से तुम्हारी शिकायत करनी ही पड़ेगी."

"पिताजी से?" अविनाश ने आश्चर्य से पूछा, "किस के...तुम्हारे या मेरे?"

"बुद्धू कहीं के," बसंती हंस कर बोली, "तुम्हारी शिकायत तुम्हारे पिताजी से ही तो करूंगी."

"पर बसंती," अविनाश ने नकली गंभीरता से कहा, "मेरे पिताजी तो ऊपर चले गए हैं और ऊपर जाने की तुम्हारी उम्र अभी है नहीं."

"देखो अक्खी," बसंती ने भी गंभीरता से कहा, "मैं मजाक के मूड में नहीं हूं और न ही मुझे यह शरारत पसंद है...और..."

'अक्खी' नाम पर अविनाश को हंसी आ गई, "बसंती, जरा सांस तो ले लो..."

"यह क्या बसंतीबसंती' लगा रखा है," उस ने झिड़कते हुए कहा, "कल तक तो प्यार से 'बानोबानो' पुकारते थे और अब इतनी नजाकत भरी औपचारिकता झाड़ रहे हो."

'बाप रे,' अविनाश चकरा गए, 'लगता है, मैं सचमुच ही बूढ़ा हो गया हूं, जवानी के सारे संवाद भूल गया हूं और नए माहौल से इतनी दूर भटक गया हूं. अब आजकल के लड़केलड़कियां अपने असली नामों से कहां जाने जाते हैं...बाबी, बब्बू, चंक्की, चिंक्की, पिंकी, गोल्डी, विक्की, सैम और न जाने क्याक्या. भला हो इन टीवी धारावाहिकों का, बिगड़े नामों और नवाबों का पूरा खजाना हैं. खैर, तो हमारी बसंती का नाम बानो है. असली नहीं, प्यार का नाम बानो है.'

"माफ करना बानो," अविनाश ने थोड़ा हकलाते हुए कहा, "मुझे लगा, कोई हमारी बात सुन रहा है."

"ऐ," बसंती ने घबरा कर पूछा, "पिताजी तो नहीं हैं? मेरा दिल धड़क रहा है. तुम तो कहते थे कि 10 बजे वह पुस्तकालय चले जाते हैं."

"जाते तो हैं, पर आज घर पर ही हैं."

"बाप रे," बसंती का स्वर कांप गया, "यह तो बड़ी गड़बड़ हो गई."

"गड़बड़ तो हो गई, पर अब क्या हो सकता है," अविनाश ने मुसकरा कर कहा, "कभी न कभी तो पोल खुलेगी ही."

"सो तो है...पर मैं अभी तैयार नहीं हूं."

"क्यों, क्या एम.ए. का इम्तिहान दे रही हो?" अविनाश ने अंधेरे में तीर फेंका.

"पता नहीं तुम्हें क्या हो गया है," उस ने नाराजगी का इजहार करते हुए कहा, "बहकीबहकी बातें कर रहे हो. शोध कर रही हूं, क्या जानते नहीं?"

अविनाश को झटका लगा, 'पीएच.डी.,
ा है, अपना इलाज कराना पड़ेगा.
कियां बड़ी चतुर होती हैं. लड़के पढ़ें या
, वे अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को साकार
में लगी रहती हैं.'

"ओहो, जानता हूं," अविनाश ने भूल
ने की कोशिश की.



कुछ कहा आप ने?" अखिल शरमाते
ा से बोला.

'ठीक है," बसंती ने फुसफुसा कर
"लगता है, पिताजी आ रहे हैं. इसी
म बहकीबहकी बातें कर रहे हो. खैर,
जल्दी में हूं...लाइब्रेरी से फोन कर
वैसे अब तुम्हें ही फोन करना चाहिए."

अविनाश ने मन ही मन कहा, 'भली लड़की, अपना फोन नंबर तो बता दे?'

उन्होंने फिर कोशिश की और धीरे से पूछा, "कौन से नंबर पर फोन करूं?"

"फिर वही शरारत," बसंती ने झिड़क कर कहा, "जाओ, मैं नहीं बोलती."

बसंती उर्फ बानो ने फोन रख दिया. अविनाश फोन का चोंगा काफी देर तक हाथ में पकड़े रहे. वह धीरेधीरे मुसकरा रहे थे. पुरानी मधुर यादें सता रही थीं और यह भी सोच रहे थे कि अपनी जवानी में क्या खोया और क्या पाने से महरूम रहे.

उन्होंने एक गहरी, लंबी सांस ली और फिर अपने लिए एक प्याला चाय का बनाया. वह सोच रहे थे कि क्या बसंती फिर से फोन करेगी? अगर करेगी तो उन का समय कट जाएगा. यह आश्चर्य अवश्य हुआ कि इस आधुनिक दौर में किस ने उस का नाम बसंती रख दिया.

न चाहते हुए भी कान फोन की तरफ लगे रहे कि बस, अब बजा कि अब बजा.

जब घंटी बजी तो उस समय शाम के लगभग 4 बजे थे. अविनाश ने लपक कर फोन उठाया. अखिल अकसर 4 बजे घर में ही होता था. जहां कहीं भी जाता था, खाना खाने घर अवश्य आता था और फिर थोड़ा आराम कर के 5 बजे लौट जाता था.

"फोन नहीं किया न?" बसंती ने शिकायत की, "मुझे लगता है, तुम बदल रहे हो. देखो, अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है...तुम समझ रहे हो, दुनिया में एक तुम ही कुंआरे रह गए हो. यह मैं अच्छी तरह से बता रही हूं कि अगर कभी किसी ऐसे टापू पर तुम्हारे साथ फंस गई, जहां हम दोनों के सिवा कोई तीसरा इनसान नहीं होगा, तब

भी मैं तुम से शादी नहीं करूंगी...हरगिज नहीं करूंगी."

"सुनो," अविनाश ने गला साफ करते हुए कहा, "तुम्हारा नाम बसंती किस ने रखा है?"

"फिर वही मजाक," उस ने क्रोध से कहा, "जाओ, मैं बात नहीं करती..." उस ने रिसीवर रख दिया.

अविनाश भौचक्का रह गए. मन में दुख हुआ, क्योंकि वह तो एक लंबी बातचीत की प्रतीक्षा में बैठे थे. काश, वह अपना फोन नंबर बता देती.

तभी घंटी बजी तो अविनाश ने सहमते हुए रिसीवर उठाया.

"सुनो, मिस्टर सड़कछाप रोमियो," बसंती के स्वर में तीखा व्यंग्य था, "आखिरी बार कह रही हूं, मेरा नाम बसंती मेरी दादी ने रखा था, क्योंकि मैं ने वसंत पंचमी के दिन इस दुनिया को गुलजार किया था. अब पूछोगे कि वसंत में ऐसी क्या खास बात होती है तो वह भी सुनो...इसी वसंत पंचमी के सुहावने खुशबूदार दिन मेरे मांबाप की शादी हुई थी. वैसे मैं ने दृढ़ इरादा कर लिया है..."

अविनाश को हंसी आ गई, पर आश्चर्य से पूछा, "क्या इरादा कर लिया है?"

"इतवार के समाचारपत्र में देख लेना," बसंती ने रहस्यमय अंदाज से कहा.

"इतवार के समाचारपत्र में ही क्यों?"

"क्योंकि मिस्टर अक्खी," बसंती ने एकएक शब्द पर जोर देते हुए कहा, "मैं उस दिन घोषणा कर रही हूं कि आज से मेरा नाम बसंती नहीं, सोनाली होगा, सुना, सो...ना...ली..."

"पर यह नाम तो जंचा नहीं," अविनाश ने शरारत से कहा, "बसंती तो एकदम फिट है, जैसे हाथ में दस्ताने, पैर में मोजा, कमर पर पेटी, आंखों पर चश्मा..."

"बसबस, ज्यादा मत बोलो," बसंती ने कटुता से कहा, "शब्दकोश के शब्द खत्म हो जाएंगे. वैसे मैं महसूस कर रही हूं, तुम कुछ अधिक ही शरारती हो गए हो. देखो, कहे देती हूं, अगर अब छेड़खानी की तो मैं पिताजी से शिकायत करूंगी. मुझे मालूम है, वह बहुत अच्छे हैं."

अविनाश को अपनी प्रशंसा सुन कर अच्छा लगा. मुसकरा कर कहा, "पर पिताजी तो एकदम भोलेभाले हैं...अच्छा होगा, तुम मां से शिकायत करो, वह बहुत सख्त हैं."

"अरे नहीं," बसंती ने बौखला कर कहा, "मैं मां से नहीं कहूंगी...डर लगता है."

"अरे वाह, तब तो बड़ी मुश्किल होगी. तुम मां से डरोगी, मां तुम से डरेंगी. और मैं तुम दोनों से डरूंगा. वाह, क्या त्रिकोण है."

बसंती ने कुछ सोचते हुए कहा, "मुझे तुम्हारी बात में कुछ अजीब सी बू आ रही है. ऐसा क्यों लगता है कि तुम बदलेबदले से लग रहे हो."

"भ्रम है, बानो," अविनाश ने कहा, "मेरा मतलब है सोनाली. जुकाम एक ऐसा मर्ज है जो इनसान का सारा व्यक्तित्व ही बदल देता है."

"तुम्हें आराम की जरूरत है," बसंती ने चिंतित स्वर में कहा, "छाती पर मालिश कर लेना और मां से कह कर गरम दूध में थोड़ी हलदी मिला कर रात में पी लेना."

"पर मां तो यहां हैं नहीं."

"ओह, हां...मैं तो भूल ही गई. वह तो पूना शादी में गई हैं. पिताजी घर पर नहीं होते तो मैं ही आ कर कुछ सेवा कर देती."

"कोई बात नहीं," अविनाश ने आनंद लेते हुए कहा, "तुम आ जाओ. इसी बहाने पिताजी से भी मिल लेना. शायद पहली नजर में ही बात खत्म हो जाए."

बसंती के स्वर में क्रोध की झलक थी, "मैं ने कितनी बार कहा है कि तुम्हारा यह बेहूदा मजाक पसंद नहीं. ऐसे ही कैसे बिना किसी भूमिका के उन के ऊपर आफत की तरह टूट पड़ूं. अरे भई, परिचय भी तो आहिस्ताआहिस्ता प्यार के झूले की तरह बढ़ाना पड़ता है. सब कोई तुम्हारी तरह चालू थोड़े ही होते हैं कि पहली मुलाकात में ही

ठे, 'मुझ से शादी करोगी?' अब अगर मय मैं ने इनकार कर दिया होता तो क्या हालत होती...कभी सोचा है?"

अविनाश को हंसी आ गई तो बसंती ा, "हंसे क्यों?"

"क्यों, हंसना मना है?"

"नहीं, मना तो नहीं है," बसंती ने हुए कहा, "पर आज तुम हंस भी तरह से रहे हो...मुझे मूर्ख तो नहीं हे?"

"नहींनहीं," अविनाश ने जल्दी से "मैं बहुत संजीदा हूं. सुनो, कब और मिलोगी?"

"फिर वही ऊटपटांग सवाल," उस ने कर कहा, "तुम्हें हो क्या गया है?"

नाश ने फिर अपने को संभाला. वह लगे, 'लगता है, इन दोनों का समय थान लगभग निश्चित रहता है. अब स्य कैसे मालूम हो?'

"दरअसल मैं परेशान हूं," अविनाश , "अचानक कानपुर जाने का समय या है. तुम से मिलने का समय भी ना मुश्किल लगता है. मैं इस समय सामान बांध रहा हूं."

'बाप रे," उस ने दुखी हो कर पूछा, आओगे?"

'पता नहीं...काम खत्म कर के ही आ वैसे 2 दिन भी लग सकते हैं और भी."

संती ने कड़वाहट से कहा, "2 महीने 2 साल भी. वाह, क्या तब तक मैं के इंतजार में कुंआरी ही बैठी रहूंगी?"

नहींनहीं," अविनाश ने शीघ्रता से इंतजार क्यों करोगी...कुंआरे लड़कों ी तो है नहीं. वैसे, तुम्हारा शोध भी होना बाकी है."

संती ने व्यंग्य से कहा, "तुम्हें तो ी है, मेरा पीएच.डी. का गाइड डा. ज लाइन मारता है और अपनी मां की बात करता है. सोचती हूं, उसे से कोई लाभ नहीं."



साए दर्द के

जरा ठहर जाओ
दिए अभी बुझाए हैं
गमों की रात गुजरी थी नहीं
जिंदगी में दर्द के साए हैं
ढलते पहर जब से आए हैं
काफिले के बुत बनाए हैं.

–अनिल पुष्कर कवींद्र

"नहींनहीं," अविनाश ने भारी आवाज में कहा, "उसे जरूर लटका दो, पर फंदा गले में ही डालना."

बसंती खिलखिला कर हंस पड़ी. ऐसी खुली हंसी अविनाश ने बहुत कम सुनी थी. सुन कर बहुत अच्छा लगा.

"सुनो," बसंती ने पूछा, "पिताजी पूना कब जा रहे हैं?"

"क्यों, उन से जल्दी मिलना है क्या? तुम आज की चाय पर आ जाओ न."

"फिर वही," बसंती ने चिढ़ कर कहा, "मैं बहुत पीटूंगी."

"अच्छाअच्छा, पीट लेना. घर वाले ही नहीं, सारे महल्ले वाले भी जान जाएंगे कि बानो अपने पति को पीटती है."

"ओहो," बसंती ने ठंडी सांस छोड़ते हुए कहा, "तुम नहीं सुधरोगे. दरअसल मैं उन की अनुपस्थिति में तुम्हारा घर देखना चाहती हूं...पता तो लगे कि मुझे कहां और कैसे रहना है."

"और अगर जो कुछ देखा, वह पसंद

न आया तो?"

"यह बात तो है," बसंती ने सोचते हुए कहा, "पर जब ओखली में सिर दूंगी तो मूसल से क्या डरूंगी?"

तभी दरवाजे की घंटी बजी.

"लगता है, कोई आया है," अविनाश ने कहा, "रुको, अभी आता हूं."

"नहींनहीं, बहुत देर हो गई," बसंती ने घबरा कर कहा, "शायद पिताजी होंगे...फिर बात करूंगी."

मुसकरा कर सिर हिलाते हुए अविनाश ने रिसीवर रख दिया. दरवाजा खोल कर देखा तो सामने अखिल खड़ा था.

"तुम," अविनाश ने हंसते हुए कहा, "फोन भी नहीं किया?"

"समय नहीं मिला, काम हो गया, सो चल पड़ा," अखिल ने कहा, "वैसे हवाई अड्डे से फोन किया था...यहां की लाइन व्यस्त थी."

"ओह," अविनाश का संक्षिप्त उत्तर था.

"क्या, मां का फोन था?" अखिल ने उत्सुकता से पूछा.

"नहीं," अविनाश ने फिर छोटा सा उत्तर दिया.

"तो किस का था?" अखिल ने जल्दी से पूछा.

"बसंती का," अविनाश मुसकराए.

एक बम विस्फोट और फिर सन्नाटा. अखिल का चेहरा सुर्ख हो गया. वह जल्दी से सूटकेस उठा कर अपने कमरे में चला गया. ऐसी स्थिति आएगी, उस ने यह कल्पना भी नहीं की थी. सोचा था अपने ढंग से सूचना देगा. पहले धीरेधीरे मां को पटाएगा और फिर पिताजी को रास्ते पर लाएगा. न जाने क्याक्या सोच रखा था, पर यहां तो कुछ का कुछ हो गया.

हाथमुंह धो कर वह चुपचाप बाहर जाने लगा तो अविनाश ने टोका, "कहां जा रहे हो? लड़की से बात कर लो."

"कर लूंगा," अखिल ने शरमाते हुए कहा, "उस के घर में फोन नहीं है."

"ओह, तो यह बात है."

"क्या?" अखिल ने पूछा, "कुछ कहा आप ने?"

"कुछ नहीं," अविनाश ने मुसकरा कर कहा, "लड़की अच्छी है."

अखिल ने उत्तर न दिया. चेहरे की लाली सामने शीशे में साफ नजर आ रही थी. वह सोचने लगा कि बसंती कैसी मूर्ख है, कुछ समय तक चुप बैठी नहीं रह सकती थी.

थोड़ी देर बाद अखिल चुपचाप घर से बाहर चला गया.

कुछ महीने बाद अखिल की शादी बसंती उर्फ बानो उर्फ सोनाली से हो गई.

कई महीने तक बसंती अविनाश से नजरें चुराती रही. वह अकसर सोचती, होने वाले ससुर से कोई ऐसे तड़तड़ बातें करता है?

उधर अविनाश कुछ बोलते नहीं थे, केवल हंसते रहते थे.

अकेले में बसंती अकसर अखिल से कहती, "अगर तुम्हारे भरोसे बैठी रहती तो यह शादी कभी न होती. तुम्हारा तो मांबाप के सामने मुंह भी न खुलता, अनजाने में ही सही, मैं ने कह तो दिया."

"पर ऐसे भी क्या बोलना," अखिल व्यंग्य से कहता, "मानो चीनी का बोरा फट गया हो."

यह सुनते ही बसंती की खनखनाती हंसी पूरे घर में गूंज उठी.

मन महकने लगा



मेरी चाहत
तुम्हारी आहट,
फिर मन बल्लियों
उछलने लगा है.

तन की खुमारी
मिलन की तैयारी,
प्रफुल्लित तन
सजनेसंवरने लगा है.

ऋतु का मुसकाना
प्रकृति का गाना,
फिर यह मौसम
बहकने लगा है.

सुबह से शाम
यह मन निष्काम,
तुम्हारे लिए मन,
तरसने लगा है.

–ओम उपाध्याय



चावल

"रोहित, मौन का अर्थ कई बार स्वीकृति भी होता है," शांति ने बेटे से कहा, "हम अपनी चिट्ठियों में तुम से कितनी बार पूछते रहे, कितने रिश्तों के बारे में विस्तार से लिखते रहे...और तुम..."

"मां, अब आप को कैसे समझाऊं," रोहित ने धीरे से कहा, "मैं ने जब अपने किसी भी पत्र में आप की सुझाई हुई किसी लड़की के बारे में रुचि नहीं दिखाई, तब..."

"ठीक है, बेटे, हम ने उलटा समझा होगा," पिता जगदीश कुमार बीच में सुलह



...का दाना

हानी ● प्रमिला नानिवडेकर

ाते हुए बोले, "लेकिन हम ने जो 5-7
कियां चुनी हैं, उन्हें देख कर उन में से
तुम पसंद कर लो तो यह कहानी संपूर्ण
ाएगी."

"नहीं, मैं ऐसे ही किसी लड़की को
, उस का अपमान समझता हूं. मैं इतने
से परिचय के जरिए किसी को अपना
साथी बनाना मूर्खता मानता हूं."

"यह कोई अमेरिका नहीं है," शांति
कर बोलीं, "यहां लड़कियों को आजमा
कर शादियां नहीं की जातीं."

"मैं साथ [illegible] की बात कहां करता हूं," रोहित कुछ गरम हो कर बोला, "लेकिन कुछ दिनों तक किसी को अच्छी तरह पहचानने के बाद ही उस के हाथों में अपनी जिंदगी सौंपना चाहता हूं."

"लो, यह और एक नया गुल खिला," जगदीश बोले, "अरे, इतने साल साथ बिताने पर भी...मैं अभी तक तुम्हारी मां को ठीक से पहचान नहीं पाया हूं."

"क्या बात करते हो," शांति ने तुनक कर कहा, "हम तो शादी से पहले आप को आंख उठा कर देख भी नहीं सके थे...फिर भी इतने वर्षों से गृहस्थी चला रहे हैं

या नहीं? क्या खराबी है हमारे घरसंसार में?"

"मां, आप मुझे ऐसे विवादों के कीचड़ में मत फंसाइए," रोहित हंसते हुए हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया, "मैं तो चला बाहर...अनिल ने बुलाया है."

रोहित चला गया, पर उस के जाने से समस्या तो समाप्त नहीं हुई. पिछले 8 वर्षों से वह अमेरिका में नौकरी कर रहा था. वहां किसी से शादी करने का इरादा हो, ऐसा भी तो नहीं लगता था. जगदीश ने कई बार उस के मन की टोह लेने का प्रयत्न किया तो था. हर 2 वर्ष बाद भारत के अंचल में महीना भर लेटने के लिए आतुर रोहित जिस तरह अपनी मां का या अन्य परिचित महिलाओं का आदर करता था, उस से तो यही निष्कर्ष निकाला जा सकता था कि भारतीय नारी का स्थान उस की नजर में आदरणीय है. उस की बातचीत से पता चलता था कि अमेरिकन युवतियों की स्वच्छंद प्रवृत्तियां उसे पसंद नहीं.

"लेकिन वहां भी तो अच्छी लड़कियां होंगी ही," जगदीश की बहन सरला ने एक बार कहा था, "हो सकता है, वहां की किसी भारतीय या विदेशी लड़की से परिचय बढ़ा कर बाद में ही वह शादी की ओर कदम बढ़ाए. वैसे इस में हरज भी क्या है?"

"पर दीदी, हम चाहते हैं कि वह भारत में रचेबसे किसी परिवार की लड़की से शादी करे," जगदीश ने कहा था, "ताकि दोनों परिवारों का आकर्षण उन्हें अपने वतन की ओर खींचता रहे. कभी...शायद...वे दोनों यहां लौट आएं."

"कम से कम साल, 2 साल में उन की मूरतें तो हमें दिखाई देती रहेंगी," शांति बोली थीं.

"यह तो तुम्हारा स्वार्थ हुआ, ममता की मांग हुई," जगदीश ने टोका, "अपनी जगह वह ठीक भी है. लेकिन मैं चाहता हूं, स्वदेश को छोड़ कर परदेश भागने वाले बुद्धिमान, होनहार नवयुवकों को किसी बहाने वापस वतन में लाया जाए."

"क्या यहां सड़ने के लिए? इस भ्रष्टाचार में दम घुटवाने के लिए? कदमकदम पर उन की राहों में रोड़े अटकाने के लिए?" रोहित की बहन रमोला ने गुस्से में पूछा था.

"अपना घर बुरा हो तो मनुष्य उसे सुधारने की, अच्छा बनाने की कोशिश तो करे...उसे छोड़ कर भागना, दूसरे के शानदार घर में जा कर डेरा जमाना भला कहां का न्याय है?" जगदीश गरम हो गए थे.

"सुनो, इस बहस का कोई अंत भी है... छोड़ो इसे. हमें पहले तो रोहित की शादी के बारे में सोचना है," शांति ने समझाया, "मैं काफी बना कर लाती हूं, तब तक आप और दीदी मिल कर अखबार में देने के लिए विज्ञापन का मसौदा तैयार कीजिए."

आखिर उस दिन विज्ञापन का मसौदा बना, फिर विज्ञापन छपा भी. अनेक उत्तर आए. उन में से छांट कर, खुद देखपरख कर, जगदीश और शांति ने 6 लड़कियां चुनी थीं, जिन में से किसी एक को रोहित पसंद कर सकता था.

मजे की बात तो यह थी कि हर पत्र में वे उसे इस बारे में ब्योरा देते रहे थे और वह इस विषय को टालता रहा था. उन्होंने उस के मौन को स्वीकृति समझा था. सोचा था, संकोचवश टाल रहा होगा. लेकिन अपनी तरफ से शायद रोहित अस्वीकृति जताता रहा था.

उन 6 लड़कियों के घरों से,

मांबाप की लाख कोशिशों के बावजूद रोहित शादी के मामले में लड़की को पूरी तरह जांचेपरखे बिना जीवनसाथी बनाना मूर्खता है.



द को चीरती हुई मीना आगे बढ़ी और ला और रोहित को अस्पताल ले गई.

केलड़की को परस्पर मिलवाने के बारे तारीखों व स्थानों के सुझाव आ रहे थे. शांति, जगदीश को न मक्खी निगलते ी थी, न उगलते.

"मेरे खयाल से सभी लोगों को रोहित शादी न करने के इरादे के बारे में लिखना ए," आखिर जगदीश ने निराशा से सिर ते हुए कहा, "एक से एक अच्छी कियां हैं...लड़के की जिंदगी बन ...खैर..."

"हां, परिवार, प्रतिष्ठा, शिक्षा, शिष्टाचार, रूप, रखरखाव...सभी कुछ परखने की कोशिश तो हम ने की थी. उन के स्वभाव और रुचियों के बारे में भी पता लगाने का प्रयास किया था," शांति बोलीं, "जो भी उसे सुहाती, उसी से शादी कर सकता था."

"छोड़ो...2-4 दिन में ही मैं सब को पत्र लिख दूंगा," कह कर जगदीश काम पर चले गए.

रोहित के आने से, शांति के घर आनेजाने वालों का तांता लगा रहता था. इस भीड़ से बचने के लिए एक दिन रमोला ने फिल्म देखने का कार्यक्रम बनाया. 11 बजे के शो में जाने की बात तय हुई थी. अचानक

दबाजी नहीं करना चाहता था. उस का विचार था कि किसी भी कन अचानक ऐसा क्या हुआ कि उस की यह सोच बदलने लगी?

ही शांति के दूर के रिश्ते के कुछ लोग आ टपके. शांति और जगदीश को अपना कार्यक्रम रद्द कर के उन की आवभगत में लग जाना पड़ा. रोहित पर उन दोनों के टिकट सिनेमाघर पर ही किसी को बेच देने का जिम्मा भी आ पड़ा था. इसीलिए कुछ तेज चलाने के कारण रोहित का स्कूटर किसी गाड़ी से टकरा गया. भाईबहन दोनों ही गिर पड़े. रोहित के पैरों पर स्कूटर गिरने के कारण, चोट लगी थी. रमोला दूर जा गिरी थी, उस के कंधों और हाथों पर चोटें लगी थीं.

भीड़ एकत्र होने लगी. हर आदमी प्रश्न पूछ रहा था, दया जता रहा था, लेकिन पुलिस के डर से कोई आगे नहीं आ रहा था.

तभी अपनी मोपेड को एक तरफ खड़ी कर के एक लड़की भीड़ को चीरती हुई अंदर घुसी, "कैसे लोग हैं, आप...चलिए, आइए यहां...स्कूटर उठाने में मेरी मदद कीजिए."

लोग मदद के लिए आगे बढ़े. स्कूटर उठवा कर एक ओर रखवाया गया. लड़की ने सहारा दे कर रमोला को खड़ा किया और रोहित को लोगों की मदद से सड़क के किनारे ले जा कर बिठाया.

फिर एक टैक्सी को रोक कर वह लड़की दोनों को अस्पताल ले गई. फिर उन से पता ले कर दुर्घटना के बारे में उन के घर के लोगों को बताने वह खुद गई.

"फोन कर दीजिएगा," रोहित ने नंबर दे कर कहा था. तब उस ने उसे धीरज बंधाते हुए जवाब दिया, "देखिए, चोटें गंभीर नहीं हैं, उन्हें डराने से क्या लाभ? वैसे भी मेरे साक्षात्कार का समय तो कब का हाथ से फिसल गया...अब खुद जा कर आप के मातापिता को धीरे से समझा कर समाचार दूंगी और उन्हें साथ ले आऊंगी. वैसे मेरा घर यहां से नजदीक ही है."

जगदीश और शांति जब अस्पताल पहुंचे, तब दवा के असर के कारण रमोला गहरी नींद में थी. घबराहट और सदमे से बचने का यही उपाय था. रोहित के पैर का एक्सरे लिया गया था. और शीघ्र ही उस पर प्लास्टर चढ़ने वाला था.

जगदीश और शांति को धीरज बंधा कर वह लड़की अपने घर चली गई. उस के जाने के बाद उन दोनों को होश आया कि किसी को न तो उस का नाम मालूम है न पता.

2-3 दिन में ही रोहित और रमोला को घर जाने की अनुमति मिल गई. केवल प्लास्टर खुलवाने के लिए रोहित को 6 हफ्तों के बाद वहां जाना था. डाक्टर से पूछने पर लड़की के घर का पता भी मिल गया. मरीजों को दाखिल करवाते समय उस का पता पूछा गया था. उस का फोन नंबर भी रजिस्टर में लिखा हुआ था.

लेकिन फोन पर संपर्क स्थापित करने से पहले वह खुद ही पहुंच गई.

"कैसे हैं, हमारे दोनों मित्र?" उस ने आते ही पूछा, "मैं अस्पताल गई तो पता चला कि..."

फिर बातचीत का सिलसिला शुरू हो गया.

"तो हमारे कारण आप की नौकरी का मौका हाथ से चला गया न?" कुछ देर बाद रोहित ने पूछा.

"दूसरा मौका मिल जाएगा," उस लड़की, मीना ने हंस कर कहा, "कई जगह अर्जियां भेजी हैं."

अपने मातापिता के साथ फिर आने का वादा करने के बाद मीना वहां से चली गई.

अपने कमरे में चारपाई पर लेटा हुआ रोहित मीना के बारे में सोच रहा था. वह महसूस कर रहा था, जैसे वह उसे कई वर्षों से जानता हो. उस का हंसमुख, निडर स्वभाव, दूसरों की सहायता के लिए त्याग करने की भावना और उस की सूझबूझ का रोहित पर अच्छाखासा प्रभाव पड़ा था. पढ़ीलिखी, मुक्त विचारों वाली पर शिष्टता का

त्व पहचानने वाली वह लड़की उसे भा थी.

रोहित सोच रहा था, 'किसी को जानने लिए समय की लंबाई का नाप आवश्यक ीं. किसी विशिष्ट परिस्थिति में कोई व्यक्ति सी प्रतिक्रिया जताता है, किस तरह का ताव करता है, उसी के जरिए उस के ूचे व्यक्तित्व की छोटी सी झलक मिल ती है. रूप, कला, धन, शिक्षा वगैरह का र तो बाद में आता है. रूप संवारा जा कता है, कला सीखी जा सकती है, धन माया जा सकता है और शिक्षा भी पाई सकती है, लेकिन घर के संस्कारों या बाप से मिले हुए गुणों को बदलना तबहुत कठिन है.

'मां ठीक ही कहती हैं कि चावल का दाना देखने से ही कुशल गृहिणी को ोला भर चावलों के बारे में पता चल ता है. कठिनाई के समय, संकटों की आग जिस प्रगल्भता और धैर्य से सामना या जाता है, उसी से सामना करने ने की परिपक्वता का पता चल जाता

ले किन मांबाप से यह सब वह अब किस से कहे? किस प्रकार समर्थन करे, अपने ले हुए विचारों का? कहीं यह अस्थायी कर्षण तो नहीं? किस से पूछे और कैसे कदम बढ़ाए?'

लेकिन उस की सारी उलझनों को ला ने 3-4 दिनों में ही सुलझा दिया.

"भैया, मीना से शादी कर लो," उस एक दिन कहा, "वह कितनी अच्छी

"लेकिन उस को परखने के लिए अपने के पास समय कहां है?" जगदीश हंस बोले, "बस, अभी 2 हफ्तों में तो यात्रा तैयारी करनी होगी."

शांति ने बेटे की ओर देखा. उस का च समझ कर वह बोलीं, "लड़की र है, शिष्ट है...शिक्षा, स्वभाव सब कुछ ही लगा मुझे. देखने में भी आकर्षक



तेरी याद

याद आई जो तेरी सनम
हर सांस महक गई
तेरी तस्वीर ही बनी संबल
वीरान रात कटी.

–कांता अरोड़ा

है, स्वस्थ है, उस के मातापिता से तो हम मिल ही चुके हैं...और क्या परखना है...क्यों रोहित?"

"हां, मां," रोहित हौले से हंस कर बोला, "वैसे शादी के बारे में मेरे विचार कुछ बदलने लगे हैं..."

"पिछले 15-20 दिनों से...," जगदीश ने जोड़ा.

"आप रोहित को बोलने तो दीजिए."

"मां, आप जिस तरह चावल का एक दाना दबा कर पतीला भर चावलों के पकने का अंदाजा लगा लेती हैं...उसी हिसाब से मुझे भी लड़की देखने की सलाह देती रही हैं...क्या आप इस लड़की के बारे में...?"

"मुझे कुछ इनामविनाम दो तो इस परीक्षा में तुम्हारी सहायता कर सकती हूं," रमोला शरारत से बोली, "उन की कई सहेलियों से मेरा परिचय है...उन के बारे में सब कुछ मालूम कर सकती हूं."

"बेटी, दूसरों के अनुभव का ज्ञान

हमारे काम का नहीं होता," जगदीश ने गंभीरता से कहा, "वैसे तुम्हारी उस दुर्घटना के बाद जो कुछ हम ने उन लोगों के बारे में खुद अनुभव किया है, उसी के आधार पर निर्णय लेना अच्छा होगा."

"सजधज कर सामने आना या दूसरे लोगों पर अपने व्यक्तित्व का जादू चलाने के लिए तैयारी कर के फिर सामना करना एक अलग बात है...और..." शांति ने वाक्य अधूरा छोड़ दिया.

"अपरिचित व्यक्तियों के साथ, अचानक सामना होने पर उन्हें जो व्यक्तित्व दिखाई देता है, वही हमारी सचाई होती है...मैं सही कह रहा हूं न?" जगदीश ने पूछा.

"मां, पिताजी...अगर आप को मीना पसंद हो और आप उसे मेरे योग्य समझते हों तो...," रोहित ने कहा, "मैं शादी कर के ही विदेश जाना चाहूंगा. वहां मैं अकेला रहता हूं...नातेदार, अपना देश, अपना समाज, हजारों मील दूर होते हैं, मैं समझता हूं कि...बहादुरी, सूझबूझ, सहानुभूति जैसे गुण बहुत मूल्यवान और उपयोगी साबित होते हैं..."

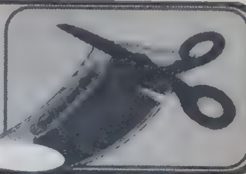
"लेकिन भैया...आप मीना से अभी मिले ही कितनी बार हो?" रमोला फिर शरारत पर उतर आई, "इतनी जल्दी इतना महत्त्वपूर्ण फैसला..."

"क्या मैं जानपहचान वाली किसी गोरी मेम को तेरी भाभी बना कर लाऊं?" रोहित ने पूछा.

घर का माहौल खुशनुमा हो गया था.

शादी तय हो चुकी थी. मीना भी रोहित के साथ विदेश जाने वाली थी. पर दोनों परिवारों को विश्वास था कि अपने सुलझे हुए विचारों के रेशमी सूत्र से मीना भारत के साथ अपने परिवार के बंधन जरूर दृढ़ रख पाएगी. शायद भविष्य में उसी सूत्र के सहारे वह इस महान वटवृक्ष की डालियों में अपना घोंसला बनाने के लिए कभी वापस भी आ जाए. ●

कर समस्याएं



मैं एक वेतनभोगी कर्मचारी हूं. मेरा सकल वेतन लगभग 1,21,000 रुपए बनने की संभावना है. मैं शौकिया तौर पर साहित्य लेखन में भी संलग्न हूं. यत्रतत्र छपी रचनाओं पर कुछ पारिश्रमिक आ जाता है, जिस पर मैं कर अदा करता रहा हूं. वर्ष 1997 में मेरी पुस्तक प्रकाशित हुई है. इस पर 7½ प्रतिशत की दर से रायल्टी मिलना तय हुआ है. कृपया बताएं कि प्राप्त होने वाली रायल्टी की राशि पर क्या कोई छूट मिलेगी अथवा कर निर्धारण करते समय कितना (कितनी दर से) कर देना होगा? इसे आयकर नक्शे में किस प्रकार दर्शाया जाएगा?

–प्रभाशंकर उपाध्याय, चित्तौड़गढ़

रायल्टी की आमदनी कर योग्य आय है, जिसे 'आय के विविध स्रोत' शीर्षक के अंदर आप को दिखाना है. यदि रायल्टी अर्जित करने में आप को वास्तविक रूप में कोई खर्च करना पड़े तो उतना खर्च कटौती के रूप में आप को प्राप्त होगा. अन्य कोई छूट रायल्टी की आमदनी पर प्राप्त नहीं होगी. 1,50,000 रुपए नेट करयोग्य आय के पश्चात आप को 30 प्रतिशत अधिकतम आयकर की दर से आयकर देना होगा.

*

मैं शासकीय अधिकारी हूं और 1 वर्ष बाद सेवानिवृत्त होने वाला हूं. मैं मुस्लिम समुदाय से संबंधित हूं. मैं सेवानिवृत्ति के समय प्राप्त राशि से अपनी विवाहित पुत्री को 1 लाख रुपए देना चाहता हूं. कृपया बताइए कि इस राशि के देने पर मुझे आयकर देना पड़ेगा अथवा नहीं? मेरी पुत्री को इस राशि की प्राप्ति पर क्या आयकर देना होगा अथवा नहीं? कितनी अधिकतम राशि मैं अपनी पुत्री को दे सकता हूं, जिस पर आयकर मेरी पुत्री को न देना पड़े? –एम. अभाजुल्लाह, बस्तर (म.प्र.)

आप यदि सेवानिवृत्ति के पश्चात प्राप्त राशि में से अपनी पुत्री को 1 लाख रुपए देंगे तो वह आयकर से मुक्त रहेगी, लेकिन उस पर 'गिफ्ट टैक्स' 30 प्रतिशत की दर से देना होगा. प्रथम 30,000 रुपया उपहार कर से मुक्त है, बाकी पर कर लगेगा. आप पुत्री को प्राप्त 1 लाख रुपए पर कोई भी आयकर नहीं देना होगा. इसलिए अच्छा यही हो कि आप प्रतिवर्ष अपनी विवाहित पुत्री को केवल 30,000 रुपए दें, ताकि वह उपहार कर से मुक्त हो.

*

मैं आप से यह जानना चाहता हूं कि फिक्स डिपाजिट (एफ.डी.) पर भी कर लगता है क्या ? जैसे हम ने बचत कर के 50,000 रुपए (एफ.डी.) के रूप में 5½ वर्ष के लिए जमा कराए हैं. क्या उस पर कर लगता है? कृपया मार्गदर्शन करने की कृपा करें.–भरत कुमार तिवारी, उज्जैन (म.प्र.)

फिक्स डिपाजिट पर कोई आयकर नहीं लगता, केवल फिक्स डिपाजिट से उत्पन्न होने वाली आय करयोग्य है. लेकिन यदि वर्ष का ब्याज, जो बैंक से प्राप्त होगा, वह 12,000 रुपए से अधिक नहीं होगा तो उस पर कर की छूट मिलेगी. यह धारा 80 एल के अंतर्गत है. यदि सरकारी प्रतिभूतियों आदि का ब्याज भी आप को मिलता है तो इस प्रकार का ब्याज 12,000 रुपए की अधिकतम सीमा तक करमुक्त रहेगा.

*

मेरी समस्या यह है कि सेवा में रहते हुए प्रति 2 वर्ष में एक बार 30 दिनों तथा प्रतिवर्ष में 15 दिनों की जो अवकाश नकदीकरण की सुविधा प्राप्त है तथा उस सुविधा से जो रकम प्राप्त होती है, क्या वह भी करमुक्त है? –एम.सी. राजपूत, जबलपुर

सेवा में रहते हुए जो अवकाश के बदले में आप को नकदीकरण हुआ है और जो सुविधा प्राप्त हुई है, उस रकम पर आप को आय कर देना होगा. आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 10 (10एए) के अंतर्गत ऐसी रकम पर कोई छूट प्राप्त नहीं होगी. ●

कर सलाहकार रामनिवास लखोटिया

इस स्तंभ में हमारे पाठकों के कर संबंधी प्रश्नों का उत्तर दिया जाता है. अपने प्रश्न इस पते पर भेजें:

कर समस्याएं, सरिता, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055



जान न पहचान, ये मेरे

मेरा शहर एक जानामाना पर्यटन स्थल है. इस वजह से मेरे सारे रिश्तेदार, वे भी, जिन्हें मैं भी नहीं जानता, जाने कहांकहां का रिश्ता निकाल कर तशरीफ का टोकरा निहायत ही बेशर्मी से उठा लाते हैं. फिर बड़े मजे से मेरे घर में रह कर सैरसपाटे करते हैं और हम अपनी सारी, यानी गरमी, दिवाली व क्रिसमस की छुट्टियां इन रिश्तेदारों की सेवा में होम कर देते हैं.

एक दिन मेरे बाप के नाना के बेटे के बेटे के साले का खत आया कि वह इस बार छुट्टियां मनाने हमारे शहर आ रहे हैं

र अगर हमारे रहते वह होटल में ठहरें तो अच्छा नहीं लगेगा. लिहाजा वह हमारे घर ठहरेंगे.

मैं अपने बाल नोचते हुए सोच रहा था यह महाशय कौन हैं और मुझ से कब ले? इस चक्कर में मैं ने अपने कई खूबसूरत लों का नुकसान कर डाला. पर याद नहीं या कि मैं उन से कभी मिला था. मेरी



व्यंग्य ● ममता मेहता

हमान

ानी भांपते हुए पत्नी ने सुझाव दिया, की चाकरी से बचने के लिए घर को लगा कर अपन ही कहीं चलते हैं. कोई पूछेगा तो कह देंगे कि पत्र ही मिला."

"वाहवाह, क्या आइडिया है," खुशी के अतिरेक में मैं ने श्रीमती को बांहों में भर कर एक चुम्मा ले लिया. फिर तुरतफुरत ट्रेवल एजेंसी को फोन कर के एक बढ़िया पहाड़ी स्टेशन की टिकटें बुक करवा लीं.

दूसरे दिन सुबह 10 बजे की बस थी. हम ने जल्दीजल्दी तैयारी की. सब सामान पैक कर लिया कि सुबह नाश्ता कर के चल देंगे. सोच कर सारी रात चैन की नींद भी सोए. सपने में पहाड़ों पर घूमने का मजा ले रहा था कि घंटी की कर्कश ध्वनि से नींद खुल गई. घड़ी देखी, 6 बजे थे.

'सुबहसुबह कौन आ मरा,' सोचते हुए दरवाजा खोला तो बड़ीबड़ी मूंछों वाले श्रीमानजी, टुनटुन को मात करती श्रीमतीजी और चेहरे से बदमाश नजर आते 5 बच्चे मय सामान के सामने खड़े थे. मेरे दिमाग में खतरे की घंटी बजी कि जरूर चिट्ठी वाले बिन बुलाए मेहमान ही होंगे. फिर भी पूछा, "कौन हैं आप?"

"अरे, कमाल करते हैं," मूंछ वाले ने मूंछों पर ताव देते हुए कहा, "हम ने चिट्ठी लिखी तो थी...बताया तो था कि हम कौन हैं."

"लेकिन मैं तो आप को जानता ही नहीं, आप से कभी मिला ही नहीं. कैसे विश्वास कर लूं कि आप उन के साले ही हैं, कोई धोखेबाज नहीं."

"ओए," उन्होंने कड़क कर कहा, "हम को धोखेबाज कहता है...वो तो आप के बाप के नाना के बेटे, यानी मेरी बहन के ससुरे ने जोर दे कर कहा था कि उन्हीं के यहां ठहरना...इसलिए हम यहां आए हैं, वरना इस शहर में होटलों की कमी नहीं है. रही बात मिलने की तो पहले नहीं मिले तो अब मिल लो," उस ने जबरदस्ती मेरा हाथ उठाया और जोरजोर से हिला कर बोला, "हेलो, मैं हूं गजेंद्र प्रताप...कैसे हैं आप? लो, हो गई जानपहचान," कह कर मेरा हाथ छोड़ दिया.

मैं अपने दुखते हाथ को सहला ही रहा था कि उस गज जैसे गजेंद्र प्रताप ने बच्चों को आदेश दिया, "चलो बच्चो, अंदर चलो...यहां खड़ेखड़े तो पैर दुखने लगे हैं."

हम खुश थे कि इस बार मेहमानों से पिंड छुड़ा ही लेंगे पर लाख कोशिशों के बावजूद अपनी गरदन उन से बच न सके. ऊपर से बेशर्मी से हमें ऐसा चूना भी लगा गए कि हम तो बाज आए ऐसे मेहमानों से.

इतना सुनते ही बच्चों ने वानर सेना की तरह मुझे लगभग दरवाजे से धक्का दे कर हटाते हुए अंदर प्रवेश किया और जूतों समेत सोफे व दीवान पर चढ़ कर शोर मचाने लगे. मेरी पत्नी और बच्चे हैरानी से यह नजारा देख रहे थे. सोफे और दीवान की दुर्दशा देख कर श्रीमती का मुंह गुस्से से तमतमा रहा था. पर मैं ने इशारे से शांत रहने को कहा और गजेंद्र प्रताप व उन के परिवार से उस का परिचय करवाया. परिचय के बाद वह टुनटुन की बहन इतनी जोर से सोफे पर बैठी कि मेरी ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की सांस नीचे रह गई. सोचा, आज जरूर इस सोफे का अंतिम संस्कार हो जाएगा.

पर मेरी हालत की परवाह किए बगैर वह बेफिक्री से मेरी पत्नी को आर्डर दे रही थी, "भई, अब जरा कुछ बढ़िया सी चायवाय हो जाए तो हम 'फ्रेश' हो कर घूमने निकलें...और हां, जरा हमारा सामान भी हमारे कमरे में पहुंचा देना. हमारे लिए एक कमरा तो तैयार किया ही होगा?"

हम ने बच्चों के साथ मिल कर उन का सामान बच्चों के कमरे में रखवाया.

उधर कुढ़ते हुए पत्नी ने रसोई में प्रवेश किया. पीछेपीछे हम भी पहुंचे. शयनकक्ष में अपने पैक पड़े सूटकेसों पर नजर पड़ते ही मुंह से आह निकल गई. मेहमानों को मन ही मन कोसते सूटकेसों को ऐसा का ऐसा वापस ऊपर चढ़ाया. ट्रैवल एजेंसी को फोन कर के टिकट रद्द करवाए. आधा नुकसान तो यहीं हो गया.

श्रीमतीजी चाय ले कर पहुंचीं तो चाय देखते ही बच्चे इस तरह प्यालों पर झपटे कि 2 प्याले तो वहीं शहीद हो गए. अपने टी सेट की बरबादी पर श्रीमती अपने आंसू नहीं रोक पाईं तो व्यंग्य सुनाई पड़ा, "अयहय, 2 प्याले टूटने पर इतना हंगामा...हमारे घर में तो कोई चीज साबुत ही नहीं मिलती. इस तरह तो यहां बातबात पर हमारा अपमान होता रहेगा," उठने का उपक्रम किए बिना उस ने आगे कहा, "चलो जी चलो, इस से तो हम किसी होटल में ही रह लेंगे."

मुझ में आशा की किरण जागी, लेकिन फिर बुझ गई क्योंकि वह अब बाथरूम का पता पूछ रहे थे. साबुन, पानी और बाथरूम का सत्यानास कर के जब वे नाश्ते की मेज पर आए तो पत्नी के साथ मेरा भी दिल धकधक कर रहा था. नाश्ते की मेज पर डबलरोटी और मक्खन देख कर उन्होंने नाकभौं चढ़ाई, "अरे, सिर्फ सूखी डबलरोटी और मक्खन...मेरे बच्चे यह सब तो खाते ही नहीं हैं. पप्पू को नाश्ते में उबला अंडा चाहिए...सोनू को आलू की सब्जी और पूरी, मोनू को समोसा, चिंटू को कचोरी और टोनी को परांठा...और हम दोनों तो इन के नाश्ते में से ही अपना हिस्सा निकाल लेते हैं."

फिर जैसे दयानतदारी दिखाते हुए बोले, "आज तो आप रहने दें...हम लोग बाहर ही कुछ खा लेंगे और आप लोग भी घूमने के लिए जल्दी से तैयार हो जाइए. आप भी हमारे साथ ही घूम लीजिएगा...अनजान जगह पर हमें भी आराम रहेगा."

हम ने सोचा कि ये लोग घुमाने ले जा रहे हैं तो चलने में कोई हरज नहीं. झटपट हम सब भी तैयार हो गए.

बाहर निकलते ही उन्होंने बड़ी शान से टैक्सी रोकी, सब को उस में लादा और चल पड़े. पहले दर्शनीय स्थल तक पहुंचने पर ही टैक्सी का मीटर 108 रुपए तक पहुंच चुका था. उन्होंने शान से पर्स खोला और 5-5 सौ

नोट निकाले और मेरी तरफ मुखातिब
, "भई, मेरे पास छुट्टे नहीं हैं...जरा आप
इस का भाड़ा दे देना."

भुनभुनाते हुए हम ने किराया चुकाया.
सी से उतरते ही उन्हें चाय की तलब लगी,
हने लगे, "अब पहले चाय, नाश्ता किया
ए...फिर आराम से घूमेंगे."

बढ़िया सा रेस्तरां देख कर सब ने उस
प्रवेश किया. हर बच्चे की पसंद के
नुसार आर्डर दिया गया. उन का लिहाज
ते हुए हम ने कहा कि हम कुछ नहीं
एंगे. उन्होंने भी बेफिक्री से कहा,
त खाइए."

होगा?

फिर वही हुआ, दोपहर के खाने का बिल 700 रुपए, शाम की चाय का 150 रुपए और रात के खाने का बिल 500 रुपए आया. यहां मेरी बाछें खिल गईं, "यह तो पूरे 500 का बिल है...आप के पास भी 500 का नोट है...यह बिल तो आप ही चुका दीजिए."

उन का जवाब था, "अरे, आप के होते हुए यदि हम बिल चुकाएंगे तो आप को बुरा नहीं लगेगा? और आप को बुरा लगे, भला ऐसा काम हम कैसे कर सकते हैं."



*'हां तो क्या गलत कहा था. अपने घर पहुंच
कर भिजवा दूंगा," आराम से चाय पीते हुए
जेंद्र प्रताप ने जवाब दिया.*

वे लोग समोसा, कचोरी, बर्गर,
लेट ठूंसठूंस कर खाते रहे. वे खाते रहे
हम खिसियाए से इधरउधर देखते रहे.
देने की बारी आई तो बेशर्मी से हमारी
वढ़ा दिया, "जरा आप दे देना, मेरे
5-5 सौ के नोट हैं."

200 रुपए का बिल देख कर मेरा मुंह
का खुला रह गया और सोचा, अभी
में यह हाल है तो दोपहर के खाने,
की चाय और रात के खाने में क्या

दूसरे दिन वे लोग जबरदस्ती खरीदारी करने साथ ले गए. हम ने सोचा, अपने लिए खरीदेंगे तो पैसा भी अपना ही लगाएंगे और लगे हाथों उन के साथ हम भी बच्चों के लिए कपड़े खरीद लेंगे. पर वह मेहमान ही क्या जो मेजबान के रहते अपनी गांठ ढीली करे.

सर्वप्रथम हमारे शहर की कुछ सजावटी वस्तुएं खरीदी गईं, जिन का बिल 840 रुपए हुआ. बिल चुकाने के समय कहने लगे, "मेरे पास सिर्फ 5-5 सौ के 2 नोट हैं...अभी आप दे दीजिए, मैं आप को घर चल कर दे दूंगा."

फिर कपड़ाबाजार में गए, वहां भी मुझ से ही पैसे दिलवाए गए. मैं ने कहा भी

कि मुझे भी बच्चों के लिए कपड़े खरीदने हैं, तो कहने लगे, "आप का तो शहर ही है, फिर कभी खरीद सकते हैं...फिर ये बच्चे भी तो आप के ही हैं...इस बार इन्हें ही सही. फिर घर चल कर तो पैसे दे ही दूंगा."

3 हजार रुपए वहां निकल गए. अब वे खरीदारी करते थक चुके थे. पुनः 700 रुपए का चूना लगाया. इस तरह सारी रकम वापस आने की उम्मीद लगाए हम घर पहुंचे.

घर पहुंचते ही उन्होंने घोषणा की कि वे कल जा रहे हैं. खुशी के मारे मेरा हार्टफेल होतेहोते बचा कि अब वह मेरे पैसे चुकाएंगे, लेकिन उन्होंने पैसे देने की कोई बात नहीं की.

दूसरे दिन भी वे लोग सामान वगैरह बांध कर निश्चिंतता से बैठे थे और चिंता भी यह कर रहे थे कि उन का कुछ सामान तो नहीं रह गया. तब हम ने भी बेशर्म हो कर कह भी दिया, "भाई साहब, कम से कम अपनी खरीदारी के रुपए तो लौटा दीजिए."

उन्होंने निश्चिंतता से कहा, "लेकिन मेरे पास अभी पैसे नहीं हैं."

आश्चर्य से मेरा मुंह खुला रह गया. "पर आप तो कह रहे थे कि घर पहुंच कर दे दूंगा."

"हां तो क्या गलत कहा था. अपने घर पहुंच कर भिजवा दूंगा," आराम से चाय पीते हुए उन्होंने जवाब दिया.

"उफ...और वे आप के 5-5 सौ के नोट?" मैं ने उन्हें याद दिलाया.

"अब वही तो बचे हैं मेरे पास. और जाने के लिए सफर के दौरान भी कुछ चाहिए कि नहीं?"

"पर यह तो...यह तो कोई बात नहीं हुई..." हम हकला गए.

हमारा इस तरह रुपए मांगना उन्हें बड़ा नागवार गुजरा. वह रुखाई व तल्खी से यह कहते हुए रुखसत हुए, "अजीब भिखमंगे लोग हैं. 4 हजार रुपल्ली के लिए इतनी जिरह कर रहे हैं. अरे, जाते ही लौटा देंगे, कोई खा तो नहीं जाएंगे. हमें क्या बिलकुल ही गयागुजरा समझा है. हम तो पहले ही होटल में ठहरना चाहते थे, पर हमारी बहन के ससुरे के कहने पर हम यहां आ गए. अगर पहले से मालूम होता तो हमारी जूती भी नहीं आती यहां..."

वह दिन और आज का दिन, न उन की कोई खैरखबर आई, न हमारे रुपए. हम भी मन मसोस कर चुप बैठे श्रीमती के ताने सुनते रहते हैं, "अजीब रिश्तेदार हैं...चोर कहीं के. इतने पैसों में तो बच्चों के कपड़ों के साथ मेरी 2 बढ़िया साड़ियां भी आ जातीं. ऊपर से एहसानफरामोश...घर की जो हालत बिगाड़ कर गए, सो अलग. किसी होटल के कमरे की ऐसी हालत करते तो इस के भी अलग से पैसे देने पड़ते. यहां तो लेना तो दूर, उलटे अपनी जेब खाली कर के बैठे हैं."

इन सब बातों से क्षुब्ध हो कर मैं ने भी संकल्प किया कि अब चाहे कोई भी आए, अपने घर पर किसी को नहीं रहने दूंगा. देखता हूं, मेरा यह संकल्प कब तक मेरा साथ देता है. ●



"सरकस नहीं...नए मंत्रियों के लिए आवास..."

हमारी बेड़ियां

मारे यहां एक कुप्रथा प्रचलित है. हमारे घर में अगर किसी जात शिशु के 7वें महीने में निकल आए तो उसे शकुन माना जाता है. अतः सी दुष्परिणाम से बचने के बच्चे के दांत को बुजुर्ग दबवाया जाता है.

ऐसे ही मेरे भतीजे का फाक से 7वें महीने में दांत कल आया. रीति के अनुसार दबाने के लिए घर में उस य कोई बुजुर्ग मौजूद न था. : पड़ोस के एक बुजुर्ग को



या गया.

उस बुजुर्ग के हाथ का व मेरे भतीजे के दांत पर ा ही जोर से पड़ गया और का दांत वहीं टूट गया. उस मुंह से खून की धारा बह ली, अतः तुरंत अस्पताल ले पड़ा. –सुधीर कुमार शर्मा

*

चाचाजी की लड़की की ादी थी. शादी की सभी के पश्चात उन की बेटी ल चली गई. अगले दिन जी को काफी तेज बुखार ा.

हमारे यहां लड़की के के पश्चात उस के ता को गंगा नहाना होता रस्म को निभाने के लिए में पड़े चाचाजी को ले जा गा में स्नान करवाया गया.

थोड़ी देर पश्चात उन की हालत काफी बिगड़ गई और अस्पताल ले जाते हुए रास्ते में ही मृत्यु हो गई. –शिप्रा जैन

*

हमारे पड़ोस की एक लड़की का विवाह था. बरात दिल्ली से आई थी. रात को करीब 9 बजे घोड़ी पर दूल्हे को बिठा कर बरात जनवासे से रवाना हुई.

रीति के अनुसार, दूल्हा अन्य किसी भी विवाह के मंडप में से हो कर नहीं जाता. अतः बरात मुख्य सड़क से न जा कर गलियों से निकाली गई. गलियों में नालियां बनी होने के कारण अचानक घोड़ी का पैर एक नाली में पड़ गया और वह भड़क उठी.

दूल्हा नाली में गिर गया, जिस से उस के पैर की हड्डी टूट गई. किसी तरह विवाह की रस्में पूरी की गईं. दूल्हे के पैर पर प्लास्टर चढ़ाना पड़ा. लगभग 1 महीने पश्चात ही उस का पैर ठीक हो सका. –प्रियंका हकीम

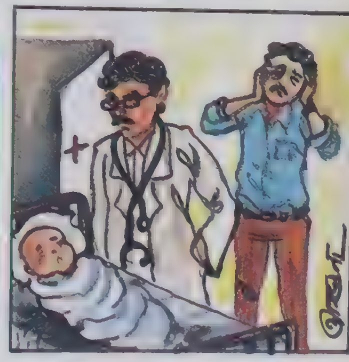
*

मेरे चाचाजी, उत्तर प्रदेश में रहते हैं. पड़ोस में रहने वाला व्यक्ति काफी दिनों से बीमार था. होली के अवसर पर उन के यहां 'लट्ठमार होली' खेलने की प्रथा है. होली के दिन पड़ोस की कुछ महिलाएं उस बीमार व्यक्ति से जबरदस्ती होली खेलने लगीं और लाठियां मारने लगीं. वह व्यक्ति स्वयं को बचाने के लिए भागा, लेकिन उन महिलाओं पर तो होली खेलने का भूत सवार था. वे लगातार लाठियां बरसा रही थीं. बीमार होने के कारण वह व्यक्ति मार सह न पाया और वहीं पर दम तोड़ दिया.

–मोहन लाल एंड संस

*

हमारे किराएदार की पत्नी गर्भवती थी. वह बहुत ही अंधविश्वासी है. उस ने कहीं से सुना था कि शुभ मुहूर्त में होने



वाला बच्चा काफी तेजस्वी होता है. इस कारण लोग प्राकृतिक जन्म से पहले ही आपरेशन द्वारा बच्चों का जन्म करवाते हैं.

पंडित की सलाह पर हमारे किराएदार ने वक्त से पूर्व ही आपरेशन द्वारा बच्चे का जन्म 'शुभ मुहूर्त' में करवाया. समय से पहले जन्मा बच्चा काफी कमजोर पैदा हुआ और डाक्टर के अथक प्रयास के बावजूद भी उसे बचाया न जा सका. –हरिओम सिंह ●

इस स्तंभ के लिए आप अपने, अपने मित्रों व संबंधियों के अनुभव भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें. सरिता, संपादकीय विभाग, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.



खोया हुआ बचपन

कहानी ● संजीव जायसवाल 'संजय'

"साइलेंस...लाइट आन, रेडी वन...टू...थ्री...टेक स्टार्ट," माइक पर फिल्म के निर्देशक रमेश कुमार की आवाज गूंजते ही सेट पर सन्नाटा छा गया.

तीव्र प्रकाश में पूरा सेट जगमगा उठा. फिल्मालय स्टूडियो में किसी आलीशान बंगले के भव्य कक्ष का सेट लगा हुआ था. सोफे पर लगभग 8 साल की लड़की बैठी हुई टीवी पर कार्टून फिल्म देख रही थी. उस की आया सोफे के समीप कालीन पर लेटी सो रही थी. दीवारघड़ी रात के साढ़े 11 बजा रही थी.

क्लैपर ब्वाय द्वारा क्लैप देते ही निर्देशक का इशारा पा कर मशहूर सुपर स्टार मोहित अपनी पत्नी की बांहों में बांहें डाले मुख्यद्वार से कक्ष में प्रवेश करते हैं. नशे की अधिकता से दोनों के पैर लड़खड़ा रहे हैं. मोहित इस फिल्म में सोफे पर बैठी लड़की के पिता का रोल कर रहे हैं और कहानी के अनुसार इस समय अपनी पत्नी के साथ नाइट क्लब से लौट रहे हैं.

कक्ष में आ कर मोहित ने अपनी बेटी को बैठा देख कर नशे में लड़खड़ाती जबान में कहा, "ओ पिंकी, माई...डार्लिंग...तु...म अभी तक जाग रही हो...सोई क्यों नहीं?"

इसी के साथ कैमरा घूमता हुआ सोफे पर बैठी लड़की पर केंद्रित हो जाता है. उस लड़की की पलकें नींद से बोझिल हैं और वह जम्हाई ले रही है.

यह देख निर्देशक की तेज आवाज गूंजी, "कट...कट...कट..."

इस के साथ कैमरा रुक गया और रमेश कुमार तेज कदमों से उस लड़की के पिता सुनील के पास गए और झल्लाए स्वर में बोले, "यह क्या हो रहा है...समझाइए

एक्टिंग क्यों नहीं कर रही हो? सभी लोग नाराज हो रहे हैं."

"मुझे नींद आ रही है," दीपा ने अपने मुंह पर हाथ रखते हुए कहा.

सुनील ने अपनी कलाई में बंधी घड़ी पर दृष्टि डाली. इतनी रात में 8 साल की बच्ची को नींद आना स्वाभाविक ही था. सुनील ने उसे पुचकारते हुए कहा, "बस, थोड़ी ही देर की तो बात है...यह शाट ओ.के. हो जाए, फिर हम सीधे घर चलेंगे, यह लो, अपना इनाम,"



सुनील लालच में अपने ही हाथों अपने आंगन की कली को तहसनहस कर बैठा. उसे यह भी भान नहीं रहा कि बच्चे को सच्ची खुशी हमउम्र साथियों में मिलती है, महंगे चाकलेटों व खिलौनों में नहीं.

बेटी को...3 टेक हो चुके हैं और यह भभी तक ओ.के. नहीं हो पाया है. यह र कुछ न कुछ गड़बड़ कर देती है."

'मैं उसे समझाता हूं. आप विश्वास इस बार गड़बड़ नहीं होगी," सुनील और अपनी बेटी के पास पहुंच कर सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए बोले, बेटी, तुम्हें क्या हो गया है, ठीक से

सुनील ने जेब से एक बड़ा सा चाकलेट निकाल कर दीपा की तरफ बढ़ाते हुए कहा.

"नहीं, मैं नहीं लूंगी."

"क्यों, चाकलेट तो तुम्हें बहुत पसंद है."

"इतनी रात गए चाकलेट खाने का मन नहीं है."

"ठीक है, मैं अपने पास ही रख लेता हूं, सुबह खा लेना," चाकलेट को वापस अपने जेब में रख कर सुनील ने प्यार से दीपा के बालों पर हाथ फेरते हुए कहा, "इस बार गड़बड़ मत करना, शाट ओ.के. हो जाना चाहिए."

दीपा ने सिर हिला कर हामी भरी तो सुनील वहां से हट गए. लगभग 10 मिनट की तैयारी के पश्चात निर्देशक की आवाज एक बार फिर गूंजी, "साइलेंस, लाइट आन...रेडी...वन...टू...थ्री...टेक स्टार्ट."

क्लैपर ब्वाय द्वारा क्लैप देते ही अपनी पत्नी की बांहों में बांहें डाले मोहित ने एक बार फिर कक्ष में प्रवेश किया और लड़खड़ाती जबान में अपना संवाद बोला, "ओ पिंकी, माई डार्लिंग...तु...म अभी तक...जाग रही हो...सोई क्यों नहीं?"

इसी के साथ घूमता हुआ कैमरा सोफे पर बैठी लड़की पर केंद्रित होता है. वह सोफे की पुश्त पर सिर टिकाए बड़े आराम से सो रही होती है. यह देख निर्देशक पूरी ताकत से चिल्लाए, "कट...कट...कट."

कैमरा रुकते ही मोहित लगभग दौड़ते हुए रमेश कुमार के पास आए और गुर्राते हुए बोले, "यह क्या तमाशा हो रहा है? आप तो जानते ही हैं कि मेरा 1-1 मिनट कीमती है. आप के ऊपर तरस खा कर मैं ने आज रात का समय इसलिए नहीं दिया था कि आप उसे यों ही बरबाद कर दें."

"दरअसल वह...वह..." मोहित का क्रोध देख कर रमेश चाह कर भी कुछ नहीं कह पा रहे थे.

"एक ढंग की लड़की का तो इंतजाम कर नहीं पाए और चले हैं शूटिंग करने. पता नहीं आप को निर्देशक किस ने बना दिया. अगर काम करवाना नहीं आता है तो घर बैठ कर घास छीलिए. दूसरों का पैसा और समय क्यों बरबाद कर रहे हैं," मोहित ने डांटते हुए कहा. उन का क्रोध बढ़ता ही जा रहा था.

रमेश ने हाथ जोड़ कर कुछ कहना चाहा, लेकिन मोहित ने उन्हें झिड़कते हुए कहा, "कान खोल कर सुन लीजिए, अगर इस बार शाट ओ.के. नहीं हुआ तो मैं शूटिंग छोड़ कर चला जाऊंगा, फिर आप जानिएगा और आप का काम. अगले 6 माह तक मेरे पास एक दिन का भी समय नहीं है."

यह सुन रमेश की आंखों के आगे तारे नाच उठे. उस की फिल्म की बस थोड़ी सी शूटिंग बाकी थी. कई सप्ताह की भागदौड़ के बाद सुपर स्टार मोहित ने रात को शूटिंग करने का समय दिया था. अगर आज की शूटिंग रद्द हो गई तो उस का लाखों का नुकसान हो जाएगा.

मोहित से डांट खा कर रमेश लपकते हुए सुनील के पास गए और अपने जबड़े भींच कर चीखते हुए बोले, "सुन लिया आप ने, अब समझाइए अपनी लाड़ली को. अगर उस की वजह से शूटिंग रद्द हुई तो मेरा लाखों का नुकसान हो जाएगा. आप की बेटी को तो मैं अपनी फिल्म से निकालूंगा ही, साथ में आप पर हरजाने का दावा भी कर दूंगा."

"आप शाट लेने की तैयारी करिए. मेरा विश्वास कीजिए, इस बार कोई गड़बड़ नहीं होगी," सुनील ने खुशामदी स्वर में कहा.

"कैसे करूं विश्वास? आप का विश्वास करतेकरते तो मेरा दिवाला पिट जाएगा," रमेश ने झल्लाते हुए कहा.

सुनील किंकर्तव्यविमूढ़ खड़े थे. उन्हें खड़ा देख रमेश ने झिड़कते हुए कहा, "अब खड़ेखड़े मेरा मुंह क्या देख रहे हैं...जाइए, जगाइए जा कर अपनी लाड़ली को."

सुनील ने इधरउधर देखा और पास ही पड़ी एक ईंट को उठा कर दीपा के पास पहुंचे. वह मासूम इस दुनिया से बेखबर सपनों

ी दुनिया में खोई हुई थी. एक झन्नाटेदार पड़ की आवाज के साथ उस की नींद ट गई. एक चीख मार कर वह पिता की हों का सहारा लेने उन की तरफ बढ़ी, किन उन्हें आग्नेय नेत्रों से घूरता पा सहम र रुक गई. इस से पहले कि वह कुछ मझ पाती, सुनील ने उस के बाल पकड़ र खींचते हुए कहा, "कान खोल कर सुन , इस बार अगर तुम ने कोई गड़बड़ की र शाट ओ.के. नहीं हुआ तो मारमार कर मड़ी उधेड़ दूंगा."

इतना कह कर सुनील ने ईंट को सोफे रखा और डपटते हुए बोले, "चल बैठ , इस पर. सोफे पर तुझे बहुत नींद आती अब देखूं...इस पर कैसे नींद आती है."

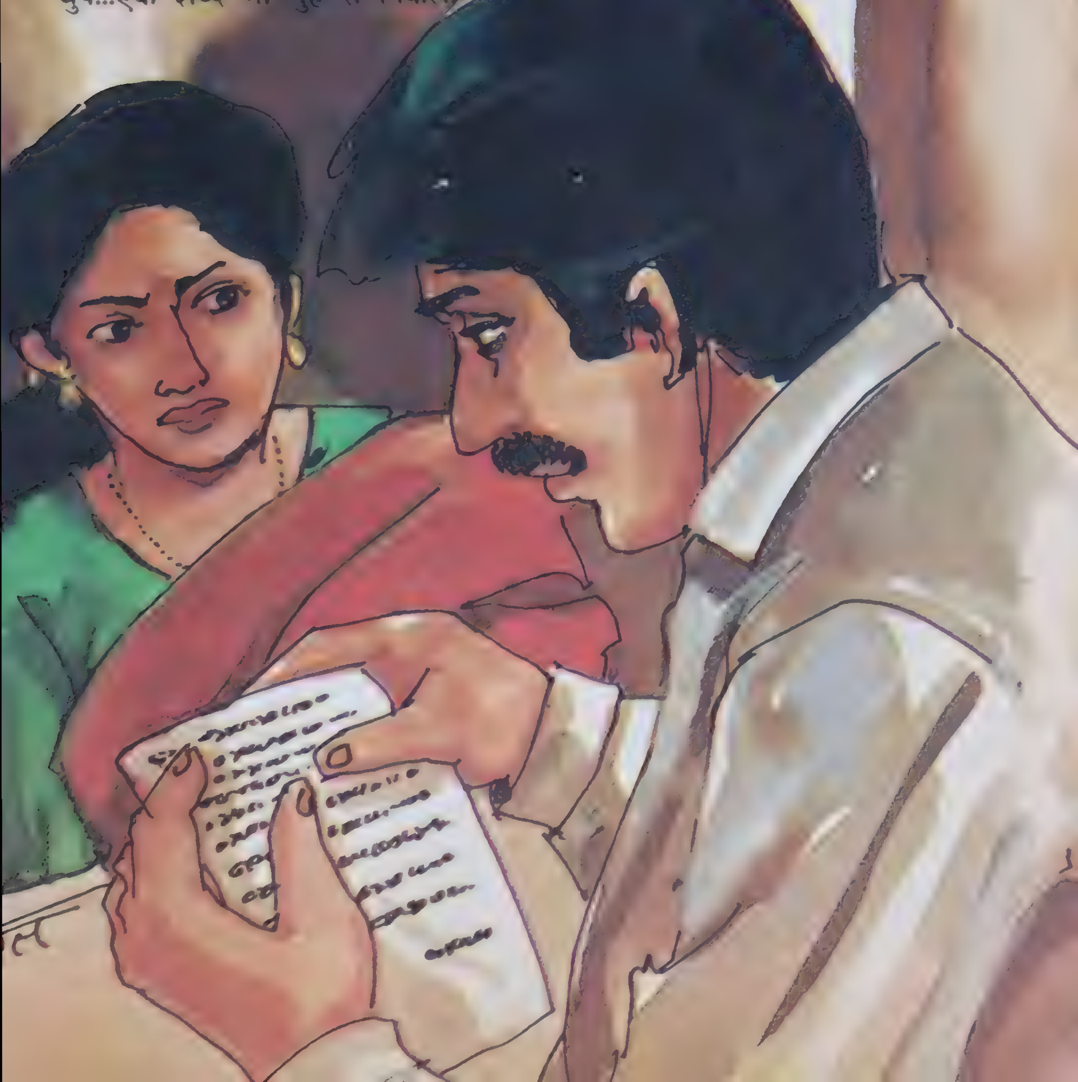
डरतेडरते दीपा सोफे पर रखी ईंट पर ी और फिर कराहते हुए बोली, "तकलीफ रही है."

"चुप...एक शब्द भी मुंह से निकला तो जबान खींच लूंगा," सुनील ने दहाड़ते हुए कहा तो दीपा कांप कर चुप हो गई. एक क्षण उसे घूरने के बाद सुनील ने पूछा, "अपना संवाद याद है?"

दीपा ने सिर हिला कर हामी भरी तो वह वहां से हट गए.

रमेश ने कैमरे से झांक कर देखा, सब कुछ ठीक था. एक बार पुनः मोहित ने कक्ष में प्रवेश करते हुए लड़खड़ाती जबान में कहा, "ओ पिंकी, माई डार्लिंग...तु...म...अभी तक जाग...रही हो...सोई...क्यों नहीं?"

"क्या हुआ...तुम रो क्यों रही हो," सुनील के पूछने पर सविता ने पत्र उस की तरफ बढ़ा दिया और वह धड़कते दिल से उसे पढ़ने लगा.



घूमता हुआ कैमरा जब सोफे पर बैठी पिंकी पर केंद्रित हुआ तो उस के चेहरे पर बेबसी और आंखों में दुख के बादल लहरा रहे थे. उस ने दर्द भरे स्वर में कहा, "पापा, मैं आप का इंतजार कर रही थी..."

"अच्छे बच्चे इतनी रात तक नहीं जागते. चलो, सो जा..." मोहित ने आगे बढ़ कर पिंकी को गोद में उठा कर प्यार करते हुए कहा.

इसी के साथ शाट ओ.के. हो गया. पूरा सेट तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा. मोहित का अभिनय कितना स्वाभाविक था. पिंकी को गोद में उठाते समय उन के चेहरे पर प्यार का जो सागर उमड़ा था, उसे देख कर कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि चंद मिनट पहले यही मोहित क्रोध से उबल रहे थे. उन के इसी स्वाभाविक अभिनय के कारण उन्हें 'अभिनय सम्राट' के खिताब से नवाजा जाता था.

परंतु तालियों की गड़गड़ाहट के बीच किसी ने यह सोचने की आवश्यकता ही नहीं समझी कि पिंकी का अभिनय करते समय दीपा के चेहरे पर दर्द और बेबसी के जो भाव उभरे थे, वह उस का अभिनय था या वास्तविकता?

घर लौटतेलौटते रात के 12 बज गए. सुनील की पत्नी सविता उन का इंतजार कर रही थी. उस ने प्यार से दीपा के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "आज बहुत देर हो गई...अब जल्दी से मुंहहाथ धो कर कपड़े बदल लो, मैं तब तक खाना गरम कर देती हूं."

"इस बेवकूफ को खाना देने की कोई जरूरत नहीं है. आज रात इसे भूखे ही सोने दो, तभी अक्ल ठिकाने आएगी," सुनील ने तेज स्वर में कहा.

"क्या बात हो गई? क्यों बेचारी पर इतने नाराज हो रहे हो?" सविता ने अचकचाते हुए पूछा.

प्रत्युत्तर में पूरा किस्सा सुनाते हुए सुनील ने आग्नेय दृष्टि से दीपा को घूरते हुए कहा, "आज इस दुष्ट के कारण दो टके के निर्देशक रमेश ने सभी के सामने मेरी बेइज्जती कर दी. जी तो चाह रहा था कि वहीं पर मारमार कर इस के गाल लाल कर दूं."

पिता का रौद्र रूप देख कर दीपा सहम कर सविता से लिपट गई. उस के बदन की थरथराहट को अनुभव कर सविता ने उसे गोद में उठा लिया और उस का सिर अपने कंधे से लगा कर थपथपाने लगी. स्नेह की छाया मिलते ही दीपा के धैर्य ने तटबंध तोड़ दिए और वह फफक कर रो पड़ी.

"चुप, वहां सेट पर तो तेरी नानी मर रही थी और यहां रोने की एक्टिंग कर रही है. अब अगर जरा सी भी आवाज गले से बाहर निकली तो तेरी जबान खींच लूंगा," सुनील ने दीपा को डपटते हुए कहा.

"आप भी कमाल करते हैं, छोटी बच्ची है, जरा सी नींद आ गई तो कौन सा पहाड़ टूट पड़ा," सविता ने दीपा के आंसू पोंछते हुए कहा.

"तुम्हारे लाड़प्यार ने ही इसे बिगाड़ रखा है. अगर इस की वजह से आज शूटिंग रद्द हो जाती तो निर्माता का लाखों का नुकसान हो जाता."

"तो आज से हमारी बेटी रात में शूटिंग करने नहीं जाएगी. अपने निर्माताओं से कह दीजिए कि शूटिंग करनी हो तो दिन में करें," सविता बोली.

"तुम्हारे बाप का राज है. जिस समय तुम चाहोगी, उसी समय सब शूटिंग करेंगे," सुनील ने क्रोध से एकएक शब्द को चबाते हुए कहा.

आपस के झगड़े में अपने बाप का जिक्र आने पर सविता भड़क उठी. उस का भी धैर्य समाप्त हो गया था. उस ने कड़ा उत्तर दिया, जिस से पतिपत्नी में वाकयुद्ध प्रारंभ हो गया और जिस की परिणति सुनील के एक झन्नाटेदार तमाचे में हुई.

हतप्रभ सविता भूखेप्यासे ही बिस्तर पर जा कर लेट गई और सुनील रोज की ही

रह बोतल खोल कर पीने बैठ गए. उन्हें
यह देखने की भी फुरसत नहीं रही कि उन
के झगड़े में दीपा का क्या हुआ.

ब्रचारी दीपा वाकयुद्ध प्रारंभ होते ही अपने कमरे में चली गई थी और उन्हीं कपड़ों में लेट गई, पर नींद उस की आंखों से कोसों दूर थी. उस के स्मृतिपटल पर पिछले 2 वर्ष की घटनाएं चलचित्र की भांति तैर रही थीं...

तब उस के पिता एक निजी फर्म में एकाउंटेंट थे. बहुत ही खुशहाल परिवार था. महीने के आखिरी में वह जो वेतन लाते थे, उसी में बड़े प्रेम से सब का गुजारा हो जाता था. नन्ही दीपा को तो वह अपने प्राणों से भी ज्यादा प्यार करते थे. आफिस से आते ही वह उसे अपनी गोद में उठा लेते.

दीपा थी भी इतनी मासूम और प्यारी कि अपनी बातों से सभी का दिल जीत लेती. उस की वाणी में जैसे सरस्वती समाई थी. अपनी सुरीली आवाज में जब वह छोटेछोटे गीत सुनाती तो बरबस ही उस के प्रति प्यार उमड़ आता.

उस के स्कूल के वार्षिकोत्सव में 'नन्ही राजकुमारी और लालपरी' नामक नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई थी, जिस में दीपा ने राजकुमारी का अभिनय किया था. अपने स्वाभाविक अभिनय और मधुर आवाज से उस ने सभी को मुग्ध कर दिया था. उसे प्रथम पुरस्कार तो मिला ही था, लेकिन समारोह की अध्यक्षता कर रहे प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक तरुण कुमार ने जब अपनी आगामी फिल्म में नायिका के बाल जीवन की भूमिका निभाने की बात उस से कही तो पूरा सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा.

दीपा उस दिन बहुत प्रसन्न थी. पूरी रात सपनों के दुनिया में घूमती रही. तब उसे क्या मालूम था कि उस की खुशियां शीघ्र समाप्त होने जा रही हैं.

तरुण कुमार की फिल्म बहुत तेजी से बनी थी और सुपरहिट साबित हुई थी. दीपा के अभिनय ने दर्शकों का मन मोह लिया था. चारों ओर उस के अविस्मरणीय अभिनय



ख्वाब

दर्द की मीनारें हैं,
रास्ते वीराने हैं,
इस बेवफा शहर में
अब ख्वाब पुराने हैं.
–शिखा चंद्रा

की ही चर्चा थी. सुनील के दरवाजे पर निर्माताओं की लाइन लगने लगी थी. सभी अपनीअपनी फिल्मों के लिए दीपा को अनुबंधित करना चाहते थे.

पहली ही फिल्म के लिए दीपा को 25 हजार रुपए का पारिश्रमिक मिला था, जो कि 4 हजार मासिक वेतन पाने वाले सुनील की आधे साल की आमदनी से भी अधिक था. वह नौकरी छोड़ कर दीपा के सचिव व संरक्षक बन गए.

सविता ने कई बार प्रतिरोध किया कि इस से दीपा की पढ़ाई चौपट हो जाएगी, पर सुनील को सुनने की फुरसत ही कहां थी. दीपा के रूप में तो उन्हें जैसे कारूं का खजाना मिल गया था.

कुछ समय तक तो दीपा को यह सब अच्छा लगा, पर शीघ्र ही उस का मन शूटिंग से ऊबने लगा. कैमरा देख कर उसे घबराहट होने लगती तो सुनील चाकलेट और खिलौना का लालच दे कर उसे बहलाने की कोशिश करते. पर दीपा का मन फिल्मों की कृत्रिम

दुनिया से बाहर निकलने के लिए छटपटाता रहता.

वह एक बार फिर अपने बचपन में, अपने हमउम्र साथियों के बीच लौट जाना चाहती थी, पर उस का यह प्रयास मृगतृष्णा ही साबित होता. फिल्मों में काम करने के कारण वह अपने पुराने दोस्तों की दृष्टि में महत्त्वपूर्ण बन गई थी. वह जब भी अपनी बस्ती के बच्चों के बीच पहुंचती, वे सब उसे कुतूहल से उसे देखने लगते. वह उन से लाख मिलनेजुलने की कोशिश करती, पर अन्य बच्चे उस की उपस्थिति में असहज ही रहते.

दीपा का मन करता कि उस के दोस्त पहले की ही तरह उस से लड़ेंझगड़ें, हंसेंखेलें, पर अब यह संभव नहीं था. वह जानबूझ कर कई बार खेल में बेईमानी भी करती, पर उस के साथी उस की इस हरकत को जानबूझ कर अनदेखा कर देते. अपनी दृष्टि से वे दीपा को महत्ता प्रदान करते थे, पर इस से उस की बेचैनी व मन की प्यास और बढ़ जाती.

पैसा आने के साथ ही साथ सुनील को अब इस बस्ती के लोग संस्कारहीन और बच्चे आवारा नजर आने लगे थे, जिन की कुसंगत में दीपा के बिगड़ जाने का खतरा था. अतः उन्होंने एक संभ्रांत इलाके में महंगा फ्लैट खरीद लिया था, पर दीपा को ऐसा लगता, जैसे वह किसी जेल में कैद कर दी गई हो.

अपने बचपन से बिछड़ कर अब वह हमेशा खोईखोई सी रहती, जिस का असर उस के अभिनय पर भी पड़ने लगा था. पहले जहां उस के नैसर्गिक अभिनय के कारण एक ही बार में शाट ओ.के. हो जाता था, वहां अब कईकई बार 'रीटेक' होने लगे. इस की वजह से अकसर सुनील को निर्देशकों की डांट भी सुननी पड़ती.

घर लौट कर सुनील अपना गुस्सा दीपा पर उतारते. जैसेजैसे दीपा की स्वाभाविकता समाप्त होती जा रही थी, वैसेवैसे सुनील की धनदौलत की हवस बढ़ती जा रही थी. वह दीपा से लगभग जबरदस्ती फिल्मों में काम करवाने लगे. दीपा की इच्छा या अनिच्छा उन के लिए कोई मायने नहीं रखती थी.

एक दिन जब दीपा के संतोषजनक अभिनय न करने पर निर्देशक की डांट से बौखलाए सुनील ने घर पहुंचते ही जानवरों की तरह दीपा की पिटाई प्रारंभ कर दी तो सविता ने उन का हाथ रोकते हुए कहा, "क्या इसे मार ही डालोगे?"

"हांहां... अगर इस ने ठीक से अभिनय नहीं किया तो मार ही डालूंगा," सुनील ने चीखते हुए कहा.

"अरे, अभिनय तो अंतःप्रेरणा से होता है, मारमार कर भला किसी से अभिनय करवाया जा सकता है?" सविता ने समझाते हुए कहा.

पत्नी की बात सुन सुनील ने बेहयाई से कहा, "मारमार कर सर्कस वाले जानवरों से भी अभिनय करवा लेते हैं, फिर यह किस खेत की मूली है."

उस दिन दीपा को ले कर पहली बार सविता और सुनील में जबरदस्त बहस हुई थी और फिर यह लगभग रोज का क्रम बन गया था. लेकिन आज पहली बार सुनील ने सविता के ऊपर हाथ उठाया था.

सोचतेसोचते दीपा की आंखों से आंसू छलक आए कि आज उस के कारण ही उस की मां की भी पिटाई हो गई. आंसू पोंछते हुए उस ने करवट बदलते हुए सोचा.

रात में ज्यादा पी लेने के कारण अगली सुबह सुनील की आंख देर से खुली. सविता भी जानबूझ कर लेटी हुई थी. सुनील ने घड़ी पर दृष्टि डाली, 7 बज रहे थे. वह हड़बड़ा कर उठ बैठा. 8 बजे उसे दीपा को ले कर शूटिंग पर पहुंचना था.

"दीपा, जल्दी से तैयार हो जाओ," सुनील ने आवाज दी, पर दीपा ने कोई उत्तर न दिया.

"दीपा...दीपा..." सुनील ने दोबारा आवाज दी, पर फिर कोई उत्तर नहीं मिला. झल्लाए सुनील ने फ्लैट का कोनाकोना छान

ारा, मगर दीपा का कहीं कोई पता न था. अंत में उन्होंने शयनकक्ष में लेटी सविता को झंझोड़ कर पूछा, "दीपा कहां गई...पूरा घर खाली पड़ा है?"

यह सुनते ही सविता हड़बड़ा कर उठ ठी. पूरा घर खाली था और फ्लैट का ाहरी दरवाजा उढ़का हुआ था. सुनील बेटी ो खोजने बाहर निकल गए.

सविता दीपा के कमरे में गई तो मेज पर क पत्र नजर आया. उस ने आगे बढ़ कर त्र उठा लिया. किसी अज्ञात आशंका से उस ा दिल धड़क उठा. कांपते हाथों से उस ने त्र खोल कर पढ़ना शुरू किया तो दिमाग करने लगा. उसे आसपास के चीजें घूमती ई नजर आने लगीं.

थोड़ी ही देर में सुनील लौट आए. विता के आंसुओं से भरे चेहरे को देख बराए स्वर में पूछा, "क्या हुआ...तुम रो यों रही हो?"

सविता ने बिना कुछ कहे वह पत्र पचाप सुनील की तरफ बढ़ा दिया. धड़कते ल से सुनील ने पत्र खोल कर पढ़ना शुरू कया...

'पिताजी,

'आप सब कहते हैं कि सर्कस वाले रमार कर जानवरों से भी अभिनय करा ते हैं, पर उन जानवरों और मुझ में एक ुत बड़ा फर्क है. क्या आप ने कभी उस बारे में सोचा है? शायद नहीं, क्योंकि प के पास यह सब सोचने की फुरसत ही हां है. मैं बताती हूं, आप को वह फर्क...उन नवरों को मारने वाले हाथ उन के पापा नहीं होते हैं, इसलिए चोट सिर्फ उन के ीर पर लगती है, जबकि यही चोट सीधे दिल पर लगती है.

'क्या कसूर है, मेरा? सिर्फ इतना कि आप की नजरों में सोने का अंडा देने नी मुरगी हूं. आखिर आप कितनी बड़ी ा देंगे, मुझे इस बात की?

'आप सोच रहे होंगे कि मैं आज बहुत ीबड़ी बातें कर रही हूं, पर इस में मेरा कोई कुसूर नहीं है, क्योंकि आप ने ही मुझ से मेरा बचपन छीन लिया है. पर क्या अपने बचपन से बिछुड़ कर मैं बड़ी हो पाई? शायद नहीं, क्योंकि ज्यादा खींचने पर चीजें लंबी नहीं हो जातीं बल्कि टूट जाया करती हैं और मैं टूटना नहीं चाहती. इसीलिए अपने खोए हुए बचपन की तलाश में आप के घर से दूर जा रही हूं. मुझे ढूंढ़ने की कोशिश मत करिएगा.

'हां, आप से प्रार्थना है कि मेरी गलती की सजा मेरी मां को मत दीजिएगा. उसे मत मारिएगा.

'आप की दुखियारी बेटी,

'दीपा.'

पत्र पढ़तेपढ़ते सुनील का चेहरा आंसुओं से तर हो गया. उन्होंने कभी सोचा भी न था कि वह अपनी बेटी पर कितना जुल्म कर रहे हैं. पैसे की हवस ने उन्हें अंधा कर दिया था और वह यह भी नहीं देख पा रहे थे कि बच्चों को सिर्फ महंगे चाकलेट और खिलौनों से खुश नहीं रखा जा सकता. उन्हें सच्ची खुशी मिलती है, स्वस्थ और उन्मुक्त वातावरण में. जो बातें वे अपने हमउम्र बच्चों के बीच रह कर सीख सकते हैं, उन्हें वे कृत्रिम वातावरण में नहीं सीख सकते. उन की प्यार भरी निश्छल दुनिया ही अलग है. अपने ही हाथों से उस ने अपने आंगन की कली को तहसनहस कर दिया था. सुनील की आंखें पश्चात्ताप से नम हो आईं.

उन्होंने आगे बढ़ कर सविता से भर्राए स्वर में कहा, "मुझे माफ कर दो, पैसे की हवस में मैं अंधा हो गया था."

"माफी मुझ से नहीं बल्कि अपनी बेटी से मांगो...जाने बेचारी इस समय कहां भटक रही होगी और किस हालत में होगी," सविता ने रोते हुए कहा.

सुख

वही सब से सुखी है, चाहे वह राजा हो या किसान, जो अपने घर में शांति पाता है.

"जल्दी करो, उसे ढूंढ़ने चलते हैं...ज्यादा दूर नहीं गई होगी," सुनील ने सविता का हाथ पकड़ उसे उठाते हुए कहा.

सुनील और सविता अपनी कार सड़कों पर दौड़ाते फिर रहे थे, पर दीपा का कहीं पता नहीं चल रहा था. कुछ सोच कर सविता ने सुनील से आसपास के पार्कों में चलने के लिए कहा.

एक पार्क में दीपा बच्चों के बीच आराम से खेल रही थी. बहुत दिनों बाद उस के चेहरे पर स्वाभाविक चमक और ताजगी दिखाई पड़ रही थी. सुनील और सविता को

देखते ही उस का चेहरा भय से पीला पड़ गया. लेकिन अगले ही पल वह अपने को संभाल कर तेजी से विपरीत दिशा में भागी.

यह देख सुनील और सविता भी पीछे दौड़ पड़े, पर दीपा अपनी पूरी शक्ति से दौड़ रही थी. सविता ने चिल्ला कर कहा, "रुक जाओ बेटी, तुम्हारे पिता तुम से माफी मांगने आए हैं, उन्हें माफ कर दो."

पर दीपा रुकी नहीं, वह दौड़ती ही रही. तभी सविता ने दर्द भरे स्वर में कहा, "रुक जाओ दीपा, मुझे छोड़ कर मत जाओ...आखिर मेरा क्या कुसूर है, जो तुम मुझे भी दंड देना चाहती हो."

यह सुन दीपा के कदम थम गए. उस ने पलट कर देखा, उस के चेहरे पर अनिर्णय के भाव थे. वह तय नहीं कर पा रही थी कि मां की बात का क्या उत्तर दिया जाए. तभी सुनील ने भर्राए स्वर में कहा, "बेटी, मुझे माफ कर दो, मैं ने तुम पर बहुत जुल्म किए हैं, लेकिन अब मेरी आंखें खुल गई हैं. हमें छोड़ कर मत जाओ...हमें प्रायश्चित्त करने का एक मौका दो...हम तुम्हारे बिना नहीं रह पाएंगे."

दीपा के चेहरे पर अभी भी असमंजस के भाव थे. उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि जो कुछ भी अभी सुना है, वह सच भी हो सकता है. तभी सुनील ने दर्द भरे स्वर में कहा, "क्यों बेटी, अपने पिता को कभी माफ नहीं करोगी?"

इतना कहतेकहते सुनील की आवाज भर्रा गई और आगे के शब्द उन की हिचकियों में खो गए. पिता को रोता देख दीपा की आंखें भी भर आईं और वह बांहें पसार कर सुनील की तरफ दौड़ पड़ी.

सुनील ने उसे अपनी गोद में उठा लिया. दीपा को बहुत दिनों बाद अपने पिता की बांहों में शांति मिल रही थी. उसे लगा कि जैसे अचानक उस का बचपन लौट आया है.

बापबेटी का मिलन देख कर सविता की आंखें एक बार पुनः नम हो आईं. ●

परदा बच्चों की गलतियों पर

लेख ● कल्पना मोगरा

हमारी कालोनी में कई बच्चों ने 10वीं की सेंट्रल बोर्ड की परीक्षा दी. नीना के बेटे ने भी 10वीं में 65% अंक प्राप्त किए, जो कि उस की उम्मीद से कम थे. उस के दोस्त रवि ने भी 10वीं कक्षा का ही इम्तिहान दिया. परिणाम पूछने पर पहले दिन तो उस ने व उस के मातापिता ने कह दिया कि अभी तक परिणाम देखने ही नहीं गए, जो कि सुनने में अजीब सा लगा.

दूसरे दिन फिर पूछने पर रवि के छोटे भाई ने कहा, "भैया के 65% अंक आए हैं."

तीसरी जगह से पता चला कि रवि के 75% अंक आए हैं.

लेकिन जब नीना ने अपने बेटे को भेजा और स्कूल से पता करवाया तो पता चला कि कुल मिला कर 50% अंक आए हैं. अब बताइए इस तरह उस परिवार की क्या इज्जत रह गई? यही बच्चे जो आज मातापिता के सहयोग से झूठ बोल रहे हैं, कल झूठ बोल कर उन्हें भी छल लेंगे.

बच्चों की छोटीमोटी गलती पर परदा डालने से कभीकभी कितनी बड़ी कीमत



अकसर मातापिता बदनामी के डर से अपने बच्चों की गलतियों को छिपा जाते हैं परंतु अपनी इस भूल का एहसास उन्हें तब होता है जब पानी सिर के ऊपर से निकल जाता है. कहीं आप भी ऐसा कर अपने बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ तो नहीं कर रहे हैं?

चुकानी पड़ती है, इस बात का हमें अंदाजा नहीं होता. सुलेखा व शशि दोनों अच्छी मित्र थीं व बी.काम. के दूसरे वर्ष में पढ़ती थीं. सुलेखा हर बात शशि को बताती थी. दोनों



मातापिता द्वारा बच्चे की गलतियों पर परदा डालने के कारण कई बार वह नशीले पदार्थों के सेवन जैसी बुरी लत भी पाल लेता है.

ही पढ़ने में भी होशियार थीं.

शशि की मां जरा सचेत थीं, वह जबतब उस से कालिज की बातें पूछतीं व उस के मित्रों के बारे में जानकारी रखतीं. जब उन्हें कुछ शंका हुई तो एक दिन सुलेखा की मां से कुछ बातचीत की.

परंतु जवाब मिला, "आप अपनी लड़की को ही संभालिए, मेरी बेटी तो बहुत समझदार है."

अब सुलेखा की गलतियों पर परदा डालने का परिणाम यह हुआ कि एक दिन वह घर छोड़ कर चली गई. तब कहीं जा कर उस की मां को अपनी गलती का एहसास हुआ.

रवि ने एक दिन प्रकाश से कहा, "यार, तुम मुकेश को कितना जेबखर्च देते हो?"

प्रकाश हंस कर बोला, "20 साल का बेटा है और रईस बाप की एकलौती संतान...जब जितना चाहे, खर्च करे...क्या कमी है."

प्रकाश की पत्नी को क्लब से, प्रकाश को कमाने से व बेटे को उड़ाने से फुरसत ही कहां थी कि कोई किसी की गतिविधियों पर ध्यान देता. उन्हें अपनी गलती का एहसास उस दिन हुआ, जब बेटा एक सड़क दुर्घटना में बुरी तरह घायल हो गया. डाक्टर ने बताया, "आप का बेटा नशीले पदार्थों का सेवन करता है...क्या आप को इस की जानकारी है?"

उस दिन दोनों सिर झुकाए खड़े रहे व प्रकाश को रवि की बात याद आने लगी.

आमतौर पर अभिभावक अपने बच्चों की शरारतों, गलतियों व बुरी आदतों पर परदा डालने की कोशिश करते हैं, ताकि उन के बच्चों व परिवार की बदनामी न हो. लेकिन इस तरह वे अपने बच्चों के भविष्य के साथ खुद ही खिलवाड़ कर बैठते हैं.

दूसरी ओर जो अभिभावक बच्चों की गलतियों व बुराइयों के बारे में जानकारी मिलने पर उन्हें राह पर लाने के लिए डांटतेफटकारते हैं व सही सीख देते हैं, उन के बच्चे जिंदगी में कभी धोखा नहीं खाते.●

लेख ● मंजू नागोरी

घर का काम शुरू करे कोई संभाले कोई



वाशिंग मशीन में कपड़े डाल मैं ने मोटर और हीटर दोनों 'आन' किए और 'अभी तो चलने दो,' सोच कर एक जरूरी टेलीफोन करने दूसरे कमरे में चली गई. फोन से निबटी तो लपकी कि मशीन बंद कर दूं, तभी पुनः फोन की घंटी बजी और मैं बीच रास्ते से ही फिर दौड़ी.

रिसीवर उठाया तो पता चला कि दिल्ली से भाई का फोन है. वह कुछ बता रहा था और चाहता था कि मैं नोट कर लूं. मैं अजब दुविधा में थी, फोन भी नहीं छोड़ सकती थी और उधर प्रतिपल कानों में गूंजती मशीन की घड़घड़ाहट मेरा ध्यान बांट रही थी. मैं ने बच्चों को आवाज दी, पर किसी का प्रत्युत्तर नहीं आया.

फिर बाई को इशारे से बुला कर कहा कि मशीन बंद कर दो, पर वह इशारा ही नहीं समझी. मैं खीज उठी और सोचने लगी, 'इस वक्त मशीन चला कर मैं ने गलती की, अगर फुंक गई तो नुकसान भी भरो, साथ ही तकलीफ भी सहो.'

भाई ने एक बार पूछा भी, 'परेशान क्यों हो?'

अब क्या कहती कि मेरी परेशानी का सबब क्या है.

प्रायः ऐसा हम सब के साथ होता है. काम की शुरुआत तो बड़े जोरशोर से कर देंगे, पर फिर अधूरा काम छोड़ कर या तो दूसरे काम में लग जाएंगे अथवा पहले को भूल ही जाएंगे और चाहेंगे कि कोई दूसरा इसे पूरा कर दे.

वीणा ने कढ़ाईसिलाई की क्लास में जाना शुरू किया. चावचाव में 2-3 मेजपोश तो पूरे किए, पर बाद में सब आधाअधूरा

छोड़ दिया. मां के पूछने पर जवाब देती, 'बोर हो गई हूं, आप पूरा कर दो न.'

पति अकसर शेव के लिए पानी ले कर बैठ जाएंगे पर ब्रश, शेविंग ट्यूब व शीशे के लिए पत्नी को आवाज देंगे, 'अरे, सुनती हो, जरा शीशा देना, कैंची पकड़ा दो.'

पत्नी बेचारी अपने हाथ का काम छोड़ पहले पति की आज्ञा मानने को विवश हो जाती है.

गृहिणियां भी अकसर ऐसा ही करती हैं. प्रेशरकुकर पर दाल चढ़ा देंगी और खुद दूसरे कामों में व्यस्त हो भूल ही जाएंगी. अब जब कुकर सीटी पर सीटी देगा, तब या तो चिल्लाएंगी या दूसरों से शिकायत करेंगी कि सीटी सुन गैस बंद नहीं कर सकते थे.

चूल्हे पर सब्जी चढ़ा कर प्रायः पत्नियां मन ही मन यह आस करती हैं कि महरी यहीं बरतन मांज रही है, देख लेगी. उधर महरी अपने ही खयालों में व्यस्त होती है.

आप मना कर कहती हैं, 'ले कर क्यों नहीं गया, मेरे हाथ आटे में हैं, ठहर जा, 2 मिनट.'

उधर बच्चा दरवाजा पीटता है, 'ठंड लग रही है जल्दी दो न.'

बच्चे को तौलिया दे आप चार बातें सुनाती हैं पर वह 'भूल गया' कह कर छुटकारा पा जाता है.

ऐसी भूलें बच्चे ही नहीं, हम सभी दिन में कईकई बार करते हैं व चाहते हैं इन की पूर्ति कोई और कर दे. पर स्पष्ट बात नहीं करते और न ही निर्देश ही देते हैं कि 'मैं फलां काम शुरू कर के जा रहा हूं, जरा ध्यान रखना.'

वैसे होना तो यह चाहिए कि जो काम हम ने शुरू किया है, उसे हम खुद ही पूरा करें. यदि हम चाहते हैं कि वह काम कोई दूसरा पूरा करे तो उसे अच्छी तरह समझा कर कहीं जाएं.

अकसर हम किसी भी काम को पूरा करने के लिए दूसरों की मदद की इस कदर अपेक्षा रखते हैं जैसे वह उन का कर्तव्य हो और हमारा अधिकार. लेकिन हमारी इस आदत से अनजाने में जन्मी अपनत्व की भावना यह अहसास भी दिलाती है कि उन के बिना कहीं हम अधूरे तो नहीं ?

अगर सब्जी के जलने की गंध उसे आए भी तो वह सोचती है, 'जल रही होगी कहीं, मुझे क्या?'

अब जली सब्जी देख कर बहूजी महरी को दोष देंगी कि यहीं बैठी थी, देख नहीं सकती थी. सारी सब्जी जल गई, अब दूसरी बनाओ.

उधर महरी कहेगी, 'मुझे क्या पता, आप बाहर चली गई हैं. वैसे गंध तो मुझे आई थी, पर मैं काम में लगी थी... आप भी तो बता कर नहीं गईं.'

ऐसा अकसर हर घर में होता है. सब्जी जलती है, कुकर सीटी पर सीटी देता है, बच्चा बाथरूम में घुसा आवाज पर आवाज देता है, 'अरे मां सुनती नहीं हो, तौलिया दो.'

स्त्रियां अकसर अपनी देवरानियों, जेठानियों, पड़ोसिनों से बहस में उलझ जाती हैं और जब बात बिगड़ जाती है, तब पस्त हो अपनेअपने पतियों से चाहती हैं कि वे बात को बिगड़ने न दें.

एक परिचित परिवार की गृहिणी से किसी घरेलू मसले पर मेरी अनबन हो गई. मैं अपने खोल में सिमट कर सोचने लगी, 'ऐसे छोटे दिल वालों से ज्यादा मेलजोल ठीक नहीं, इन्हें बात का मर्म तो समझ आता नहीं, लेकिन बतंगड़ बनाना खूब जानते हैं.

इधर जब उस के पति को पता चला कि उस की पत्नी ने मूर्खतावश मुझ से गलत व्यवहार किया है तो उन्होंने अपनी पत्नी को समझाया होगा कि संबंध तोड़ना उचित नहीं,



यक्ति खुद कितना भी संभाल ले छोटेमोटे कामों में एकदूसरे की सहायता लेनी ही पड़ ाती है.

लती तुम्हारी है.

खैर, मैं जब भी उस के पति के सामने ड़ती, वह हाथ जोड़ते हुए इस बात की फ़ाई देने का यत्न करते. पर मैं उन की पत्नी व्यवहार से इतनी क्षुब्ध थी कि दोबारा नजोल करने की कोशिश ही नहीं की. मन यह भी आता कि गलती इन की पत्नी की पर यह सज्जन उस की गलती का प्रायश्चित्त यं कर रहे हैं ताकि आपसी स्नेह बना रहे. ा भी अकसर होता है कि जब पति को सी आगंतुक से नहीं मिलना होता तो वह ट पत्नी या बच्चों को सामने कर झूठ लवा देंगे, 'कह दो, घर पर नहीं हैं.'

दरअसल हमें कदमकदम पर अपनों की रूरत होती है. हम उन के बिना वाकई धूरे हैं. तभी तो हर काम में हमें उन की द की दरकार होती है.

मेरे संग तो एक समस्या और भी है. एकांत में बैठ कर पूरी रचना स्वयं लिख लूंगी पर अचानक पति, जो स्वयं दैनिक पत्र के संपादक हैं, आफिस से घर आ जाएं तो उसी क्षण कलम रोक कर कहूंगी, 'अब नहीं लिख सकती आप पूरा कर दें.'

वह कई बार कहते हैं, 'अच्छाभला लिख रही थीं, मुझे देख क्या हो गया.'

'पता नहीं, मुझे नहीं मालूम, पर अब मदद करनी पड़ेगी.'

कई बार लगता है, इस तरह की मदद की चाहत शायद हर व्यक्ति का इकतरफा अधिकार है. दूसरा इसे किस रूप में स्वीकार करता है? इस की हमें कतई चिंता नहीं रहती. हम सभी किसी भी काम की शुरुआत जितनी उमंग व जोश से करते हैं, उस की समाप्ति दूसरों की मदद से होती है. हम सोचते हैं, यह हमारा अधिकार है व उन का कर्तव्य. जरूरत, अधिकार व कर्तव्य का यह भाव संभवतः हमें अपने परिवार से जोड़े रहता है और सुख भी देता है. ●

खरी खोटी

• गोपाल चतुर्वेदी

कतारों का देश

कुछ विद्वानों की मान्यता है कि भारत एक व्यक्तिवादी देश है. हर आदमी इस मुगालते में मगन रहता है कि वह अमल और काबिलीयत का टापू है. एकदूसरे के साथ मिलजुल कर काम करने के स्थान पर लोग एकदूसरे की टांग खींचने में ज्यादा यकीन रखते हैं. चाहे सरकार हो या सियासत, खेल का मैदान हो या चाय की दुकान, टांग खिंचाई की यह अनुकरणीय प्रवृत्ति हर स्थान पर हावी नजर आती है.

किसी भी क्षेत्र में खिलाड़ी के हाथ गेंद लगती है तो वह स्वयं उसे ले कर गोल की तरफ बढ़ता है. किसी दूसरे को 'पास' दे कर सहयोग लेना या देना अपना अपमान समझता है. अपनी टीम को हर उपलब्ध मौके पर धता बताना उस की आचारसंहिता का महत्त्वपूर्ण मुद्दा है. अकसर बीच रास्ते में ही विरोधी खिलाड़ी उस से गेंद झपट लेते हैं. उस के गोल करने के मनसूबे धरे के धरे रह जाते हैं. उसे सिर्फ यही दुख होता है कि अगर वह गोल करने में सफल होता तो उस की निजी कीर्ति पताका दूरदूर तक फहराती. उस की कितनी वाहवाही होती.

अपनी टीम के फायदे व नुकसान का न तो खिलाड़ी ध्यान रखते हैं, न अपनी व्यक्तिगत महत्ता में अफसर व लीडर को देश की चिंता सताती है. अपनी महिमा से मोहित व्यक्तियों की एक बड़ी खासियत है. वे सिर्फ अपनी महानता के बारे में सोचते हैं.

कुछ विद्वान भारत को अब्सट्रैक्ट (अमूर्त) आर्ट का प्रतिनिधि नमूना मानते हैं. इस में कला के हर पारखी को अपना मनचाहा चेहरा नजर आता है. कइयों को धर्म के नाकनक्श दिखाई देते हैं, कइयों को पाखंड के. कुछ की धारणा है कि ज्यादातर सदाचारी मुखौटों के पीछे सिर्फ भ्रष्टाचार का सच छिपा होता है. कुछ कहते हैं कि भारतीय जनतंत्र निरक्षरों का स्वप्नतंत्र है, तो दूसरे उसे परिवार का प्रजातंत्र बताते हैं.

कई लोग हमारी भारतीय पेंटिंग को सपने देखने और बेचने वालों का सब से बड़ा बाजार समझते हैं. उन्हें लगता है कि रेखाओं में रचे आदमी रोटी के दिवास्वप्न में ऊंघ रहे हैं. नेता उन के लिए 56 व्यंजनों के खयाली पुलाव पकाते हैं और संसार भर के व्यापारी उन पर सुखसमृद्धि, सुंदरता और सेहत की बहुमूल्य निधि मिट्टी के मोल लुटाते हैं. उन्हें अफसोस है कि पूरी की पूरी जन्नत बाजार में उधार पर उपलब्ध है और यह कमबख्त फिर भी नोन, तेल, लकड़ी की चिंता में खोए हैं. स्वर्ग की अप्सराएं फैशन शो के बहाने धरती पर अवतरित हुई हैं और इन की स्थायी संडासी मुद्रा में कोई फर्क नहीं पड़ा है. ये कैसे गएबीते इनसान हैं कि इन के जीवन में न तीज, न त्योहार, न रोमांस, न प्यार, न छुट्टी, न इतवार है. इन का सारा अस्तित्व सिर्फ पापी पेट का एक अदद अनुत्तरित सवाल है. कई ज्ञानी हिंदुस्तानी पेंटिंग को उस की विविधताओं के लिए सराहते भी हैं, 'हमने तो ऐसी नायाब कलाकृति कहीं नहीं देखी. पेंटिंग क्या, कतई एक 'प्रिज्म' है...जिस किसी कोण से देखो, नया रंग उभरता है.'

गरीबी, धर्म, पाखंड, काहिली, परिश्रम, ऐश्वर्य भारत में हर तरह की विविधता है. उसी वजह से भारत विविधताओं का देश निरूपित किया जाता है. जानकारों से बहस की मुंहजोरी अपने संस्कारों के

तिकूल है. विनम्रता सुंदर नारी का दोष और ताओं के अलावा हर नर का आभूषण है.

यों अपन भी विद्वानों के कथन के द हिंदुस्तान की विविधता के कायल हैं. जब वे आशंका व्यक्त करते हैं कि दुस्तान की एकता खतरे में है तो हमें हंसी ती है. कौन ऐसा माई का लाल है, जो ारी भूख, अभाव और निरक्षरता की ापक एकता को खतरे में डालने की जुर्रत रे. अगर किसी साहसी का ऐसा इरादा है उस का स्वागत है. आओ भैया, तुम भी पने अरमान निकाल लो. कइयों ने कोशिश , मुंह की खाई और सिर पीट लिया. अब न को दिलासा देते हैं कि भगवान ने कुत्ते दुम ही टेढ़ी बनाई है, वह भला उसे

स्त्रियों के क्यू में आप किसी से भी दरयाफ्त कर आश्वस्त होते हैं कि यह सारी की सारी भीड़ मातृत्व की शिकार है. उन में से कई मांबाप अपने बच्चों का नामकरण 'करतार' करते हैं और कई केवल 'कतार'. ऐसे इन में खास फर्क नहीं है.

इस मुल्क में मातृत्व की महामारी का ऐसा प्रकोप है कि बच्चे अपनी बारी आने तक की प्रतीक्षा नहीं कर पाते. मां कतार में खड़ी है और शिशु जन्म ले लेता है. शायद यही वजह है कि बुजुर्ग आधुनिक पीढ़ी को 'बेसब्रा' बताते हैं. लेकिन हम उन से सहमत नहीं हैं. इंतजार कोई स्वाभाविक प्रक्रिया तो है नहीं कि जो नवजात 'भगवान के घर' से उसे सीख कर तशरीफ लाएं. वे भारत में



ी कैसे करे. प्रकृति की इच्छा के आगे ान लाचार है.

अनेकता में एकता का केवल यही सूत्र है. हमारी राष्ट्रीय एकता के कई और िक प्रमाण हैं. भारत विशाल में 'क्यू' की य एकता है. हिंदुस्तान अंतहीन कतारों का उल्लेखनीय देश है. हिंदुस्तानी जन्म से कर मृत्यु तक 'कतार' में लगा रहता है. ी भी अस्पताल में जा कर इस तथ्य की की जा सकती है. एक तरफ महिलाओं कतार है, दूसरी ओर पुरुषों की.

पधारे हैं, अब धीरेधीरे उन की तकदीर खुलेगी. परंपरा, संस्कार और मजबूरी उन्हें धीरेधीरे इंतजार का पाठ भी पढ़ा देगी. फिलहाल तो उन के मांबाप गद्गद हैं. वे शीश झुका कर करतार का आभार मानते हैं कि कतार तक में साहबजादे या साहबजादी सहीसलामत अवतरित हो गए. इस कृपा को 'करतार' का नाम दिया जाता है.

दूसरे किस्म के मांबाप भी हैं. उन का यकीन यथार्थ में है. जो कतार में पैदा हुए, वे उन्हें 'कतार' ही पुकारने लगते हैं. इस से

यह भी जाहिर होता है कि उन्हें कतार से कितना प्यार है, अपनत्व और लगाव है. उन का निश्चय जीवनभर कतार की शान में कसीदे पढ़ने का है. बच्चे को कतार नाम दे कर वे 'कतार, कतार' गुहारने का एक भी मौका नहीं गंवाना चाहते. ऐसे मांबाप की नियति बच्चों को मुसल्सल पुकारना है, वे ध्यान दें या न दें.

गनीमत है कि पुरुषों की कतार अभी तक 1 से 2 होने की अभिलाषा में नहीं लगती. उन में से कई पहले क्यू में खड़े नजर आते हैं, फिर बैठे और उस के बाद कभी न उठने के लिए लेट जाते हैं. डाक्टरों का विचार है कि लाइन में लगे रोगियों से अधिक मरीज अस्पताल में भरती हो कर टें बोलते हैं.

असलियत यह है कि भारतीय एक रहमदिल प्राणी है. हमारे अस्पतालों में बेड की 'सप्लाई' कम और 'डिमांड' ज्यादा है. कई मरीज मरतेमरते जी उठते हैं और बिस्तर पर कब्जा नहीं छोड़ते. कई दयावान मारामारी का कारण बनने के बजाए मर जाना पसंद करते हैं. यह मात्र दुष्प्रचार है कि हिंदुस्तानी डाक्टरों का लक्ष्य रोगियों का इलाज नहीं, देश की आबादी घटाना है.

हमारे डाक्टरों का दर्जा 'देवदूतों' का है. मरने वाले उन के चुंबकीय आकर्षण के वशीभूत उन का आशीर्वाद पाने की होड़ में क्यू में लगते हैं. अगर क्यू से बच निकले तो डाक्टर के दर्शन पा कर और अप्सराओं सी नर्सों के सान्निध्य मे कृतार्थ हो कर सीधे स्वर्ग सिधारते हैं. उन की दवादारू की नौबत ही नहीं आती है.

दवाओं की दुकान में भी कतारें हैं. आलम यह है जब तक किसी का दवा लेने का नंबर आता है, पहले से महंगी दवा की कीमत और आसमान छूने लगती है. यही कारण है कि बीमार दवा की जगह दारू के क्यू में जा खड़े होते हैं. दोनों के प्रयोग से स्वर्ग की संभावना है. दवा न मिली तो दारू ही पी ली. भारत एक आस्थावान देश है, कुछ मरीजों की दवा पर आस्था है, कुछ की दारू पर.

हमारे देश में क्यू ही क्यू है. निरक्षरों का क्यू है. स्कूल में प्रवेश पाने वालों के क्यू हैं. बेकारों की मीलों लंबी कतारें हैं. काम करने वालों की लाइनें हैं. भूखों की भरमार है और राशन की दुकान पर कभी न खत्म होने वाली कतारें हैं.

किसी जमाने में केवल इनसानों के क्यू लगते थे. बहुत हुआ तो रिकशा, कार, टेंपो, टैक्सी और नगर बसें सड़कों को रौंदती थी. इधर स्थिति में सुधार हुआ है. शहर की सड़कों पर हलके वाहन, नगर बसें तथा ट्रक सवेरे से टिड्डी दल की तरह हमला करते हैं. खेतों में टिड्डियों से फसल खेत होती है, शहरों में इनसान. हमारे अस्पताल और वाहन दोनों देश की विकराल जनसंख्या समस्या के समाधान में सार्थक योगदान देते हैं. वे शरमीले हैं. गाल बजाने में उन का विश्वास नहीं है. वे चुपचाप अपना काम करते हैं, ढिंढोरा नहीं पीटते.

खेतों, खाद्यानों के बजाय इन मारक वाहनों के सरकारी प्रोत्साहन की नीति का राज अब जा कर अपने पल्ले पड़ा है. देश में मानव संसाधन की ऐसी इफरात है कि हजारों बेकार रोज चल भी बसें तो चलता है. अर्थशास्त्री बताते हैं कि अकुशल मानव संसाधन की वर्तमान प्रचुरता मुल्क को आगे नहीं बढ़ाती, पीछे घसीटती है.

सड़कों पर पैदल घिमटने वाले कीड़े-मकोड़ों से किसी भी देश का विकास नहीं होता. राष्ट्रीय तरक्की 1 कार वाले का 2 कार वाला बनना है. बेकार के रहने न रहने से सरकार का कोई सरोकार नहीं है. उस ने इतने प्रयास किए, फिर भी यह 2 पैर से घिमटने वालों का क्यू कम नहीं होता है. वाहनों की कतारों को आराम से दौड़ने तक की जगह नहीं है. देश की प्रगति अवरुद्ध है. राष्ट्र के हर शुभचिंतक को वाहनों की लंबी तथा गतिशील कतारों का इंतजार है.

हमारी विकासोन्मुखी उधार अर्थव्यवस्था की यांत्रिक क्रांति में बस थोड़ी कोरकसर है. हमारी सड़कों का इनसानों से पूरी तरह वीरान होना और वाहनों से आबाद

होना अभी बाकी है. कंप्यूटर की सहायता से दुर्घटना बढ़ाने के तौरतरीकों की खोज हो रही है. यदि इस में वाहन और नीति निर्धारक सफल रहे तो समृद्धि का स्वर्ग आ कर रहेगा.

इस क्यू प्रधान देश का सौभाग्य है कि अभी कुछ लोग क्यू से बाहर हैं. वे बाहर बैठ कर क्यू के बारे में फैसले करते हैं. हमारी शासकीय प्रणाली न्याय और निष्पक्षता से प्रेरित है. कतार वाले कतार के बारे में निष्पक्ष निर्णय के लायक नहीं हैं. यह एकाध फीसदी क्यूवंचितों का दायित्व है. इन नीति बनाने वालों ने कभी किसी क्यू को नहीं भुगता. इन्होंने कभी किसी राशन की दुकान का दालचावल के नाम से प्रचारित कंकड़पत्थर नहीं खाया. उन के नौकर और कारें सब्जी मंडी की सैर करती हैं. वे सिर्फ खाते हैं.

भारत की लालफीताशाही के कुशल सदस्य संसार के हर विषय के विशेषज्ञ हैं. साहित्य से ले कर साइंस, संस्कृति, सैंडल, चप्पल तक में इन की महारत है. ये वे कैक्टस हैं, जो कहीं भी उगते हैं. ये हमारे कतारों के देश के अधिकारिक प्रवक्ता हैं. जब कोई राशन की दुकान के अनाज की शिकायत करता है तो ये अपने पंचसितारा होटल के भोजन के अनुभव के आधार पर उस में किसी भी मिलावट की गुंजाइश तक से इनकार करते हैं. उन्होंने कागजी खानापूर्ति कर के मुल्क के हर निरक्षर को साक्षर करार दे दिया है. जब जनता महंगाई से त्राहित्राहि करती है, वे आंकड़ों से साबित करते हैं कि बाजार में उतनी मंदी तो कभी नहीं रही है.

हर क्यू से बाहर खड़े ये मुट्ठी भर लोग कभी क्यू के अनुशासन पर जोर देते हैं तो कभी उसे समाप्त करने की जुगत समझाते हैं. ऐसा नहीं है कि हमारे देश के नेताओं को क्यू का अनुभव नहीं है. वे भी कभी कतारों में थे. उन्होंने बड़े नेताओं के घर लाइन लगाई. उन की कृपा दृष्टि हुई तो वे क्यू से बाहर हो कर सांसद विधायक बन बैठे. उन्होंने बड़ी जोड़तोड़ कर क्यू से छुटकारा पाया है. अब भला वे क्यू और क्यू वालों के बारे में क्यों सोचें. बाथटब में स्नान करने वालों से गटर में गुजरे दिनों के ध्यान की अपेक्षा मूर्खता नहीं तो और क्या है?●

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

○ चांडाल

निर्माता : राजीव बब्बर
निर्देशक : टी.एल.वी.प्रसाद
संगीत : आनंद मिलिंद
मुख्य कलाकार : मिथुन चक्रवर्ती, स्नेहा, रामी रेड्डी, पुनीत इस्सर, जैक गौड़, अवतार गिल.

मिथुन चक्रवर्ती आजकल एक फ्लाप कलाकार माना जाता है. अधिकांश निर्माता उसे फिल्मों में नहीं ले रहे हैं. परंतु राजीव बब्बर एक ऐसे निर्माता हैं जो पिछले 3-4 वर्ष से मिथुन चक्रवर्ती को ही ले कर बारबार फिल्में बना रहे हैं. ऐसा नहीं है कि फिल्में चलती नहीं, फिल्में चलती हैं तभी तो मिथुन को बारबार दोहराया जा रहा है.

मिथुन की इन फिल्मों को चलाने वाला दर्शकों का एक खास वर्ग है, जिन्हें फिल्म से कुछ लेनादेना नहीं होता. बस, मारधाड़, एक्शन, गोलाबारी, कैबरे तथा अन्य सभी लटकेझटके होने चाहिए.

राजीव बब्बर की नई फिल्म 'चांडाल' भी ठीक उसी तरह की फिल्म है जैसी वह पहले बनाया करते थे. यह एक बदला प्रधान कहानी है. नायक इंद्रजीत (मिथुन) एक ईमानदार पुलिस इंस्पेक्टर है. स्नेहा (स्नेहा) एक प्रेस रिपोर्टर है, जो इंद्रजीत से प्रेम करती है. राम साहब (रामी रेड्डी) शहर का प्रतिष्ठित व्यक्ति है परंतु अपराधों में लिप्त है. वह और उस के साथी इंद्रजीत के परिवार को खत्म कर देते हैं और सभी हत्याओं का दोषी इंद्रजीत को मान लिया जाता है. इंद्रजीत को फांसी की सजा हो जाती है. स्नेहा इस फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट, मुख्यमंत्री तथा राष्ट्रपति तक पहुंचती है और उसे रिहा करा लेती है. जेल से बाहर आ कर इंद्रजीत रायसाहब और उस के सभी साथियों को मार कर अपना बदला पूरा करता है.

फिल्म की इस कहानी में कोई नयापन नहीं है. इस तरह की कहानियां न जाने कितनी बार पहले भी दोहराई जा चुकी हैं. फिल्म का निर्देशन सामान्य है. निर्देशक ने कव्वाल अल्ताफ राजा को परदे पर पेश कर के फिल्म में जान डालने की कोशिश की है. अल्ताफ राजा की कव्वालियां पिछले कुछ दिनों से काफी लोकप्रिय हो रही हैं.

फिल्म में असरानी की फूहड़ कामेडी भी डाली गई है. श्मशान घाट में भूतों के साथ उस का वार्तालाप बोर करता है. निर्देशन की दृष्टि से अन्य कई खामियां फिल्म में हैं. डी.आई.जी. का इंद्रजीत को कसूरवार ठहराना और अपराधियों की इज्जत करना उस की गरिमा के खिलाफ लगता है.

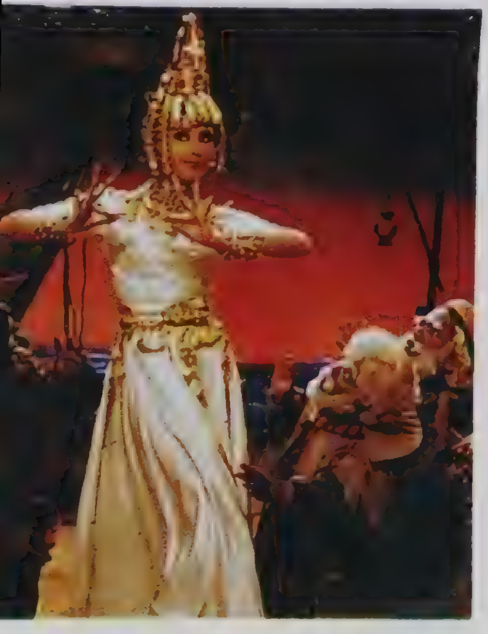
फिल्म में गुलशन कुमार हत्याकांड ठीक उसी प्रकार दिखाया गया है जिस प्रकार यह कांड हुआ था. बस, गुलशन कुमार की जगह पात्र का नाम रतनकुमार कर दिया गया है. गीतसंगीत भी साधारण है. फिल्म के लगभग सभी गीत सपनों में डाले गए हैं.

अभिनय की दृष्टि से कोई कलाकार प्रभावित नहीं करता. मिथुन के चेहरे पर झुर्रियां साफ झलकती हैं. स्नेहा नई अभिनेत्री है, उस की यह पहली फिल्म है. उस ने जिस्म की नुमाइश करने की कोशिश की है. अन्य सभी कलाकार साधारण हैं. फिल्म का छायांकन भी ठीकठाक है.

○ छोटा चेतन

र्निर्माता : अप्पाचन
निर्देशक : जीजो
मुख्य कलाकार : उर्मिला, शक्ति कपूर, सतीश कौशिक, हरीश, रवि वासवानी, मास्टर अरविंद, सुरेश, सोनिया, मुकेश आदि.

आज से लगभग 13 वर्ष पहले 1985 में भारत में त्रिआयामी फिल्मों का दौर आया था.



फिल्म 'छोटा चेतन' के एक दृश्य में उर्मिला : सैक्सी नृत्य भी फिल्म को नहीं चला पाएगा.

तीन त्रिआयामी फिल्में बनीं भी, लेकिन चलीं नहीं. 'छोटा चेतन' भी उन में से एक थी. उस वक्त चूंकि यह एक नया प्रयोग था, बहुत शोर मचा कि इस तरह की फिल्में आने से वीडियो फिल्मों का भविष्य अंधकारमय हो जाएगा.

थ्रीडी फिल्में देखने के लिए दर्शकों को एक विशेष प्रकार का चश्मा लगाना पड़ता है. इस से दर्शकों को चित्र में गहराई या विविध दूरियों का आभास होता है. ऐसा लगता है, परदे पर जो कुछ घट रहा है, वह हमारे बिलकुल करीब हो रहा है. मान लीजिए, परदे पर कोई पात्र किसी को कोई चीज फेंक कर मारता है तो लगता है वह चीज सीधी हमारी छाती पर आ कर लगेगी.

'छोटा चेतन' को उस वक्त दर्शकों ने स्वीकार कर दिया था, इसलिए इस फिल्म के निर्माता ने इस में रद्दोबदल कर के इसे दोबारा बनाया है. इस फिल्म की कहानी में भी परिवर्तन किया गया है जबकि कहानी का मूल स्वरूप वही रखा गया है. फिल्म में नामीगिरामी कुछ नए कलाकार भी डाले गए हैं. यह फिल्म 3 दक्षिण भारतीय भाषाओं में भी बन चुकी है, हिंदी में तो इसे डब किया गया है.

'छोटा चेतन' हालांकि है तो बच्चों की फिल्म, परंतु निर्देशक ने उस में ऐसी घटनाएं भर दी हैं जिस से बच्चे तो क्या, बड़े भी ठहाके लगाते हैं. फिल्म की कहानी भूतप्रेतों से संबंधित है. इस तरह की फिल्में दर्शकों को गुमराह ही करती हैं, उन का कोई भला नहीं करतीं. आजकल जब दुनिया 21वीं शताब्दी में जा रही है, थ्रीडी जैसे प्रयोग तो समझ आते हैं परंतु भूतप्रेत, तांत्रिक, चमत्कार जैसी बातें गले नहीं उतरतीं.

इस फिल्म के प्रमुख पात्र चार बच्चे हैं. प्रेत बच्चे चेतन (मास्टर अरविंद) को एक जादूगर कैद कर लेता है. विजय (मास्टर सुरेश), लक्ष्मी (बेबी सोनिया) व विनोद (मास्टर मुकेश) तीनों के हाथ एक ताबीज लग जाता है जिस की मदद से वे उस भूतहा मकान में प्रवेश करते हैं जहां चेतन कैद पड़ा है. वे उसे कैद से छुड़ाते हैं. अब चेतन तीनों बच्चों के साथ घूमता है, अजीबोगरीब हरकतें करता है. उन तीन बच्चों के अलावा उसे कोई नहीं देख पाता. एक दिन जादूगर चेतन को दोबारा कैद कर लेता है. चेतन की बड़ी बहन (उर्मिला), जिसे चेतन की तलाश है, जादूगर को मार डालती है. जादूगर के मरते ही चेतन एक बाज की शक्ल अख्तियार कर लेता है और तीनों बच्चे अपनेअपने घरों को लौट जाते हैं.

इस फिल्म के पहले वाले संस्करण में शक्ति कपूर, उर्मिला, सतीश कौशिक, हरीश, रवि वासवानी जैसे कलाकार नहीं थे. निर्देशक ने अब इन का समावेश कर कोई करिश्मा नहीं दिखाया है. उर्मिला से एक सैक्सी नृत्य करवा कर उस ने फिल्म को वयस्कों के देखने लायक बना डाला है.

पहले वाले संस्करण को तो हम बच्चों के देखने लायक कह सकते थे. फिल्म में मास्टर चेतन को गटागट शराब की बोतलें पीते हुए दिखाया गया है. इस से बच्चों के मन पर बुरा प्रभाव पड़ेगा.

अभिनय की दृष्टि से सिर्फ मास्टर अरविंद का काम अच्छा कहा जा सकता है. अन्य सभी कलाकार साधारण हैं. ●

* श्रीदेवी की नई भूमिका *

श्रीदेवी जब तक फिल्मों में व्यस्त थी, तब तक वह अपने घर से स्टूडियो और स्टूडियो से घर आने की ही सोचती थी. तब उस के पास फिल्मों में काम करने के सिवा और कोई भूमिका भी न थी. यहां तक कि उस के लाखों प्रशंसक उस की एक झलक पाने के लिए बेताब रहा करते थे, पर उन्हें स्टूडियो में घुसने नहीं दिया जाता था.

लेकिन बोनी कपूर से ब्याह रचाने के बाद जब से श्रीदेवी ने संतान पाई है, तब से उसे अपनी घरगृहस्थी संभालने की एक नई भूमिका मिल गई है. इस नई भूमिका के रहते अब उस के प्रशंसक कभी उसे लोखंडवाला में सब्जीभाजी खरीदते देखते हैं तो कभी जुहू के नेचुरल आइसक्रीम पार्लर पर अपनी बेटी को आइसक्रीम खिलाते हुए. श्रीदेवी अपनी इस नई भूमिका से काफी खुश है. आखिर शादी के बाद हर अभिनेत्री को इस दौर से भी गुजरना ही पड़ता है, जहां उसे देखने वालों की भीड़ नहीं जुटती.



* ऐश्वर्या, सुष्मिता बनी घीशक्कर *

कहते हैं, जब 2 प्रतिद्वंद्वियों के बीच तीसरा आ टपकता है तो वे दोनों उस तीसरे को आउट करने के लिए आपस में घीशक्कर हो जाते हैं. ऐसा मामला अब फिल्म अभिनेत्री ऐश्वर्या राय और सुष्मिता सेन के बीच देखने में आया है. कहां तो ये दोनों अभिनेत्रियां एकदूसरे में बातबेबात मीनमेख निकालने में जुटी रहती थीं और कहां अब तीसरी विश्व सुंदरी डायना हेडन के फिल्मी परदे पर आने की भनक पा कर उसे ही आउट करने की सोच रही हैं. जब किसी ने सुष्मिता सेन



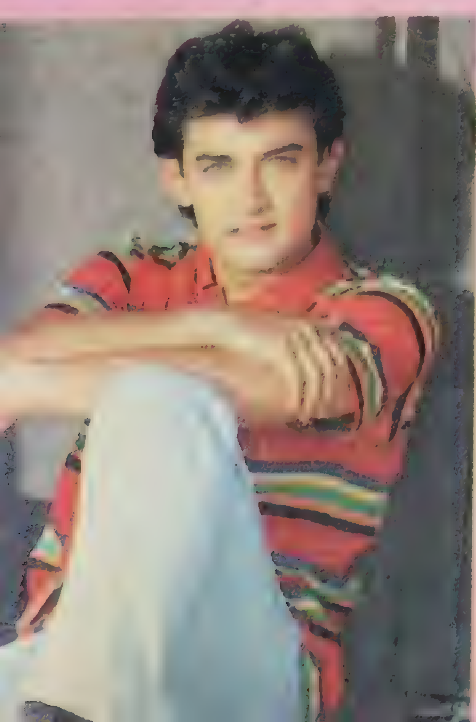
से डायना के बारे में पूछा तो उस ने जवाब दिया, "बाकी तो सब ठीक है लेकिन डायना उतनी मोहक नहीं है, जितनी ऐश्वर्या राय है."

सुष्मिता के इन उद्‌गारों से ऐश्वर्या भी फूली नहीं समाई. इसलिए जब डायना के बारे में ऐश्वर्या की राय जानी गई तो उस ने भी सुष्मिता का ऋण उतारने की खातिर यही कहा कि बाकी तो सब ठीक है, लेकिन डायना उतनी प्रतिभाशाली नहीं है, जितनी सुष्मिता है.

डायना से मिले बिना ऐश्वर्या और सुष्मिता ने भले ही उसे 'मिस फिट' करार दे दिया हो, पर डायना की खूबसूरती पर फिदा हुए ऋषि कपूर 'आ अब लौट चलें' के प्रोजेक्ट को ताक पर रख कर ऐसी फिल्म बनाने के सपने बुन रहे है, जिस में वह डायना को बतौर नायिका लाना चाहता है. अक्षय कुमार भी डायना के साथ अपना फोटो सेशन उतरवाने के चक्कर में है. फिल्म नगरी में यह भी चर्चा है कि सन्नी देओल भी डायना को अपनी फिल्म 'लंदन' में काम दे रहा है.

* आमिर खान की समझदारी *

अगर किसी के पास मोबाइल फोन हो तो वह दफ्तर के कामों को भूल कर उसी से अपने जानकारों का हालचाल पूछने में लगा रहता है. इसी तरह कई फिल्मी सितारे भी शूटिंग के वक्त मोबाइल फोन पर अपने किसी दोस्त या सहेली से गप्पें हांकने में व्यस्त हो जाते हैं और बेचारा निर्देशक भुनभुना कर रह जाता है. लेकिन आमिर



खान पेजर का इस्तेमाल बेहतर मानता है. उस का कहना है कि उसे अपने पेजर से जो संदेश मिलता है, उस का उत्तर वह अपने सेक्रेटरी के जरिए दिलवा देता है. इस से उस के काम का नुकसान नहीं होता.

आमिर अपने हर काम में पूर्णता लाने की कोशिश करता है, चाहे एक्टिंग हो या घर की जिम्मेदारियां. उस का कहना है, "जब मैं सिनेमाहाल की अगली बेंचों पर बैठ कर फिल्में देखता था तो एक हिट फिल्म में एक जज को यह कहते हुए सुना, 'आबजेक्शन, सस्टेंड,' फिर उस ने कहा, 'आबजेक्शन ओवररूल्ड', तब मेरी समझ में नहीं आया कि उस के कहने का तात्पर्य क्या है. इसलिए जब मैं अभिनेता बना तो सोचा कि जो भाषा की कठिनाई मैं ने महसूस की, उसे मेरे दर्शक महसूस न करें. इसलिए मेरा सारा जोर अब बोलचाल की सरल भाषा पर ही होता है. यही वजह है कि मैं ने फिल्म 'अकेले हम अकेले तुम' में काम करते समय 'प्लंबर' की जगह 'नल ठीक करने वाला' संवाद ही पसंद किया."

आमिर की तरह यदि बाकी कलाकार भी हिंदी बोलने पर उतर आएं तो वह हमारी राष्ट्रभाषा के विकास के लिए भी उत्तम होगा.

* सितारों की धोखाधड़ी *

कभीकभी फिल्मी सितारों को भी धोखाधड़ी के मामले में अदालत का मुंह देखना पड़ता है. ग्वालियर की एक निचली अदालत को सन्नी देओल, कुलभूषण खरबंदा, डैनी, फरहा, दीना पाठक और 'यतीम' फिल्म के निर्माता विक्रमजीत सिंह तथा निर्देशक जे.पी. दत्ता को भारतीय दंड सहिता की धारा 420 के तहत जमानती वारंट जारी किया और उन से इस मामले में सफाई भी मांगी है कि जब वे 'यतीम' फिल्म की शूटिंग के सिलसिले में ग्वालियर के एक थ्री स्टार होटल में ठहरे थे तो उन्होंने वहां होटल वालों को पूरे बिल की अदायगी क्यों नहीं की? होटल का बिल 1 लाख 30 हजार 757 रुपए आया था, जिस में से निर्माता ने सिर्फ 45 हजार रुपए होटल वालों को दिए और बाकी पेमेंट का चेक थमा दिया. बाद में वह चेक बैंक से बिना कैश हुए लौट आया. नतीजा इन सभी फिल्मी हस्तियों के खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज करा दिया गया. अब देखना यह है कि बाकी रकम की अदायगी कौन करता है और कौन सफाई देने इस अदालत में हाजिर होता है. ●

गाने कैसेकैसे

अच्छे और अर्थपूर्ण शब्दों के अभाव के कारण मुंबइया सिनेमा में अब लोकगीत और लोकधुनों का जम कर इस्तेमाल किया जा रहा है. इस सिलसिले की अगली कड़ी है, फिल्म 'लाल बादशाह' का यह गाना, जिस के बोल हैं, 'ताला खोल दे परदेसी बालमा...' इस गीत को सपना अवस्थी, अमरीश पुरी और आदेश श्रीवास्तव ने गाया है.



संगीतकार आदेश श्रीवास्तव की 'धमाधम' शैली पूरी तरह से छाई हुई है, जिस के कारण गाना श्रोता को कर्णप्रिय लगता है. रिदम में उस ने काफी विविधता दी है. लेकिन अमरीश पुरी की आवाज कोई खास प्रभाव पैदा नहीं करती, यही हाल आदेश श्रीवास्तव की गायकी का है. गाने के शब्द अश्लील हैं, जिन्हें माया गोविंद ने लिखा है. कुल मिला कर अपनी लय और धमक वाली ताल के कारण गाना कर्णप्रिय है.

*

पौप गायिका अलीशा चिनाय एक लंबे अरसे के बाद पुनः हिंदी फिल्मों में लौटी है. उस ने हाल ही में संगीतकार राजेश रोशन द्वारा संगीतबद्ध फिल्म 'कीमत' में एक बहुत खूबसूरत गाना गया है. गाने के बोल हैं, 'दिल दिया, दिल लिया...' इस गाने में उस का साथ दिया है, सोनू निगम ने. गाने में कंपोजिंग की और मेलोडी की जितनी तारीफ की जाए, कम है. ऐसा राजेश रोशन के संगीत में ही संभव है. वह पश्चिमी और देशी संगीत का मिश्रण बड़ी खूबसूरती से प्रस्तुत करता है. इलेक्ट्रिक गिटार व ड्रम के साथ बीचबीच में तबले का प्रयोग लाजवाब है. कुल मिला कर गाना खूबसूरत है, एकदम अलीशा की ही तरह.

*

दिलीप कुमार की बहुचर्चित फिल्म 'किला' का एक गाना है, 'वाह भई, वाह, छोरी के नखरे, वाह भई, वाह.' इस गाने को उदित नारायण और पूर्णिमा ने गाया है. इस में केवल 'वाह, भई वाह' ही याद रहता है, बाकी पूरा गाना हवा हो जाता है. यह गाना दिलीप कुमार पर फिल्माया गया है. लेकिन उदित की आवाज दिलीप कुमार पर वैसी फिट नहीं हो पाई, जैसी रफी साहब की होती थी.

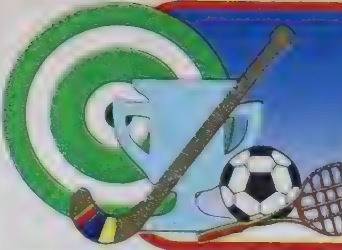
बहरहाल गाना आकर्षित तो करता है, लेकिन बहुत चलने वाला नहीं.

*

फिल्म 'डुप्लीकेट' का एक गाना है, 'ओओ डार्लिंग, हमतुम घुलमिल रहेंगे...' इसे अभिजीत और कविता कृष्णमूर्ति ने गाया है. गाने की खासियत यह है कि इस की कंपोजिंग किशोर कुमार के शुरुआती दिनों के गानों जैसी है. हेराफेरी के लिए कुख्यात संगीतकार अनु मलिक ने वाद्ययंत्र भी वैसे ही प्रयोग किए हैं. अभिजीत ने काबिलेतारीफ गाया है, बिलकुल किशोर कुमार के अंदाज में. कविता ने भी अपने को गीता दत्त का डुप्लीकेट साबित करने में कसर नहीं छोड़ी.

कुल मिला कर 'डुप्लीकेट' का यह गाना भी बेहतरीन 'डुप्लीकेट' बन गया है.

–आरती जैन ●



खेलों की खिलाड़ियों की

● जसदेव सिंह

खेल प्रशिक्षण के क्षेत्र में भी अब साफ लग रहा है कि हमें अपने पर विश्वास नहीं रहा, तभी तो विभिन्न खेल संघ विदेशी कोच आयात करने में लगे हैं. यों तो यह नई बात नहीं है, आजादी के बाद टेबिल टेनिस, फुटबाल आदि 2-4 खेलों के लिए अपने खिलाड़ियों को नई तकनीक और नई शैली सिखाने के लिए देश के संबंधित खेल संघों ने विदेशी कोच बुलवाए. यह अलग बात है कि उन विदेशी विशेषज्ञों की कोचिंग के बावजूद हमारे खिलाड़ी अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं में कुछ विशेष कर के नहीं दिखा सके. यों अपने देश में ही पूर्व चैंपियनों और अनुभवी खिलाड़ियों की कमी नहीं है, पर विदेशों से प्रशिक्षक बुला कर उन पर अच्छाखासा पैसा खर्च कर उन खेल संघों ने अपने सोच के मुताबिक भले ही अपना कद ऊंचा कर लिया हो, लेकिन लाभ के नाम पर कुछ नहीं मिला.

पिछले दिनों भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड ने भी आस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान बाबी सिंप्सन को देश की राष्ट्रीय टीम के लिए कोच नियुक्त करने की घोषणा की. सिंप्सन अनुभवी हैं, अच्छे खिलाड़ी रहे हैं, इस में किसी को संदेह नहीं, किंतु क्या उन के जोड़ का कोई खिलाड़ी भारत में उपलब्ध नहीं है? अजित वाडेकर, विश्वनाथ, मदन लाल, मोहिंदर अमरनाथ, बिशन सिंह बेदी, किरमानी आदि खिलाड़ियों ने एक नहीं, अनेक बार देश के क्रिकेट को अपने कारनामों से चमत्कृत किया है. इन के पास लंबा अनुभव है. किंतु विदेशी चकाचौंध के आगे स्वदेशी की बात कौन करे.

हम भले ही हर बात में स्वदेशी के नारे लगाएं, पर गुणगान विदेशी चीजों का ही करेंगे, यह शायद हम में से बहुतों की फितरत बन चुकी है. जिस देश ने कर्नल सी. के. नायडू, लाला अमरनाथ, मुशताक अली, वीनू मांकड, विजय हजारे जैसे क्रिकेट खिलाड़ी देश को दिए, आज क्या उसी देश में क्रिकेट सिखाने वाले अनुभवी खिलाड़ियों की कमी हो गई है और उस के लिए विदेशी कोच बुलाए जाएं, यह कैसी विडंबना है?

*

विदेशी चमक का प्रभाव भारतीय हाकी संघ पर भी पड़ा है. हम सुन तो कितने ही वर्षों से रहे थे कि देश के हाकी खिलाड़ियों को इस खेल की बारीकियां सिखाने के लिए किसी विदेशी खिलाड़ी को बुलाया जाना चाहिए. अब इस पर अमल भी किया जा रहा है. भारतीय हाकी संघ ने, विशेष रूप से पैनल्टी कार्नर से गोल करना सिखाने के लिए, विश्व के विख्यात पैनल्टी कार्नर विशेषज्ञ, नीदरलैंड के पूर्व खिलाड़ी फ्लोरिस बावलेंडर को बुलाने का निर्णय किया है.

यह तो सर्वविदित है कि पैनल्टी कार्नर को गोल में न बदल पाना भारतीय खिलाड़ियों की जबरदस्त कमजोरी है. वह जमाना तो अब बहुत पीछे चला गया, जब देश के पास प्रतिपाल सिंह या सुरजीत सिंह जैसे पैनल्टी कार्नर लगाने वाले दक्ष खिलाड़ी थे. भारतीय हाकी संघ की चिंता वाकई सही है. इसी वर्ष विश्व कप हाकी, एशियाई और राष्ट्रमंडल खेलों में हाकी में कुछ कर दिखाने और अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा प्राप्त करने के उद्देश्य को पूरा करने की दिशा में सही पैनल्टी कार्नर लगाना बहुत जरूरी होगा.

पिछले महीने भारत ने जो 4 टेस्ट पाकिस्तान में खेले, उन में मिले 34 पैनल्टी

कार्नरों में से हमारे खिलाड़ी केवल 2 को ही गोल में बदल सके. बावलेंडर पैनल्टी कार्नर लगाने में महारत रखते हैं. लेकिन यहां प्रश्न दक्षता या प्रवीणता का नहीं है, प्रश्न है, क्या बावलेंडर किसी जादुई करिश्मे से भारतीय खिलाड़ियों को पैनल्टी कार्नर विशेषज्ञ बना देंगे?

खेलों में दक्षता स्वयं की साधना और निष्ठा से प्राप्त होती है, लेकिन पैनल्टी कार्नर सफलतापूर्वक लगा पाने के लिए तो यह बहुत ही आवश्यक है. इस के लिए चाहिए, पूरी लगन और एकाग्रता के साथ अभ्यास. कोच तो तरीका सिखा सकता है और वह तरीका हमारे अपने कोच और पूर्व खिलाड़ी भलीभांति सिखा सकते हैं.

*

खुराक और पसंद का भोजन खिलाड़ी के मानस और उस की क्षमता को प्रभावित करता है. विदेशी खिलाड़ी अपने भोजन और पानी का विशेष ध्यान रखते हैं. अतीत में भी अनेक बार इंगलैंड और आस्ट्रेलिया के खिलाड़ी अपना पानी तक साथ लाते थे. अब जब से भारत में फिल्टर्ड पानी उपलब्ध होने लगा है, इन टीमों ने पानी साथ लाना बंद कर दिया है, परंतु भोजन के मामले में कुछ विदेशी खिलाड़ी अधिक ही परहेज करते हैं.

विदेशी टीमें बावजूद इस के कि भारत के अच्छी श्रेणी के तमाम होटलों में उन की पसंद का पश्चिमी ढंग का भोजन मिल जाता है, अपने साथ डब्बा बंद भोजन भी लाते हैं. इस में कोई बुराई भी नहीं है, क्योंकि जब अपने देश के भोजन का स्वाद याद आए तो खा लिया. लेकिन इस बार जो आस्ट्रेलियाई टीम भारत आई, उस के केवल एक खिलाड़ी शेनवार्न की पसंद का खाद्य पदार्थ, टीम के भारत पहुंच जाने के बाद विशेष रूप से मंगवाया गया.



शेनवार्न विश्व के माने हुए स्पिन गेंदबाजों में से हैं. यह अलग बात है कि चेन्नई में पहले ही टेस्ट मैच में भारतीय बल्लेबाजों उन की गेंदों की अच्छी धुनाई की और अपनी टीम को 179 रन से विजय दिलवा दी.

इसी पहले टेस्ट के 2-3 दिन पहले ही शेनवार्न को अपनी पसंद के भोजन की याद सताने लगी. भारतीय मसालेदार भोजन उसे रास नहीं आया. कुछ सादा खाने को तरस

हे शेनवार्न के लिए टेलीफोन खड़खड़ाए ाए और आस्ट्रेलिया से डब्बाबंद भुने हुए ीम के बीज और स्पाघेटी तुरंत भेजने की ांग की गई. बताया गया कि भारत पहुंचने कुछ दिन बाद ही शेनवार्न का वजन 15 कलोग्राम घट गया था.

शेनवार्न के भोजन की इस मांग को ी कर भारत के समाचारपत्रों में बड़ीबड़ी ुर्खियों के साथ समाचार छपे. आस्ट्रेलिया लगभग 2 हजार डब्बे स्पाघेटी और भुने ुए बीजों के मंगवाए गए. भोजन तो पसंद ा आ गया होगा, पर जिस तरह का जो दर्शन आस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों और ेनवार्न ने चेन्नई में पहले टेस्ट में किया, उस तो यही लगा कि पसंद की खाद्य ामग्री का तब तक तो कोई प्रभाव नहीं आ था.

मैं ने अपने देश के पहलवानों, थलीटों, हाकी और अन्य कई खेलों के खलाड़ियों को कई बार पसंद का भोजन न मल पाने के कारण भूखे रहते देखा है. इस का उन के खेल प्रदर्शन पर भी प्रभाव पड़ा. कई नगरों में अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं के दौरान वहां के भारतीय नागरिक अपने देश के खिलाड़ियों के लिए भोजन बना कर लाते हैं. इसीलिए जब भी हमारे खिलाड़ी अथवा एशियाई खेलों में हिस्सा लेने जाते हैं. उन की प्रमुख मांग यही रहती है कि जहां प्रतियोगिता हो रही है, वहां भारतीय भोजन की व्यवस्था की जानी चाहिए. यह मांग बहुत उचित है.

अनेक बार हमारे खिलाड़ी दलों के साथ रसोइए और भोजन सामग्री भी भेजी गई. जब भी ऐसा हुआ है, खिलाड़ियों का मनोबल ऊंचा रहा. मन से उन्होंने अच्छा प्रदर्शन करने का प्रयत्न किया. जब भारतीय भोजन नहीं मिला तो उस का विपरीत प्रभाव भी हुआ. खिलाड़ी को विदेश में भले ही अपनी जलवायु और वातावरण न मिले, पर अपने स्वाद का सही और सादा भोजन अवश्य मिल जाए, इसे प्रमुखता दी जानी चाहिए. ●

जीवन की मुसकान

इन दिनों मैं वीनागुड़ी में सेवारत था. वहां मंगलवार र शनिवार को हाट (बाजार) ाता था. हाट में खचाखच भीड़ ती थी.

एक दिन शनिवार को मैं नी पत्नी व 2 बच्चों के साथ ट में गया. हम लोग एक कपड़े दुकान पर जा कर कपड़ा ने लगे. कपड़े खरीद कर न चुकाने के पश्चात जब मुड़ देखा तो मेरी 5 वर्षीय बेटी ं नजर न आई. वह न जाने खेलतेखेलते बाहर भीड़ में खो गई थी.



हम दोनों ने अपनी बेटी को चारों तरफ देखा. उसे न पा कर मेरी पत्नी ने रोना शुरू कर दिया. मेरे भी होश गुम हो गए.

मुझे परेशान देख कर एक अधेड़ उम्र के बंगाली सज्जन ने पूछा, "आप किसे ढूंढ़ रहे हैं."

जब मैं ने उन्हें पूरी बात बताई तो वह बोले, "हरे रंग का फ्राक पहने एक लड़की को एक लड़का साइकिल पर बिठा कर सी.एम.पी. गेट की तरफ जा रहा था."

मैं ने तुरंत ही उस तरफ दौड़ लगाई तो देखा, गेट पर बैठी मेरी बेटी रोए जा रही है.

वह लड़का फौजी था, जो मेरी बेटी को अकेला देख कर सी.एम.पी. को सौंप गया था. यह दृश्य देख मेरी आंखों में आंसू आ गए.

उस फौजी व बंगाली सज्जन का मैं धन्यवाद तक न कर सका, जिन की वजह से मेरी खोई मुसकान मुझे वापस मिल गई थी.

–शिवचरन भारद्वाज

इस स्तंभ के लिए आप अपने, अपने मित्रों व संबंधियों के अनुभव भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें. सरिता, संपादकीय विभाग, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

माहुरी वैश्य, 24/5'4", गेहुआं रंग, आकर्षक, शाकाहारी, एम.बी.बी.एस., पिता रिटायर्ड राजपत्रित अधिकारी कन्या हेतु सजातीय डाक्टर, इंजीनियर, आफीसर, योग्य वर चाहिए. शीघ्र विवाह. कृपया फोन नं. सहित पूर्ण विवरण लिखें. वि.नं. 5442, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्लीवासी राजपूत, ठाकुर, बारहवीं क्लास पास, सुंदर, गोरी, 27/157 सें.मी. कन्यार्थ वर चाहिए. शीघ्र, साधारण विवाह. फोन: 4364747. वि.नं. 5473, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, हिंदू नाई (व्यवसाय से नहीं), 5'3", सुशील, गौरवर्ण, बी.एससी., एम.टी.ए., कानवेंट शिक्षित, कार्यरत, सुशिक्षित परिवार की कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. शीघ्र विवाह. पिता उद्योगपति. वि.नं. 5474, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी (कन्नौजिया), 24/162, एम.एस. (गाइना), द्वितीय वर्ष, रंग साफ, आकर्षक कन्या हेतु एम.एस./एम.डी./आई.ए.एस., सुयोग्य, सजातीय वर वांछित. पूर्ण बायोडाटा एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि सहित लिखें. शीघ्र विवाह. वि.नं. 5475, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी (क्षत्रिय), एम.ए., ड्राइंग, पेंटिंग, 23, 155, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, सुशील, पिता एक्जीक्यूटिव इंजीनियर हेतु सेवारत, क्लास-2 व्यवसायी, सजातीय वर. वि.नं. 5476, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 24/162, गोरा रंग, बी.ए., गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सजातीय योग्य वर. शीघ्र विवाह, विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. वि.नं. 5477, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई (हिंदू), 24/157, एम.एससी. (गणित) प्रथम श्रेणी, गोरी, सुंदर, स्लिम, आकर्षक एवं पी.सी.एस./आई.ए.एस. परीक्षा हेतु अध्ययनरत कन्यार्थ आर्मी आफीसर, प्रशासनिक अधिकारी, इंजीनियर, प्रोफेसर, डाक्टर वर चाहिए. वि.नं. 5478, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 23, 5'2", सुंदर, गोरी, एम.ए. शोधरत (इतिहास) नेट उत्तीर्ण, शिक्षित परिवारीय कन्यार्थ सजातीय, स्मार्ट, उच्च सेवारत वर. संपूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 5479, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 27/5'2", एम.बी.बी.एस. डाक्टर, सुंदर, गोरी, कार्यरत कन्या हेतु सजातीय, डाक्टर, इंजीनियर, अधिकारी वर चाहिए. वि.नं. 5480, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 26/150, गोरी, स्लिम, एम.ए., बी.एड., गृहकार्यदक्ष, स्मार्ट, संभ्रांत परिवार की कन्या (पिता राजपत्रित अधिकारी) हेतु वर चाहिए. अधिकारी, उच्च सेवावर्ग कार्यरत को वरीयता. वि.नं. 5481, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, 26/161, एम.फिल. (फिजिक्स) रुड़की, गेहुआं रंग, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ स्वजातीय, इंजीनियर, अधिकारी वर चाहिए. पिता पी.सी.एस. (प्र.) यू.पी., भाई इंजीनियर. वि.नं. 5482, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बरनवाल (वैश्य), 26/160, स्मार्ट, प्रोबेशनरी आफीसर स्टेट बैंक समूह में कार्यरत कन्यार्थ उपयुक्त सुंदर, प्रोफेशनल वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 5483, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 23/157, गोरी, सुंदर, गृहविज्ञान आनर्स, कंप्यूटर अध्ययनरत हेतु इंजीनियर, डाक्टर, सी.ए. वर. उपजाति मान्य. वि.नं. 5485, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण, कौशिक गोत्रीय, मांगलिक, आदि नाड़ी, 23/152, गणित, स्नातकोत्तर, स्नातकोत्तर डिप्लोमा, आई.आर.पी.एम. तथा बी.एड. अध्ययनरत कन्या हेतु सुशिक्षित व्यावसायिक ज्ञान प्राप्त ब्राह्मण के प्रस्ताव आमंत्रित हैं. वि.नं. 5486, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौहान क्षत्रिय (वत्स), 23, 5'4", सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, नीट कंप्यूटर प्रशिक्षित, बी.ए. अध्ययनरत, कलकत्ता निवासिनी कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, लेक्चरर, अधिकारी, सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 5492, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी, 24, 5'3", बंगलौर से बी.डी.एस, सुंदर, सुशील, सभ्य, गृहकार्य में दक्ष, संपन्न परिवार की कन्या हेतु एम.बी.बी.एस. वर चाहिए. पिता जमींदार, माता स्कूल प्रिंसिपल. वि.नं. 5493, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 26, 5'2", रंग साफ, बी.ए., डिप्लोमा इन कंप्यूटर और टीचिंग कन्या हेतु उपयुक्त वर चाहिए. पिता हाईकोर्ट एडवोकेट. वि.नं. 5495, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चमार, 22, 5'4", बी.काम., रंग गेहुआं, गृहकार्यदक्ष हेतु सरकारी/अर्ध सरकारी/प्रतिष्ठित कंपनी कार्यरत वर. वि.नं. 5496, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी ब्राह्मण, 32, 5'1", एम.ए. बी.एड., डी.सी.एड., गौरवर्ण कन्या हेतु वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 5543, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 21, 5'2", एम.ए., सुंदर, सुशील कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. पिता क्लास-1 अधिकारी. वि. नं. 5559, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कनौजिया (धोबी), 27, 5'2", एम.ए. (फाइन आर्ट), बी.एड., सुंदर, सुशील कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. भाई प्रथम श्रेणी अधिकारी, सरकारी कर्मचारी को वरीयता. वि.नं. 5560, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, राजपूत, एम.ए. कन्यार्थ निर्व्यसनी, आदर्श संस्कारित, सजातीय वर चाहिए. शीघ्र व उत्तम विवाह. वि.नं. 5561, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पाटीदार, 22, 5'3'', एम.एससी., अध्यापिका, धावी, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, मध्यप्रदेशीय, संपन्न, तिष्ठित परिवार कन्या हेतु सजातीय, उपजातीय सुयोग्य र चाहिए. वि.नं. 5562, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26/153/एम.काम./बीपीईएड, कंप्यूटर डिप्लोमा, वारत, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, सफेद दाग हेतु दहेज हित वर चाहिए. वि.नं. 5563, सरिता, नई ल्ली-110055.

30, 160, एम.फिल., खूबसूरत कन्या हेतु वर ाहिए. पिता आफीसर. इंजीनियर, बैंक आफीसर थमिकता. विधुर, तलाकशुदा स्वीकार्य. दहेज विरोधी, तिबंधन नहीं. वि.नं. 5564, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 25/5'2'' तथा 23/5'2'', एम.ए. फाइनल, री, सुंदर लड़कियों के लिए सजातीय, सुंदर, सुशिक्षित, वारत वर चाहिए. वि.नं. 5565, सरिता, नई ल्ली-110055.

विश्वकर्मा लोहार, 21/5'2'', स्नातक, स्टेनोग्राफी, री कन्यार्थ वर चाहिए. वि.नं. 5566, सरिता, नई ल्ली-110055.

कुर्मी, 28/158, एम.ए., एम.एड., पत्रकारिता में जी. डिप्लोमा, सुंदर, स्मार्ट कन्या हेतु संभ्रांत परिवारीय ोग्य सरकारी सेवारत/लेक्चरर/बैंक सेवारत वर चाहिए. च शिक्षित, व्यवसायी भी स्वीकार. शीघ्र विवाह, संपूर्ण योडाटा सहित लिखें. वि.नं. 5567, सरिता, नई ल्ली-110055.

कूर्म क्षत्रिय, 26, 5'4'', एम.ए., बी.एड., डिप्लोमा यूटर सिस्टम एवं मैनेजमेंट, गौरवर्ण, सुंदर कन्या हेतु ारत वर चाहिए. वि.नं. 5568, सरिता, नई ल्ली-110055.

जाटव, 29/157, स्नातक पीजीडीसी, सुंदर, कार्यदक्ष कन्या हेतु सेवारत सजातीय वर चाहिए. शीघ्र खें. वि.नं. 5569, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहारी कुर्मी, 27, 5'5'', कानवेंटेड, एम.ए. गोल) कन्या हेतु सजातीय, प्रशासनिक अधिकारी नियर, प्रवक्ता वर चाहिए. वि.नं. 5570, सरिता, नई ली-110055.

मारवाड़ी, 25/5'3'', बी.ए., सुंदर, गेहुआं रंग, नू, गृहकार्यदक्ष, बिहारवासी हेतु आत्मनिर्भर, स्वयं ायक वर. जातिबंधन नहीं. दहेज रहित साधारण विवाह. ं. 5571, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तरप्रदेशीय हिंदीभाषी कन्या, उम्र 26 वर्ष, 155 . लंबी, रंग गेहुआं, बी.काम., पी.जी. डिप्लोमा कंप्यूटर, प, सिलाई और आर्ट कला में प्रवीण, अध्यापन रत, विधवा (संतान नहीं है) विश्वकर्मा ब्राह्मण ई) हेतु खानदानी व्यवसायरत या नौकरी वाला सुयोग्य चाहिए. कन्या अस्थायी रूप से आंध्र प्रदेश में निवास ी है. वि.नं. 5572, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्यदेशीय वैश्य, 25, 5'3'', एम.ए., सुंदर, र्ण, गृहकार्यदक्ष हेतु वर. सभी वैश्य मान्य. वि.नं. 3, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कहार बाथम, 28, कामर्स ग्रेजुएट, अहमदाबाद स्थित सर्विस, सुंदर, गोरी, आकर्षक पारिवारिक कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 5574, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चंद्रवंशी (कहार), बिहारी, 5'3'', केंद्रीय सेवारत, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ, 36-42 वर्षीय वर चाहिए. शीघ्र विवाह. वि.नं. 5575, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा (कोइरी), 25, 5'2'', एम.एससी., बी.एड., सुंदर, गेहुआं रंग, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 5576, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल (मित्तल), 26½, 5'3'', एम.एससी., एम.सी.ए., दिल्ली कार्यरत, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 5577, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप कहार, 2?½ वर्षीया, 5'1'', इलेक्ट्रानिक्स इंजीनियरिंग द्वितीय वर्ष डिप्लोमा में अध्ययनरत हेतु इंजीनियर, सरकारी सेवारत वर चाहिए. सजातीय को प्राथमिकता. वि.नं. 5578, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तरप्रदेशीय मैथिल ब्राह्मण कन्या 23 वर्षीया, 157 सें.मी., 48 कि.ग्रा., होम साइंस ग्रेजुएट, अंगरेजी में पोस्ट ग्रेजुएशन हेतु अध्ययनरत, पिता प्रथम श्रेणी राजपत्रित अधिकारी के लिए डाक्टर, इंजीनियर, व्यवसायी, बिजनैस एक्जीक्यूटिव से प्रस्ताव आमंत्रित. वि.नं. 5579, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 23, 160, एम.ए., अत्यंत सुंदर, मेधावी कन्यार्थ सुव्यवस्थित वर चाहिए. वि.नं. 5580, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, मंगली, 26/5'3'', विज्ञान स्नातक, गेहुआं रंग, गृहकार्यदक्ष, आकर्षक, सौम्य कन्या हेतु सेवारत/सुव्यवस्थित, सजातीय वर चाहिए. पिता सेवानिवृत्त वरिष्ठ अधिकारी. वि.नं. 5581, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 23, 5'1'', स्नातक, कंप्यूटर कोर्स, सहायक (अपोलो हास्पिटल), गौरवर्ण, सुंदर कन्या हेतु वर. जातिबंधन मुक्त, दिल्लीवासी को प्राथमिकता. वि.नं. 5582, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोरी जुलाहा, 26, 155, 8,000/-, स्नातकोत्तर, केंद्रीय सेवारत दिल्ली हेतु सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 5583, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बाल्मिकी पंजाबी, 23, 5'3'', बी.ए., बी.एड., एम.एड. अध्ययनरत, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, स्लिम कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 5584, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अकेली, स्वयं निर्णायक, कार्यरत, 40/8,000/-, को अधिकतम 44 तक योग्य स्थानांतरण संभव वर. वि. नं. 5585, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण कन्या, 24, 5'3'', शांडिल्य गोत्र, स्नातक (प्रतिष्ठा), गोरा रंग, गृहकार्यों में दक्ष के लिए सुयोग्य, व्यवसायी अथवा सुनियोजित ब्राह्मण वर चाहिए. उपजाति बंधन नहीं. प्रथम बार में ही बायोडाटा भेजकर शीघ्र

संपर्क करें. वि.नं. 5586, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शेख सिद्दीकी, 28/5'1"/4,000/-, गोरी, एम.ए., कंप्यूटर डिप्लोमा, सेवारत (स्थानीय निकाय), टीचर कन्या हेतु सुयोग्य वर. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 5587, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मांगलिक, 22, 5'4", यादव (कोसल), एम.ए. (प्रथम श्रेणी), गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, सुसंस्कृत कन्यार्थ इंजीनियर, लेक्चरर, राजपत्रित अधिकारी, योग्य गैर लालची वर चाहिए. सजातीय को वरीयता, माता कालिज प्रिंसिपल, पिता रिटायर्ड राजपत्रित अधिकारी. वि.नं. 5588, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सनाढ्य ब्राह्मण, 26, 5'2", हाथरस (उ.प्र.) निवासी, सुंदर, बी.ए., बी.एड. हेतु सेवारत सुयोग्य वर. वि.नं. 5589, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया, 22, 60", बी.काम., कंप्यूटर में डिप्लोमा, कंप्यूटर कंपनी में कार्यरत, सुंदर, सुशील, सौम्य, स्लिम, गौरवर्ण कन्या हेतु सुयोग्य शिक्षित वर चाहिए. वि.नं. 5590, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई हिंदू, 25, 165 बी.आर्च. (फाइनल), पिता उच्च पदस्थ अभियंता, बिहारवासी कन्यार्थ. (अधिकारी को वरीयता) सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 5591, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 23, 5'3", सुंदर, साफ रंग, बी.ए. (राजनीतिशास्त्र), कंप्यूटर डिप्लोमा, ब्यूटिशियन कोर्स, मेघालय स्थित प्रतिष्ठित व्यापारी परिवारीय कन्या हेतु वर चाहिए. वि.नं. 5592, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उच्च अधिकारी परिवारीय, 26/162, सुंदर, स्मार्ट, कामर्शियल आर्ट ग्रेजुएट, सेवारत, शिशु जन्म हेतु अनिच्छुक, कन्या हेतु अविवाहित, स्मार्ट, अच्छी आय वाला वर चाहिए. वि.नं. 5593, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप राजपूत (कहार), 24, 5½, एम.ए., सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ वर चाहिए. सरकारी सेवारत व दिल्लीवासी को वरीयता. वि.नं. 5594, सरिता, नई दिल्ली-110055.

खटीक, 24, 5'1", एम.ए. बी.एड., एम.ए. अंगरेजी, बी.ए. बी.एड. अंगरेजी माध्यम, सुंदर कन्या हेतु सजातीय योग्य वर चाहिए. वि.नं. 5595, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34 वर्षीया, 160 सें.मी., 5,500/-, एम.ए., केंद्रीय कर्मचारी, धोबी, गौरवर्ण कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. सजातीय को प्राथमिकता, अंतर्जातीय भी स्वीकार्य. वि. नं. 5596, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया, 21/5'2", एम.ए. भूगोल, रंग साफ, प्रतिष्ठित परिवारीय, उ.प्र. निवासी, शाकाहारी कन्या हेतु सजातीय, इंजीनियर, उच्च सेवारत अथवा उच्च व्यवसायी वर. शीघ्र व अच्छी शादी. वि.नं. 5597, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय (कटियार), 20, 157 सें.मी., सुंदर, गोरी, धार्मिक, गृहकार्यदक्ष, प्रतिष्ठित परिवारीय, फैशन डिजाइन डिप्लोमा प्राप्त बी.ए. कन्या हेतु वर की आवश्यकता/पिता राजपत्रित अधिकारी/विज्ञापन मात्र उत्तम एवं सुयोग्य वर चयन हेतु. वि.नं. 5598, सरिता, नई दिल्ली-110055.

क्षत्रिय, सूर्यवंशी, 23/5'2", एम.ए., गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य सजातीय वर चाहिए. वि. नं. 5599, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 20½, 162, सुंदर, गोरी कन्या हेतु प्रशासनिक/बैंक अधिकारी, डाक्टर, इंजीनियर, कालिज लेक्चरर वर चाहिए. भाई डाक्टर, पिता सेल टैक्स अधिकारी. वि.नं. 5600, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोली, 24/150, 7,500/-, बी.ए., सरकारी नौकरी (स्टाफ नर्स), रंग साफ, सुंदर, गृहकार्य हेतु सजातीय (दिल्ली निवासी) वर चाहिए. वि.नं. 5601, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

रायकवार (धीवर), 29/156/9,000/-, विधि स्नातक, रेलवे सेवार्थ सजातीय वधू चाहिए. वि.नं. 5523, सरिता, नई दिल्ली-110055.

70 वर्षीय, खत्री, विधुर (देखने में कम उम्र), अपना अच्छा कपड़ा कारोबार हेतु सुंदर जीवनसंगिनी चाहिए. कोई मांग नहीं. उम्र का बंधन नहीं. वि.नं. 5524, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा (लोहार), 5'11", बी.काम., व्यवसायी, उच्च मध्यम वर्गीय, मासिक आय पांच अंकों में हेतु खूबसूरत, गोरी, लंबी व शिक्षित वधू चाहिए. जाति व दहेजबंधन नहीं. वि.नं. 5525, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाट, 24, 165, 8,000/-, निजी व्यवसाय, मकान मुंबई, पूना, अहमदाबाद, ग्रेजुएट नवयुवक हेतु वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 5526, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुर्जर, 24/5'8", 4,000/-, हाईस्कूल, निजी कृषि फार्म, मकान मथुरा हेतु सुंदर वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 5527, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, ब्राह्मण, 37, 165, एम.बी.बी.एस., डाक्टर, सरकारी नौकरी तथा आवास, कार हेतु सुंदर, मेडिको, नान-मेडिको वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. वि. नं. 5528, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34, 5'8", मैट्रिक, बिजनेसमैन, 7,000/- मासिक, सेक्सुअल कमजोर, प्रतिष्ठित परिवारीय युवक हेतु आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, घरेलू, सुशील, जीवनसाथी चाहिए. कोई बंधन नहीं. वि.नं. 5529, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 27, 170 सें.मी., बी.काम., आकर्षक, गोरा, शाकाहारी, उत्तम व्यवसायी, संपन्न, प्रतिष्ठित परिवारीय, एकलौता पुत्र हेतु सुशिक्षित, सुंदर, गोरी, संभ्रांत परिवारीय, सजातीय वधू चाहिए. दिल्लीवासी को प्राथमिकता. पूर्ण विवरण भेजें. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ

तु. वि.नं. 5530, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, बी.ई., 30/165, प्रतिष्ठित सरकारी कंपनी अधिकारी हेतु सुंदर, सुशील वधू चाहिए. परिवार में न्य डाक्टर, इंजीनियर. वि.नं. 5531, सरिता, नई ल्ली-110055.

यादव, कानवेंटेड, एम.बी.ए., 32, 5'9", ,000/-, मुंबई मल्टीनेशनल कंपनी में कार्यरत हेतु ानवेंटेड, एम.बी.ए. इंजीनियर, डाक्टर, सी.ए., सुंदर, ोरी वधू चाहिए. वि.नं. 5532, सरिता, नई ल्ली-110055.

जायसवाल, 55, विधुर, सरकारी इंजीनियर हेतु स्थ, शिक्षित, निसंतान, विधवा, परित्यक्ता, स्वयं र्णायक वधू. उपजाति मान्य. वि.नं. 5533, सरिता, नई ल्ली-110055.

मध्येशिया वैश्य, 26, 5'6", 8,000/-, गोरा, कर्षक, कार्यरत इंजीनियर हेतु सुयोग्य, सुंदर, वधू हिए. वि.नं. 5606, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि, आई.इ.एस., 29/166, पुत्र हेतु समकक्ष, च्च शिक्षित, गोरी, सुंदर, स्लिम, स्तरीय पारिवारिक न्या. बायोडाटा भेजें. वि.नं. 5607, सरिता, नई ल्ली-110055.

अहमदाबाद स्थित, 33 वर्षीय युवक हेतु मित्रवत वनसंगिनी. अकेली, सुंदर, अनाथ, उन्मुक्त विचारों ली, यतीम, संतानोत्पत्ति असमर्थ स्वीकार्य, बेसहारा, स में उत्सुक, गरीब, शोषित, फ्रीमाइंड लड़कियां स्वयं खें. जाति, धर्मबंधन नहीं. वि.नं. 5608, सरिता, नई ल्ली-110055.

आत्मनिर्भर (दहेज रहित), 28½, 166, 000/-, कार्यरत विज्ञान स्नातक, टेक्नीकल डिप्लोमा न्डर हेतु बिना दहेज वधू चाहिए. शीघ्र साधारण विवाह, तिबंधन कुछ नहीं, तलाकशुदा/विधवा स्वीकार, र्टमैरिज को प्राथमिकता. वि.नं. 5609, सरिता, नई ली-110055.

कुर्मी, 27/5'7", एम.ए., एलएल.बी., एडवोकेट, ी पी.सी.ओ., सुंदर, स्मार्ट, संपन्न परिवारीय, बरेली ासी युवक हेतु अतिसुंदर, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष वधू हिए. वि.नं. 5610, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा (मौर्य), 28½, 180, एम.बी.ए. (अंतिम), गोरा, सुंदर हेतु गोरी, शिक्षित, लंबी वधू. पिता ुख्य अभियंता, पब्लिक सेक्टर, 40 एकड़ सिंचित . वि.नं. 5611, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अवकाश प्राप्त अधिकारी, राजपूत, अविवाहित, 62 वर्षीय हेतु जीवनसाथी चाहिए. निजी मकान, 6,000/-, विधवा, परित्यक्ता लिखें. वि.नं. 5612, ता, नई दिल्ली-110055.

28/155/3,000/-, 12वीं, एकलौता, निजी ास हेतु सुंदर, सुशील, सेवारत, गृहकार्यदक्ष कन्या ए. वि.नं. 5613, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी, 24, 165, 6,000/-, 12वीं, कंप्यूटर , सरकारी प्रतिष्ठान में कार्यरत, सुनने में असमर्थ, स्मार्ट, पिता उच्च अधिकारी, निजी मकान, आंशिक विकलांग लड़की स्वीकार्य. वि.नं. 5614, सरिता, नई दिल्ली-110055.

50+ वर्षीय, विधुर, प्रवीण, वास्तुविद स्वयं का दक्षिण दिल्ली में आलीशान मकान व कार्यालय, संयुक्त इमारत (विदेश) में कार्यालय हेतु कला प्रेमी व प्रेरित करने वाली जीवनसंगिनी चाहिए. वि.नं. 5615, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35 वर्षीय, 165, स्वनिर्मित व्यक्तित्व, कार्यक्षेत्र गांव, ऐसी लड़की जो धर्मजाति से ऊपर सिर्फ मानवीय विचार रखती हो, जो समाज में अपने मुख्य साथी के साथ मिलकर कुछ अलग करना चाहती हो. वि.नं. 5616, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 28, 169, एम.एससी., सरकारी सेवारत अधिकारी हेतु मंगली, सजातीय कन्या चाहिए. शीघ्र विवाह. वि.नं. 5617, सरिता, नई दिल्ली-110055.

42, ब्राह्मण, दिल्लीवासी, तलाक प्रक्रियारत, एकाकी, अभियंतार्थ, विपदाग्रस्त, बेसहारा, परित्यक्ता, बांझ, विधवा किंतु आकर्षक जीवनसंगिनी. वि.नं. 5618, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैस्वाल, 30, 5'7", पोस्ट ग्रेजुएट, स्वव्यवसाय, मंगला युवकार्थ मंगली, सुशिक्षित वधू. वि.नं. 5619, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्यदेशीय वैश्य, 28, 170, 15,000/-, इलेक्ट्रानिक्स, इंजीनियर युवक हेतु अति सुंदर, सुशिक्षित वधू. सभी वैश्य मान्य. वि.नं. 5620, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पासवान (दुसाध), 5'6", 32, (होमियो चिकित्सा पदाधिकारी), बिहार सरकार (राजपत्रित) हेतु सुंदर वधू चाहिए. टेक्नीकल एवं मेडिको को प्राथमिकता. वि.नं. 5621, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 26½ वर्षीय, 5'7", गेहुआं रंग, आकर्षक, बी.ई. मैकेनिकल स्वयं की फैक्टरी में कार्यरत हेतु सुंदर, सुशिक्षित, संभ्रांत परिवारीय कन्या चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 5622, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 30/5'7", बी.एससी. (गणित), बी.एड., पी.जी.डी.सी.एस., इंटरमीडिएट शिक्षक, स्वयं का स्नातक स्तरीय कोचिंग, आय पांच अंकीय हेतु सुशिक्षित, सुंदर वधू चाहिए. वि.नं. 5623, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी (महतो), बिहार, 28, 5'6", एम.बी.बी.एस., मेडिकल आफीसर, स्टील आथोरिटी आफ इंडिया में सेवारत हेतु गोरी, आकर्षक, शिक्षित वधू चाहिए. मेडिको/इंजीनियर को प्राथमिकता. शीघ्र विवाह. लिखें : वि.नं. 5624, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, लाखों की प्रापर्टी मालिक, बिजनेसमैन हेतु जीवनसाथी दहेज, जातिबंधन नहीं. बेसहारा, गरीब कुंआरी, तलाकशुदा, विधवा लड़कियां भी लिखें. वि.नं. 5625, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रजापति, 30, 5'7'', 6,000/-, मध्य रेलवे इंजीनियर हेतु आकर्षक, सुशिक्षित वधू चाहिए. शीघ्र साधारण विवाह. वि.नं. 5626, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित परिवारीय, कुर्मी, सुंदर, एकलौते लड़के, 5,8.5''/26½/1,40,000/- प्रतिमाह, विदेशी शिपिंग कंपनी कार्यरत हेतु सुंदर, सुयोग्य कन्या चाहिए. वि.नं. 5627, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल (वैश्य), 28, 5'8½'', स्नातक, सुंदर, स्मार्ट, महत्त्वाकांक्षी, ज्ञानी, 'एकपीस' मध्य, मध्यम श्रेणी, आय 10,000+ (पीसीओ द्वारा) फिल्म धारावाहिक निर्माण में रुचि योग्यता, साधारण किराए का घर (हावड़ावासी, कलकत्ता), लेखक को सुंदर, स्लिम, महत्त्वाकांक्षी, ज्ञानवती, 'देवी' की अनिवार्यता दहेज नहीं पर 'ज्ञानी' करोड़पति ही संपर्क साधे, जायसवाल को प्राथमिकता, अंततः सभी हिंदू स्वीकार्य. वि.नं. 5628, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, बिहारी, 27/172, 6,000/-, शासकीय शिक्षक (गणित), गौरवर्ण, सुंदर युवक हेतु सजातीय योग्य वधू चाहिए. वि.नं. 5629, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू (नाई), 25/165/3,500/-, सुंदर, स्वस्थ, सरकारी सेवारत लिपिक हेतु सुंदर, गोरी, सुशिक्षित, उत्तरप्रदेशीय वधू चाहिए. कानपुर व आसपास को प्राथमिकता. वि.नं. 5630, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28/160, कुर्मी (कटियार), आई.ए.एस. (एलाइड), कस्टम व सेंट्रल एक्साइज अधिकारी हेतु सुंदर, गोरी, संभ्रांत परिवार की कन्या चाहिए. वि.नं. 5631, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोरी, 26/160, बी.ए., रंग गेहुआं, स्वयं का सिविल कंसट्रक्शन का ठेकेदारी का व्यवसाय, भाई एनएफएल में असिस्टेंट मैनेजर, मूलतः उत्तरप्रदेशीय निवासी हेतु सुंदर वधू चाहिए. वि.नं. 5632, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य, बरणवाल, 27/5'7'', ग्रेजुएट, स्मार्ट, होलसेल दवा दुकान, अच्छी आय हेतु शिक्षित, गृहकार्य में दक्ष वधू चाहिए. उपजाति बंधन नहीं. संभ्रांत परिवार को प्राथमिकता. वि.नं. 5633, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27/170/56/10,000/-, (दुकान), स्नातक, निर्व्यसनी, दिल्लीवासी अग्रवाल हेतु सुयोग्य कन्या. बंधन नहीं. वि.नं. 5634, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रौनियार वैश्य, 34+/164, बी.टेक., वायुसेनारत हेतु सजातीय, 25+ स्लिम वधू चाहिए. गुप्ता: 06454-22717. वि.नं. 5635, सरिता, नई दिल्ली-110055.

लोधी राजपूत, 30/5'6''/12,000/-, इंजीनियर हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 5636, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मौर्य कुशवाहा, 24, 170, गोरा, एम.बी.बी.एस. हेतु एम.बी.बी.एस. अध्ययनरत संपूर्ण विवरण सहित संपर्क करें. वि.नं. 5637, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, पूर्वी पांचाल (लौहार), 27/5'3'', शास. हायर सेकंडरी में व्याख्याता, राजपत्रित मध्यप्रदेशवासी युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, गृहकार्य में दक्ष, संभ्रांत, सजातीय कन्या चाहिए. बायोडाटा सहित लिखें. वि.नं. 5638, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दृष्टिहीन, 28, 5'10'', 10,000/-, सरकारी कालिज प्राध्यापक, तीन स्वर्ण पदक विजेता, भारत सरकार की राष्ट्रीय सांस्कृतिक छात्रवृत्ति विजेता, गौरवर्ण, अरोड़ा युवक हेतु सुशिक्षित, सुंदर, संवेदनशील जीवनसाथी. दहेज/जातिबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. वि.नं. 5639, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शेख सिद्दीकी, 30/5'7''/8,000/-, सेवारत (रेलवे) जूनियर इंजीनियर हेतु सुशिक्षित, प्रतिष्ठित परिवारीय वधू चाहिए. वि.नं. 5640, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शर्मा, 29/5'10''/रु. 5,000/-, एम.ए., रेलवे क्लर्क, तलाकशुदा, निसंतान, मेरठ निवासी युवक हेतु अविवाहित, सुशील, घरेलू, सजातीय, सुयोग्य वधू चाहिए. वि.नं. 5641, सरिता, नई दिल्ली-110055.

44, अविवाहित, भट्ट ब्राह्मण, पश्चिमी उत्तरप्रदेश के महाविद्यालय में प्रवक्ता हेतु ब्राह्मण वधू चाहिए. कश्मीरी ब्राह्मण भी विचारणीय. वि.नं. 5642, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी, 30, 180, एम.एस., कंप्यूटर इंजीनियर, अमेरिका में अंतर्राष्ट्रीय कंपनी में कार्यरत, सुशिक्षित, प्रतिष्ठित परिवार हेतु अपेक्षित वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लड़का मार्चअप्रैल में भारत आएगा. वि.नं. 5643, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, कात्यायन गोत्र, 31, 175, गौरवर्ण, आकर्षक, मिलनसार, व्यक्तित्व संपन्न, सीनियर लेक्चरर हेतु सुंदर, सजातीय, स्नातक वधू चाहिए. सविवरण संपर्क करें. वि.नं. 5644, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी, 30/5'9'', 15,000/-, एम.बी.बी.एस., मेडिकल आफीसर, एम.सी.डी., दिल्ली, स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा में अच्छे रैंक के लिए अध्ययनरत युवक हेतु मेडिको/प्रोफेशनल कन्या चाहिए. वि.नं. 5645, सरिता, नई दिल्ली-110055.

5'8'', 28, मध्यम वर्ग, एम.बी.ए., सुप्रसिद्ध कंपनी में प्रबंधक (पटना) के लिए सुंदर और सुशील वधू चाहिए. जाति, दहेज, कोई बंधन नहीं. वि.नं. 5646, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संपन्न, 46 वर्षीय, परित्यक्त को शिक्षित महिला मित्र/सहभागिनी चाहिए. वि.नं. 5647, सरिता, नई दिल्ली-110055.

महेश्वरी, राजकीय सेवारत, एम.ए., एम.फिल., 42, 5'6'', आय पांच अंकों में, निजी बंगले, वाणिज्य संस्थान, दृष्टि दोष स्थायी रोशनी से स्वयं कार्य सक्षमता, निसंतान, स्वावलंबन सुविधा संपन्न विधुर हेतु विधवा,

ताकशुदा स्वीकार्य. वि.नं. 5648, सरिता, नई ल्ली-110055.

अग्रवाल विधुर, 55, 162, 57 किलो., स्वस्थ, त, ग्रेजुएट, धनवान पुत्री एवं पुत्र शादीशुदा, बंगला दि उच्च घराने से संबंधित सारी जिम्मेदारियों से मुक्त शिक्षित, सुंदर, स्वस्थ, उम्र 40 के ऊपर की वनसंगिनी चाहिए. पूर्ण जानकारी सहित लिखें. वि.नं. 49, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, 30/170, एम.ए., डी.पी.एम., एम.एम., हिमाचल में सेब बागवानी एवं निजी निर्यात पार में सुशिक्षित, सुंदर, सुडौल, आकर्षक, बुंदेलखंडी क के लिए एक अच्छे पारिवारिक स्तर वाली सुयोग्य रूप वधू चाहिए. पिता यूनीवर्सिटी प्रोफेसर, छोटा वा फौजी आफीसर, भाभी एम.एससी. बा., पीएच.डी. य लेख निवेदित. सविवरण, पत्र व्यवहार करें. वि.नं. 50, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 27, 5'11", बी.काम., निजी व्यवसाय, कर्षक, सुंदर, एकलौते पुत्र हेतु सजातीय, सुशिक्षित, र, लंबी, घरेलू कार्यों में निपुण कन्या चाहिए. दहेज न नहीं. वि.नं. 5651, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजकीय सेवामुक्त, पेंशनभोगी 4,000/-, स्वस्थ, वर्षीय विधुर, निजी आवास को सवर्ण, बेसहारा, निष्ठ, शिक्षित, स्वस्थ, 40 वर्षीय, विधवा, तलाकशुदा, नसाथी की आवश्यकता है. इच्छुक पूर्ण विवरण खें. वि.नं. 5652, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अविवाहित, 37/170 सें.मी., 5,000/-, मैट्रिक, कारी नौकरी, सेक्सुअल कमजोरी (उत्तेजना नहीं) हेतु बंधन नहीं. विवरण हिंदी में लिखें. वि.नं. 5653, ता, नई दिल्ली-110055.

लोधी, 26/170, इंजीनियर, प्रथम श्रेणी रेलवे कारी हेतु सुंदर, सुशिक्षित, संभ्रांत परिवारीय वधू ए. वि.नं. 5654, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शर्मा, कश्यप, 31, 165, 12,000/-, दुबई में रत, सांवला युवक हेतु वधू. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 5, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 27, 6', सुशिक्षित, व्यवसायरत और दानी युवक के लिए एक सुंदर, सुशिक्षित, सुसंस्कृत गृहकार्य कुशल, 22/23 वर्षीय, 5'5", लंबी कन्या ए. आत्मनिर्भर युवक की पैतृक संपत्ति आसाम तथा राजस्थान में भी है. गुणवती कन्या के लिए कोई प्रतिबंध नहीं. वि.नं. 5656, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, 29/165, एम.काम., व्यवसाय, धार्मिक हेतु अविवाहित/विधवा/तलाकशुदा/आंशिक कमी/अधिक उम्र. वि.नं. 5657, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 24/180, बी.डी.एस. डाक्टर युवक हेतु मेडिको/बी.डी.एस. वधू चाहिए. अपना क्लिनिक, भाई डाक्टर, पिता सेल टैक्स अधिकारी. वि.नं. 5658, सरिता, नई दिल्ली-110055.

45, आंशिक, विकलांग, रेलवे अधीक्षक हेतु वधू चाहिए. विधवा भी. 7772734. वि.नं. 5659, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

धमैला, कुर्मी, 24½, 5'3", 3,000/-, रिसर्च सहायक केमिकल इंजीनियर, गेहुआं, सुंदर, सुशील, गृहकार्य निपुण कन्यार्थ मल्टीनेशनल, सरकारी/अर्द्धसरकारी/ इंजीनियर/बैंक अधिकारी, सुंदर, स्मार्ट तथा 27, 5'9", 55,000/-+ (डालर) वार्षिक, अमेरिका कार्यरत, इलेक्ट्रानिक इंजीनियर, सुंदर, सुशील, स्वस्थ युवकार्थ सुंदर, गोरी, लंबी, एम.सी.ए., कंप्यूटर इंजीनियर, बी.एससी., प्रतिष्ठित परिवारीय, वर तथा वधू चाहिए. पिता सेवानिवृत्त केंद्रीय उच्चाधिकारी, भाई डाक्टर. वि.नं. 5661, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, संभ्रांत परिवार (बढ़ई), 25, 152, एम.काम., बी.एड., शिक्षिका एवं 23, 153, एम.ए., गौरवर्ण, अतिसुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्याओं हेतु वर और 30, 167, बी.एससी., टी.वी. डिप्लोमा, 5,000/-, रेलवे एवं 30, 168, बी.ए., कंप्यूटर डिप्लोमा, 4,000/-, सी.आई.एस.एफ. एवं 28, 165, बी.एससी., 4,000/-, एकाउंटेंट हेतु वधू चाहिए. संपूर्ण विवरण सहित प्रस्ताव आमंत्रित. वि.नं. 5662, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मुंबई में केंद्रीय सेवारत, कनिष्ठ अभियंता, बर्मन (मांझी), 27/5'6", मांगलिक युवक हेतु सुयोग्य, मांगलिक वधू एवं 21/5'1", ग्रेजुएट, गौरवर्ण कन्यार्थ वर चाहिए. वि.नं. 5663, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोद विज्ञापन

नवजात शिशु, अविवाहित महिलाओं/हास्पिटल

विज्ञापनदाताओं के लिए सूचना

1. सरिता में वैवाहिक व गोद विज्ञापनों की दर 8.00 रु. प्रति शब्द है. अंगरेजी पाक्षिक वूमंस ईरा 6.00 रु. प्रति शब्द. यदि सरिता के साथसाथ वही विज्ञापन वूमंस ईरा में भी प्रकाशित कराया जाए तो के लिए केवल 3.00 रु. अतिरिक्त यानी 11.00 रु. प्रति शब्द होगा.

अन्य व्यक्तिगत व व्यावसायिक विज्ञापनों की दर सरिता में 12.00 रु. प्रति शब्द है तथा वूमंस ईरा 8.00 रु. प्रति शब्द. यदि सरिता के साथसाथ वही विज्ञापन वूमंस ईरा में भी प्रकाशित कराया जाए तो के लिए केवल 3.00 रु. अतिरिक्त यानी 15.00 रु. प्रति शब्द होगा.

ख्य व्यक्तिगत विज्ञापन कार्यालय :

एम 12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001. फोन : 3321313

से गोद हेतु चाहिए. वि.नं. 5544, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 25 वर्षीय, स्वस्थ, स्मार्ट, गोरा, लंबा, परास्नातक, अविवाहित किसी उच्चाधिकारी, उद्योगपति से गोद जाना चाहता है. अप्रवासी भारतीय भी आमंत्रित. माहेश्वरी, जैन, अग्रवाल को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 5664, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल परिवार की सुंदर, चंचल डेढ़ वर्षीय लड़की गोद देना चाहते हैं. अमीर परिवार ही संपर्क करें. वि.नं. 5665, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

55 वर्षीय पुरुष को 50 वर्षीया अकेली महिला सहायिका चाहिए. पूर्ण विवरण लिखें. वि.नं. 5666, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40 वर्षीय व्यवसायी को एक महिला निजी सचिव, स्मार्ट, व्यावसायिक दौरों को तत्पर चाहिए. उत्तम वेतन व अन्य सुविधाएं. पूर्ण विवरण लिखें. मिलें: विनय कुमार, 910, कूचा पातीराम, अजमेरी गेट, दिल्ली-110006.

शिक्षा

इंटीरियर डेकोरेशन डाक द्वारा सीखिए, इंगलिश/हिंदी माध्यम, लिखें: एकेडमी, 10ए/14, शक्ति नगर, दिल्ली-110007.

पत्रकारिता और संपादन, पत्रिका संचालन, लेख, फीचर, कहानी व पटकथा लेखन के पत्राचार कोर्स की विवरणी मंगाएं. कहानी लेखन महाविद्यालय (स), अंबाला छावनी.

स्वास्थ्य

कास्मैटिक सर्जरी और लाइपोसक्शन पर मुफ्त जानकारी हेतु लिखें. 599, सी-8, सैक्टर-8, रोहिणी, दिल्ली-110085. फोन: 7247507, 7260817.

स्वस्थ जीवन के लिए मानसिक सक्रियता, आहार निर्देशन और कायाकल्प कार्यक्रम की जानकारी हेतु मिलें/लिखें: आई.एस.एन.आर., 24/157, शक्ति नगर, दिल्ली-110007.

व्यवसाय

अमेरिकन ज्ञान पर अपना नाम, पता, 1,000/-, उत्तम क्वालिटी, गोंद लगे लेबिल छपवा सकते हैं. जिन की बाईं ओर सुनहरे बार्डर, शुल्क रु. 80/- वी.पी.पी. द्वारा (डाक खर्च अलग), कुलदीप सिंह, 32, दी माल अमृतसर-143017.

कलमीशोरा, सोडियम नाइट्रेट के लिए संपर्क करें. निर्माता: कैलाशचंद्र अग्रवाल, एस.एन. रोड, फीरोजाबाद-283203. टेलीफोन तथा फैक्स नंबर 0561-41155.

मान्यता प्राप्त व्यावसायिक नेचरक्योर प्रशिक्षण, विवरणी हेतु आवेदन पत्र के साथ टिकट सहित लिफाफा भेजें. इंटरनेशनल कालिज आफ नैच्युरोपैथी, 24/157, शक्ति नगर, दिल्ली-110007.

समाज सेवा

अंतर्जातीय आडंबरहीन विवाह इच्छुक लिखें: आस्था सेवा संस्थान (रजि.), हवेली दरवाजा, महोवा, उ.प्र. 210427.

पुस्तकें

भूतों, प्रेतों के विरोध की सत्य कथाएं पढ़ने हेतु संपर्क करें. मेघराज मित्र, तर्कशील सोसायटी, बरनाला, पंजाब.

साहित्यकार ग्रीष्म शिविर

साहित्यकारों के साथ पर्वतीय प्रवास के इच्छुक साहित्यकार सपरिचय लिखें: मनमुक्ता मीडिया, पांवटा साहिब (हि.प्र.)-173025.

सेरोगेट मदर

निसंतान दंपती को आवश्यकता है एक 25-30 वर्षीय, बेसहारा/विधवा महिला की. बच्चादानी और अंडदान सेवाओं का उचित भुगतान. सफल डिलीवरी पर पुरस्कार. गोपनीयता आश्वासित. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 5667, सरिता, नई दिल्ली-110055.

निसंतान युवा दंपती को एक स्वस्थ महिला की जरूरत है, जो बिना संभोग के एक टेस्ट ट्यूब बेबी पैदा कर सके. पूर्ण देखभाल एवं पूरी गोपनीयता सहित उचित पारिश्रमिक दिया जाएगा. वि.नं. 5668, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जमीनजायदाद

न्यू लाइफ प्रोपर्टीज, डी-9/1, सैक्टर-15, रोहिणी, दिल्ली. फोन: 7291731, 7291925, 7893471, प्लाट, फ्लैट, कोठियां खरीदने, बेचने हेतु.

सरताज प्रोपर्टीज, रोहिणी/एक्सटेंशन, नरेला: प्लाट्स, फ्लैट्स, कोठियां, खरीदें/बेचें. बी-282, सेक्टर-1, रोहिणी, दिल्ली. 7260246, 7279447.

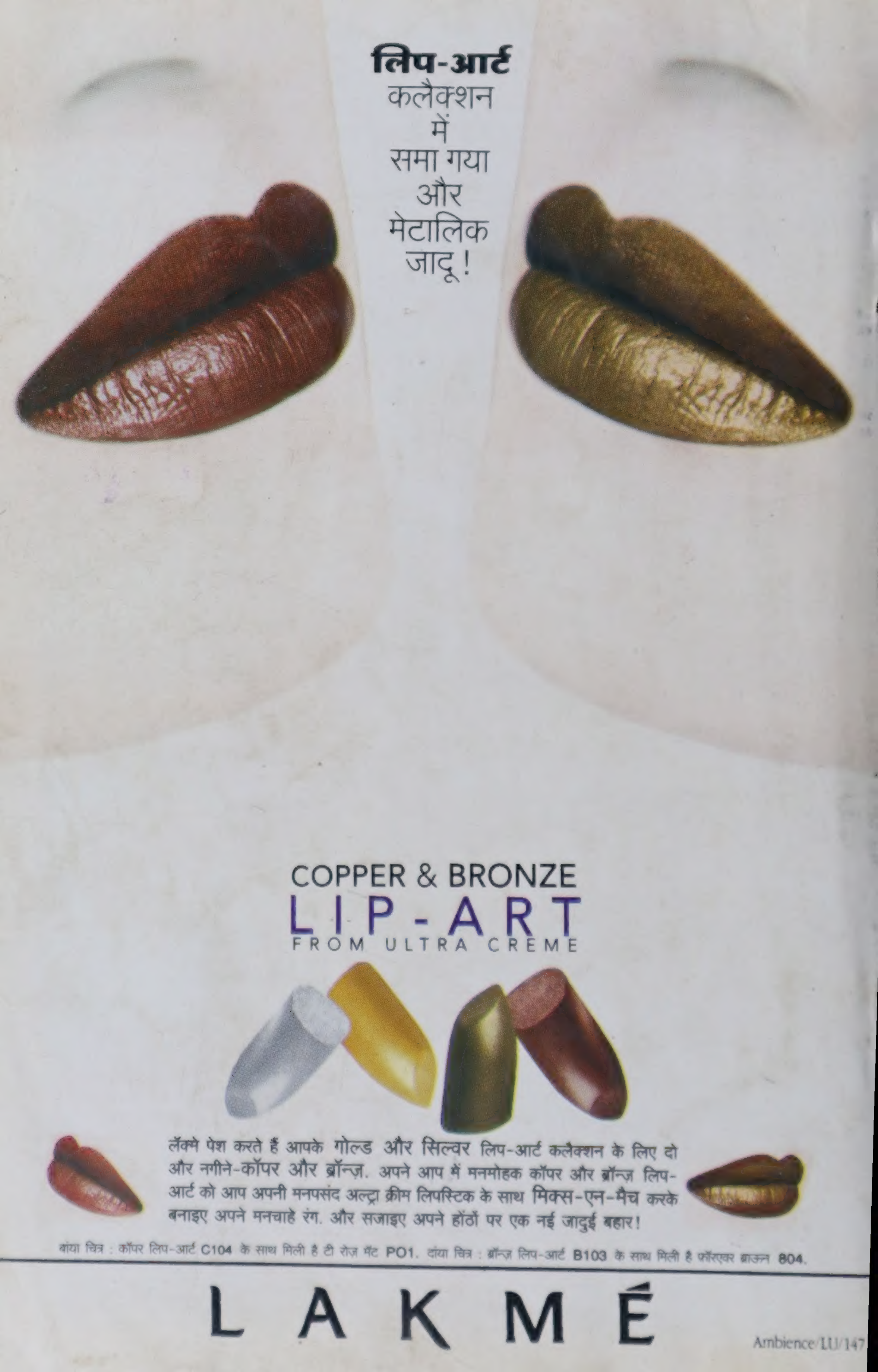
प्रापर्टी खरीदें आप, 'जी. प्रापर्टीज (रजि.)' के साथ, संपर्क: सी-1/84, सैक्टर-11, रोहिणी, दिल्ली, फोन: 7049898, 7049899.

कंवल प्रापर्टीज (रजि.) रोहिणी/पीतमपुरा: प्लाट्स, फ्लैट्स, कोठियां, खरीदें/बेचें: सी-1/83, सैक्टर-11, रोहिणी दिल्ली, 7040306, 7042500.

प्रदीप एसोसिएट्स (फेयर डीलिंग), रोहिणी: कोठियां, प्लाट्स, फ्लैट्स खरीदें/बेचें: बी-8/1, सैक्टर-11, रोहिणी, दिल्ली, 7043464, 7051816.

मनमीत प्रापर्टी कैंपस रोहिणी: प्लाट्स, फ्लैट्स, कोठियां, खरीदें/बेचें: सी1/25, सैक्टर-15, रोहिणी, दिल्ली, 7291077, 7294901, 9810089081.

राजीव एंड कंपनी, रोहिणी: प्लाट्स, सोसायटी, फ्लैट्स, कोठियां, खरीदें/बेचें: ई-2/1/32, सेक्टर-15, रोहिणी, दिल्ली. 7891750, 7294232.


लिप-आर्ट
कलैक्शन
में
समा गया
और
मेटालिक
जादू!
COPPER & BRONZE
LIP-ART
FROM ULTRA CREME
लॅक्मे पेश करते हैं आपके गोल्ड और सिल्वर लिप-आर्ट कलैक्शन के लिए दो और नगीने-कॉपर और ब्रॉन्ज़. अपने आप में मनमोहक कॉपर और ब्रॉन्ज़ लिप-आर्ट को आप अपनी मनपसंद अल्ट्रा क्रीम लिपस्टिक के साथ मिक्स-एन-मैच करके बनाइए अपने मनचाहे रंग. और सजाइए अपने होंठों पर एक नई जादुई बहार!
बांया चित्र : कॉपर लिप-आर्ट C104 के साथ मिली है टी रोज़ मॅट PO1. दांया चित्र : ब्रॉन्ज़ लिप-आर्ट B103 के साथ मिली है फॉरएवर ब्राउन 804.
LAKMÉ
Ambience/LU/147